

पञ्चतन्त्रप्रभृति नोतिशास्त्रोद्धृतः

मित्रलाभ सुहृद्भेद विग्रह सन्ध्यवयवान्वितः

हितोपदेशः



विष्णुशर्म्मा संगृहीतः



कलिकाता राजधान्यां शास्त्रप्रकाश यन्त्रालये

श्रीलक्ष्मीनारायणन्यायालङ्कारेण

शोधितोमुद्रितश्च



शकाब्दाः १७५२ सम्वत् १८८७

সাধু গোড়ীয় ভাষায় সংগ୍ରহୀତ

হিতোপদেশ




শ্রীলক্ষ্মীনারায়ণ ন্যায়ালঙ্কারকর্তৃক

সংশোধিত হইয়া



কলিকাতা মহানগরে শাস্ত্রপুকাশ যন্ত্রালয়ে

মুদ্রিত হইল



সন ১২ ৩৭ শাল

अथ द्वितीयपदेशस्य सूचीपत्रं

प्रथमाध्याये निचलाभे

इतिहासः	पृष्ठे	पंक्ता
वन्दना	१	१
काककूर्ममूषिक } १	२०	४
कपोतदरिणानां }		
व्याघ्रपथिकयोः २	२४	१
काकमृगमृगालानां ३	५७	१
शकुनिना }		
जीरपक्षिणां } ४	५२	६
परिव्राजकमूषिक } ५	६०	३
हिरण्यकयोः }		
वृद्धवल्कि तयुव }		
तिलो उभयोः } ६	६४	३
व्याधमृगशूकर }		
सर्पमृगालानां } ७	११८	८
पेतवल्कि पत्नी }		
राजपुत्रयोः } ८	१३८	१
शृगाल हस्तिनां ९	१४२	६

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
वणिकवृष सिंह } शृगालानां }	१	१६२	१
कोलोत्पाटिवानरस्य	२	१७६	११
गर्दभ कुकुर } चौराणां }	३	१८०	३
मूषिकविडाल } सिंहानां }	४	२१२	१०
घण्टाकण } कुट्टिन्याः }	५	२२०	७
कन्दर्पकेलिर्गोप } नार्पितयोः पत्न्या }	६	२३४	५
वेवं साधुरेतेषां }			
गोपस्य पत्न्या उप } पतिद्वयस्य च }	७	२४८	७
वायसदम्पती } कृष्णसर्पाणां }	८	२५४	२
सिंहशशकस्य	९	२५६	१
समुद्रटिट्ठिभयोः	१०	२७४	१

तृतीयाध्याये विग्रहे

३

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
मयूरहंसादीनां	१	३००	१
पलिवानराणां	१	३०४	३
व्याघ्रचर्मवृत } गर्दभस्य	३	३०८	१
शशकहस्तिनां	४	३१२	५
काकहंसानां	५	३२२	१०
काकवर्त्तकानां	६	३२४	८
रथकारस्य	७	३२६	११
नेलीङ्गालस्य	८	३४८	६
स्त्रीयपत्रवलिप्रदान } कारिवीरवरस्य	९	३७२	६
भिक्षुकघाति } नापितस्य	१०	३८६	३

चतुर्थाध्याये सप्तौ

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
हंसमयूराणां	१	४१६	१
शङ्खटविकटनाम्नोहंस } द्योरेवंतयोर्भिन्नकम्बु } ग्रीवनामकूर्मस्य	२	४१८	३

४	ज्ञातदासः	पृष्ठे	पंक्तौ
मत्स्यत्रयाणां	३	४२०	३
वणिकपर्वारत्न } प्रभाषाः	४	४२०	११
नकुलवकानां	४	४२६	४
मुनिमूषिकयोः	६	४३२	६
वककर्कटानां	७	४३६	१
शत्रुशराव नष्टकारिहे ब्राह्मणस्य	८	४४०	८
सुन्दोपमुन्दयोः	९	४४६	३
ब्राह्मणकागलयोः	१०	४६४	९
उष्ट्रकावधघ्न } शृगालानां	११	४६६	३
वृद्धसर्पमण्डूकानां	१२	४७४	८
ब्राह्मणस्यनकुलस्यच	१३	४८२	३

হিতোপদেশের নির্ঘণ্ট পত্র

পুথন অধ্যায়ে মিত্রলাভেতে

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পঙ্ক্তিতে
বন্দনা	১	১	১
কাক কচ্ছপ ইন্দুর কপোত হরিণ ইহারদিগের	১	২০	২
বায়ু আরপথিকের	২	২৪	২
কাক ও মৃগ আর শৃগালের ও		৫৪	২
শঙ্গনি ও বিড়াল এবং পক্ষিরদিগের	৪	৫৪	১
সন্ন্যাসি এবং হির ণ্যকর্ম্মবিকের	৫	৯২	১
বৃদ্ধবণিকের এবং তাহার যুবতিস্ত্রীর	৬	৯৪	৪
ব্যাঘ্র হরিণ শূকর সর্প শৃগাল ইহার দিগের	৭	১১৯	১
সওদাগরের স্ত্রীর এবং রাজপুত্রের	৮	১৩৮	২
শৃগালের ও হস্তির	৯	১৪৩	১

৪	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পাঙ্কিতে
বকের ও কৈকড়ার	৭	৪৩৬	১
শতুশরাবনষ্টকারিব্রাহ্মণের	৮	৪৪১	২
সুন্দোপসুন্দের	৯	৪৪৬	৪
ছাগলবাহক ব্রাহ্মণ	১০	৪৬৪	২
ও ধুত্ব্রয়ের			
উট ও কাক ও ব্যাঘ্র	১১	৪৬৬	৪
এবং শৃগালের			
বৃক্ষসর্প ও ভেকের	১২	৪৭৫	১
ব্রাহ্মণ ও নম্রনের	১৩	৪৮১	৪

I NTRODUCTION	1
----------------------	---

CHAP. I.

THE ACQUISITION OF A FRIEND.	19
FABLE I. The story of the pigeons, the crow, the mouse, the tortoise, and the deer	21
II. The traveller and the tiger	25
III. The deer, the jackal, and the crow	55
IV. The blind vulture, the cat, and the birds	57
V. The history of Hiranyaka the mouse	93
VI. The old man and his young wife	95
VII. The huntsman, the deer, the boar, the serpent, and the jackal	119
VIII. The rājāh's son and the merchant's wife	139
IX. The jackal and the elephant	143

CHAP. II.

THE SEPARATION OF FAVOURITE	161
FABLE I. The story of the bull, the two jackals and the lion	163
II. The ape and the wedge	177
III. The thief, the ass, and the dog	181
IV. The lion, the mouse, and the cat	213
V. The poor woman and the hell	221
VI. The adventures of Kandarpakētu, comprising the story of the cow-keeper, the barber, and their wives; and the history of the devotee whose avarice occasioned the loss of all his wealth	235
VII. The farmer's wife and her two gallants	249
VIII. The crow, the golden chain, and the black serpent	255
IX. The lion and the rabbit	257
X. The partridges and the sea	275

C H A P. III.

Page

O F D I S P U T I N G

299

FABLE I.	The history of the geese & the peacocks	301
II.	The birds and the monkies —	305
III.	The ass dressed in a tiger's skin —	309
IV.	The elephants and the rabbits —	313
V.	The goose and the crow — — —	323
VI.	The Varttaka and the crow — — —	325
VII.	The wheelwright and his wife —	327
VIII.	The blue jackal — — — —	349
IX.	The man who sacrificed his own son —	373
X.	The barber who killed a beggar —	387

C H A P. IV.

O F M A K I N G P E A C E.

415

FABLE I.	Continuation of the history of the geese and the peacocks — — — —	417
II.	The tortoise and the two geese —	419
III.	The three fish — — — —	421
IV.	The merchant and his artful wife —	ib
V.	The boobies and weasel — — — —	427
VI.	The mouse and the hermit — — — —	433
VII.	The booby and the crab — — — —	437
VIII.	The Brāhman who brake the pots & pans	441
IX.	The two giants — — — —	447
X.	The Brāhman and his goat — — — —	465
XI.	The camel, the crow, the tiger, and the jackal — — — — —	467
XII.	The old serpent and the frogs — — — —	475
XIII.	The Brāhman and his weasel — — — —	493

अथ हितोपदेशस्य सूचीपत्रं

प्रथमाध्याये मित्रलाभे

इतिहासः	पृष्ठे	पंक्ता
वन्दना	१	१
काककूर्ममूषिक } १	२०	४
कपोतहरिणानां }		
व्याघ्रपथिकयोः २	२४	१
काकमृगशृगालानां ३	५४	१
शकुनिमा }		
जारपक्षिणां } ४	५६	६
परिव्राजकमूषिक }		
हिरण्यकयोः } ५	६२	१
वृद्धवणिक् तद्युव }		
तिस्त्रो उभयोः } ६	६४	३
व्याधमृगशूकर }		
सर्पशृगालानां } ७	११८	८
पोतवणिक्पत्नो }		
राजपुत्रयोः } ८	१३८	१
शृगाल हस्तिनां ९	१४२	६

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
वणिकवृष सिंह } शृगालानां	१	१६२	१
कोलोत्पाटिवानरस्य	२	१७६	११
गर्दभ कुकुर } चौराणां	३	१८०	३
मूषिकविडाल } सिंहानां	४	२१२	१०
घण्टाकर्ण } कुट्टिन्याः	५	२२०	७
कन्दर्पकेलिर्गोप } नापितयोःपत्न्या वेवं साधुरेतेषां	६	२३४	४
गोपस्य पत्न्या उप } पतिद्वयस्य च	७	२४८	७
वायसदम्पती } कृष्णसर्पाणां	८	२५४	२
सिंहशशकस्य	९	२५६	१
समुद्रटिट्टिमयोः	१०	२७४	१

तृतीयाध्याये विग्रहे

३

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
मयूरहंसादीनां	१	३००	१
पक्षिवानराणां	२	३०४	२
व्याघ्रचर्मावृत गर्दभस्य	३	३०८	१
शशकहस्तिनां	४	३१२	५
काकहंसानां	५	३२२	१०
काकवर्त्तकानां	६	३२४	८
रथकारस्य	७	३२६	११
नीलीशृगालस्य	८	३४८	६
स्त्रोयपुत्रवलिप्रदान कारिवीरवरस्य	९	३७२	६
भिक्षुकघाति नर्पातस्य	१०	३८६	३

चतुर्थाध्याये सन्धौ

	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
हंसमयूराणां	१	४१६	१
शङ्खटविकटनाम्नोर्हंस योरेवं तयोर्भिन्न कम्बु ग्रीवनामकूर्मस्य	२	४१८	३

४	इतिहासः	पृष्ठे	पंक्तौ
मत्स्यत्रयाणां	३	४२०	३
वणिक् पत्नीरत्न } प्रभायाः	४	४२०	११
नकुलवकानां	५	४२६	४
मुनिमूषिकयोः	६	४३२	६
वक्ककर्कटानां	७	४३६	९
शक्तुशराव नष्टकारि } ब्राह्मणस्य	८	४४०	८
मुन्दोपमुन्दयोः	९	४४६	३
ब्राह्मणकागलयोः	१०	४६४	९
उष्ट्रकाकव्याघ्र } शृगालानां	११	४६६	३
वृडसर्पमण्डूकानां	१२	४७४	८
ब्राह्मणस्यनकुलस्यच	१३	४८२	३

হিতোপদেশের নির্ঘণ্ট পত্র

পুথন অধ্যায়ে মিত্রনাভেতে

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পাঁক্তিতে
বন্দনা	১	১	১
কাক কচ্ছপ ইন্দুর কপোত হরিণ ইহারদিগের	১	২০	২
ব্যাঘ্র আর পথিকের	২	২৪	২
কাক ও নৃগ আর শৃগালের	৩	৫৪	২
শঅনি ও বিড়াল এবং পক্ষিরদিগের	৪	৫৪	১
সন্ন্যাসি এবং হির ণ্যকর্ম্মিকের	৫	৯২	১
বৃদ্ধবণিকের এবং তাহার যুবতিস্ত্রীর	৬	৯৪	৪
ব্যাঘ্র হরিণ শূকর সর্প শৃগাল ইহার দিগের	৭	১১৯	১
সওদাগরের স্ত্রীর এবং রাজপুত্রের	৮	১৩৮	২
শৃগালের ও হস্তির	৯	১৪৩	১

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পঙ্কিতে
বণিক ও ঘাড়ওসিংহ } শৃগাল ইহারদিগের	১	৯২	২
কীলোৎপাটিবানরের	১	১৭৭	৪
গন্ধভ ও কুকুর এবং চোরের	৩	১৮০	৪
মুখিক ও বিড়াল } আর সিংহের	৪	২১৩	৪
ঘণ্টাকর্ণ এবং কুঁউনিজীর	৫	২২০	৯
কন্দর্পকেনি ও গোপ ও নাপিত এবং এইউভয়ের	৬	২৩৪	৫
স্ত্রী আরসাধু ইহারদিগের			
গোপের স্ত্রীর এবং তাহার দুই উপপতির	৭	৪৮	২০
কাকদম্পতী আর কুম্ভমপের	৮	২৫৪	২
সিংহ আর শশকের	৯	২৫৬	১
সমুদ্র আর চিত্তিভের	১০	২৭৪	২

তৃতীয়াধ্যায়ে বিগুহে

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পঙ্কিতে
ময়ূরের এবং হংসের	১	৩০০	২
পক্ষির ও বানরের	২	৩০৪	৪

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পাঁক্তিতে ৩
ব্যাঘ্রচন্দ্রাবতগন্ধভের	৩	৩০৮	২
শশকের ও হস্তির	৪	৩১২	৬
কাকের ও সিংহের	৫	৩২৩	৩
কাকের ও বর্তকের	৬	৩২৫	২
সূত্রধর এবং তার স্ত্রীর	৭	৩২৬	৬
নীলবর্ণশৃগালের	৮	৩৪৮	৮
আপনপুত্রকে বলি	৯	৩৭২	৭
দানকারক বীরবরের			
ভিক্ষুকহস্তানাপিতের	১০	৩৮৬	৬

চতুর্থাধ্যায়ে সন্ধিতে

	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পাঁক্তিতে
হংসময়ূরেরদিগের	১	৪১৬	২
সংকটবিকটনামক হংসদ্বয়	২	৪১৮	৩
এবং তাহারদিগের মিত্র			
কম্বুগুবিনামককচ্ছপের	৩	৪২০	৩
পুতুংপন্নমতিপুত্			
তি মৎস্যত্রয়ের	৪	৪২১	৪
বণিক্ এবং তৎ			
পত্নী রত্নপুভার	৫	৪২৬	৫
বেজির ও বকের	৬	৪৫২	৮
মুনির ও ইন্দুরের			

৪	ইতিহাস	পৃষ্ঠায়	পাঁক্তিতে
বকের ও কৈকড়ার	৭	৪৩৬	১
শক্তুশরাবনষ্টকারিবাক্সের	৮	৪৪১	২
সুন্দোপসুন্দের	৯	৪৪৬	৪
ছাগলবাহক বাক্স	১০	৪৬৪	২
ও ধুঁতুরায়ের			
উট ও কাক ও ব্যাঘ্র	১১	৪৬৬	৪
এবং শৃগালের			
বৃদ্ধসর্প ও ভেবের	১২	৪৭৫	১
বাক্স ও নদলের	১৩	৪৯২	৪

अथ हितोपदेशस्याशुद्धशुद्धपत्रं

मित्रलाभे

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
कोधन्यो	कोधन्यौ	१०	१
खगाः	खवः	२०	३
यलायितुं	यलायितुं	३०	५
परित्यक्ता	परित्यक्ता	४०	३
जालं	जालं	४०	६
बहिङ्गमाः	विहङ्गमाः	४०	७
यताः	गताः	६८	५
अभ्यागतो	अभ्यागतो	८८	१२
परञ्च	अपरञ्च	९०	२
करप्रप्ते	करप्राप्ते	११२	८
नियुक्तं	नियुक्तं	११८	५
नृग	मृग	११८	११
दीर्घरवाः	दीर्घरवः	१२२	३
आत्मनः	आत्मनः	१२४	१३

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
समुद्रयो	समुद्रयो	१२६	८
विमुखाः	विमुखाः	१३२	५
तृ	त्वं	१३४	४
हरण्यको	हिरण्यको	१३६	८
मन्थरस्य	मन्थरस्य	१३६	८
कुड्मल	कुट्मल	१३६	१६
भर्त्तति	भर्त्तरि	१४०	६
मुत्सृज्य	मुत्सृज्य	१५०	६
शर्वथा	सर्वथा	१७८	११
चञ्चा	चञ्चा	१८४	१३
स्वपन्या	स्वपन्या	२२६	५
व्यथानश्च	व्यथमानः	२२६	८
मनुचितं	मनुचिते	२३०	१०
स्नातच्य	स्नातच्य	२६४	३
विहृत	विहृत	२६०	८
बलवानसि	बलवानपि	२६०	१०
बाह	नाह	२६०	१२
सत्रौच	शत्रौच	२६४	११
त्यज्या	त्याज्या	२६६	४




अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
तिन्दन्ति	निन्दन्ति	३०४	११
क्राण्डं	काण्डं	३०८	७
तमभिमुखं	तदभिमुखं	३०८	८
दुर्वृत्तिं	दुर्वृत्तं	३२२	६
वत्क्र	वक्त	३३४	६
वत्क्र	वक्त	३३४	८
व्यसनीमो	व्यसनोयो	३३६	९
सामस्तै	समस्तै	३४०	६
कण्टक	कण्टक	३६२	१०
भिन्द्या	भिन्द्या	३६४	८
वके नागत्य	वके नागत्य	३८८	४
त्यक्तं	त्यक्तुं	४००	१०
स्वाम्यगात्य	स्वाम्यमात्य	४१०	६
ग्राहयित्वा	ग्राहयित्वा	४१२	५
विद्यधरी	विद्याधरी	४१३	८
महीभूजां	महीभुजां	४१४	३
वृत्तं	वृत्ते	४१५	३
यन्त्रि	योद्गुं	४५६	४
षाङ्गुण्यं	षाङ्गुणाः	४५८	३

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
उपन्यसं	उपन्यस्तं	४६०	४
द्वीपस्य	द्वीपस्य	४६०	५
चित्रवर्ण	चित्रकर्ण	४६६	७
नाश्यात	नश्यात	४६०	११
ब्रूते	ब्रूते	४६८	६
प्राप्नुवन्निति	प्राप्नुवन्तइति	५१२	८

॥ अजगदीश्वरोजयति ॥

॥ अथ हितोपदेशः ॥



श्रुताहितोपदेशाय पाठवं संस्कृतोक्तिषु । वाचां सर्वत्र
वैचित्र्यं नीतिविद्यां ददाति च ॥ ****

अतः ये এই হিতোপদেশ ইনি সংস্কৃতবাক্যেতে পড়িত
ও নব্বত্র বাক্যের বিচিত্রতা ও নীতিবিদ্যা পুদান করেন।

THIS work, entitled Hitopades, affordeth elegance
in the Sanskrit idioms, in every part variety of lan-
guage, and inculcateth the doctrine of prudence and
policy.

অজরামরবৎ প্রজ্ঞোবিদ্যামর্থম্ চিন্তয়েৎ । মৃহীত
 ইব কেশেযু সূত্বনা ধর্ম্মমাচরেৎ ॥ সর্বদ্রব্যেযু বিদ্যৈব
 দ্রব্যমাজ্জরনুত্তমং অদ্বার্য্যত্বাদনর্ঘত্বাদদ্ব্যত্বাচ্চ সর্বদা
 সঙ্কময়তি বিদ্যৈব নীচগাপি নরং সরিত্ । সমুদ্রমিব
 দুর্দ্ধর্ষং নৃপং ভাগ্যমতঃ পরং ॥ বিদ্যা দদাতি বিনয়ং
 বিনয়ায়াতি পাচনাম্ । পাচনত্বাচ্ছনমাশ্নোতি ধনাহুর্ম্ম
 ততঃ সুখং ॥ বিদ্যা শস্ত্রম্ শাস্ত্রম্ দ্বৈ বিদ্যে প্রতিপন্নম্ ।
 আদ্যা হ্যস্যায বৃদ্ধত্ব দ্বিতায়া দ্রবতে সদা ॥ *❀*

পুঞ্জলোক অজর ও অমরের ন্যায় হইয়া বিদ্যা এবং অর্থ
 চিন্তা করিবেন আর যমকর্তৃক কেশে গৃহীতের মত হইয়া
 ধর্ম্মাচরণ করিবেন । এবং সকলদ্রব্যের মধ্যে বিদ্যাই অত্যন্ত
 দ্রব্য ইহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন যেহেতুক বিদ্যারূপধনকে
 চোরেরা অপহরণ করিতে পারেনা এবং বিদ্যার মূল্যনাহি
 আর সর্বকালেক্ষয় হয় না আর যদি নীচলোকের বিদ্যা হয়
 তবে সেই মনুষ্যকে দুঃখী পায় রাজাকে পাওয়ায় যেমন নীচগা
 নদী মনুষ্যকে দুঃখী পায় সমুদ্রে পাওয়ায় রাজার সঙ্গে মেলন
 হেতুক বিদ্যা উৎকৃষ্টভাগ্যকে পাওয়ায় বিদ্যা বিনয় দেন
 বিনয়েতে যোগ্যতা হইতে পায় ধন হইতে

धन্য পায় ধন্যইতে সুখ পায় ॥ আর বিশেষকহিতেছেন
যে শাস্ত্রবিদ্যা ও শাস্ত্রবিদ্যা এই দুই বিদ্যা পুতিপত্তির
নিমিত্তে হন কিন্তু আদ্যা শাস্ত্রবিদ্যা ব্রজাবস্থাতে হাস্যের
নিমিত্তে হন দ্বিতীয়া শাস্ত্রবিদ্যা সর্বকালে আদরণীয়া হন ॥

The wise man should study the acquisition of science and riches, as if he were not subject to sickness and death, but to the duties of religion he should attend, as if death had seized him by the hair.

Of all things Knowledge is esteemed the most precious treasure; because of its incapacity to be stolen, to be given away, or ever to be consumed.

Knowledge introduceth a man to acquaintance; and, as the humble stream to the ocean, so doth it conduct him into the hard-acquired presence of the prince, whence fortune floweth.

Knowledge produceth humility; from humility proceedeth worthiness; from worthiness riches are acquired; from riches religion, and thence happiness.

There are two species of Knowledge in use: —the knowledge of arms, and the knowledge of books. The first is ridiculous in old age, whilst the last is for ever honourable.

প্র.

যন্ত্রণে ভাজনে লয়ঃ সংস্কারো নান্যথা ভবেৎ কথ্যচ্ছলো
 বাসানাং নীতিস্তদিহ কথ্যতে ॥ মিত্রলাভঃ সুহৃদ্বৈদে
 বিগ্রহঃ সন্ধিরেব চ । পঞ্চতন্ত্রাচ্চত্যান্যস্বাদ্বন্যাদা
 কথ্য লিখ্যতে ॥ অস্মি ভাগীরথীতীরে পাটলিপুত্রনাম
 ধেয়ং নগরং তত্র সৰ্ব্বস্বামিগুণোপেতঃ সুদর্শনো নাম নরপতি
 রাশীত্ স ভূপতিরেকদা কেনাপি পথ্যমানং শ্লোকদ্বয়
 শুশ্রাব। অনেকসংশয়োচ্ছেদি পরোক্তার্থস্য দর্শকং। সর্বস্য
 সৌধনং শাস্ত্রং यस্য নাস্ত্যর্থ এব সঃ ॥ যৌবনং ধনসম্পত্তিঃ
 প্রভুত্বমবिवেকতা একৈকমপ্যনর্থায় কিমু তত্র চতুষ্টয়ং ॥

অপর যেহেতুক নূতনপাত্রের সংলগ্ন যে চিহ্ন সে অন্যথা
 হয় না। সেইহেতুক গল্পের ছলেতে স্নানকেন্দ্রদের সম্বন্ধে এ
 গুল্পে নীতি কথ্যাইতেছে। মিত্রলাভ ও সুহৃদ্বৈদ ও বিগ্রহ
 ও সন্ধি এতদ্বতুষ্টয়ায়ক নীতিশাস্ত্র পঞ্চতন্ত্রহইতে ও
 আর ২ গুল্পহইতে আকর্ষণ করিয়া লিখা যাইতেছে। ভাগী
 রথীতীরে পাটলিপুত্র নামে এক নগর আছে সেখানে সকল
 রাজগুরুবশিষ্ঠ সুদর্শন নামে রাজা ছিলেন সেই ভূপতি
 এক সময় কারাগারও কর্তৃকপঠানান শ্লোকদ্বয় শ্রবণ করি
 লেন তাহার অর্থ এই যে অনেক সময়েই নান্যক এবং অপ

তাক্ষবিষয়ের দর্শক এমনত যে শাস্ত্র সে সকলের চক্ষু ইহা
মাহার নাই সেই অন্ধ। আর যৌবন ও ধনসম্পত্তি ও পুতুত্ব
ও অবिवেকতা এই চতুষ্টয় পুতাকেই অনর্থের নিমিত্ত হয়
আর যেখানে এ চতুষ্টয় একাধারবর্তি সেখানে কি হয়
তাহা কহিতে পারি না।

As the impressions made upon a new vessel are not easily to be effaced; so here youth are taught Prudence through the allurements of fable.

This work is divided under four heads:
*The Acquisition of a Friend The Separation of a Fa-
vourite. Of Disputing. of making Peace.*

And it is, chiefly, drawn and written from the Pancha Tantra and other books.

On the banks of the river Bhagirathi, there is a remarkable city called Patalipura, where there was formerly a Raja, endued with every noble quality, whose name was Sudarsana. One day he heard the two following verses, as they were repeated by some one:

He who is not possessed of Learning which dispels many doubts, points out hidden things, and is, as it were, the organ of sight to all, is even as a blind man.

Youth, abundant wealth, authority, and inexperience, is, each of them, the source of ruin. What then must be the fate of him in whom all four are combined?

অস্তিত্ব পদে পদে দুঃখ দায়ক হয় । অপর গত্ত্বে সুখ ও
ভাল স্ত্রীঅভিগমন না করাও ভাল জন্মিয়া মরাও ভাল কন্যা
হওয়াও ভাল ভার্য্যা বক্ষ্যাহওয়াও ভাল গত্ত্বে হইতে ভ্রমিষ্ট না
হওয়াও ভাল রূপ ও ধন সম্ভবিশিষ্টে মৃত্যু পুত্র কিছু নয় ॥
এবং যে পুত্র জন্মিলে বংশ উন্নতি পায় সে জন্মকনতুবা
জন্ম মরণ ধর্মশালি সংসারে কেবা মরিয়া না জন্মে ।

The Raja had no sooner heard these lines than he began to consider, with an afflicted heart, the situation of his sons, who were yet unacquainted with books, and wandering in the paths of error.

What benefit is there in a son who is neither learned nor virtuous ! Or, of what use is a single eye ! Such an eye is but pain !

Again:

Of the child unborn, the dead, and the fool, the two first, and not the last, are the least to be lamented, for the two first cause but a transient sorrow, whilst the last is an eternal plague.

A son though rich and beautiful if he be ignorant had better have been an abortion Continence, the death of a child as soon as born, the birth of a daughter, a barren wife, continuance in the womb are all to be preferred to such a son,

He is truly born, by whose birth his generation is exalted; or else, who is there in this transitory life, who being dead, is not born again:

So it is said,

অন্যস্ব । গুণিগণগণনারম্ভে ন পততি কঠিনী স
 সমুদ্ভাস্যস্ব তেনাম্বা যদি সুতিনী বদ বন্ধ্যা কৌটুখী
 ভবতি ॥ অপি চ । দানে তপসি শৌর্য্যে চ যস্য ন প্রথিত
 মনঃ । বিদ্যাযামর্থলাভে চ মাতুরুচ্চারএব সঃ ॥
 অপরস্ব । বরমেকোগুণী পুত্রো ন চ মূর্খশতৈরপি ।
 একস্বন্দ্রস্তমোহন্তি ন চ তারাগণৈরপি ॥ পুণ্যতীর্থং কৃতং
 যেন তপঃ ক্লাপ্যতিদুষ্করং তস্য পুত্রোভবেদ্বশ্যঃ সমৃদ্ধো
 ধার্ম্মিকঃ সুধীঃ ॥ তথাচোক্তং ॥ অর্থাগমো নৈত্যমরোগিতা
 চ প্রিয়া চ ভার্যা প্রিয়বাदिनी চ বশ্যস্ব পুত্রোऽর্থকরী
 চ বিদ্যা षड্ভীবলোকেषু সুখানি রাজন । *❀*

অপর গুণিসমূহের গণনারম্ভে সস্ত্রুমেতে খড়ী যাহার নামে
 না পড়ে সে পুত্রোতে নাতা যদি পুত্রবতী হয় তবে বন বন্ধ্য
 কেমন হয় । এব° দান ও তপস্যা ও শৌর্য্য ও ধনার্জনেতে
 মন যাহার অর্চিষ্টে ন হয় সে মাতারবিষ্ঠা মাত্র । এব°
 গুণবান এক পুত্রও ভাল শত মূর্খ পুত্রোতে পুয়োজন নাহ
 যেনন এক চন্দ্র অক্ষকারণে কেরেন তার। সমূহ কিছু করিতে
 পারে না । এব° কোন পুণ্যতীর্থে যে অতিদুষ্কর তপস্যা করি
 য়াছে তাহার পুত্র অবশ্য ধনবান ও ধার্ম্মিক ও পণ্ডিত হয় ॥

সেই পুকার পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন। পুতিদিন অর্থের আগ
মন ও অরোগিতা এবং পুয়া ভাৰ্যা ও পুয়াবানী ভাৰ্যা ও
বিনয়ী পুত্র ও অর্থকরী বিদ্যা এই ছয় সংসারে সুখদায়ক হয়।

Why should the mother of that son, whom the chalk marks not in the first enumeration of the virtuous, have complained, had she been childless;

Again:

That son is but as a lump of clay whose mind is not indowed with generosity and charitable dispositions or who neglects to perform religious penance, or who studies not the art of war, and the art of gaining wealth.

One child of genius is a blessing; not so even a hundred fools. A single moon dispelleth darkness better than a host of stars

The child of him, whose transgressions are expiated by penances performed at places of holy pilgrimage, should be obedient, prosperous, virtuous, and happy.

And it is said also

An influx of riches, and constant health; a wife who is dear to one, and one who is of kind and gentle speech; a child who is obedient, and useful knowledge, are, my son, the six pleasures of life.

কৌশল্যোবজ্জমিঃ পুত্রৈঃ কুশূলাপূরণাটকৈঃ । বরমেকঃ
কুলালম্বো যত্র বিশ্রুয়তে পিতা ॥ ইদানোমতে মম পুত্রা
শুণবন্তঃ ক্রীযন্তাং । যতঃ । আহারনিদ্রাভয়মৈথুনঞ্চ সা
মান্যমেতৎ পশুभिর্নরাণাং । ধর্মাচ্ছ তেষামধিকো বিশেষো
ধর্মেণ হীনাঃ পশুभिঃ সমানাঃ । যতঃ । ধর্মার্থকামমোক্ষা
ণাং যস্যৈকোপি ন বিদ্যতে । অজাগলস্তনস্যেব তস্য জন্ম
নিরর্থকং । যচ্চোচ্যতে । আয়ুঃ কৰ্ম্ম চ বিত্তঞ্চ বিদ্যা
নিধনমেব চ । পশ্চৈতান্যপি সৃজ্যন্তে গৰ্ভস্যস্বৈব দেহিবঃ
কিঞ্চ । অবশ্যম্ভাবিনোভাবাভবন্তি মহতাশপি । নম্রত্বং
নীলকণ্ঠস্য মহাছিষ্যয়নং হরেঃ । অন্যচ্চ । যদম্ভাবি ন
তদ্রাশি ভাবিচেন্ন তদন্যথা । ইতি চিন্তা বিষমোযম
গদঃ কিত্ত্রপীযতে ।

আর গোলাগৃহের পুরণার্থ যে আটি ততুন্য অনেক পুণ্ড্রিতে
কে ধন্য হয় কিন্তু কুলাচারা বনশ্রী এক পুণ্ড্র ও ভান যাহাতে
পিতা খ্যাত হন । অতএব এখন এই আগার পুণ্ড্রদিগেকে
গুণবন্ত করিয়াউক । যেহেতুক আহার ও নিদ্রা ও ভয় ও
মৈথুন এই সকল ব্যবহার পশুরদের যাদৃশ মনুষ্যেরদেরও
তাদৃশ কিন্তু পশুরদের ইহাতে মনুষ্যেরদের অধিক ধর্ম এই
বিশেষ অতএব ধর্মেতে হীন মনুষ্যেরা পশুরদের সমান । যে
হেতুক ধর্ম ও অর্থ ও কান ও মোক্ষ ইহার মধ্যে একও যাহার

নাহি তাহার জন্ম ছাগলের গলদেশস্থিত স্তনের ন্যায় নিরর্থক হয়। অপরও কহাযাইতেছে। আয়ু আর কন্ম আর ধন আর বিদ্যা আর মরণ এই পাঁচ গুণে স্থাবস্থাতেই জীবের সৃষ্টি হয়। আর অবশ্যভাবি পদার্থসকল মহতেরও হয় ইহার দৃষ্টান্ত মহাদেবের নগ্নত্ব এবং হারর মহাসপশয়া। এবং যে হইবার উপযুক্ত নয় সে হইবে না যে হইবার উপযুক্ত তাহার অন্যথা হইবে না এতাদৃশ চিন্তাকপিবিশনাশক ঔষধি কি লোককর্তৃক গীত হয় না অর্থাৎ অবশ্য হয়।

Who should boast of many sons, unfit to secure good fortune? one son who supports his family, and who does credit to his father, is preferable. Therefore, let my sons be improved by education.

For, Eating, Sleep, Fear, Passion, are common to men and bruts butue is there principal distinction, without which men are no better than beasts

The life of that man who has ueither virtue. wealth, desire nor final happiness, is as unprofitable as the false nipples on the neck of a goat As it is said,

The age, the actions, the wealth, the knowledge, and even the death, of every one is determined in his mother's womb.

The determined fate of all beings, let them be ever so great, inevitably happeneth. Nakedness is the fate of Nilakauht, and of Han sleeping on a great serpent.

What is not to be, that is not to be, if it be to come to pass, it cannot be otherwise. This reasoning is an antidote. Why doth not the afflicted drink of it?

এতৎ কার্য্যোচ্চমাণাং কেষাञ্ছিদালস্যবচনং । যথা
 ছ্যোকেন চক্রেণ ন রথস্য গতির্ভবেৎ । এবং পুরুষকারেণ
 বিনা দৈবং ন সিধ্যতি ॥ তথা চ। পূর্ব্বে জন্মকৃতং কর্ম্ম তদৈব
 মিতি কথ্যতে তস্মাত্ পুরুষকারেণ যত্নং কুর্য্যাদতন্দ্ৰিতঃ ॥
 অন্যত্র উদ্যোগিনং পুরুষসিংহমুপৈতি লক্ষ্মীদৈবেন দেয়মি
 তি কাপুরুষাবদন্তি। দৈবং নিহত্য কুরু পৌরুষমাत्मশক্ত্যা
 যত্নে কৃত্যে যদি ন সিধ্যতি কোত্র দোষঃ ॥ যথা সৃত্যিণ্ডতঃ
 কৰ্ত্তা কৰুতে যদ্যদিচ্ছতি । এবমাत्मকৃতং কর্ম্ম মানবঃ
 প্রতিপদ্যতে ॥ অপাञ্চ । কাকতা লীযবত্ প্রাপ্তং দৃষ্ট্বাপি
 নিধিনয়তঃ ন স্বয়ং দৈবমা দত্তে পুরুষার্থমপেচ্ছতে ।

এ কোন কার্য্য কৰ্ম্ম লোকেদিগের আলস্যবচন
 যেহেতুক যেমন এক চক্রেতে রথের গতি হয় না । এমন
 পুরুষার্থ ব্যতিরেকে দৈবসিদ্ধ হয় না । পূর্ব্বে জন্ম কৃত যে
 কর্ম্ম তাহার নান দৈব কহা যায় সেইহেতুক নিরাশ্রয়
 হইয়া পুরুষার্থে ত যত্ন করিবেক । আর লক্ষ্মী উদ্যোগি
 পুরুষসিংহকে পায়ের অদৃষ্টে প্রযুক্ত হয় ইহা কাপুরুষেরা কহে
 অতএব অদৃষ্টকে অনাদর করিয়া আপন শক্ত্যানুসারে পুরু
 ষার্থপূকাশ করহ যত্ন করিলে যদি কার্য্যসিদ্ধ না হয় তবে কি
 দোষ । যেমন কুলান ঘটে শরাবাদি যা যা ইচ্ছা করে তাহাই

one earthen lump from moulded and man his own a house
 एक नृपिण्डहते निर्माण करे एवं मनस्य आपन कृतकम्
 हते नाना फल पाय । अपर सम्यक्ते कालतानीयेः
 न्याय अकस्मात् प्राप्त निधिके देखियाँ देव आपनि
 आनिया देन ना किन्तु पुरुषार्थ अपेक्षा करे ।

But such are the idle sentiments of certain men, who admit not of works; for,

As the chariot will not move upon a single wheel; even so fate succeedeth not without human exertion.

It is said fate is nothing but the deeds committed in a former state of existence; wherefore it behoveth a man vigilantly to exert the powers he is possessed of.

Fortune attendeth that lion amongst men who exerteth himself. They are weak men who declare fate the sole cause.

Subdue fate and exert human strength to the utmost of your power; and if when pains have been taken success is not obtained, in whom is the blame?

Whilst a man confideth in providence, he should not slacken his own exertions; for without labour he is unworthy to obtain the oil from the seed.

As the potter formeth the lump of clay into whatever shape he liketh, even so may a man regulate his own actions.

Again:

Although in the story of the Crow and Tal' fruit' one was seen to have found a treasure before him fate of itself did not present it. some exertion was still expected.

উদ্যমেণ হি সিদ্ধয়ন্তি কার্য্যাণি ন মনোরথৈঃ । নহি
 সুপ্তস্য সিংহস্য প্রবিশন্তি মুখে মৃগাঃ । তথাচোক্তং । মাতা
 শত্রুঃ পিতা বৈরী যেন বালোন পাঠিতঃ । ন শোভতে সমা
 মধ্যে হংসमध्ये বকোযথা ॥ রূপযৌবনসম্পন্না বিশালকুল
 সম্ভবাঃ । বিদ্যাহীনান শোভন্তে নির্গম্মাঃ কিংশুকাঃ ॥
 অপরঞ্চ । পুস্তকেषু চ নাধীতং নাধীতং গুরুসন্নিধৌ ।
 ন শোভতে সমামধ্যে জারগর্ভঃ স্ত্রিয়ঃ ॥ এতচ্চিন্ত
 যিত্বা স রাজা পণ্ডিতসমাং কারিতবান্ । রাজোবাচ ।
 ভো ভোঃ পণ্ডিতাঃ শ্রুয়ন্তাং মম বচনমস্মি কস্মিন্
 এবম্ভূতোবিদ্বান্ যোমম পুত্রাণাং নিত্যমুন্মার্গগামি
 নামনধিগতশাস্ত্রাণামিদানীং নীতিশাস্ত্রোপদেশেন পুন
 র্জন্ম কারয়িতুং সমর্থঃ ।

যেহেতুক উদ্যোগেতে কার্য্যসকল সিদ্ধ হয় মনোরথ
 নাহেতেই হয় না কেননা সুপ্তসিংহের মুখেতে মৃগের
 স্ত্রত প্রবেশ করেনা । পণ্ডিতেরা সেই পুকার কহি
 য়াছেন যে পিতা ও মাতা বালককে পাঠ করায় না সে
 পিতা ও মাতা শত্রু ঐ বালক সভাগর্ভে শোভা পায়না
 যেনন হংসের মধ্যে বক । রূপ ও যৌবনেতে সম্পন্ন
 এবং মজ্জাকুলমন্ডব যে সকল তাহার ও বিদ্যাহীন হইলে
 শোভা পায়না যেনন গন্ধহীন পলাশ পুষ্প । অপর

যে ব্যক্তি গুরু নিকটে অধ্যয়ন করে নাহি ও আপনিও
পুস্তকে অধ্যয়ন করে নাহি সে সভানধ্যে শোভা পায়না জীর
উপপত্তি হইতে হয় যে গুরু সে যেমন। ইহা চিন্তা করিয়া সেই
রাজা পণ্ডিত সভা করাইলেন অনন্তর রাজা কহিলেন ভোভো
পণ্ডিতেরা আমার কথা শ্রবণ করণ। এমন পণ্ডিত কেহ
আছে যে নিত্য বিপথগামি অবিদিতশাস্ত্র আমার পুত্রেরদের
এখন নীতিশাস্ত্রোপদেশদ্বারা পুনর্জন্ম করাইতে সমর্থ হয়।

Good fortune is the offspring of our endeavours' although there be nothing sweeter than ease. The deer are not wont to precipitate themselves into the mouth of the sleeping lion.

That mother is an enemy, and that father a foe, by whom not having been instructed' their son shineth not in the assembly, but appeareth there, like a booby among geese.

Men deficient in learning shine not, although they may be possessed of youth and beauty, and of a noble race: They are like the flower Kimsukh, destitute of fragrance. The boy who hath been exercised neither in books, nor under a teacher, shimes not in society, any more than a woman pregnant by a gallant

The Raja having thus meditated for a while, convened a council of pandits, whom he addressed in the following words:—"Ye learned men, attend! Is there a man to be found who shall, by precepts drawn from Niti-Sastras, be able to perfect the birth of my sons, who are yet unformed, and constantly wandering in the paths of error; For,

যতঃ । কাচঃ কাঞ্চনসংসর্গাঙ্কনে মারকতীর্ঘ্যুতৌঃ
 তথা সত্বস্নিধানেন মূর্খোয়াতি প্রবীণতাং ॥ উক্তঞ্চ ।
 হীযতে হি মতিস্তাত হীনৈঃ সহ সমাগমাৎ সমৈশ্চ
 সমতামেতি বিশিষ্টৈশ্চ বিশিষ্টতাম্ ॥ অত্রান্তরে
 বিষ্ণুশম্ভেনামা পণ্ডিতঃ সকলনীতিশাস্ত্রতত্ত্বজ্ঞো
 বৃহদ্রথিরিবা ব্রবীত্ দেব মহাকুলসম্মুখাণ্যে রাজ
 পুত্রাস্তন্ময়া নীতিং গ্রাহয়িতুং শক্যন্তে । যতঃ । নাড্রথ্যে
 নিহিতা কাচিত্ ক্রিয়া ফলবতী ভবেৎ । ন ব্যাপারশতে
 নাপি শুকবৎ পাত্যতে বকঃ ॥ অন্যচ্চ । অস্মিন্স্থ নিৰ্গুণং
 গোত্রে নাপত্যমুপজায়তে আকরে পদ্মরাগাণাং জন্ম কাচ
 মণেঃ কুতঃ । অতোহং পশ্যমাশাভ্যন্তরে তব পুত্রান্ নীতি
 শাস্ত্রাভিজ্ঞান্ করিষ্যামি । রাজা সত্বিনয়ং পুনরুবাচ ।

যেহেতুক কাঞ্চন সংসর্গেতে কাচ যেমন মারকতমণির
 দ্রুতিকে ধারণ করে তেমন পণ্ডিতস্নিধানেতে মূর্খ ও
 প্রবীণতাকে পায় । পণ্ডিতেরা সে প্রকার কহিয়াছেন ।
 হীনলোকেরদের সহসমেতে মতি হীন হয় এবং সমমান
 লোকেরদের সহিত বাসেতে মতি সমতাকে পায় এবং
 উত্তম লোকেরদের সহিত বাসেতে মতি উত্তমতাকে
 পায় । ইহার মধ্যে বৃহদ্রথি তুল্যনকল নীতিশাস্ত্রের
 যথার্থজ্ঞাত বিষ্ণুশম্ভা নামে এক পণ্ডিত কহিলেন

হে মহারাজ সৎকুলোদ্ভব এই রাজপুত্রেরা এইহেতুক
 আনাইতে নীতিশাস্ত্র গৃহণ করিতে শক্ত হইবেন যেহেতুক
 কোন ক্রিয়া অস্থানে পতিত হইলে ফলবতী হয় না যেমন
 নানাপকার যত্নেও শুকপক্ষির ন্যায় বক কখনো পড়ে না।
 আর এগোত্রে নিগণ সন্তান জন্মে না যেহেতুক পদ্মরাগ
 নগির আকরেতে কাচ নগির জন্ম কোথায় এই হেতুক আমি
 ছয় আসের মধ্যে তোমার পুত্রদিগকে নীতি শাস্ত্রজ্ঞ
 করিব। রাজা পুনর্বার বিনয় পূর্বক কহিলেন।

as a piece of glass, from the vicinity of gold, acquireth
 the colour of a topaz, so a fool may derive some conse-
 quence from the presence of a wise man.

Again

the mind is depraved by the society of the low, it riseth
 to equality with equals, and to distinction with the
 distinguished.

Of this assembly there was a great pandit by name
 Vishnu-Sarma, well versed in the principles of all the
 Niti-Sastras, as it were another Vrihaspati, who replied,
 —“ These young Princes, O mighty Raja! being the
 offsprings of an illustrious race, are capable of being
 instructed in the Niti-Sastras; but

labour, bestowed on nothing, is fruitless: With infinite
 pains a booby will not, presently, talk like a parrot.

In a noble race, levity without virtue is seldom found.

In a mine of rubies, when shall we find pieces of glass?

Wherefore, I will engage, that in the space of six mon-
 ths, I will render thy sons well acquainted with the doc-
 trines of the Niti-Sastras.”

The Raja then respectfully said:

কীটোপি সুমনঃ সজ্জাদারোহতি সতাং শিরঃ ।
 অশ্মাপি য়াতি দেবত্বং মহদ্ধিঃ সুপ্রতিষ্ঠিতঃ ॥ অন্যস্ব ।
 যথোদয়গিরেদ্রব্যং সন্নির্কর্ষণে দীপ্যতে তথা সত্বস্নিধানেন
 হীনবর্ণোপি দীপ্যতে । তদেতেষামস্মাত্যুবাণাং নীতিশাস্ত্রো
 পদেশায় ভবন্তঃ প্রমাণমিত্যুক্তা তস্য বিষ্ণুশর্ম্মণো
 বজ্রমানপুরঃসরং পুত্রান্ সমর্পিতবান্ ॥ অথ প্রাসাদদৃষ্টে
 সুখোপবিষ্টানাং রাজপুত্রাণাং পুরস্তাৎ প্রস্তাবক্রমেণ
 সপণ্ডিতোঽব্রবীৎ । কাব্যশাস্ত্রবিনোদেন কালাগচ্ছতি
 ধীমতাং । ব্যসনেন চ মূর্খানাং নিদ্রয়া কলহেন বা ॥
 তদ্রবতাং বিনোদায় কাংকূর্মাदीনাং বিচিচিং কথ্যং কথ
 যামি ॥ রাজপুত্রৈরুতং কথ্যতাং বিষ্ণুশর্ম্মা বাচ যুয়ং শৃণুত

পূর্ণ মহবাসেতে কীট ও সজ্জাদারোহণ করে এবং
 সজ্জাদারদের কতক সুপ্রতিষ্ঠিত পুত্রও দেবত্বকে পায় ।
 আর যেমন উদয়াচলস্থ দুর্বা সূর্য্যসন্নিধানেন দীপ্তি পায় তেম
 নি সৎসন্নিধানেনেতে হীন বর্ণও দীপ্তি পায় সেইহেতুক এই
 আমার পুত্রেরদিগকে নীতি শাস্ত্রোপদেশের নিমিত্ত তোম
 রাই জানি হইয়াছ । ইহা কহিয়া সেই বিষ্ণুশর্ম্মার বহুসম্মান
 পত্রক পুত্রেরদিগকে সমর্পণ করিলেন । অনন্তর প্রাসাদের
 উপর সুখেতে উপবিষ্ট রাজপুত্রেরদিগের সম্মুখে পস্তাব
 ক্রমেতে সেই পণ্ডিত কহিলেন । কাব্য শাস্ত্রের আনোদোত
 পণ্ডিতেরদের কালযাপন হয় ব্যসন অথাৎ স্ত্রীও দূত ও

পান ও বখা পর্যটন ও মৃগয়া ও দিবসে নিদ্রা ও কলহ ইত্যাদিতে
 মথেরদের কাল যা পন হয় সেই হেতু কতোনারদের আমোদের
 নিমিত্ত বিচিত্র কাক কখাদি কথা কহি । রাজপুত্রেরা কহি
 লেন কহন । বিষ্ময় কহিতেছেন রাজপুত্রেরা শুবণ করহ ।

Even a reptile, when attached to a flower, may mount
 upon the head of the holy; even a stone, when set up
 and consecrated by the great, attaineth divinity

for it is said,

As a thing on the eastern mountains shineth by the pre-
 sence of the sun, so one of humble birth, even, may be
 enlightened by the allurements of good books.

Then be thou an example to these, my sons, for the ac-
 quisition of virtue. Having said this, he respectfully de-
 livered his sons into the charge of Vishnu-Sarma, and
 that learned Pandit, soon after, siezed the opportunity,
 when they were, for amusement, sitting together upon
 the terrace of their father's palace, to introduce his ad-
 vice to the young princes in the following lines:

Wise men pass their time in amusements drawn from
 the works of the poets, whilst fools squander theirs in
 useless pursuits is, sloth, or riot.

For your amusement, therefore, said he, I am going
 to relate some curious stories of a Crow, a Tortoise,
 and other animals.

CHAP I.

Vishnu-Sarma then told the young princes to attend,
 and said,

সংপ্রতি মিত্রলাভঃ প্রসূ্যতে । যস্যায়মাযঃ শ্লোকঃ ।
 অসাধনা বিত্তহীনা বহিমন্তঃ সুহৃৎতমাঃ । সাধয়ন্ত্যাগু
 কার্য্যাণি কাককূর্মমৃগা ~~কাক~~ ॥ রাজপুত্রা উচুঃ কথমেতৎ ।
 সোব্রবীৎ অস্তি গোদাবরীতীরে বিশালঃ শাল্মলীতরুঃ
 তত্র নানাদিগ্দেশাদাগত্য রাত্রৌ পল্লিণো নিবসন্তি ।
 অথ কদাচিদবসন্তায়াং রাত্রৌ অস্তাচলচূড়াবলম্বিনি
 ভগবতি কুমুদিনী নায়কে চন্দ্রসসি লবুপতনকনামা
 বাযসঃ প্রবুদ্ধঃ কৃতান্তমিবা দ্বিতীয়মটন্তং ব্যাধমপশ্যত্
 তমবলোক্য চিন্তয়ত্ অথ প্রাতরেবা নিষ্টদর্শনং জাতং ন
 জানে কিমনভিমতং দর্শয়িষ্যতি ইত্যুক্তা তদনুসরণক্রমেণ
 ব্যাকুলশ্চলিতঃ । যতঃ । শ্লোকস্থানং সহস্রাণি ভয়স্থানং
 শতানি চ । দিবসে দিবসে মূढমা বিশন্তি ন পণ্ডিতং ॥

জম্পুতি মিত্রলাভ পুস্তাব করি যাহার পুথনেতে এই শ্লোক
 কাক ও কূর্ম ও মৃগ ও ন্যিক ইহারা উপায় রহিত অথচ ধন
 হীন ইহারা ও বুদ্ধিমত্তা পুষুক্ত শীঘ্র কার্য সাধন করে । রাজ
 পুত্রেরা কহিলেন এ কি পকার । বিষ্ণুশর্মা কহিলেন । গোদা
 বরীর তীরে এক বড় শাল্মলী বৃক্ষ থাকে নানা দিগ্দেশ হইলে
 আনিয়া পক্ষিরা এ বৃক্ষে রাত্রিকালে বাস করে । অনন্তর কোন
 দিন রাত্রি অবসন্ন হইলে কুমুদিনী নায়ক চন্দ্র অস্তাচল চূড়া
 বলম্বী হইলে অথাৎ অস্ত গৌলে পর লঘু পতন নামে কাক
 জাগুং ইহারা দেখিল দ্বিতীয় যমের ন্যায় ভ্রমণ করিতেছে এক

for the man having regarded him began to consider the
 व्याधताहाके अवलोकन करिया चिन्ता करितेनागिल अद्या =
 seeing in such manner, I see, I know not what disaster is
 पातःकालेईअमङ्गल दर्शनईईलं नाजानि किअमङ्गल देखा
 I see this saying the fool after he went by deep trouble
 ईबे ईहाकहिया व्याधेर पश्चात् गमन क्रमेते व्याकुल चित्त
 being he went away for sorrow, plain a hundred and one years, I have a heart
 हईया चलिना। येहेतुक शोकस्थान सहस्र २ एव भयस्थान शत
 these truly the foolish defect the coward was
 आछेईहारा पुताह नूतलोकके अभिभव करे पण्डितकेनया।

—The present subject to be discussed is, *The Acquisition of a Friend* to which these following lines are an introduction:

Wise and sincere friends, although poor and destitute of implements, may speedily effect our purposes, as in the instances of the Crow, the Tortoise, the Deer, and the Mouse.

The young princes demanded how this was, and Vishnu-Sarma related as follows:

FABLE I.

ON the banks of the river Godavari there was a Salimali tree, to whose spreading branches birds of various species were wont to flock, from every quarter, to roost. Early one morning, when darkness was dispersing, and the moon, whose emblem is the flower Koonoodum-nayaka, was reclining upon the summit of the mountain Charama, a certain Crow, whose name was Laghoopatanaka, being awake, chanced to espy a Fowler coming that way, who appeared to him as another angel of death. Having regarded him, and considered for a moment, he said to himself,—This unwelcome visit appeneth to day very early, and I know not what may be the consequence. So pondering upon what he saw, he was seized with a panic, and flew out of the way: for, a thousand occasions for sorrow, and a hundred for fear, lay by day allail the fool, not so the wise man.

অন্যত্র । বিষয়িণামিদমবশ্যং কৰ্ত্তব্যং । উত্থা
 যোত্থায় বোদ্ধব্যং মহত্ত্বয়নুপস্থিতং । মরণব্যাদি
 শোকানাং কিময় নিপতিষ্যতি॥ অথতেন ব্যাধেন তণ্ডুল
 কণান্ বিকীর্য জালং বিস্তীর্ণং কৃৎবা সচ প্রচ্ছন্নোভূত্বা
 স্থিতঃ অস্মিন্বেব কালে চিত্রগ্রীবনামা কপোতরাজঃ
 সপরিবারোবিযতি বিসর্পস্তাং স্তণ্ডুলকণানবলোকয়া
 মাৎ ততঃ কপোতরাজস্তণ্ডুলকণলুপ্তান্ কপোতান্
 প্রত্যাহ কুতোঽত্র নিৰ্জনে বনে তণ্ডুলকণানাং সম্ভবঃ
 তন্নীরূপ্যতাং তাবৎ । ভদ্রমিদং ন পশ্যামি প্রায়েণানেন
 তণ্ডুলকণলোভেনাস্মাভিরপি তথা ভবিতব্যং । কঙ্কণস্য
 তু লোভেন মমঃ পঙ্কে সুদুস্তরো বৃদ্ধব্যাঘ্রেণ সম্প্রাপ্তঃ পথিকঃ
 স্মৃতোযথা ॥ কপোতাউচুঃ কথমেতৎ । সোঽব্রবীৎ

আর বিষয়িরদের ইহা অবশ্য কর্তব্য উপস্থিত যে মহাভয়
 তাহা উঠিয়া বসিবে কেননা মরণ ও ব্যাধি ও শোক
 ইহার মধ্যে না জানি কি অদ্য পড়িবে । অনন্তর সেই ব্যাধি
 তণ্ডুল কণা ছড়াইয়া এবং জাল বিস্তার করিয়া আপনি
 লুক্কায়িত হইয়া থাকিল । এই কালে সপরিবারে চিত্রগুবনা
 নে কপোতরাজ আকাশে বিহরত সেই তণ্ডুলকণাসকল
 অবলোকন করিল। অনন্তর কপোতরাজ তণ্ডুল কণানোভি
 কপোতের দিগের পুতি কহিল কি কপে এনির্জন বনে তণ্ডুল
 কণার সম্ভব তাহা নিকর্ণ কর এ ভাঁন দেখি না এই তণ্ডুল

as if by design, we see who so well as
 कणार लोभेते आमार ओ पाय तेमनि हईब येमन
in old desire by meatwater mud in sink and travels who an old Jew
 कङ्कलोलोभेते दुस्तुर पङ्केतेमधु ये पथिक से बद्ध व्याघ्र
he found being unskilled - the pigeon said - how was it
 कत कपाष्ठ हईया भरियाछे कपोतेरा कहिल ए कि पुकार
the pigeon king replied -
 कपोतराज कहिल ।

Yet, it is said, that men of the world must absolutely act according to these lines:

Every time we rise, great fear is to be apprehended; for, to-day, of death, sickness, and sorrow, we knoweth which may fall upon us:

The fowler, having first strewed some rice upon the ground, spread his nets, and whilst this was transacting, it happened that Chitra-griva, the chief of a flock of pigeons, was in the air flying about with his attendants. He saw the grains of rice upon the ground, and perceiving that his flock shewed an inclination to partake of them, he addressed them thus.—Beware, my friends!

Whence, think you, should rice be produced in a place like this, void of inhabitants: Let this, therefore, be investigated, for I conceive no good can come of it, lest we should experience a fate similar to what is mentioned in the following lines:

A Traveller, through lust of gold, being plunged into an inextricable mire, is killed and devoured by an old Tiger.

How did this happen? demanded the pigeons, and their place related as follows:

অহমেকদা দক্ষিণারণ্যে চরন্নপশ্যৎ একোবৃদ্ধোব্যাঘ্রঃ
 স্নাতঃ সরস্বতীরে ব্রূতে ভোভোঃ পান্য ইদং সুবর্ণকঙ্কণং কুশ
 হস্তোন্মহ্যতাং ততোলোভাক্ষেণ কেনচিত্ পান্যেনালোচিত
 ভাগ্যেনৈতৎ সম্ভবতি কিং ত্বস্মিন্নাত্মসন্দেহে প্রবৃत्तिর্ন
 বিধেয়া । যতঃ । অনিষ্টাদিষ্টলাভে ঽপি ন গতির্জাযতে
 শুভা । যত্রাস্তে বিষসংসর্গাসৃতং তদপি সৃত্যবে ॥ কিন্তু সর্ব
 ভার্ধার্জনে প্রবৃत्তিঃ সন্দেহএব । তথা চোক্তং ॥ ন সংশয়
 মনারুহ্য নরোভদ্রাণি পশ্যতি । সংশয়ং পুনরারুহ্য যদি
 জীবতি পশ্যতি ॥ তদ্বিরূপচামি তাবৎ প্রকাশং ব্রূতে
 কুব তব কঙ্কণং । ব্যাঘ্রোহস্তং প্রসার্য্য দর্শয়তি । পান্যো
 এবদৎ কাযং নারাঢ়কে ত্বয়ি বিশ্বাসঃ । ব্যাঘ্রউবাচ

আনি এক জনর দক্ষিণারণ্যে বিহরত দেখিলান এক সরো
 বরের তীরে এক বৃদ্ধ ব্যাঘ্র স্নাত ও বৃশহস্ত হইয়া কহিতেছে
 ভো২ পথিক এই সুবর্ণ কঙ্কণ গৃহণকর । পরে লোভী কোন
 পথিক পরানিশ করিলভাগ্যক্রমে এতাদৃশ লাভ হয় কিন্তু পুণ্যের
 সন্দেহ এ বিষয়েতে পুৰ্ব্বভিক্তব্য । নয় যেহেতুক অনিষ্ট হইতে
 ইষ্ট লাভেতেও মঙ্গল হয় না যেমন বাহাতে বিষের সংসর্গ
 আছে সে অমৃত ও সরণের নিমিত্ত হয় কিন্তু সত্যতঃ ধনোপার্জনে
 পুৰ্ব্বভি সন্দেহেতেই হয় । সে পুকার পাণ্ডিতেরা কহিয়াছেন

uncertainty surmounting not doing men good yet not but
 সশয়কে আরোহণ না করিয়া মনুষ্য মজ্জল দেখে না কিন্তু
 uncertainty surmounting it he surmounts then good he does him
 সশয়কে আরোহণ করিয়া যদি বাচে তবে মজ্জল দেখে অত
 he then surmounts this the traveller openly
 এব তাহা নিকপণ করি । পথিক পুকাশ করিয়া কহিতেছে
 your bracelet where the tiger has extended his
 তোনার কঙ্কণ কোথায় ব্যাঘ্র হস্ত বিস্তার করিয়া দেখাই
 to see it then the traveller said I am in a hurry - v. f.
 তেছে । অনন্তর পথিক কহিলেন তুমি হিঁসুক তোমাতে
 he v. f. can I believe - the tiger said -
 কি পুকার বিশ্বাস হয় । ব্যাঘ্র কহিল

FABLE II.

AS I was travelling on the southern road, once upon a time, I saw an old Tiger seated upon the bank of a large river, with a bunch of Koosagrass in his paw, calling out to every one who passed,—Ho' ho' traveller, take this golden bracelet. But every one was afraid to approach him to receive it. At length, however, a certain traveller, tempted by avarice, regarded it as an instance of good fortune; but, said he, in this there is personal danger, in which we are not warranted to proceed.

It is not good to pass by that we dislike, even to gain that which we like; for the water of life becometh mortal when mixed with a poison. Yet, said he, there is risk in every undertaking, for the acquisition of wealth: Hence, it is said, No man beholdeth prosperity who doth not encounter danger, but having encountered danger, if he surviveth, he beholdeth it. The Traveller then asked him where was the bracelet, and the Tiger having held out his paw, shewed it to him, and said,—Look at it, it is a golden bracelet. How shall I place confidence in thee, said he Traveler; and the Tiger replied,

শৃণু রে পান্থ প্রাগেব যৌবনদশায়ামতিদুর্ধতোস্মি
 অনেকগোমানুষাণাং বধান্মে পুত্রামৃতা দারাশ্চ বংশহীন
 স্বাহম্ ততঃ কেচিদ্ধার্মিকেনাহমাदिष्टः । দানধর্মা
 দিকচ্ছরতু ভবান্ তদুপদেশাদিদানীমহং স্তানশীলো
 দাতা বৃদ্ধোগলিতনখদন্তো ন কথং বিশ্বাসভূমিঃ । যতঃ
 ইজ্যাধ্যয়নদানানি তপঃ সত্যং ধৃতিঃ क्षमा। অলোভ ইতি
 মার্গোऽयং ধর্মস্বাষ্টবিধঃ স্মৃতঃ ॥ তত্র পূর্বশ্চতুর্বর্গো
 দম্ভার্থমপি সেয্যতে । উত্তরস্তু চতুর্বর্গোমহাত্মন্দেব
 तिष्ठति ॥ মম চৈতাবান্ লোভবিরহো যেন স্বহস্ত
 স্যমপি সুবর্ণকঙ্কণং যস্মৈ কস্মৈচিদাতুমিচ্ছামি তথা
 পি ব্যাভ্রোমানুষং ছাদতীতি লোকাপবাদো দুর্নিবারঃ ।

শুন রে পথিক পূর্বকালে যৌবনদশাতে আমি অতিদুর্ভক্ত
 ছিলাম অনেক গো ও মনুষ্যেরদিগের বধ করাতে আমার
 জ্ঞাও পুত্রেরা মরিয়াছে অতএব বংশহীন হইয়াছি অনন্তর
 কোন ধার্মিক আমাকে কহিয়াছেন যে তুমি দান ও ধর্মাদি
 আচরণ করহ সেই উপদেশ পুষ্টক এখন আমি স্তানশীল
 ও দাতা ও বৃদ্ধ ও গলিতনখদন্ত কইয়াছি ইহাতে কেন বিশ্বাস
 স্থান না হই । যেহেতুক যজ্ঞ ও দান ও অধ্যয়ন ও তপস্যা ও
 সত্য ও ধৃতি ও ক্ষমা ও অলোভ এই আট পকার ধর্মের পথ
 তাহার মধ্যে পব্ধ চতুষ্টয় দম্ভের নিমিত্তেও সেবা করে উত্তর
 চতুষ্টয় মহাত্মাতেই থাকে । আমার এমন লোভবিরহ

that my hand off gold bracelet some person to give
 हইয়াছে যেআপন হস্তগত সুবর্ণকঙ্কণ কোন লোককে দিতে
my wish is - with trying men eat -
 ইচ্ছা করি তেছি । তথাপি ব্যাঘ্র মনুষ্যকে খায় এই
a wicked people is - that prevent to do as well -
 অপবাদ লোকে আছে তাহা নিবারণ করা যায় না

—Formerly, in the days of my youth, I was of a very wicked disposition, and as a punishment for the many men and cattle I had murdered, my numerous children died, and I was also deprived of my wife; so, at present, I am destitute of relations. This being the case, I was advised, by a certain religious person, to practise charity and other religious duties; I am now grown extremely devout: I perform ablutions regularly, and am charitable, Why then am I not worthy of confidence;

The study of what is ordained, charity, mortifications of the flesh, and sacrifices; fortitude, forgiveness, rectitude, and modesty, form the true way, and are recorded the eight-fold division of our duty.

Of these, the first class, consisting of four, is attended to for the sake of hereafter; and the latter class of four, presideth in every great mind.

So far, you see, continued the Tiger, I have an interest in wishing to give away, to some one, this golden bracelet from off my own wrist;

This I have considered, and now let me ask thee plainly, where is thy gold; But stop, Tigers eat men, and the opinion of the world is hard to be defeated; for,

যতঃ । গতানুগতিকোলোকঃ কুট্টিনীমুপদেশিনী ।
 প্রমাণয়তি নো ধর্মো যথা গোঘ্নমপি দ্বিজং ॥ মযা চ
 ধর্মশাস্ত্রাণ্যধীতানি শৃণু । প্রাণায়ত্মনোভীষ্টাভূতা
 নামপি তে তথা । আত্মোপম্যেন ভূতানাং দয়াং কুর্ষন্তি
 সাধবঃ ॥ অপরঞ্চ । প্রত্যাখ্যানে চ দানে চ সুখদুঃখে
 প্রিয়াপ্রিযে আত্মোপম্যেন পুরুষঃ প্রমাণমধিগচ্ছতি ॥
 অন্যঞ্চ । মাতৃবত্পরদারেষু পরদ্রব্যেষু লোভবৎ । আত্মবৎ
 সর্বভূতেষু যঃ পশ্যতি স পণ্ডিতঃ ॥ ত্বজ্জাতীব দুর্গতস্মিন
 তত্তুভ্যং দাতুং সযতোহম্ । তথা চোক্তাং । দরিদ্রান্ভর
 কৌন্তেয় মা প্রযচ্চেশ্বরে ধনং । ব্যাধিতস্যৌষধং পথ্যং নীরু
 জস্য কিমৌষধৈঃ ॥

যেহেতুক ধারাবাহিক লোকেরা উপদেশিনী কুট্টিনীকে
 ধর্মবিষয়ে পুমাণ করে না যেমন গোঘ্ন বৃক্ষকে পুমাণ করে
 না । আমি ধর্মশাস্ত্র পাঠি যাছি শুন যেমন আপনার পুমাণ ইষ্ট
 তেমন সকল জীবের পুমাণও ইষ্ট হয় অতএব সাধলোকেরা
 আত্মবৎ সকল জীবকে দয়া করেন । অপর নিষেধ করাতে
 অথাৎ যাচকের যে অপিয় দুঃখ এবং দান দেওয়াতে যে পিয় সুখ
 তাহা সৎপুরুষেরা আত্মদৃষ্টান্তেতে পুমাণ জানেন । এবং যে
 লোক পরদ্রব্যকে মাতার ন্যায় ও পরের দুব্যকে শুক্রমত পিণ্ডের
 তুল্য ও সকল জীবকে আপনার ন্যায় দেখে সেই পণ্ডিত ।

than very poor therefore thee to give I
 तनि अतिदरिद्रु सेहैतक तोनाके दिते आनि सचेष्टे
 हईयाछि। सेहै पुकार पाण्डितेरा कहियाछेन। ये हे बुधिष्ठिर
 दरिद्र लोकके प्रतिपालन कर धनिके धनदिओ ना येनन
 रोगिर औषध पथ्य ह्य अरोगिर औषधे कि प्रयोजन।

The people, mere followers of one another, holds up a bawd and a Brahman who is a cow-killer, as examples in our religion.

I too, replied the Tiger, have read religious books: Hear what they say,—As their own lives are most dear to them, so also are those of all creatures. Good men, because of their own likeness, shew mercy unto all things which have life.

In granting and in refusing, in joy and in sorrow, in liking and in disliking, good men, because of their own likeness, shew mercy unto all things which have life.

He is a learned man, who considers the wife of another man, as his own mother, the property of another man, as dust; and the life of every animal as dear as his own.

and as thou appearest to be rather a poor man, I prefer giving it to thee according to this saying:

Make choice of the poor, O son of Koonti, and bestow not thy gifts on others. Medicine is to be administered to the sick; for of what benefit is physic to those who are in health;

अन्यच्च । दातव्यमिति यद्दानं दायतेऽनुपकारिणे ।
 देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं विदुः ॥ तद्वच्च सरसि
 स्नात्वा सुवर्णकरुणं गृहाण ततो यावदसौ तद्वच्चः प्रती
 तोलोभात् सरः स्नातुं प्रविशति तावन्महापङ्के निमग्नः
 मृत्लाघितुमल्लभः पङ्के पतितं दृष्ट्वा व्याघ्रोऽवदत् अहह
 महापङ्के पतितोसि अतस्त्वामहमुत्थापयामीत्युक्त्वा शनैः
 शनैरुपगम्य तेन व्याघ्रेण धृतः सपान्थोऽचिन्तयत् । न
 धर्मशास्त्रं पठतीति कारणं नचापि वेदाध्ययनंदुरात्मनः ।
 स्वभावएवात्र तथातिरिच्यते यथा प्रकृत्या मधुरङ्गवां
 पयः ॥ किञ्च । अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव
 क्रिया । दुर्भगाभरणप्रायोज्ञानंभारः क्रियां विना ॥

अपरदे^{अपरदे} उपाय^{उपाय} पशु^{पशु} इह^{इह} माने^{माने} करिया^{करिया} काश्यादि^{काश्यादि} तीर्थे^{तीर्थे} गुह्यादि^{गुह्यादि}
 काले^{काले} अग्निहोत्रादि^{अग्निहोत्रादि} पात्रे^{पात्रे} अनुपकारिके^{अनुपकारिके} ये^{ये} दान^{दान} करे^{करे} सेह^{सेह}
 दानके^{दानके} सात्त्विक^{सात्त्विक} करिया^{करिया} पशुतेरा^{पशुतेरा} जानेन^{जानेन} अतएव^{अतएव} एह^{एह} सरो^{सरो}
 वरे^{वरे} स्नान^{स्नान} करिया^{करिया} सुवर्ण^{सुवर्ण} करुण^{करुण} गुह्य^{गुह्य} करह^{करह} । अनन्तर^{अनन्तर} यथन^{यथन}
 पथिक^{पथिक} ताहार^{ताहार} बाकोते^{बाकोते} पुत्राय^{पुत्राय} करिया^{करिया} लोभेते^{लोभेते} स्नान^{स्नान} करि^{करि}
 बार^{बार} निगिडे^{निगिडे} सरोवर^{सरोवर} पुविष्ट^{पुविष्ट} इहिन^{इहिन} तथन^{तथन} महापाङ्के^{महापाङ्के} मग्न^{मग्न}
 इहिया^{इहिया} पलाइते^{पलाइते} असमर्थ^{असमर्थ} इहिन^{इहिन} । पङ्के^{पङ्के} पतित^{पतित} पथिकके^{पथिकके}
 देखिया^{देखिया} ब्यागु^{ब्यागु} कहिन^{कहिन} हाय^{हाय} हाय^{हाय} बह^{बह} पाङ्के^{पाङ्के} पतित^{पतित} इहिया^{इहिया}

Therefore you I will help out, the haump said slowly near
 অতএব তোমাকে আমি উঠাই ইহা কহিয়া অল্পে নিকটে
 গিয়া সেই ব্যাঘ্র তাহাকে ধরিল তখন সে বুদ্ধি চিন্তা করিল
 দুরাচার ধর্মশাস্ত্রের পাঠ ও বেদের অধ্যয়ন ধর্মিষ্ঠতা হওনের
 কারণ নহে কিন্তু গোকর দুগ্ধ স্বভাবেতেই যেমন মধুর হয়
 তেমনি স্বভাব অতিরিক্ত হয় এবং মন ও ইন্দ্রিয় অবশ্য বাহার
 দিগের তাহার দিগের ক্রিয়া হস্তির স্নানের ন্যায় অর্থাৎ হস্তির
 সূঁড়ো দ্বারা স্নান করিয়া যেমন স্নান সম্পন্ন হয় না আর দূর্ভাগা স্ত্রীর
 অলঙ্কারের ন্যায় ধর্মশাস্ত্রান ব্যতিরেকে জ্ঞান হওয়া ভার ।

And this:

The gift which is to be given, should be given gratuitously; in time, in place, and to a proper object; and such a gift is recorded a righteous gift.

Then go, and having purified thyself in this stream, take the golden barcelet.—The Traveller no sooner begins to enter the river to purify himself, than he sticks fast in the mud, and is unable to escape. The Tiger told him he would help him out; and creeping softly to wards him, the poor Traveller is seized, and instantly exclaims to himself,—Alas! the career of my heart is cut short by fate!

He readeth not the Dharma-Sastra,—is this the cause; or doth he not study the veds; In this matter the natural disposition of his wicked spirit prevaieth, even as the milk of the cow is by nature sweet.

What is done for those who have not their passions in subjection, is like washing the elephant. Service rendered to the unfortunate is, for the most part, like knowledge without practice.

তন্ময়া ভদ্রং ন কৃতং যদত্র মারাत्मকে বিশ্বাসঃ কৃতঃ।
 তথা চোক্তা। শৃঙ্খিনাশ্চ নদীনাশ্চ নলিনাং শস্তুপাণিনাং।
 বিশ্বাসেনৈব কৰ্ত্তব্যঃ স্ত্রীপুৰাজকুলেষু চ ॥ অপরश्च ।
 सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावानेतरे गुणाः । अतीत्य हि
 गुणान् सर्वान् स्वभावोमूर्द्धि वर्त्तते । अन्यच्च । स हि
 गणविहारी कल्मषध्वंसकारी दशशतकरधारो
 ज्येतिषां मध्यचारी । विधुरपि विधि योगात् यस्यते
 राज्ञासौ लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः ।
 इति चिन्तयन्नेवासौ व्याघ्रेण व्यापादितः खादितश्च ।
 अतोहं ब्रवीमि कङ्कणस्य तु लोभेन इत्यादि । अतः
 सर्वथा अविचारितं कर्म न कर्त्तव्यमिति ।

অতএব আমি ভাল করিনাই যেহেতুক মারাत्मকে বিশ্বাস
 করিয়াছি । সেইরূপ শৃঙ্খিনাশ্চ নদীনাশ্চ নলিনাং শস্তুপাণিনাং
 বিশ্বাসেনৈব কৰ্ত্তব্যঃ স্ত্রীপুৰাজকুলেষু চ ॥ অপরश्च ।
 सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावानेतरे गुणाः । अतीत्य हि
 गुणान् सर्वान् स्वभावोमूर्द्धि वर्त्तते । अन्यच्च । स हि
 गणविहारी कल्मषध्वंसकारी दशशतकरधारो
 ज्येतिषां मध्यचारी । विधुरपि विधि योगात् यस्यते
 राज्ञासौ लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः ।
 इति चिन्तयन्नेवासौ व्याघ्रेण व्यापादितः खादितश्च ।
 अतोहं ब्रवीमि कङ्कणस्य तु लोभेन इत्यादि । अतः
 सर्वथा अविचारितं कर्म न कर्त्तव्यमिति ।

what written is that to the one who able is - in the way
 যে লিখিত আছে তাহা খণ্ডিতে কে শক্ত হয়। এই পুকার
meditating that traveller by the tiger, tiger & deer was -
 চিন্তা করত এ পথিক ব্যাঘ্রকতক ধৃত ও ভক্ষিত হইল।
Therefore I say that Brahma's teaching as a traveller
 অতএব আমি কহি যে ব্রহ্মের নোভেতে যেমন পথিক
 Brahma's teaching as a traveller - therefore I call him
 ব্রাহ্মণ পক্ষেতে নগ্ন হইল ইত্যাদি এই নির্মিত্তে সর্বপুকারে
 Brahma's teaching as a traveller - therefore I call him
 অবিচারিত কথ্য কথব্য নয়।

I did not well in that, I placed confidence in one of such an evil disposition ! for it is said, Confidence should not be put in rivers; in animals which have claws or horns, in men with weapons in their hands; nor in women; nor in those of royal birth.

The natural, and no other qualities should be examined, for the natural qualities pass over all others, and mount upon the head.

The Moon that rolls across the sky, destroys sins, possesses a thousand rays, and goes between the light of the sun and the earth, and is accidentally seized by Rahoo, therefore no one is able to deny that it is written by God in fate.

But whilst the unfortunate Traveller was thus meditating on his fate, he was devoured by the Tiger. I have said, therefore, *Through the lust of a bracelet, &c.* and hence also, it is at no time proper to undertake any thing without examination; as in the following saying;

যতঃ । সুজীর্ণমন্নং সুবিচক্ষণঃ সুতঃ সুশাসিতা স্ত্রী
 নৃপতিঃ সুসেবিতঃ। সুচিন্ত্য চোক্তং সুবিচার্য্য যত্নতং সুদী
 র্ঘকালেপি ন যাতি বিক্রিয়াং ॥ এতদ্বচনং শ্রুত্বা কাশ্চিত্
 কপোতঃ সদৰ্পমাহ আঃ কিমেবমুচ্যতে । বৃদ্ধস্য বচনং
 গ্রাহ্যমাপত্ কালে হ্যুপস্থিতে । সৰ্ব্বত্রৈব বিচারেণ ভোজনেষ্য
 প্রবর্ততে ॥ যতঃ । শঙ্কাভিঃ সৰ্ব্বমাক্রান্তমন্নং পানঞ্চ ভূতলো
 প্রবৃন্তি কুত্র কৰ্ত্তব্য জীবিতম্ কথং নু বা ॥ তথাচোক্তং ।
 ইর্ষী ঘৃণী ত্বসন্তুষ্টঃ ক্রোধনো নৈত্যশক্তিঃ । পরমার্গ্যো
 যজীৱীচ পডেতে দুঃখভাগিনঃ ॥ এতচ্ছ্রুত্বা সৰ্ব্ব কপোতা
 স্তত্রোপবিষ্টাঃ । যতঃ । সুমহান্যপি শাস্ত্রাণি ধারয়ন্তো
 বজ্রশ্রতাঃ । ক্লেতারঃ সংশয়ানাঞ্চ ক্লিষ্ট্যন্তে লোভমোহিতাঃ ॥

যেহেতুক বিনাকগ জীর্ণ অন্ন ও উত্তম পণ্ডিত পুত্র ও অতি
 শয় বশীভূতা স্ত্রী ও সুসেবিত রাজা ও বিনাকগ বিচার করিয়া
 যাহা করা যায় ইহারা বহুকালেতেও বিকর পায় না ।
 এ কথা শুনিয়া কোন কপোত দৰ্প করিয়া কহিল আঃ একি
 কহিতেছ । আপেকাল উপস্থিত হইলে বৃদ্ধলোকের বাকা
 গৃহ হয় আর অন্যত্রও বিচারক্রমে গৃহ হয় কিন্তু ভোজন
 রিষয়ে গৃহ নয় । যেহেতুক পৃথিবীমণ্ডলে সকল অন্ন ও
 জলাদি আশঙ্কাদ্বারা ব্যাপ্ত আছে তাহাতে কোথা পূৰ্ব্ভি
 কৰ্তব্য কি প্রকারে বা জীবন ধারণ কৰ্তব্য । সেই প্রকার

The friends have said envy-having & suspect-having & dissatisfied
 পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন ঈর্ষাবিশিষ্ট ও ঘৃণায়ুক্ত ও অসন্তুষ্ট
& passionate & altogether suspicious - when fortune brings you the six pros
 ও ক্রদ্ধ ও সর্বদা সশঙ্ক আর পরভাগ্যোপজীবী এই ছয়জন
suffering affliction all this having heard all the persons that place on suffer
 দুঃখভাগী হয়। ইহা শুনিয়া সকল কপোত সে স্থানে উপবিষ্ট
were. where the learned many others knowing & doubt's
 হইল যেহেতুক পণ্ডিতেরা মহাশাস্ত্র জানিয়া ও আর সন্শয়ের
dispellers are even by advance supposed being trouble receive do-
 ছেদনকর্ত্তা হইয়াও নোভে মুখ হইয়া ক্লেশপ্ৰাপ্তহয়েন।

Well-digested food, a well-discerning child, a well-governed wife, a prince well served, a speech well considered, and an action well weighed, are not, even in very long time, attended by disagreeable consequences.

One of the pigeons, who was of a haughty spirit, having heard what had been said, exclaimed,—Ha! what is this; Is it not said,

In times of necessity the words of the wise are worthy to be observed; by whose determination we may freely engage in all things, even in eating.

All things upon the face of the earth, our meat and our drink, bear cause of suspicion; then how is forbearance to be exercised, and life to be supported?

Again it is said,

These six—The peevish, the niggard, the dissatisfied, the passionate, the suspicious, and those who live upon others means—are for ever unhappy.

So having heard these words, the whole flock flew down upon the grain.

Those, even, who possess very many Sastras, are learned in the Vedas, and are the dispellers of doubt, experience trouble, when their reason is blinded by avarice

অন্যত্র । লোভাত্ ক্রোধঃ প্রभवति लोभात् कामः
 प्रजायते । लोभान्मोहश्च नाशश्च लोभः पापस्य
 कारणं ॥ अनन्तरं सर्वे जालनिवद्भावभूवुः ततोयस्य
 दधनान्तत्रावलम्बितास्त सर्वे तिरस्कुर्वन्ति । यतः । न
 गणस्याग्रतो गच्छेत् सिद्धे कार्ये समं फलं । यदि
 कार्यविपत्तिः स्यात् सुखरस्तत्र हन्यते ॥ तथाचोक्तं ।
 आपदां कथितः पन्था इन्द्रियाणामसंयमः । तज्जयः
 संपदां मार्गायेनैष्टं तेन गम्यतां ॥ तस्य तिरस्कारं श्रुत्वा
 चित्रधीवत् उवाच । नायमस्य दोषः । यतः । आपदा
 मापतन्तोनां हितोप्यायाति हेतुतां । मातृजया हि
 वत्सस्य स्तम्भी भवति बन्धने ॥ *❀*❀*❀*❀*

লোভহইতে ক্রোধ হয় লোভহইতে কাম জন্মে লোভ
 হইতে মোহ ও নাশ হয় লোভ পাপের কারণ । পরে
 সকলেই জালেতে বদ্ধ হইল অনন্তর যাহার বাক্যেতে সে
 স্থান অবলম্বন করিয়াছিল তাহাকে সকলে তিরস্কার
 করিতে নাগিল । যেহেতুক সকলের আগে যাইবে না কেননা
 কাঁচা সিদ্ধ হইলে সকলেরি সমান কল যদি কাঁচা বিষ হয়
 তবে পুধানব্যক্তি দোষভাগী হয় । সেই পুকার কথিত
 আছে হৈমিয় সকলের যে দমন না করা সেই বিপত্তির পথ
 আর তাহারদিগের যে দমন করা সে সম্পত্তির পথ যে

पाথেতে ইচ্ছা সেই পাথেতে যাও । তাহার অপমান শুনিয়া
vengeance's neck" said his that fault not for benefit-in fall
 চিত্তে গীৰ্ব কহিল ইহার এ দোষ নয় যেহেতুক হিত ও পতন
is a g- r misfortune casualty necessary is mother's thigh child
 শীল আপদের কারণতাকে পায় যেমন মাতার জঙ্ঘা বৎসের
bindings for a collar is -
 বন্ধনের নিমিত্তে শুস্ত হয় ।

From covetousness proceedeth ill-nature, and of ill-nature is born stubbornness; from stubbornness is created a delusion of reason, and that delusion is the cause of sin.

At length they were all, in consequence of their covetousness, confined by the threads of the net; and they presently began to lay the blame upon him, by whose advice they had descended.—So it is said. A man should not strive to precede his fellows; for, should the work succeed, the booty is equal, and if it fail, the leader is punished.

It is said, that those who do not govern their passions, will meet with misfortunes, but that those who do govern their passions, shall obtain wealth. Go then, and whichever of these two you choose, act accordingly.

Chitra-griva hearing their reproaches, said, it is not his fault. It is said,—To those who are fallen into misfortunes, what was a blessing, becometh an evil: To a child in confinement, its mother's knee is a binding post.

অন্যত্রাস বস্তুর্থাবিপন্নানামাপদহরণক্ষমঃ। ন তু ভীত
 পরিব্রাণবৎসূপালম্পর্ষিতঃ ॥ বিপত্কালে বিস্ময়এব
 কাপুরুষলক্ষণং তদত্র ধৈর্যমবলম্ব্য প্রতীকারস্থিততাং ।
 যতঃ। বিপদি ধৈর্যমথ্যাম্যুদয়ে ক্ষমা সদসি বাক্পটুতা
 যুধি বিক্রমঃ যশসি চাভিরুচির্যসনং শ্রুতৌ প্রকৃতি
 সিদ্ধমিদং হি মহাত্মনাং ॥ সম্পদি यस्य ন হর্ষোবিপদি
 বিষাদো ন রণে চ ধীরত্বং । তং ভুবনত্রয়তিলকং জনয়তি
 জননী সূতং বিরলং ॥ অন্যত্র । ষড়্বোষাঃ পুরুষেহ
 ছাতব্যাভূতিমিচ্ছতা । নিদ্রা তন্দ্রা ভয়ং ক্রোধশালস্য
 দৌর্বসূত্রতা ॥ ইদানীমপি এবং ক্রিয়তাং সর্বৈরেকচিন্তী
 ভূয় জালমাদায় তদ্ব্যয়তাং । *❀*❀*❀*❀*

and submissiveness = person's calm by whom he does what he likes
 আর বিপদগস্ত লোকের আপদ উদ্ধার করিতে যে যোগ্য
 সেই বন্ধু ভীতব্যক্তির পরিব্রাণের নিমিত্তে ধন গৃহে পণ্ডিত
 যে সে বন্ধু নয় । বিপৎকালে বিস্ময়াপন্ন হওয়া কাপুরুষের
 লক্ষণ সেই হেতুক এ সময় ধৈর্য অবলম্বন করিয়া উপায়
 চিন্তা করহাযেহেতুক বিপৎকালে ধৈর্য আর বুদ্ধিকালেক্ষমা
 সভ্যতাবাক্যের পটুতা যুদ্ধে পরাক্রম আর যশোতে অভিক্রি
 শান্ত্রশ্রবণে আসক্তি এই সকল উত্তম লোকেরদিগের স্বভাব
 সিদ্ধ হয় । যাহার সম্পৎকালে আহ্লাদ হয় না বিপৎকালে
 বিষাদ হয় না যুদ্ধেতে পাণ্ডিত্য হয় এমনত্রিভুবন শ্রেষ্ঠ পুত্রকে

যে জননী জন্মান সে দুর্ভা আন এখ্যোচ্ছ পক্ষ্য নিদ্রা তদ্রা
 ভয় ক্রোধ আননা অলকাননাথ্য ক্রিয়া বহুকালে করা এই
 ছয় দোষ ত্যাগ করিবেক। এখনও ইহা কর সকলে একচিত্ত
 হইয়া জান নইয়া উড়।

He who hath the resolution to extricate one from his misfortunes, who is fallen into difficulties by another's fault, is a Pundit; not he, who hesitateth about the means he should employ for the deliverance of the distressed.

Hesitation, in times of misfortune, is the mark of a coward; wherefore, depend upon resolution, and let a remedy be thought of; according to these lines, Fortitude in adversity, and moderation in prosperity; eloquence in the senate, and courage in the field; great glory in renown, and labour in study; are the natural perfections of great minds.—Again:

The mother that produces a child, who is not delighted at the time of prosperity, nor miserable at the time of misfortune, and who is the greatest hero in the world, is scarcely to be found.

There are here six faults, which a man ought to avoid. The desire of riches, drowsiness, sloth, idleness tediousness, fear, and anger. Let this be done immediately: Let us all, with one accord, take up the net, and fly away with it; according to these hues:

যতঃ। অল্পানামপি বস্তুনাং সংহতিঃ কার্যসাধিকা
 ত্বণৈর্গুণত্বমাপনৈর্ধ্বন্যন্তো মনদন্তিনঃ ॥ সংহতিঃ শ্রেয়সী
 পুংসাং স্বকুলৈরল্যকৈরপি তুণ্যৈরপি পরিত্যক্তান প্ররোহন্তি
 তল্লুলাঃ ॥ ইতি বিচিন্ত্য পল্লিণঃ সর্ধে জালমাদায় উত্
 পতিতাঃ । অনন্তরং সব্যাধঃ সুদূরাজ্জালাপহারকাংস্তা ন
 বস্লোক্য পশ্চাদ্ধাবিতোঽচিন্তয়তাং সংহতাংসু হরন্তীব জাল
 মম বহিঃস্রমাঃ। যদাতু নিপতিষ্যন্তি বশমেষ্যন্তি মেতদা ॥
 ততস্তে শুচলুর্বিষযাতিক্রান্তেষু পল্লিষু সম্বাধোনিবৃন্তঃ অথ
 লুন্ধ্যকং নিবৃন্তং দৃষ্ট্বাকপোতাভ্রকুঃ কিমিদানীং কর্তু মুচি
 তং । চিত্রগ্রীবভবাচ । মাতা মিত্রং পিতা চেতি স্বভাবা
 ত্রিতয়ং হিত কার্য্যকারণতম্বান্যে ভবন্তিহিত বুদ্ধয়ঃ ॥

যেহেতুক তচ্ছ বস্তুর যে সমূহ তাহাতে ও কার্যসাধন
 হয় যেমন রজ্জ্ব পাছিলে তৎসমূহকর্তৃক মন্তুহস্তী বন্ধ
 হয় । মজাতিয় তচ্ছ বস্তুরও সমূহ পুরুষের মন্তন দায়ক
 হয় ইহার সাফল্য দেখে তৎগুল ভূষেতে বিধীন হইলে অধর
 হয় না । ইহা চিন্তা করিয়া সকল পক্ষিরা জাল নইয়া
 উপরে উড়িল । অনন্তর সে ব্যাধ অতিদূরহইতে জালের
 অপহারক কপোতেরদিগকে দেখিয়া পশ্চাৎ ধাবনান ইয়া
 ভাবনা করিল যে এ কপোতেরা সকল একত্র হইয়া আনিয়া
 জাল হরণ করিয়াছে কিন্তু যখন পৃথিবীতে পড়িলে তখন

আমার বশীভূত হইবে। তৎপর সেই পক্ষিরা ব্যাধের চক্র
 দৃষ্টি অতিক্রমণ করিলে সেই ব্যাধ নিবৃত্ত হইল। তাহার পর
 ব্যাধকে নিবৃত্ত দেখিয়া কপোতেরা কহিল এখন কি করিতে
 উচিত হয়। চিত্রগাব কহিল মাতা ও পিতা ও মিত্র ইহারা
 তিন জন স্বভাবেতে হিতকারী হইলেন আর অন্যলোকও
 কাৰ্য্য কারণপুষ্ট হিতকারী হয়।

A combination even of small things serveth an occasion: An intoxicated elephant may be bound with a few straws, when formed into a rope.

Combination is best for men, either with their own tribe or with strangers; for even a grain of rice groweth not, when divided from its husk.

Having considered this, the pigeons, with one accord, took up the net, and flew away with it. Presently the fowler, seeing the robbers of his net at a great distance, pursued them; and as he ran, these were his thoughts:

These travellers of the air have combined to rob me of my net; but when they shall fall down, they will come into my power. But soon finding they had passed the confines of his sight, the poor fowler turned back from the pursuit.

The pigeons now demanded what was to be done; and Chitra-griva replied, A mother is a friend, and a father is a friend, but both these are by nature kind; but there are others who are benevolent from casual motives.

তদস্মাৎ মিত্রং হিরণ্যকোনাং নৃষিকরাজো গণ্ডকী
 তীরে চিত্রবনে নিবসতি সোঃ স্মাৎ পাশাং শঙ্কেতস্যতি ইত্যা
 লোচ্য সৰ্ব্বং হিরণ্যকবিবরসমীপং গতাঃ হিরণ্যকশ্চ
 সৰ্ব্বদা পায়শ্চক্ৰয়া শতদ্বারং বিবরং কৃৎবা নিবসতি ততো
 হিরণ্যকঃ কপোতা বপাতভয়াচ্চকিতস্নুষ্ণাং স্থিতঃ চিত্র
 গ্রীব উবাচ । সখে হিরণ্যক কথমস্মান্ন সম্ভাষসে ততো
 হিরণ্যকস্তদ্বচনং প্রত্যভিজ্ঞায় সসম্ভ্রমং বহির্নিঃসৃত্যা
 ব্রবীৎ আঃ পুণ্যবানস্মি প্রিয়সুহৃন্মে চিত্রগ্রীবঃ সমা
 যাতঃ । যস্য মিত্রেণ সম্ভাষো যস্য মিত্রেণ সংস্থিতিঃ । যস্য
 মিত্রেণ সংলাপস্ততো নাস্তীহ পুণ্যবান্ ॥ অথ পাশবদ্বাংশ্চৈ
 তান্ দৃষ্ট্বা স বিস্ময়ঃ ক্রুণং স্থিত্বা উবাচ সখে কিমেতৎ ।

অতএব আনারদিগের মিত্র হিরণ্যক নামে নৃষিকের
 দিগের রাজা চিত্রবনে গণ্ডকী নদীর তীরে বাস করে সে
 আনারদিগের পাশ কাটবেক ইহা বিবেচনা করিয়া
 সকলে হিরণ্যকের গভীর নিকটে গেল । হিরণ্যক সৰ্বদা
 উপদ্রবশঙ্কিতে শতদ্বার গুলি করিয়া বসতি করে । অন
 তর হিরণ্যক কপোতেরদের পতনশব্দের ভয়েতে ভীত
 হইয়া চুপ করিয়া থাকিল । পরে চিত্রগ্রীব বলিল হে মিত্র
 হিরণ্যক কেন আনারদিগকে সম্ভাষা কর না । অনন্তর হির
 ণ্যক মিত্রের বাক্য বুঝিয়া শীঘ্র বাহির হইয়া বলিল আঃ কি

I happy I am my dear friend and con-
 पुण्यवान् आनि आमार परमसुखं चित्रग्रीव आसियाछेन
could afford with whose company I friend with with
 कनना नित्रेर सहित याहार सञ्जाया ओ नित्रेर सहित याहार
ring I spend with whose mutual conversation
 बास ओ नित्रेर सहित याहार परम्पर कथोपकथन হয়
that I am in the earth happy more is not this after
 তাহা হইতে পৃথিবীতে পুণ্যবান আর নাই। তাহার পর
The pigeons nest in barrel seen I filled with surprise being
 কপোতেরদিগকে জালে বদ্ধ দেখিয়া বিস্ময়াগন্ন হইয়া
for a short time standing he said of friend what is this
 কিঞ্চিৎ কাল থাকিয়া কহিল সখে একি।

Our friend Hiranyaka, the noble mouse, lives upon the banks of the Gandaki. He may be able to gnaw our snare asunder with his teeth. Having considered this proposal, they all flew to the residence of Hiranyaka, who, from his constant dread of the Crows, had made himself a hole with a hundred outlets, wherein he remained secured, according to this verse:

There was an old mouse, well read in the Niti-Sastras, who, before the approach of danger, kept himself within a hole with a hundred doors.

He was startled with fear at the descent of the pigeons, and stood silent, upon which Chitra-griva called out, Friend Huanayka! what, wilt thou not speak to us; And Hiranyaka, upon recollecting his voice, slipped out of his hole, and exclaimed,—O how happy I am, that my dear friend Chitra-griva is arrived! There is not in life a man more happy than he, who hath a friend to converse with, a friend to live with, and a friend to embrace.

But when he saw that they were confined in a net, he stood amazed for a moment, and demanded what it meant,

চিত্রগ্রীবত্বাচ সখ্যেঃ স্নাতকং প্রাক্তনজন্মকৰ্ম্মণঃ ফল
 মেতৎ । যস্মাচ্চ যেন চ যথা চ যদাচ যচ্চ যাবচ্চ
 যত্র চ শুভাশুভমাत्मকৰ্ম্ম । তস্মাচ্চ তেন চ তথা চ তদা
 চ তচ্চ তাবচ্চ তত্র চ বিধাতৃবশাদুপৈতি । রোগশোক
 পরীতাপবন্ধ্যনব্যসনানি চ । আত্মাপরাধবৃদ্ধাণাং
 ত্যেজানি দেহিনাং ॥ মূষিকস্ত্রিগ্রীবস্য বন্ধ্যনং ক্লেতুং
 সত্বরং উপসর্পতি । চিত্রগ্রীবত্বাচ নিত্র মৈবং কুত কিঞ্চা
 স্য রাশ্রিতানাং মেধাং তাবৎ পাশাং শ্চিন্ধি তদা মম পাশং
 পশ্বাচ্ছৈত্স্যসি । হিরণ্যকোপ্যাহ অহমল্পশক্তির্দে
 ন্তাশ্চ মে কৌমলাস্তদেবেধাং পাশাং শ্চিন্তুং কথং সমর্থঃ তত্
 যাবন্মে দন্তান ব্রুত্ব্যন্তি তাবত্তব পাশং ক্লেদয়ি অনন্ত
 রমপ্যেধাং বন্ধ্যনং যাবচ্ছক্যং ক্লেত্স্যানি । *❀❀*

চিত্রগ্রীব কহিল হে মিত্র আমারদের পূর্ব জন্মকৃত
 কৰ্ম্মের ফল এই যাহাঁহইতে যৎকরণক যে পুকারে যে কালে
 যে স্থানে যত শুভ কিম্বা অশুভ আত্মকৃত কৰ্ম্ম সে সকল
 তাহাঁহইতে তৎকরণক সেই পুকারে সেই কালে সেই
 স্থানে কৈশ্বরেচ্ছাপযুক্ত জীবকে পায় । নিষ্কৃত অপরাধ
 বন্ধনরূপ দেহির রোগ শোক পরীতাপ বন্ধন বাসন ইহার।
 ফল হয় । উদ্ভূত চিত্রগ্রীবের বন্ধন ছেদন করিতে শীঘ্র সমা
 পে যাহঁতেছে চিত্রগ্রীব তাহা দেখিয়া কহিল হে মিত্র এমন

to not but my independent house regions' stand
 करिও ना किन्तु আমার আশ্রিত এই কপোতেরদের পাশ
 to first do than my not after nothing lo- -
 ছেদন আগে কর তখন আমার জাল পশ্চাৎ ছেদন করিব।
 to stand a little strong into my teeth also tender
 হিরণ্যক कहिल আমি अन्नबली आर আমার दन्तु ओ कोमल
 to see on them hands cutting to do how able may be
 এই কারণ ইহারদের বন্ধন ছেদন করিতে কি কাপে শক্ত হইব।
 to then my teeth as long as not broken so long your strong
 তবে আমারদন্ত যতক্ষণ না ভাঙ্গে ততক্ষণ তোমার পাশ
 to see on him after than also as long as shall be able will not be
 ছেদন করি পশ্চাৎ ইহারদেরও যত পারিব ছেদন করিব ।

Chitra-griva replied,—What else, my friend, can it be, but the effect of the evil committed in a prior existence; seeing thou art endued with great wisdom, what was the use of thy question; For is it not said,

Whatsoever cometh to pass, either good or evil, is the consequence of a man's own actions, and descendeth from the power of the Supreme Ruler. Sickness, sorrow, and distress; bonds and punishment to corporeal beings, are fruit of the tree of their own transgressions.

Hiranyaka having heard these words, quickly ran to gnaw asunder the cords by which Chitra-griva, was confined. Not so my friend, said Chitra-griva, until thou hast cut asunder the bonds of these who are under my protection. Hiranyaka then said, I am weak, my friend, and my teeth are but delicate; how then am I able to bite open the snares which entangle them; As long as my teeth shall not break, so long will I gnaw thy snares; and afterwards, if it should be in my power, I will divide the cords which confine the rest.

চিত্রগীব উবাচ অস্ত্বে বং তথাপি যথাশক্তি বন্ধ্যনমেতেষাং
 খলুহয়। হিরণ্যকেন উক্তং আত্মপরিত্যাগেন যদাশ্রিতানাং
 পরিরক্ষণং তন্ন নীতিবেদিনাং সম্মতং । যতঃ। আপদার্থে ধনং
 রক্তেদ্বারা ব্রহ্মদ্বৈপ্যি। আত্মানং সততং রক্তেদ্বারৈরপি ধনৈরপি।
 অন্যত্র । ধর্ম্মার্থকামমোক্ষাণাং প্রাণাঃ সংস্থিতিহেতবঃ ।
 তান্নিঘ্নতা কিল্ল হতং রক্ততা কিল্ল রক্তিতাং চিত্রগীব উবাচ
 সখে নীতিস্তাবদোদৃশ্যেব কিং ত্বহমস্মদাশ্রিতানাং দুঃখং
 সোদুং সর্ঘ্বথাঃ সমর্থস্তেনেদং ব্রবীমি । যতঃ । ধনানি
 জীবিতম্ভৈব পরার্থে প্রাপ্তুং সৃজেত্ । সন্নিমিত্তে বরং ত্যাগো
 বিনাশে নিযতে সতি ॥ অযমপরস্বাসাধারণোহেতুঃ ।
 জাতিদ্রব্যবল্লানাঞ্চ সাম্যমেবাং ময়া সহ । মত্ প্রমূল
 ফলং ব্রূহি কদা কিল্ল ভবিষ্যতি । *❖*❖*❖*❖

চিত্রগীব কহিল এই হউক তথাপি যেমন সামর্থ্য ইহার
 দিগের বন্ধন কাট। হিরণ্যক কহিল যে আপনাকে পরিত্যাগ
 করিয়া আশ্রিত লোকের যে রক্ষা করা সে নীতিজ্ঞ লোকের
 দেব সম্মত নহে যেহেতুক বিপত্তির নিমিত্তে ধন রক্ষা করিবে
 আর ধনদ্বারা জীকে রক্ষা করিবেক আর আপনাকে সর্বদা
 জীদ্বারা এবং ধনদ্বারাও রক্ষা করিবেক । অপর ধর্ম্ম অর্থ
 কামমোক্ষের সংস্থিতির কারণ যে পুণ্য সেই পুণ্যকে যে
 জন নষ্ট করে তৎকর্তৃক কি নষ্ট না হয় আর পুণ্যকে যে
 রক্ষা করে তৎকর্তৃক কি রক্ষিত না হয় । চিত্রগীব বলিল

হে মিত্র নীতিশাস্ত্র এইকপই বটে কিন্তু আমি আমার
 ক্ষান্ত লোকেরদিগের দুঃখ কোন পুকারে সহিতে পারি না
 সেই নিমিত্তে ইহা বলি । যেহেতুক ধন ও পুণ্য পরের
 নিমিত্তে পণ্ডিতলোকেরা ত্যাগ করে, কেননা বস্তুমাত্রের
 বিনাশ অবশ্য হয় অতএব সাধু লোকের কারণ পুণ্যাদির
 ত্যাগ ভাল । আর এই অসাধারণ কারণ আমার সহিত
 ইহারদিগের জাতি ও দুব্য ও বলের তুল্যতা তবে আমার
 পুণ্যের ফল কখন কি হইবে তাহা বল ।

Let it be as I say, replied Chitra-griva; and to the utmost of thy power try to subdue their bonds first. Those, said the mouse, who are acquainted with the rules of prudence, do not approve, that for the preservation of those who are under our protection, we should abandon ourselves.

A man should keep his riches against accidents, and with his riches he should save his family ; but he should, on all occasions, save himself, both with his family and his riches. Our lives are for the purposes of religion, labour, love, and salvation. If these are destroyed, what is not lost, If these are preserved, what is not preserved; This may be so, replied Chitra-griva; but I am not, by any means, able to suffer the afflictions of those who are here under my protection.

A wise man should relinquish both his wealth and his life for another: All is to be surrendered for a just man, when he is reduced to the brink of destruction.

Here is another unparalleled argument: In birth, substance, and quality, they are like unto me; say then, what will ever be the fruit of my superiority;

অন্যত্র । বিনা বর্চনমেবৈতে ন ত্যজন্তি মমান্তিকং ।
 তন্মে প্রাণব্যয়েনাপি জীবয়েতান্মমাশ্রিতান্ ॥ কিঞ্চ ।
 মাংসমুত্রপুরীষাস্থিনির্মিতৈ চক্সেবরে বিনশ্বরো বিহায়া
 স্থাং যশঃ পালয় মিত্র মে ॥ পশ্য । যদি নিত্যমনিত্যেন
 নির্মলং মলবাহিনা । যশঃ কায়েন লভ্যেত তন্ন লভ্য
 ভবেন্ন কিং ॥ যতঃ ॥ শরীরস্য গুণানাঞ্চ দূরমত্যন্ত
 মন্তরং শরীরং স্ত্রণবিধ্বংসি কল্যান্তস্থাধিনোগুণাঃ ।
 ইত্যাকর্ণ্য হিরণ্যকঃ প্রহৃষ্টমনাঃ পুলকিতঃ সন্নব্রবীত
 সাধু মিত্র সাধু অনেনাশ্রিতবাত্সল্যেন ত্রৈলোক্যস্তাপি
 প্রভুত্বং ত্বয়ি যুজ্যতে এবমুক্তা তেন সর্ব্বেষাং বন্ধনানি
 ছিন্নানি । ততোহিরণ্যকঃ সর্ব্বান সাদরং সंपূজ্যাহ

অপর ইহারা বড়ন ব্যতিরেকেও আমার নিকট আগ করে না
 সেই হেতুক আমার পাণের বিনাশ হইলেও আমার আশ্রিত
 ইহারদিগকে বাঁচাও । আর হে মিত্র মাংস ও মূত্র ও বিষ্ঠা ও
 অস্থিতে নির্মিত বিনাশশাল শরীরে আস্থা পরিত্যাগ
 করিয়া কীৰ্ত্তী রক্ষা কর । ওহে দেখ অনিত্য ও মলবাহি
 শরীর কর্তৃক নিত্য অথচ নির্মল যশ যদি লভ হয় তবে কি
 না লভ হয় । যেহেতুক শরীরের ও গুণের যে দূর সে অত্যন্ত
 অন্তর কেননা শরীর অন্তকালস্থায়ী গুণ কল্পান্তস্থায়ী ।
 ইহা শুনিয়া হিরণ্যক হৃষ্টচিত্ত এবং পুলকিত হইয়া বলিল

^{last' and not' from loss' not} ^{in the world' year}
 মাধু মিত্র সাধ এই আশ্রিত বাৎসল্যেতে ত্রিনোকের পুতুল
^{to see before as} ^{he saying in}
 তোমাতে উপযুক্ত হয় । ইহা কহিয়া সেই হিরণ্যক সকল
^{he found could he not afterwards}
 কপোতের বন্ধন ছেদন করিল । অনন্তর হিরণ্যক সকল
^{the, is, said to answer during his said}
 কপোতকে সম্মান করিয়া কহিল ।

Again: Without misfortune, they will not forsake me, then I will protect these who have taken sanctuary with me, even with the loss of my life.

Why dost thou hesitate over this perishable body composed of flesh, bones, and excrements; O my friend, support my reputation!—Another: If constancy is to be obtained by inconstancy, purity, by impurity, reputation by the body, then, what is there which may not be obtained; the difference between the body and the qualities is infinite: the body is a thing to be destroyed in a moment, whilst the qualities endure to the end of the creation.

Hiranyaka having been attentive to what had been spoken, and being exceedingly pleased, exclaimed,—Nobly! nobly! my friend. By such generosity to those who are under thy protection, thou art worthy to be elevated to the supreme command over the three regions of the world. Having said this, Hiranyaka gnawed asunder their bonds; and when he had addressed himself to all in respectful compliments of congratulation, he said,

সখে চিত্রগ্রীব সর্বথা অত্র জালবन्ধনবিধৌ সতি দোষ
 মাশঙ্ক্য 'আত্মন্যবজ্ঞা ন কৰ্ত্তয়া । যতঃ । যোধিকাযো
 জনশতাৎ পশ্যতোহামিধং ত্বগঃ । সএব প্রাপ্তকালস্তু পাশ
 বন্ধং ন পশ্যতি ॥ অপরঞ্চ । শশিদিবা করযোর্যহণীডনং
 গজভুজঙ্গমযোরপি বন্ধনং । মতিমতাঞ্চ বিলোক্য দরিত্রতাং
 বিধিরহোবলবানিতি মে মতিঃ ॥ অন্যচ্চ । ব্যোমৈকান্ত
 বিহারিণোপি বিহগাঃ সম্প্রাপ্তদন্ত্যাপদং । বध्यন্তে নিপুনৈর
 গাধসলিলান্মত্স্যাঃ সমুদ্রাদপি । দুর্নীতং কিমিহাস্তি
 কিং সুচরিতং কঃ স্যানলাভে গুণঃ । কালোহি ব্যসনপ্রসা
 রিতকরোষ্ণক্কাতি দূগাদপি ॥ ইতি প্রবেধ্যাতিথ্য
 কৃত্বালিংগ্য চ সম্প্রেষিতশ্চিত্রগ্রীবোপি সপরিবারো যথেষ্ট
 দেশান যযৌ । হিরণ্যকোপি স্ববিবরং প্রবিষ্টঃ ॥ ❀❀❀

হে সখে চিত্রগ্রীব এই জালে বন্ধন হওয়াতে দোষ আশঙ্কা
 করিয়া আপনাতে অবজ্ঞা কর্তব্য নহে যেহেতু যে পক্ষী
 শত যোজনহইতে অধিকেতে আহার দেখে সেই পক্ষী নত
 কাল উপস্থিত হইলে পাশবন্ধন দেখিতে পায়না । আর চন্দ্র
 ও সূর্যের রাহু পীড়া আর হস্ত ও মৃগের বন্ধন ও বুদ্ধিমানের
 দারিদ্র্য দেখিয়া এই আগার বিবেচনা যে বিধাতাই বনবান
 এবং আকাশবিহারী ও গন্ধির বিপৎ পায় আর বুদ্ধিমান
 লোক কর্তৃক অতনুপাশ জল যে সমুদ্র তাহা হইতে ও







জ্ঞান্য ধৃত হয় ইহাতে দণ্ডিত কি আছে সুচরিত্র ও স্থানলাভে
 কি গুণ যেহেতুক বাসনরূপ বিস্তারিত হস্ত যে কাল তিনি
 দরহইতে ও গৃহণ করেন । এই পুকারে পুৰোধ করিয়া
 আতিথ্য করিয়া আলিঙ্গন করিয়া বিদায় করিল চিত্রগুৰি ও
 সপরিবারে আপন অভিলষিত দেশে গেল ॥ হিরণ্যক ও
 আগনবিবরে পুৰিষ্ট হইল ।

Friend Chitra-griva, always when yoy see a net, suspect great harm will come of it; and learn not to think meanly of yourself But, alas!

A bird who seeth her prey before her, even at the distance of a hundred yojan, peceiveth not, if her time be come, the snares which are laid to entrap her.

When I behold in eclipses the distress of the moon and the author of day, elephants and serpents in confinement, and the worthy in indigence; alas! in my mind, destiny is all-powerful. Birds meet their fate whilst sporting in the an, and fishes, by artful means, are destroyed from the bottomless waters of the ocean.

When laws are ill-enforced, where are their good morals; To whom is the mere glare of the fire a virtue; Time is trouble, and the author of destruction; he seizeth even from afar. The mouse having taught this, and performed the duties of hospitality, Chitra-griva took his leave, and with his flock departed for that country his inclination led him to; and Hiranyaka retired into his hole.

যানি কানি চ মিত্রাণি কৰ্ত্তব্যানি শতানি চ। পশ্য মূ
 ষিকমিত্রেণ কপোতামুক্তবন্ধনাঃ॥ অথ লঘুপতনকনামা
 কাকঃ সৰ্ব্বদৃষ্টান্তদৰ্শী সাশ্চর্য্যমিদমাহ অহো হিরণ্য
 কঃ শ্লাঘ্যোঽসি অতোহমপি ত্বয়া সহ মৈত্রীমিচ্ছামি
 অতোমাং মৈত্রেয়ানুমৃদীতুমৰ্হসি । এতচ্ছুত্বা হিরণ্য
 কোপি বিবরাভ্যন্তরাদাহ কল্বংস ব্রূতে লঘুপতনকনামা
 বায়সোঽহাং হিরণ্যকোবিহস্য আহ কা ত্বয়া সহ মৈত্রী।
 যতঃ । যথেন যুজ্যতে লোকে বুধস্তত্তেন যোজয়েত্। অহমন্ন
 ভবান্ ভোক্তা কথং প্রীতিৰ্ভবিষ্যতি। অপরঞ্চ। মচ্ছ্যমচ্ছ
 কথোঃ প্রীতিৰ্বিপক্ষেঃ কারণং যতঃ। শৃগালাত্ পাশবডোঽসৌ
 মৃগঃ কাकेন রলিতঃ ॥ বায়সোঽব্রবীত্ কথমেতত্। হির
 ণ্যকঃ কথয়তি । *******

অতএব লোক যে কোন শত শত মিত্র করিবে দেখ উদ্ভব
 মিত্রেতে কপোতের বন্ধনহইতে মুক্ত হইল। অনন্তর লঘুপ
 তননামে কাক সকল বৃত্তান্ত দেখিয়া ইহা বলিল কি আশ্চর্য্য
 হে হিরণ্যক তুমি শ্লাঘ্য। অতএব আমিও তোমার সহিত মি
 ত্রতা ইচ্ছা করি এই নিমিত্তে আগাকে মিত্রতাতে অনগহ ক
 রিতে যোগ্য হও। ইহা শুনিয়া হিরণ্যক গভের মধ্যে থাকি
 য়া কহিল কে তুমি সে বলিল আমি লঘুপতন নামে কাক
 হিরণ্যক হাসিয়া বলিল তোমার সহিত মিত্রতা কি যেহেতুক
 লোকেতে যে যাশর সহিত উপযুক্ত হয় পণ্ডিত লোক

তাহাকে তাহার সহিত মিলন করাইবেক আমি ভোজ্য
 তুমি ভোক্তা ইহাতে কি পুকারে পীতি হইবে আর যেহেতু
 ভক্ষ্য ও ভক্ষকের যে পুণ্য সে বিপত্তির কারণ কেননা শূগাল
 ইহাতে পাশেতে বদ্ধ মুগ কাক কতক রক্ষিত হইল ! কাক
 কহিল এ কি পুকার ! হিরণ্যক কহিতেছে ।

Behold how many pigeons, his friends, even hundreds, have been delivered by the friendship of a mouse !

The crow, Laghu-patanaka, having been a spectator of all which had passed, now presently appeared, and called out—What ho ! Hiranyaka ! Thou art worthy to be praised, to be adored, and to be a place of refuge, throughout the three regions of the world !

In consequence of this, I too am anxious to form a friendly acquaintance with thee.—Then favour me with thy friendship. Hiranyaka having heard him, called out from the inside of his hole,—Who art thou; and he replied, I am a crow, and my name is Laghu-patanaka. Hiranyaka, upon hearing who he was, laughing said,—Having seen thy complexion, like broken Anjan, a beetle, a wild ox, a buffaloe, or a woman's hair, what friendship can I have with thee,

The wise man is united with that in this life, with which it is proper he should be united. I am bread, thou art the eater. How then can harmony exist between us; as may be seen in a certain story, of which the following verse is the introduction.

Harmony between the food and the feeder is the fore-runner of misfortune.—A deer, though the artifice of a jackal, is caught in a snare, but is preserved by a crow.

How did this happen, demanded Laghu-patanaka; and the mouse, Hiranyaka, related as follows:

অস্মি মগধদেশে চম্পকাবতী নামারণ্যানী তस्याং চিরা
 ন্মহতা স্নেহেন মৃগকাকৌ নিবসতঃ সচ মৃগঃ স্নেচ্ছয়া
 ধাম্যন্ দৃষ্টপুষ্টাঙ্কঃ কোনচিত্ শৃগালেनावলোকিতঃ তং
 দৃষ্ট্বা শৃগালোঽচিন্ততযত্ আঃ কথমেতন্মাংসং ভক্ষয়ামি
 भवतु विश्वासं तावदुत्पादयामি इत्यालोच्योपसृत्यावবীत्
 मित्र कुशलं ते । मृगेण उक्तं कस्त्वं । स ब्रूते क्षुद्रबुद्धिनामा
 जम्बुकोऽहं अत्रारण्ये बभूवোনोमृतवन्निवसासि इदानीं
 त्वां मित्रमासाद्य पुनः सवन्भुर्जीवलोकं प्रविष्टोऽस्मि
 अधুना तवानुचरेण मया सर्वथा भवितव्यमिति । मৃগে
 णোक्तं एवमस्तু ততঃ পশ্চাদস্তং গতে সবিতরি ভগবতি মরী
 চিমালিনি তৌ মৃগস্যং বাসভূমি গতৌ তত্র চম্পকবৃক্ষ
 শাখায়াং সুবুদ্ধি নামা কাকো মৃগস্য চিরমিভং নিবসতি ।

মগধদেশে চম্পকাবতী নামে এক বন থাকে তাহাতে হরিণ
 ও কাক দুই জন বহুকাল বড় স্নেহেতে বাস করে সেই হরিণ
 আপন ইচ্ছাতে ভ্রমণ করত কোন শৃগাল তাহাকে দৃষ্ট
 পুষ্টাঙ্ক দেখিয়া চিন্তা করিল আঃ কিপুকারে এই উত্তম জলি
 তমাংস থাইব যা হউক বিশ্বাস জন্মাই । এই পরামর্শ
 করিয়া সন্নিপোগিয়া বলিল হে মিত্র তোমার মঙ্গল । মৃগ
 কছিল কে তনি শৃগাল কহিতেছে ক্ষুদ্রবুদ্ধি নামে শৃগাল
 আমি এই বনেতে মৃত শরীরের ন্যায় বাক্যবহীন হইয়া বাস

*dwelt * now -* *there a friend feeding again with*
 करि सम्पत्ति তোমাকে मित्र পাইয়া পুনর্বার সবার
being no more I am now continuously by follow
 হইয়া সজীব হইলাম এখন আমি সর্বদা তোমার অন্তর
will be the jackal to the deer said well be so -
 হইব শগালকে মগ कहिल ভাল এই হউক। অনন্তর ভগবান
say = continue I am with me sitting after the deers dwelt
 নরীচিমালী সর্ষাপশ্চিমে অন্তর্গত পরে মগের বাসস্থানে
in deer to a tree went there "Chompok" tree branch
 সেই মগ ও শগাল গেল সেখানে চম্পকবৃক্ষের ডালেতে
the deer chomok friends "soo badi" valley a crowd dwelt -
 মগের চিরকালের নিম্ন সুবন্ধিনা কাঁক বাস করে।

FABLE III.

In Magadha-desa there is a forest called Champakava-
 tee, and under the branches of one of the Champaka
 trees there dwelt, in great good fellowship, a deer and
 a crow. One day, as the deer, who was plump and fat,
 was freely roaming about the woods, he was spied by a
 certain jackal, who having examined him, said to him-
 self,—Ah! with what exquisite pleasure could I feast
 upon his flesh!—Be it so, but first let me remove all
 suspicion. So having thus resolved, he advanced towards
 him, and said,—Peace be with thee, friend! Who art
 thou; said the deer I am Kshudrabudhi, the jackal,
 said he, and being without relation, I dwell here in this
 forest, as it were, like one dead, but now that I have
 fallen in with a true friend, I am no longer destitute of
 connections, and am again entered into the land of the
 living; and henceforward it shall be my duty to attend
 thy steps.

Accordingly, as soon as the sun had retired to the
 western montan, the jackal followed the deer to his
 place of residence, beneath the branches of the Champa-
 ka-tree, where with him lived also his friend the crow,
 whose name was Su-budhi.

তৌ দৃষ্টা কাকোঽবদৎ সখ্যে কোঽয়ং দ্বিতীয়ঃ । মৃগোব্রূতে
 জম্বুকোঽয়ং মস্সত্ সখ্যমিচ্ছন্নাগতঃ । কাকোব্রূতে মিত্র অক
 স্মাদাগন্তুনা সহ মৈত্রী ন যুক্তা । তথা চোক্তং । অজ্ঞাত
 কুলশীলস্য বাসোদেয়ো ন কস্যचित্ মার্জ্জারস্য হি
 দোষেণ হতোমৃতোজরদ্রবঃ ॥ তাবাহতুঃ কথমেতৎ ।
 কাকঃ কথয়তি অস্মি ভাগীরথীতীরে মৃতকূটনাম্নি
 পর্ষতে মহান্ পর্কটোবহঃ তস্য কোটরে দৈবদুর্বিপাকাদ্ধ
 লিতনলনয়নোজরদ্রবনামা মৃতঃ প্রতিবসতি অথ
 ঋপয়া তজ্জীবনায় তদ্বৃদ্ধবাসিনঃ পল্লিণঃ স্বাহারাৎ
 কিঞ্চিদুদ্ভূত্ব দদতি তেনাসৌ জীবতি অথ কদাচিদীর্ঘ-
 কৰ্ণনামা মার্জ্জারঃ পল্লিশাবকান্ ভক্ষিতুং তত্রাগতঃ ।

ইরিণ আর জম্বুককে দেখিয়া কাক বলিল মিত্র দ্বিতীয়
 একে ইরিণ কহিতেছে ইনি জম্বুক আমার সহিত মিত্রতা
 করিতে বাঞ্ছাকরিয়া আনিয়াছেন কাক বলিতেছে সখে
 অকস্মাৎ আগন্তকের সহিত মিত্রতা উচিত নয় এইবিধ
 কথুক কথিত আছে যাহার কল ও স্বভাব জাত নহে
 তাহাকে বাসস্থান দেওয়া উপযুক্ত নহে । যেহেতুক বিড়ালের
 দোষেতে জরদ্রবনামে গধু নষ্ট হইল । মগ আর শগল
 কহিল এক পক্ষার । কাক কহিতেছে । গঙ্গা তীরে গধুকট
 নান পক্ষতে বৃহৎ এক পাকুড় বৃক্ষ থাকে তাহার কোটরে

by some one came near & eyes distribute of 'jorogob' - called a mixture
 देवविপাকে নথ ও চক্রেতে রুহিত জরঙ্গ নামে এক শকুনি
 dwelt afterwards through his life for
 সতি করে ১২ অনন্তর তাহার জীবনের নিমিত্তে সেই
 see living birds graceless being their own job from
 বৃক্ষবাসি পক্ষিরা কৃপা করিয়া আপনঃ আহারহইতে
 a little extracting to him gave in meat that
 কিছু কিছু উদ্ধার করিয়া তাহাকে দেয় তাহাতে ঐ জর
 "lived afterwards one day 'long ear' called a cat bird
 ব বাচে। পরে কোন দিন দীর্ঘকর্ণ নামে এক মাজার পক্ষি
 being and or sitting to do - there came
 মিলকেরদিগকে ভক্ষণ করিবার নিমিত্তে সেখানে আইল।

Upon seeing him, the crow said, who is this second; and the deer replied, it is a jackal, who is come here desirous of our friendship. Friend, said the crow, it is not proper to place confidence in one who cometh without any apparent cause. It is not well done, for it is said.

To one whose family and profession are unknown, one should not give residence. the jakal Jarad-gava was killed through the fault of a cat.

How was this; said they; and the crow related as follows.

FABLE IV.

On the banks of the river Bhagirathi, and upon the mountain Gridhra- kuta, there is a large Parkatti tree, in the hollow of whose trunk there dwelt a jackal, by name Jarad-gava, who, by some accident, was grown blind, and for whose support the different birds, who roosted upon the branches of the same tree, were wont to contribute a trifle from their own stores, by which he existed. It so fell out, that one day a certain cat, by name Dirgha-karna, came there to prey upon the young birds,

ততস্তমাযানং দৃষ্ট্বা পশ্চিশাবকৈৰ্ভযাতৈঃ কোলাহল
 কৃতঃ তচ্ছুত্বা জরদ্ববেন উক্তং কোঃয়মায়াতি । দীর্ঘকর্ণো
 মধ্রমবলোক্য সমথসাহ হা হতোস্মি। যতঃ। তাবদ্বয়স্য
 ভেতব্যং যাবদ্বয়মনাগতং । আগতঞ্চ ভয়ং বীচ্য নরঃ কুৰ্য্যা
 যথোচিতং । ততোऽধুনা সন্নিধানে পলায়িতুমক্ষমঃ তদ্যথা
 ভয়িনব্যং তদ্ববতু তাবদ্বিশ্বাসমুত্পাদ্যস্য সমীপমুপগ
 চ্ছামি ইত্যালোচ্য উপসৃত্যাব্রবীত্ । অর্থ্য ত্বামভি
 বন্দে । মধ্রোঃবদত্ কল্বং । সোঃবদত্ মার্জারোঃহং ।
 মধ্রোদ্রুতং দূরমপসর ন চেহন্তব্যোঃসি ময়া । মার্জারোঃ
 বদত্ শ্রুত্যাং তাবদসদ্বচনং ততোযদ্যহং বধ্যস্তদা
 হন্তব্যঃ । যতঃ । জাতিমাत्रেণ কিং কশ্চিদ্বন্যতে পূজ্যতে
 চ্যোচিত্ । ব্যবহারং পরিজ্ঞায় বধ্যঃ পূজ্যোঃথবা ভবেত্ ॥ #

তাহার পর সেই বিড়ানকে আসিতে দেখিয়া পক্ষিবান
 কেরা ভয়ান্ত্র হইয়া কোলাহল করিল তাহা শুনিয়া জরদ্ব
 বিড়ানকে কহিল এ কে আইসে । দীর্ঘকর্ণ শকুনিকে
 দেখিয়া সভয় হইয়া খেদেতে কহিল আমি নষ্ট হইলাম
 যেহেতুক ভয় যাবৎ না আইসে তাবৎপর্যন্ত ভয়কে ভয়
 করা উণ্ডয়ক ভয়কে আগত দেখিয়া মনুষ্য যেমন উচিত
 হয় তাহা করিবেক । সেইহেতুক এখন নিকটে পলাইতে
 অসমর্থ তবে যে ভবিতব্য তাহা ইউক বিশ্বাস জন্মাইয়া

इहान्न समीपे गमनं करि । इहा आलोचनां करिया निकटे
 गिया बलिल हे श्रेष्ठ तौमाके अभिवादन करि शकुनि कहिल
 'क तुमि से कहिल बिडाल आमि शकुनि बलि ते छे दरे याँ
 यदि ना याँ तबे तौमाके आमि नुष्ट करिब नार्जार बलिल
 आमार बाका सुन तारुणर यदि आमि बध्याहँ तबे बध
 कर्तव्य येहेतुक कोथाय केँकि जातिनात्रेते बध्या किन्हा
 पूजा हय 'बावहार जानिया बध्या अथवा पूजा हय ।

whom perceiving, the little nestlings were greatly terri-
 fied, and began to be very clamorous; and their cries
 being heard by Jarad-gava, he asked who was coming.
 The cat Dirgha-karna, too, seeing the jackal, began to
 be alarmed, and so cried to himself,—Oh! I shall cer-
 tainly be killed,

For, we ought to be apprehensive of unforeseen danger,
 but when it falls in our way, we should do that, which
 we think, is proper.

For now that I am in his sight, it will not be in my
 power to escape! However, let what will be the conse-
 quence, I will approach him. So having thus resolved,
 he went up to the jackal, and said,—Master, I salute
 thee! Who art thou; demanded the jackal. Said he, I
 am a cat. Ah! wicked animal, cried the jackal, get thee
 at a distance, for, if thou dost not, I will put thee to
 death. Hear me for a moment, replied puss, and then
 determine whether I merit, either to be punished, or
 to be killed.

What, is any one, simply by birth, to be punished
 or applauded; when his deeds have been scrutinized,
 he may, indeed, be either praise-worthy or punishable.

गृध्रो ब्रूते ब्रूहि किमर्थमागतोऽसि । सोऽवदत् अहमत्र
गङ्गातीरे नित्यस्नायी निरामिषाशी ब्रह्मचारी चान्द्राय
णव्रतमाचरंस्तिष्ठामि युस्मान् धर्मज्ञानरतान् विश्वास
भूमयः इति पक्षिणः सर्वे सर्वदा समाग्रे प्रस्तुवन्ति अतो
भवद्भो विद्यावयो बृहद्भ्यो धर्मं श्रोतुमिहागतः भवन्तश्चैता
दृशा धर्मज्ञाः यन्मा मतिथिं हन्तुमुद्यताः गृहस्थधर्मश्चै
षः । अरेरप्युचितं कार्यमातिथ्यं गृहमागते । क्रेतुः पार्श्व
गतां छायां नोपसंहरते द्रुमः ॥ यदि वा धनं नास्ति
तदा प्रीतिवचसाप्यतिथिः पूज्यत एव । यतः । तृणानि
भूमिरुदकं वाक्क्षानुर्यी च सूनृता । एतान्यपि सतां गेहे
नाच्छ्रियन्त कदाचन । *❀*❀*❀*❀*❀*

শকুনি কহিতেছে বল কি নিমিত্তে তুমি আসিয়াছ সে বলি
ল আমি এখানে গঙ্গাতীরে নিত্যদ্বারী নিরামিষাশী বুদ্ধচারী
চন্দ্রায়ণবৃত্তাচরিত থাকি বিশ্বাসতুমি পাকি সকলেরা আ
মার অগেতে সর্বদা ধর্মজ্ঞানরত তোমারদিগকে পশাংসা
করে অতএব বিদ্যা ও বয়সেতে বৃদ্ধ যে তোমরা তোমাদের
ধর্ম শুনিবার নিমিত্তে এখানে আসিয়াছি। আপনারা এমন
ধর্মজ্ঞ যে আমি অতিথি আনাকে মারিতে উদ্যত গৃহস্থের এ
ধর্ম বটে গৃহে আইলে শত্রুরও উপযুক্ত আতিথ্য করিবেক
অতএব ছেদন কর্তার সমীপবর্তি ছায়াকে বৃদ্ধ অপহরণ

^{does not} ^{for wealth is not} ^{then need words with him} ^{a poor}
 করে না যদি বা ধন না থাকে তবে গিয়া বাক্যেতেও অতিথি
^{must be answered, he} ^{for} ^{a seat & a room & water & kind} =
 অবশ্য গজা হন যেহেতুক আসন ও স্থান ও জল ও গিয়া বা
^{would these all} ^{a righteous mind} ^{house in such} ^{maintained in} ^{not}
 কা এ সকল সাধু লোকেরদের ঘরেতে কখন অপূর্ণ হয় না।

The jackal after this, desired the cat to give some account of himself, and he complied in the following words:—I am, said he, in the constant habit of performing ablutions on the side of this river; I never eat flesh, and I lead that mode of life which is called Brahmacharya. So, as thou art distinguished amongst those of thy own species, noted for skill in religious matters, as a repository of confidence; and as the birds here are always speaking before me in praise of thy good qualities, I am come to hear from thy mouth, who art so old in wisdom, and the duties of religion. Thou, master, art acquainted with the customs of life; but these young birds, who are in ignorance, would fain drive me, who am a stranger, away. The duties of a housekeeper are thus enjoined:

Hospitality is commanded to be exercised, even towards an enemy, when he cometh to thine house. The tree doth not withdraw its shade, even from the wood-cutter

And if there be no bread, the stranger should be entertained with kind words, and whatever can be spared, as in these lines:

Some straw, a room, water, and in the fourth place, gentle words: these things are never to be refused in good men's houses.

অপরঞ্চ । নিৰ্গুণেষ্বপি সত্ত্বেষু দযাৰুৰ্ধন্তি সাধবঃ । ন
 হি সংহরতে জ্যোত্স্নাং চন্দ্রস্বাণ্ডালবেশ্মনি ॥ অন্যচ্চ ॥
 গুরুরগ্নির্দ্বিজাतीনাং বর্ষাণাং ব্রাহ্মণোগুরুঃ । পতিরেকোগুরুঃ
 স্ত্রীणां সৰ্ব্বত্রাভ্যাगतোগুরুঃ ॥ অন্যচ্চ । অতিথির্যস্য
 ভগ্নাশোগৃহাৎ প্রতিনিবৰ্ত্ততে । স তস্মৈ দুष्कृतं দत्वा पुण्य
 मादाय गच्छति ॥ অন্যচ্চ । উত্তমস্ত্যাপি বর্ণস্য নীচো
 পি গৃহমাगतঃ । পূজনীয়োযথা যোগ্যং সৰ্বদেবমযো
 ঽতিথিঃ ॥ গৃহোঽবদত্তমার্জারোহি মাংসরুচিঃ পক্ষি
 শাবকাশ্চাত্র নিবসন্তি তেনাহং एवं ব্রবীমি । তত্ শ্রুত্বা
 মার্জারোভূমিं स्पृष्ट्वा कर्णे । स्पृशति कृष्ण कृष्ण ब्रूते च
 मया धर्मशास्त्रं श्रुत्वा वीतरागेण इदं दुष्करं व्रतं चांद्रा
 यणमध्यवसितं । यतः । परस्परं विवदमानानामपि धर्म
 शास्त्राणां अहिंसापरमोधर्मइत्यत्रैकमत्यं । *❀*

আর জল্লোকেরা নিগুণপুণিতেও দয়া করেন এই নিমিত্তে
 চন্দ্র চণ্ডালগৃহে পতিতজ্যোৎস্নাকে অপহরণ করেন না। অপর
 ব্রাহ্মণকৃত্তিয় বৈশ্যের অগ্নি গুরু ব্রাহ্মণ কৃত্তিয় বৈশ্য শূদ্রের
 ব্রাহ্মণ গুরু স্ত্রীলোকেদিগের পতিই গুরু সকলবর্ণেতে
 অতিথি গুরু । এবং অতিথিনিরাশ হইয়া যাহার গৃহ হইতে
 কিরিয়া যায় সে আপন পাপ তাহাকে দিয়া তাহার পুণ্য
 লইয়া যায় আর অধম বর্ণও যদি উত্তম বর্ণের ঘরে আইসে
 তবে সে যথোপযুক্ত পূজাহয় কেননা অতিথি সর্বদেবস্বরূপ

শকুনি বলিল বিড়ান নাংসকটি এখানে পক্ষির ছানা। সকল আছে সেই নিমিত্তে আমি এই পুকার বলি। বিড়ান তাহা শুনিয়া ভূমিস্পর্শ করিয়া দুই কর্ণস্পর্শ করিতেছে এবং কৃষ্ণ কৃষ্ণ কহিতেছে আর কহিল আমি ধর্মশাস্ত্র শুনিয়া বৈরাগ্যেতে দুষ্কর চান্দ্রায়ণ ব্রত অরাস্তকরিয়াছি যেহেতুক অহিংসা উত্তম ধর্ম ইহাতে পরস্পর বিবদমান সকল ধর্ম শাস্ত্রের সম্মতি আছে।

And in another verse it is said:

Good men extend their pity, even unto the most despicable animals. The moon doth not withhold the light, even from the cottage of a Chandala.

Again:

Fire is the superior of the Brāhmāns, the Brāhmān is the superior of the tribes, and the husband is the only superior of women; but the stranger is the superior of all.

The stranger, who turneth away from a house with disappointed hopes, leaveth there his own offences, and departeth, taking with him all the good actions of the owner.

To all this the jackal replied, cats have a taste for animal food, and above, is the residence of the young birds. It is on this account I speak to thee. The cat having touched her two ears, and then the ground, exclaimed,—I who have read books upon the duties of religion, and am freed from inordinate desires, have forsaken such an evil practice; and, indeed, even amongst those who dispute with one another about the authority of the Sāstrās, there are many by whom this sentence, *Not to kill is a supreme duty*, is altogether approved; as in this verse:

যতঃ । সৰ্ব্বে হিংসানিষ্টতাথে নরাঃ সৰ্ব্বে সহ্যাস্থ য়ে ।
 সৰ্ব্বে স্যাস্থ যমুতাশ্চ তে নরাঃ স্বৰ্গনাং মিনঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ এ
 ক এবমুহুহুর্মোনিধনে প্যনুযাতি যঃ । শরীরেণ সমং নাশং
 সৰ্ব্বে মন্যন্তু গচ্ছতি ॥ কিচ্ছ । যোঽন্নস্য যদা মাংস
 মুময়োঃ পশ্যতান্তরং । একস্য লুণিকা প্রীতিরন্যঃ প্রাণৈ
 বিমুচ্যতে ॥ অপি চ ॥ মর্ন্তব্যমিতি যদুঃখং পুরুষস্যোপ
 জায়তে । শক্যতে নানুমানেন পরোঽপি পরিবৰ্ণিতুং ॥ শৃণু
 পুনঃ । স্বচ্ছন্দবনজাতেন শাকেনাপি প্রপূর্য্যতে । অস্য
 দগ্ধোদরস্যার্থ্যং কঃ কুর্য্যাত্ পাতকং মহত্ ॥ এবে বিশ্বাস্য
 স মার্জ্জারঃ তরু কোটরে স্থিতঃ ততোদিনেণ গচ্ছত্স
 পলিশাবকানাক্রম্য কোটরভানীয় প্রত্যহং খাদতি যেষা
 মপত্যানি খাদিতানি তৈঃ শোকার্চৈঃ ॥ ❀❀❀❀

যেহেতুক যে মনুষ্যেরা সকল হিংসাহিতে নিবৃত্ত হয়
 আর যে লোকেরা সকল সহ্য আর যে অনেকের আশ্রয়
 হয় সে মানুষ্যেরা স্বর্গগামী হয় । এবং ধর্ম্মই এক মিত্র যে ম
 রিলেও সঙ্গে যায় আর সকল শরীরের সহিত নাশকে পায়।
 অপর যে যাহার মাংস খায় এই দহীর অন্তর দেখে একের ক্ষণ
 মাত্র তৃপ্তি হয় অন্য পাণে নষ্ট হয় । এবং মরিতে হইল এই
 যে দঃখ লোকের হয় সে দঃখ পর অনুমানদ্বারা কহিতে
 পারে না । পুনর্বার শুন স্বচ্ছন্দে বনেতে জন্মে যে শাক তাহা

^{it was the belly full as} ^{see the} ^{parched belly for} ^{who}
 তে ও উদর পূরণ হয় তবে এই পোড়া পেটের নিমিত্তে কে
^{the cat} ^{his} ^{confidence} ^{produced}
 মহাপাপ করে। সে মাজার এই পুকার বিশ্বাস জন্মাইয়া
^{the hollow tree remained} ^{after} ^{few} ^{days} ^{had} ^{gone} ^{birds}
 ঝুন্ধকোটরে থাকিল। অনন্তর কিছু দিন গেলে পরে পক্ষির
^{young ones} ^{seeing} ^{men} ^{holding} ^{an} ^{house} ^{brought} ^{old}
 ছানারিদিগেকে ধরিয়া আপন কোটর মধ্যে আনিয়া পুতাহ
^{eat} ^{the} ^{young} ^{birds} ⁱⁿ ^{secret}
 খায়। যে পক্ষিরদের সন্তানের দিগকে খাইল।

Those who have forsaken the killing of all; those who are helpmates to all; those who are a sanctuary to all; those men are in the way to heaven.

Again:

There is one friend, even religion, who attendeth even in death; whilst all things else go to decay with the body. Behold the difference between the one, who eateth flesh, and he to whom it belonged! The first hath a momentary enjoyment, whilst the latter is deprived of existence!

So it is said,

A fellow-creature should be spared, even by this analogy: the pain which a man suffereth when he is at the point of death.

Hear this also:

Who would commit so great a crime against a poor animal, who is fed only by the herbs which grow wild in the woods, and whose belly is burnt up with hunger,

The cat by these means having satisfied him, he remained in the hollow of the tree with the jackal, and passed the time in amusing conversation; and the jackal told the young birds that they had no occasion to go out of the way.—After this, when many days had passed, it was discovered that the cat had, by degrees, drawn the little birds down into the hollow of the tree, and there devoured them; but when he found enquiry was about to be made by those, whose, young ones had been eaten,

বিলপদ্বিরিতস্ততোজিজ্ঞাসা সমারম্ভা তত্পরিজ্ঞায
 মার্জ্জারঃ কোটরান্নিসৃত্য বহিঃ পলায়িতঃ পশ্চাৎ পশ্চি
 মিরিতস্ততোনিরূপয়দ্বিস্তত্র তরুণোঢ়রৈ শাবকাস্থ্যোনি
 প্রাপ্তানি । অনন্তরং তে জঘুঃ অনেনৈব জরদ্বয়েনাশ্মাক
 শাবকাঃ স্বাদিতাৱতি সৰ্ব্বৈঃ পশ্চিমির্নিশ্চ্যত্য গৃধ্রোব্যা
 পাদিতঃ । অতোহং ব্রবীমি অজ্ঞাতকুলশীলস্যেত্যাदि ।
 ইত্যাকার্ণ্য স জম্বুকঃ স কোপমাছ মৃগস্য প্রথমদর্শনদিনে
 ভবানপ্যজ্ঞাতকুলশীলএব তত্ কথং ভবতা সহ এতস্য
 স্নেহানুবৃত্তিরুত্তরোত্তরং বর্দ্ধতে । যত্র বিদ্বজ্জনোনাশ্চি
 শ্চাশ্চ্যস্তত্রাল্পধীরপি নিরস্তপাদপে দেশে এরণ্ডোপি দ্রুমা
 যতে ॥ অন্যস্ব । অয়ং নিজঃ পরোবেতি গণনা লঘুচেতসা ।
 উদারচরিতানান্তু বসুধৈব কুটুম্বকং ॥

তাহারা শোকার্ত হইয়া রোদিন করিতে ইতস্ততো জি
 জ্ঞাসা করিতে লাগিল। বিভীল তাহা জানিয়া কোটরহইতে
 নির্গত হইয়া বাহিরে গলাইল। তাহার পর ইতস্তত অনুসরণ
 করত গন্ধি সকল গন্ধিশাবকের অস্থি পাইল। অনন্তর
 তাহারা কহিল এই জরদ্বয় আমারদিগের সম্ভানদিগকে
 থাইয়াছে ইহা নিশ্চয় করিয়া সকল গন্ধিরা শকুনিকে নষ্ট
 করিল অতএব আমিও অজ্ঞাতকুলশীলেরে বাস দেও
 য়া উচিত নয় । সেই শৃগাল ইহা শুনিয়া ক্রোধেতে কহিল

হুগের পুথমদর্শনদিনে আপনিও অজ্ঞাতকুলশীল ছিলেন
 তবে কি পুকারে আপনকার সহিত ইহার উত্তর পুতির
 আধিক্য হইতেছে। আর শুন যেখানে পাণ্ডিত্যলোক নাই সে
 স্থানে অল্পবুদ্ধিলোকও পুশংসিত হয় যে দেশে বৃক্ষ নাই সে
 দেশে ভেরেণ্ডাও বৃক্ষ হয়। অপর ইনি আত্মীয় ইনি পর এই
 স্বপ্ননা কদুস্তকের লোকেরদের হয় সচ্চরিত্রলোকেরদিগের
 পৃথিবীর সকল ব্যক্তিই আত্মীয়।

he slipped out of the hole, and made his escape. In the
 mean time, the bones of the young ones having been dis-
 covered in the hollow of the tree by the birds, who had
 been searching here and there, they concluded that their
 little ones had been devoured by the jackal, and so being
 joined by other birds, they put him to death. Where-
 fore I say,—*To one whose family and profession are
 unknown, &c.*

The jackal, having heard all this, replied in anger, —
 Hear me, thou fool! The first time thou wast seen by the
 deer, thy family and profession were unknown. How is it
 then that your mutual kindness and attention grow high-
 er and higher;

As in a waste the arunda tree is held dear by the
 people, so a smatterer in learning is respected amongst
 the illiterate.

*Is this one of us, or is he a stranger? Such is the enu-
 meration of the ungenerous; but to those, by whom libe-
 rality is practised, the whole world is but as one family.*

যথাযং মৃগোমম বন্ধুস্তথা भवानपि । मृगोऽब्रवीत् किं
 मननोत्तरेण सर्वैरेकत्र विश्रम्भालापैः सुखिभिः स्थीयतां ।
 यतः । न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः ।
 व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा ॥ काकेनोक्तमेव
 मस्तु अथ प्रातः सर्वे यथाभिमतদ্রেগ্নতাঃ একদা নিমৃতং
 শৃগালোব্রূতে সখে অস্মিন্ বনৈকদেশে শস্যপূর্ণক্ষেত্রমস্মি
 নদৃষ্ট্বা নীত্বা দর্শয়ামি তথাক্রমে সতি মৃগঃ প্রত্যহং তত্র
 গত্বা শস্যং खादति অথ ক্ষেত্রপতিনা ক্ষেত্রং দৃষ্ট্বা পাশোঘো
 জিতঃ অনন্তরং পুনরাগতোমৃগঃ পাশৈর্বৃদ্ধোচিন্তয়ত্ কো
 মাষিতঃ কালপাশাদিব ব্যাধিপাশাত্তাতুং সমর্থঃ মিত্রা
 দন্যঃ । অনন্তরং জম্বুকস্তত্রাগত্যা উপস্থিতোচিন্তয়ত্
 ফলিতা তাবদস্মাকং কপটপ্রবন্ধেন মনোরথসিদ্ধিঃ ॥

যেমন এই মৃগ আমার সখা তেমনি আপনিও আমার সখা ॥
 হরিণ বলিল এ উত্তরে কি পুয়োজন একত্র সকলে পুণয়ালী
 পেতে সুখে থাক যেহেতুক স্বভাবতঃ কেহকাহারও মিত্র নয়
 কেহো কাহারও শত্রু নয় কিন্তু ব্যবহারেতে মিত্র ও শত্রু হয়
 গরে কাক কহিল এই হউক অনন্তর পুভাতে সকলে আপন
 অভিলষিত দেশে গেল। এক দিবস নিজনে জম্বুক বলিতেছে
 হে মিত্র মৃগ এই বনের একপাদেশে শস্যপূর্ণ ক্ষেত্র আছে
 আমি তোমাকে লইয়া তাহা দেখাই ইহা কহিয়া তাহা করিলে
 পরে হরিণ পুতিদিন সেখানে যাইয়া শস্য খায়। অনন্তর ক্ষেত্র

देखिया केंद्रपति जाल योजित करिन तारार पर
 पुनर्बार भृग आसिया पाशेते बद्ध हईया चिन्ता करिन के
 आनाके यमपाशेते न्याय এই ব্যাধের পাশহইতে মিতব্যতি
 রেকে পরিত্রাণ করিতে শক্ত হয় । তৎপর জম্বুক দেখানে
 উপস্থিত হইয়া ভাবনা করিল এত দিনে আমার কাপট্যেতে
 মনোভিলাষ সিদ্ধ হইল ।

Wherefore, I say, be thou my acquaintance in the same manner the deer is. What is the use of all these replies; observed the deer. Let us dwell together, and spend our time happily in agreeable conversation.

There is no one the friend of another; there is no one the enemy of another: friends, as well as enemies, are created through our transactions.

So, at length, the crow said;—Let it be so.

Early in the morning they used to go abroad to those parts they liked best. One day the jackal said to the deer, in great secrecy,—In a particular part of this wood, my friend, there is a field full of corn, to which I will conduct thee, and which being performed accordingly, the deer used to go there every day to feed upon the corn; but, in time, this being discovered by the master of the field, he laid snares for him. After this, the deer coming there again, and being confined in the snares, thus reasoned to himself: who but a friend can deliver me from these snares of the huntsman, so like the snares of death. In the mean time, the jackal, having arrived at the spot, stopt short, and began to consider what he should do. So far, said he, my scheme has succeeded, and by means of these deceitful snares, my wishes will be accomplished in great abundance; for when he is cut

এতস্যোক্তব্যমানস্য মাংসাসৃগ্মিমাণি অস্যোনি
 ময়াবশ্যং প্রাপ্তব্যানি তানি বাক্তৃত্যেন ভোজনানি ভবি
 শ্যন্তি। মৃগস্তং দৃষ্টোহাসিতোব্রূতে সখ্যে স্থিতিং তাবন্মম
 বন্ধনং সত্বরং ত্রাযস্ব মাং। যতঃ। আপস্তু মিত্রং জানীয়াত্
 যুদ্ধে শূরমৃগে শুচিভার্য্যাং স্ত্রীণ্যেবু বিত্তেষু ব্যসনেষু চ বাম্ভ
 বান্॥ অপরঞ্চ। উত্তবে ব্যসনে চৈব দুৰ্মিত্তে রাষ্ট্রবিপ্লবে।
 রাজদ্বারে শ্মশানে চ যস্তিষ্ঠতি স বাম্ভবঃ ॥ জম্বুকঃ
 পাশং বিলোক্য মুক্তরচিন্তয়ত্ দৃষ্টাস্তাবদথং বম্ভঃ ব্রূতে চ
 সখ্যে স্নায়ুনির্মিতপাশাস্তদ্য মদারকবারে কথমেতান্
 দন্তৈঃ স্পৃশামি মিত্র যদি চিত্তে নান্যথা মন্যসে তদা
 প্রভাতে যত্রব্যাবক্তব্যং তত্ কৰ্ত্তব্যমিতি। অনন্তরং সকাকঃ
 প্রদোষকালে মৃগমনাগতমবলোক্য ইতস্ততোঃস্বিষ্যন্।

যখন এইমূগের মাংস ছেদন করিবে তখন রক্তেতে লিপ্ত
 অস্তি আমি অবশ্য পাইব তাহাতে বিলক্ষণরূপে ভোজন
 হইবে। হরিণ তাহাকে দেখিয়া আহাদিত হইয়া বলি
 তেছে সখে শূগাল আমার বন্ধন ছেদন কর শীঘ্র আমার
 রক্ষা কর যেহেতুক মিত্রকে বিপত্তিতে আর শরকে যুদ্ধেতে
 আর শুচিকে স্বার্থেতে আর নির্ধন হইলে ভাষাকেও বাসনে
 তে বাস্তবকে জানিবেক এবং উৎসবেতেও বাসনেতেও দুর্ভি
 ক্তেতেও দেশোপদ্রবেতেও রাজদ্বারেতেও শ্মশানেতে যে

नह्यन्न थाके सेई बाँझवांशुगाल पाश देखिया बारबार चिन्ता
 करिल ऐबखन दूट हईराहे आर कहितेहे हे मित्र एपाश
 चम्प रचित ऐहेतक आजि रविवारे कि पुकारे ईहा दन्ते
 नर्ष करिब सथा यदि अन्तःकरणे अनापुकार ना मान तवे
 तुमि याहा कहिवा ताहा पुढाते आमार कहुवा । अनन्तर से
 काक सझा काले मृगके आसिते ना देखिया इतन्त
 अन्वेषण करत ।

up, I shall get his bones all covered with flesh and blood. The deer was exceedingly glad to see him, and called out to him,—Friend jackal, pray gnaw my bonds asunder, and speedily deliver me !

A friend may be known in adversity, a hero in battle, an honest man in a lone, a wife when riches are spent, and a relation in trouble.

He, who shares our dangers as well as our pleasures, who does not forsake us at the time of dearth or revolution, who accompanies us to the cemetery as well as to a court, is properly to be called a friend.

The jackal eyed the deer in his confinement again and again, and considered whether the knots were secure. These snares, my friend, observed he, are made of leather thongs, and it being Sunday, how can I touch them with my teeth; but, if it will suit thee, my friend, early in the morning I will do whatever may be thy wish. So having made this proposal, he went on one side, and laying himself down, remained silent.

In the mean time the crow, Söoböoddhēč, finding the deer did not come home, had gone about in search of him. At length he found him in this condition;

তথা বিধং দৃষ্টোবাচ সখে কিমেতৎ । সৃগেণোক্তং অবধী
 রিতসুহৃদ্বাক্যস্য ফলমেতৎ ॥ তথা চোক্তং । সুহৃদাং হিত
 কামানাং যঃ শৃণোতি ন ভাষিতং । বিপত্ সন্নিহিতা তস্য
 স নরঃ শত্রুনন্দনঃ ॥ কাকোব্রূতে স বশ্বকঃ ক্রাস্তো সৃগেণো
 ক্তং মন্মাংসার্থী তিষ্ঠত্যত্রৈব । কাকোব্রূতে উক্তমেব ময়া
 পূৰ্ব্বং । অপরাধোন মে ঽস্মোতি নৈতদ্বিশ্বাসকারণং । বিদ্যতে
 হি নৃশংসেभ্যোময়ং গুণবতামপি ॥ দীপনির্বাণগম্বশ্চ সুহৃ
 দ্বাক্যমরুন্মতীং । ন জিঘ্রন্ति ন শৃণ্বন্তি ন পশ্যন্তি
 গতাযুধঃ ॥ পरोক্ষে কার্য্যহন্তারং প্রত্যক্ষে প্রিয়বাদিন
 বর্জ্যং যেন্নাদৃশং মিত্রং বিষকুম্ভপয়োমুখং ॥ ততঃ কাকোদী
 র্ঘনিশ্বস্য অরে বশ্বক কিং ত্বয়া পাপকর্ম্মণা কৃতং ।

সেই পুকার দেখিয়া কহিল, তথা কি এ গুগ কহিল হে
 মিত্র মিত্রবাক্যের অবজ্ঞার ফল এই পশুভেতা তাহা কহি
 য়াছেন হিতাভিলাষি মিত্র লোকেরদের কথা যে না শুনে
 তাহার বিপৎ অতিনিকট আর সে লোক শত্রুর আনন্দ
 জনক । কাক বলিতেছে সে বশ্বক কোথায় আছে হরিণ
 কহিল সে আমার মাংস ভোজনের নিমিত্তে এই স্থানেই
 আছে কাক কহিতেছে আমি পূর্বেই কহিয়াছি আমার
 অপরাধ নাই এ বিশ্বাসের কারণ নয় যেহেতু খল হইতে
 গুণবানের ও ভয় আছে আর শুন গতাযু লোকেরা পুদীপ
 নির্বাণের গন্ধ পায় না ও সুহৃৎ লোকের বাক্যও শুনে না

এবং অকল্যাণী নামে নরককে দেখিতে পায় না । আর
 অসাক্ষাতে কায়াহস্তা ও সাক্ষাতে পুণ্ডরীক এমন নিতকে
 তাগ করিবেক যেমন মুখেতে কিঞ্চিৎ দুগ্ধ বিষপরিত কন্তু
 পারে কাক দীর্ঘ নিঃশ্বাস ফেলিয়া কহিল ওরে বঞ্চক শৃগাল
 তুই পাপী কি করিয়াছিস ।

upon which he exclaimed,— what, my friend, is this the promise!— Is this the fruit of the word of a friend!

He who doth not hearken to the voice of a friend and well-wisher in adversity, is the delight of his enemies.

But where is that jackal, added the crow. Alas! said the deer, he is here anxiously waiting for my flesh! My friend, observed the crow, I foretold this from the beginning.

I am not to blame he was not a subject for confidence. From the cruel, even the virtuous have cause for apprehension.

He, whose life is nearly at an end, cannot perceive the smell of the burning wick, nor listen to the advice of his friends, nor can he see the star Arundhati.

A man should forsake such a friend as speaketh kindly to his face, and behind his back defeateth his designs: he is like a pot of poison with a surface of milk.

Saying this, he heaved a deep sigh, and cried, O deceitful wretch! what hath been brought to pass by thee, thou agent of wickedness!

যতঃ ॥ সংলাপিতানাং মধুরৈর্বচোভিমিথ্যোপচারৈশ্চ
 বশীকৃতানাং । আশাবতাং শ্রদ্ধতাঞ্চ লোকে কিমর্থিনাং
 বস্তুযিতব্যমস্মি ॥ অন্যচ্চ ॥ উপকারিণি বিশ্বম্বে শুদ্ধ
 মতৌ যঃ সমাচরতি পাপং । তং জনমসত্যসম্ভং ভগবতি
 বসুধে কথং বহসি ॥ দুর্জনেন সমং সখ্যং প্রীতিঞ্চাপি ন
 কারয়েৎ । উষ্মোদহতি চাক্ষরঃ শীতঃ কৃষ্ণায়তে করং ॥
 অথ বা স্থিতিরিখং দুর্জনানাং ॥ প্রাক্ পাদয়োঃ পততি
 খাদতি পৃষ্ঠমাংসং কল্ণে কল্ণে কিমপি রৌতি শনৈর্ধিধিষ্ম ।
 হিষ্টং নিরূপ্য সহসা প্রবিশত্যশঙ্কঃ সর্বং খলস্য চরিতং
 মসকঃ কৰোতি ॥ দুর্জনঃ প্রিয়বাদী চ নৈতদ্বিস্মার
 কারণং । মধু তিষ্ঠতি জিহ্বায়ে হৃদি হালাহলং বিন্দং ॥

যেহেতুক নিষ্ঠে বাক্যেতে আলাপিত যে লোক আর
 মিথ্যোপচারেতে বশীকৃত যে লোক আর আশাযুক্ত ও
 শ্রদ্ধাযুক্ত যে যাচক ইহারদিগের যে বঞ্চনা করা সে কি ।
 অপর উপকারী ও বিশ্বস্ত ও নির্মলান্তঃকরণ যে লোক
 তাহাতে যেব্যক্তি অশ্রদ্ধাচরণ করে হে ভগবতি পৃথিবী
 মিথ্যা অভিসন্ধি সে লোকে কি পকারে ধারণ করিতেছ ।
 আর দুষ্টলোকের সহিত মিত্রতা করিবে না পীতি ও করিবে
 না কেননা তপ্ত অঙ্গারকে স্পর্শ করিলে হস্তদাহ করে আর
 শীতল অঙ্গার হাত কাল করো কিম্বা দুজনদের এই স্বভাব

আগে পায়তে পড়ে পশ্চাৎ পুষ্টেরমাংসখায় অল্পে কণ্ঠে
 আশ্রয় মধুর শব্দ করে পশ্চাৎ হিঁদু নিকৃপণ করিয়া নিঃশঙ্ক
 ইয়া অকস্মাৎ পুবেশ করে নশা এইপুকারে সকলখন্দের
 চরিত্র ব্যক্ত করে। এবং দজ্জন অথচ পুয়বাদী এমন লোক
 পুত্যয়ের স্থান নহে যে নিমিত্তে তাহারদের জিহ্বাগে নখ ও
 দ্বয়ে বিষ আছে।

How hard is disappointment in this world, to such as have been deluded by fair words, to those, who by pretended services have been seduced into the power of their enemies, to the hopeful, to those who have faith, and to expectants!

O goddess Vāsōddhā! How supportest thou that treacherous man, who exerciseth his wickedness upon his innocent and confidential companion!

A man should not form any acquaintance, nor enter into any amusements, with one of an evil character: a piece of charcoal, if it be hot, burneth; and if cold, it blackeneth the hand.

Is not this, continued the crow, the character of bad men?

Before one's face, he falleth one's feet, behind, he biteth the flesh of one's back. In one's ear, doth he not softly hum his tune with wondrous art! And when he findeth a hole, fearless, he boldly entereth. Thus doth the gnat perform the actions of a deceitful man!

He, who is at the same time malevolent and eloquent, cannot be relied on, because his lips are as sweet as honey, and his heart as destructive as poison.

অথ প্রभाতে क्षेत्रपतिर्लगुडहस्तस्तत्प्रदेशं गच्छ
 काकेनावलोकितः । तमालोक्य काकेनोक्तं सखे मृ
 गमात्मानं मृतवत्संदर्श्य वातेनोदरं पूरयित्वा पादां
 स्तब्धीकृत्य तिष्ठ अहं तव चक्षुषी चक्षुषामि यदाहं शब्द
 करोमि तदा त्वमुत्थाय सत्वरं पलायिष्यसि मृगस्तथैव
 काकवचनेन स्थितः । ततः क्षेत्रपतिना हर्षात्फुल्ललोच
 नेन तथाविधमृग্যালোকितः आः स्वयं मृतोसि इत्युक्त्वा
 मृगं बन्धनान्मोचयित्वा पाशान् गृहीतुं सत्বরোবভূব
 ততঃ কাকশব্দং শ্রুত্বা মৃগঃ সত্বরমুত্থায় পলায়িতঃ
 নমুদ্রিষ্য তেন क्षेत्रपतिना क्षिप्तेन लगुडेन मृगालोदृतः॥
 तथाचोक्तं । त्रिभिर्वर्षै स्त्रिभिर्भासैस्त्रिभिः पक्षैस्त्रिभि
 र्दिनैः । अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते ॥ *❀*

অনন্তর প্রাতঃকালে ক্ষেত্রপতি লাঠি হাতে করিয়া
 সেই স্থানে গমন করিতেছে ইহা বায়ন দেখিল ক্ষেত্র
 পালকে দেখিয়া কাক কহিল হেমিত্র মৃগ তুমি নিঃশ্বাস বদ্ধ
 করিয়া পেট ফলাইয়া পানকল স্থির করিয়া আপনাকে মৃত
 শরীরের ন্যায় দেখাইয়া থাক আনি তোমার চক্ষু ঠোটেতে
 করিয়া ঠোকরাই যখন আনি শব্দ করিব তখন তুমি উঠিয়া
 শীঘ্র পলাইয়া কাকের কথাতে মৃগ সেই পুকুর থাকিল ।
 তাহার পর আহ্লাদেতে পুরুষিত নয়ন হইয়া সে ক্ষেত্রপতি
 সেই পুকুর মৃগকে দেখিয়া আঃ আপনি মরিয়াছ ইহা

कहिया बकन छाड़ाईया जाल जड़ करिवार निनिष्ठे सहर
 हुइल अनन्तर नृग काकेर शब्द सुनिया शीघ्र उठिया पलाईल
 पारे क्षेत्रपति मगैर उद्देशे केषन करिल ये लण्ड
 ताहाते शुगल नष्ट हुइल । पण्डितेरा ताहाई कहियाहेन
 अतास्त उहकट ये पाप उ पग्या तद्दारा ईह लोकेतेई
 तिन दिनेते किश्या तिन पक्षेते किश्या तिन मासेते ।
 किश्या तिनवत्सरेते कलभोग हय ।

About this time the owner of the field was seen coming, with a staff in his hand, and his eyes red with anger. So the crow, having considered what was to be done, said,—Friend deer, feign thyself dead, and stay quiet till I make a noise, and then get up and run away as fast as thou canst. The deer was now perceived by the master of the field, whose eyes sparkled with joy, but upon his approaching nearer, and thinking him dead, he exclaimed,—Ha! thou art dead of thyself from confinement, art thou; and having said so, he began to employ himself in collecting and bundling up his snares; and upon his moving to a little distance, the deer hearing the voice of the crow, started up in great disorder, and ran away. The master of the field, upon seeing this, flung his staff at him, which, by chance, struck the jackal, and so he was killed, and not the deer. It is said, that

A man reapeth the fruit of any extraordinary good or bad action in the space of three years, three months, three fortnights, or three days.

অতোঃহং ব্রবীমি ভক্তভক্তকথোঃ প্রোতিরিত্যাদি । কাক
 পুনরাহা ভক্তিতেনাপি ভবতা নাহারোমম পুষ্কলঃ । ত্বয়ি
 জীবতি জীবামি চিত্রগ্রীবদ্রবানঘঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ তিরস্বা
 মপি বিশ্বাসোদৃষ্টঃ পুণ্যৈককর্মণাং । সতাং হি সাধুশীল
 ত্বাত্তচিত্রগ্রীবযোরিব ॥ কিঞ্চ ॥ সাধোঃ প্রকোপিত
 স্যাপি মনোনাযাতি বিক্রিয়াং । ন হি তাপয়িতুং শক্যং
 সাগরাম্ভস্তুণাল্কয়া ॥ হিরণ্যকোব্রুতে চপলস্বং চপ
 লেন সহ স্নেহঃ সর্ব্বথা ন কৰ্ত্তব্যঃ ॥ তথাচোক্তাং ॥
 মার্জ্জারোমহিষোমেঘঃ কাকঃ কাপুরুষস্তথা । বিশ্বাসাত্
 প্রভবন্ত্যেতে বিশ্বাসস্তত্র নো হিতঃ ॥ কিञ্চান্যত্ শত্রুপক্ষো
 ভবানস্মাকাং ॥ উক্তম্ভৈতত্ ॥ শত্রুণা ন হি সন্দধ্যাত্ সুশ্লি
 ষ্টেনাপি সন্ধিনা । সুতন্ত্রমপি পাণীয়ং শময়ত্যেব পাবকং ॥

অতএব আমি বলি খাদ্য আর খাদকের যে পুণ্য নে আপ
 দেয় কারণলঘুপতন নামে কাক পুনর্বার কহিল তোমাকে
 আমি ভক্তন করিলে আমার তৃপ্তজনক আহার হইবে
 না চিত্রগ্রীবেরনায় নিষ্পাপ তুমি বাঁচিলেই আমি বাঁচি ।
 এবং উত্তম লোকেরদিগের সাধু স্বভাবহেতুক পুণ্যাত্মা
 তির্য্যগোনিরদের ও বিশ্বাস দেখা গিয়াছে যেমন তোমার
 ও চিত্রগ্রীবের । আর সাধুলোক ব্রহ্ম হইলেও তাহার মন
 বিকারকে পায় না যেমন ঘাসের অগ্নিতে সমুদ্রের জল তপ্ত
 করিতে পারে না । হিরণ্যক বলিতেছে তুমি চপল চপলের
 সহিত পুণ্য কোনপুকারে কত্তব্য নয় পণ্ডিতেরা ইহা কহি

was spoken at Car & happened at a time & room & company & these

হ্যাছেন মাজার ও মহিষ ও মেঘ ও কাক ও কাপকম্ব ইহার।
not only in our case - relations in all these conditions in ...

বিশ্বাসেতে পুত্ত হয় এই হেতুক এ সকলেতে বিশ্বাস ভাল
is more than self love - I am aware myself partly - the

হা আর কি কহিব তুমি আমারদিগের শত্রুর পক্ষ। গণ্ডি
I - the huge band will come for by light is a great bag ...

তরা ইহা কহিয়াছেন সন্ধি হেতুক স্বয়ং আলঙ্কিত দষ্ট বিপ
with a chance we will not take - I for very much heated which is

ক্ষর সহিত সন্ধি করিবে না যেহেতুক অতি বড় উষ্মা যে জন
that even fear would extinguished

সেও আগুন নিব্বাণ করে।

দুর্জনঃ পরিহর্ষব্যোবিদ্যচালকৃতোপি সন্ । মণিন
 ভূষিতঃ সর্পঃ কিমসৌ ন ভয়ঙ্করঃ ॥ যদশক্যং ন তচ্ছব
 যচ্ছক্যং শক্যমেব তত্ । নোদকে শকটং য়াতি ন চ নৈ
 র্গচ্ছতি স্থলে ॥ অপরঞ্চ ॥ মহতাপ্যর্থসারেণ যে
 বিশ্বসিতি শত্রুष । মার্য্যাসু চ বিরক্তাসু তদন্তং তস
 জীবনং ॥ লঘুপতনকোব্রূতে শ্রুতং ময়া সর্বং তথাপি মম
 চৈতাবান্ সঙ্কল্পঃ ত্বয়া সহ সৌহৃদ্যমবশ্যং করণীয়
 মिति নো চেদনাহারেণাত্মানং ব্যাপাদয়িষ্যামি ॥ তথা
 হি ॥ সৃঙ্খটবৎ সুখভেদোদুঃসম্ভানশ্চ দুর্জনো ভবতি ।
 সুজনস্তু কনকঘটবৎ দুর্ভেদশ্চাসু সম্ভেদঃ ॥ কিঞ্চ ॥
 দ্রবত্বাৎ সর্বলৌহানাং নিমিত্তান্মৃগপক্ষিণাং । ময়া
 স্তোভাচ্চ মূর্খাণাং সঙ্কতং দর্শনাৎ সতাং ॥ *❖*❖*

আর দৃষ্ট লোক বিদ্যাতে ভূষিত হইলেও তাহাকে ভাগ
 করিবেক । কেননা মণিতে ভূষিত যে সর্প সে কি ভয়দায়ক
 হয় না । এব° যাহা করিবার উপযুক্ত নহে তাহা করা যায় না
 আর যাহা করিবার যোগ্য তাহা অবশ্য করা যায় অতএব
 জলে শকট কখন ও যায় না এব° স্থলে নৌকা যায় না । অপর
 বড় উত্তম ধনহেতুক শত্রুতে এব° বিরক্ত স্ত্রীতে যে লোক
 বিশ্বাস করে তাহার জীবন সেইপয্যন্ত । লঘুপতন বলিতেছে
 আমি সকল গুনিয়াছি তথাপি আমার এই পতিজ্ঞা তোমার
 সহিত সখ্য অবশ্য কর্তব্য যদি মিত্রতা না কর তবে অন্য

পরেতে আপনাকে নষ্ট করিব । আর শুন মৃগের তল্য
 স্থলোক সুখেতে ভাঁগা যায় দুঃখেতে মিলান যায় না
 বণ ঘটের ন্যায় সৃজন দুঃখেতে ভাঁগা যায় সুখেতে
 মিলান যায় । আর সকল তৈজস পাত্রের দ্ববস্থ হেতুক এবং
 মৃগ ও পক্ষিরদের কোন কারণ হেতুক এবং নখের ভয় ও
 লোভ হেতুক এবং উত্তম লোকের দর্শন হেতুক মিলন হয় ।

Although one of an evil character speak kindly, that is no motive for his being trusted: the serpent is ornamented with a gem, but is he not to be dreaded?

And again;

That is not possible, which is impossible. That which is possible, is ever possible: a cart moveth not upon the waters, nor a boat upon dry ground.

He, who from his great affluence confides in an enemy; or in a wife, who does not love him, is at the brink of ruin.

I have heard every book upon these subjects, said the crow Lāghū-pātānakā, nevertheless my mind is impressed with this idea, that I must absolutely form a friendly acquaintance with thee; but if I should fail, after our separation I shall destroy myself. It is said, that those of an evil character are like an earthen pot,—easy to be broken, but hard to be re-united, and that those of a good character resemble a vessel of gold, which, though difficult to be broken, may easily be joined again. It is said,

Metals unite from fluxility; birds and beasts from motives of convenience; fools from fear and stupidity; and just men at sight.

পাতনকের এই সকল কথা শুনিয়া হিরণ্যক বাহিরে নির্গত
 হইয়া বলিল আমি তোমার অমৃতবাক্যেতে আত্মদিত
 হিনান। পণ্ডিতেরা ইহা কহিয়াছেন পুণ্যবান লোকেরদের
 মাক্ষণমন্ত্রের তুল্য সংযুক্তিতে আদৃত পুণ্যবান লোকেরদের
 সজ্জনের বচন সে অন্তঃকরণে যেমন সুখদায়ক হয় তেমন
 স্বপ্নাত্মকে অতিশীতল জল করণকল্পান ও মুক্তামালা ও
 পুতোক অন্ন চন্দনলিগুহইলেও সুখ দেয় না।

The virtuous heart is cool like the cocoanut; the mean like plums, are soft without, but hard within.

Although friendship between good men be interrupted, still their principles remain unaltered: the stalk of the lotus may be broken, and the fibres remain connected. The qualities of a friend should be sincerity, liberality, bravery, constancy in joy and sorrow, rectitude, attachment, veracity.

Whom, then, but thyself shall I find endued with all these. Upon hearing this, Hérānyākā flipped out of his hole, and said,—Well, by the immortal water of thy words, I have even ventured out; for it is said,

Nor bathing with cool water, nor a necklace of pearls, nor anointing with sanders, yieldeth such comfort to the body oppressed with heart, as the language of a good man, cheerfully uttered, doth to the mind. To be surrounded with a good connexion is, amongst men of fair character, equal to the charm of attraction.

অন্যত্র ॥ রহস্যমেদোয়াচাচনৈদুর্য্য চলচ্চিত্ততা ।
 জ্ঞানানিঃসত্যতা দ্যুতমেতন্নিবস্য দূষণং ॥ অনেন বচন
 ক্রমেণ তদেকদূষণমপি ত্বয়ি ন লভ্যতে ॥ যতঃ ॥ পটুত্ব
 সত্যবাদিত্বং কথায়োগেন বুধ্যতে । অস্তম্যত্বমঘাপল্য
 প্রত্যলোকাবগম্যতে ॥ অপরঞ্চ ॥ অন্যথৈবহি সৌহার্দং দ্রব
 স্বচ্ছান্তরাत्मनঃ । প্রবর্ত্ততেঃন্যথা বাণী শ্রাব্যোঃ পহতচে
 তসঃ ॥ মনস্যন্যদ্বচস্যন্যত্ কাৰ্য্যমন্যদুরাत्मনাং ।
 মনস্য কং বচস্যে কং কর্ম্মণ্যেকং মহাत्मনাম্ ॥ তদ্ববতু
 ভবতোভিमतমেব ইত্যুক্তা হিরণ্যকোমৈশ্যং বিধায় ভোজন
 বিশেষবৈবীচ্যসং সন্তোষ্য বিবরং প্রবিষ্টঃ বায়সোঃপি
 স্বস্থানং গতঃ ততঃপ্রভৃতি তয়োরন্যোন্যাচারপ্রদানেন
 কুশলপ্রশ্নের্বিশ্রম্মালাপৈশ্চ কালোঃতিবর্ত্ততে । *❀*

এব° নিজনেতে অভেদরূপে ব্যবহার করা আর পুথ্যনা আর
 নিষ্ঠুরতা আর মনের চাঞ্চল্য আর জ্ঞোধ আর মিথ্যাবাক্য
 আর দ্যুত-ভীড়া এই সকল মিত্রের দৌষ এই বচনের অনুশা
 রেতে এক ও দূষণ তোমাতে দেখি না। যেহেতুক কথার দ্বারা
 পটুতা ও সত্যবাদিত্ব জানা যায় আর চাঞ্চল্য অচাঞ্চল্য
 পুত্কে বুঝা যায়। অপর কোনল অথচ নিম্নল চিত্তযাহার
 দিগের তাহারদের মিত্রতা এক পুকার হয় আর খলতাতে
 দুষ্ট-চিত্ত যাহারদের তাহারদের কথা অন্য পুকার হয় দুরাত্মা
 রদিগের মনে এক পুকার বাক্যেতে আর পুকার কর্ম্ম অন্য

पुकारमहाश्वरिद्वयः अङ्गकुरङ्गे वाह्यं वाक्येन तां
 क्रियाते एतावति । तौ नारः अभिमतं ईडकं हिरण्यक ईड
 कश्चिन्निद्रतां करिष्याथायः समीपेन निद्रां लघुपतनके
 लुप्तोपकरिष्या गन्ते पुविष्टं ईडकं कः अपनः स्थाने गेन ।
 सेह अवधि ए दयैरः परस्परं आहारदानेन ए मन्त्रं पुष्पेन
 आनापेन कालं यापनं हतेह ।

And in another place:

Betraying a secret, insolicitude, severity, insensibility, anger, want of veracity, gaming: all these are faults in a friend.

But of all these faults in due order, not one is to be found in thee. It is said,


Eloquence, and veracity of speech, are to be discovered by conversation; the being inimical with inconstancy or unsteadiness, may be perceived at sight.

The friendship of those, who are of a pure and gentle disposition, acteth one way; and that of those, whose hearts are affected with hollowness and deceit, another.

The wicked man says one thing, and does the very reverse; but a good man is the same in his actions and professions.

So Hirānyaka having promised his friendship, and entertained the crow with such provisions as he had, retired into his hole; and the crow also retired to his usual place of abode.

From that time, there existed a mutual friendship between them. Day after day passed away in making presents to one another of provisions, and the like; in reciprocal enquiries after each other's health, and in amusing conversation.

একদা লঘুপতনকো হিরণ্যকমাহ সখ্যে কষ্টতরলভ্যা
 হারমিদং স্থানং পরিত্যজ্য স্থানান্তরং গন্তুমিচ্ছামি।
 হিরণ্যকোব্রূতে মিত্র কা গন্তব্যং। তথাচোক্তং ॥ চক্ৰত্যে
 কোন পাদেণ তিষ্ঠত্যে কোন বুদ্ধিমান্। মা সমীচ্য পরং স্থানং
 পূৰ্ব্বমায়তনং ত্যজেৎ। বায়সোব্রূতে অস্তি সুনিরূপিতস্থানং।
 হিরণ্যকো ঽবদৎ কিন্তত্। বায়সোব্রূতে অস্তি দণ্ড
 কারণ্যে কর্পূরগৌরাভিধানং সরস্তত্র চিরকালোপার্জিতঃ
 প্রিয়সুহৃন্মো মন্থরাভিধানঃ কচ্ছপো ধার্মিকঃ প্রতি
 বসতি ॥ যতঃ ॥ পরোপদেশে পাণ্ডিত্যং সর্ব্বেষাং সুকারং নৃণাং
 ধৰ্ম্মং স্ত্রীযমনুষ্ঠানং কস্যচিৎতু মহাত্মনঃ ॥ সখ্যে ভোজন
 বিশেষৈর্মাংসং বর্দ্ধয়িষ্যতি হিরণ্যকোপ্যাহ তত্ক্ষমচা
 বস্থায় ময়া কৰ্ত্তব্যং ॥ **

"one day" P II " " P II " to say this place is I consider
 এক দিবস লঘুপতনক হিরণ্যককে কহিল এ স্থানে আহার
 লাভ বড় দুঃখের ইয় অতএব এ স্থান পরিত্যাগ করিয়া স্থান
 স্তরযাইতে ইচ্ছা করি হিরণ্যক বলিতেছে মিত্র কোথায় যাইব
 পাণ্ডিতের। এই পুকার কহিয়াছেন বুদ্ধিমান লোক এক পা
 য়েতে যাইবে এক পায়েতে থাকিবে অপর স্থান না দেখিয়া
 পরস্থান ত্যাগ করিবে না। কাক কহিতেছে বিলক্ষণ নিগীত
 স্থান আছে। হিরণ্যক বলিল সে কি কাক কহিল। দণ্ড
 কারণ্যেতে কর্পূরগৌর নামে এক সরোবর আছে তাহাতে
 আমার অনেক কালের পুয় মিত্র ধার্মিক মন্থরানামা কচ্ছপ

বাসকরে যেহেতুক পরের উপদেশে সকল লোকের পাণ্ডিত্য
 হয় কিন্তু ধৰ্ম্মেতে অনুষ্ঠান কোন মহাত্মার হয় অতএব সে
 উত্তম ভোজন দ্বারা আমাকে সম্বন্ধনা করিবেক । হিরণ্যক
 ও কহিল তবে আমি এখানে থাকিয়া কি করিব ।






One day the crow said to the mouse, friend Hiranyaka, provisions are very difficult to be procured in this place, wherefore I am about to abandon it, to repair to some other. Then, whither shall we go, demanded Hiranyaka. They say,

A wise man moveth with one foot, and standeth fast with the other. A man should not quit one place, until he hath fixed upon another.

Said the crow, there is a place well thought of. Where is it? replied the mouse, and the crow replied,—In Dandakaranya there is a river celebrated by the name Kar-puragow, where there resides my friend, by many years accumulated kindness, a tortoise of innate virtue, whose name is Manthara. It is said,

In giving advice to another, the experience of every one may be beneficial, but in religion, the proper example of some one of a very exalted mind.

He will treat us, added the crow, with a variety of choice fish. Hiranyaka then said, if I stay here, what shall I do; It is said,

যতঃ ॥ যস্মিন্দেখে ন সন্মানং ন বৃত্তির্ন চ বান্ধবঃ
 ন চ বিদ্যাগমঃ কস্মিন্ তং দেশং পরিবর্জ্যেত ॥
 ॥ অপরঞ্চ ॥ লোকযাচা ভয়ং লজ্জা দাঙ্গিণ্যং ত্যাগ
 শীলতা পঞ্চ যত্র ন বিদ্যন্তে ন কুর্যাৎ তত্র সংস্থিতিং ॥
 ॥ অন্যঞ্চ ॥ তত্র মিত্র ন বস্তুখ্যং যত্র নাस्ति চতুষ্টয়ং ।
 ঋৎসাদাতা চ বৈদ্যস্য শ্রোত্রিয়ঃ সজলা নদী ॥ ততোমা
 মপি তত্র নথ অথ বায়সস্তত্র তেন মিत्रেণ সহ বিচित्रা
 স্লাপৈঃ সুখে ন তস্য সরসঃ সমীপং যযৌ ততোমন্যরোদূরা
 দবলোক্য লঘুপতনকস্য যথোচিতমাতিথ্যং বিধায়
 মূষিকস্থাতিথিসত্কারং চকার ॥ যতঃ ॥ বালোবা যদি
 বা বৃদ্ধোযুবা বা গৃহমাগতঃ । তস্য পূজা বিধাতয়া
 সর্ব্বদাম্যাগতোগুরুঃ ॥ ******

যেহেতুক যে দেশে সন্মান নাই ও বৃত্তি নাই ও বান্ধব নাই
 ও বিদ্যা নাই সে দেশ পরিত্যাগ করিবেক এবং লোকের গম
 নাগমন ও ভয় ও লজ্জা ও নিপুণতা ও দানশীলতা এই পাঁচ
 যে দেশে নাই সে দেশে বাস করিবে না । অপর হে সখা সে
 স্থানে বাস করা নহে যেখানে ঋৎসাদাতা আর চিকিৎসক আর
 বান্ধব আর সজল নদী এই চারি নাই অতএব আনাকেও সে
 স্থানে নহে । অনন্তর কাক সেই নিত্রের সহিত নানাপ্রকার

मानाप करिते २ सुखे ते सेइ सरोवरें न निकटे गेला परे
 नूर दूर हते देखि लाय पतन केर उचित आतिथ्य करि ला
 बिकेर आतिथ्य करि ला। येहे तक बालक किंवा वृद्ध किंवा
 ना यदि घरें आईसे तबे ताहार सन्मान करिबेक ।

A man should abandon that country, wherein there is neither respect, nor employment, nor connexions, nor the advancement of science.

Again:

A man should not inhabit that country, through which persons do not travel, where there is no fear, nor shame, nor intelligent and liberal men.

A man should not reside in a place, where the following four things are not to be found, a creditor, Brahmans learned in the Vedas, a river full of water, and a physician.

So conduct me there also, added the mouse. The crow accordingly sat off with his friend, and as they amused the time, by conversing upon a variety of pleasing subjects, they arrived with ease upon the banks of the river. They were perceived at a considerable distance by the tortoise Manthara. He rose to receive them, and having first performed the duties of hospitality to Laghu-patanaka, he next extended them to Hira-nyaka; according to these lines:

Whether a child, or an old man, or a youth, he come to thy house, he is to be treated with respect; for of all men, thy guest is the superior.

L

অপরञ্চ ॥ গুরুরभिर्द্বিজাतीनां वर्णानां ब्राह्मणो
 गुरुः। पतिरेकोगुरुः स्त्रीणां सर्वत्राभ्यागतोगुरुः॥परञ्च॥
 उत्तमस्यापि वर्णस्य नोचोपि गृहमागतः । पूजनीयो
 यथायोग्यं सर्वदेवमयोऽतिथिः ॥ वायसोऽवदत् सखे
 मन्यर सविशेषपूजामस्मै विधेहि यतोऽयं पुण्यकर्मणां
 धुरीणः कारुण्यरत्नाकरो हिरण्यकनामा मूषिकराजः
 एतस्य गुणस्तुतिं जिह्वासहस्रद्वयेनापि यदि सर्पराजः
 कदाचित् कथितुं समर्थः स्यादित्युक्त्वा चित्रग्रीवोपा
 ख्यानं वर्णितवान् । मन्यरः सादরं हिरण्यকং সম্পূজ্যাছ
 ভদ্রান্তে আত্মনোনির্জর্জনবনাগমনকারণমাত্মাত্মমর্হসি।
 হিরণ্যকোঃবদত্ কথয়ামি শ্রুয়তাং ॥ *❖❖❖*

কেননা দ্বিজাতির অধি গুরু সকলবর্ণের ব্রাহ্মণ গুরু
 স্ত্রীলোকেরদিগের ভর্তাই গুরু সবত্র অতিথি গুরু। আর
 উত্তম জাতির গৃহে যদি অধম জাতি আইসে তবে
 তাহারও সম্মান করিবেক যেহেতুক অতিথি সবদেবতা
 স্বরূপ। বায়স কহিল হে নিম্ন মন্তর ইহার পূজা বিশেষরূপে
 করহ যেহেতুক ইনি পুণ্যবানেরদের মধ্যে শ্রেষ্ঠও দয়ার
 সমুদ্র হিরণ্যক নাম। মূষিকরাজ ইহার গুণের শুভ সপেরদি
 গের রাজা অনন্ত দুইহাজার জিহ্বাতেও যদি কদাচিত্ কহিত

পারেন ইহা কহিয়া চিত্রগুবীর বৃত্তান্ত কহিলেন । মন্তুর
আদরে হিরণ্যকে সম্মান করিয়া কহিলেন, তোমার মন্তুর
আর আপনকার নিজের বনে আসিবার কারণ কহিতে
যোগ্য হও । হিরণ্যক বলিল শুন কারণ আছে বলিতেছি ।

Fire is the superior of the Brāhmans, the Brāhman is the superior of the tribes, and the husband is the only superior of women; but the stranger is the superior of all.

Whether he, who is come to thy house be of the highest, or even of the lowest rank in society, he is worthy to be treated with due respect, for of all men thy guest is the superior.

Friend, said the crow to the tortoise, pray pay attention to this stranger; for he is the very axis of those who are famed for virtuous deeds. His name is Hiranyaka, the prince of mice, to celebrate whose great qualities, the chief of serpents may, sometimes, have occasion to employ a second thousand tongues. Having said this, he related the story of the pigeon Chitra-griva. The tortoise Manthara, having made respectful enquiries after his health, said to the mouse,—Be pleased to inform me of thy motives for quitting thy own uninhabited wilds; and Hiranyaka replied, I will recount them.

অস্মি চম্পকাভিধানায়াং নগর্যাং পরিব্রাজকা
 বসন্তি তত্র চূড়াকর্ণো নাম পরিব্রাট্ প্রতিবসতি সচ
 ভোজনাবশিষ্টভিক্ষান্নসহিত ভিক্ষাপাত্রং নাগদন্তকে
 বস্থাপ্য স্থপিতি অহম্ব তদন্নমুত্প্লুত্ব প্রত্যহং ভক্ষয়ামি
 অনন্তরং তস্য প্রিয়সুহৃদ্রোণাকর্ণো নামা পরিব্রাজকঃ
 সমায়াত তেন সহ কথাপ্রসঙ্গাবস্থিতো মম ত্রাসার্থ
 জর্জরবংশলব্ধেন ভূমিমতাডয়ত্ বীণাকর্ণউবাচ সখৈ
 কিমিতি মম কথাবিরক্তোऽন্যাসক্তো ভবান্ । চূড়াক
 র্ণেন উক্তং মিচ্ছ নাহং বিরক্তঃ কিন্তু পশ্যায়ং মূষিকো মমা
 পকারো সদা পাত্রস্থং ভিক্ষান্নমুত্প্লুত্ব ভক্ষয়তি বীণা
 কর্ণো নাগদন্তকং বিলাক্যাহ কথং মূষিকঃ স্বল্পবলো
 য়েতা বহুদূরমুত্পততি তদত্র কেনাপি কারণেন ভবিতব্যং ।

চম্পকানানে নগরোতে সম্মাসিতা বাস করে সেইখানে
 চূড়াকর্ণ নামে এক সম্মাসী থাকে সে ভোজनावशिष्ट
 ভিক্ষান্নের সহিত ভিক্ষাপাত্র নাগদন্তকেতে অর্থাৎ হস্তি
 দন্তনির্মিত ডাঁড়াতে রাখিয়া শয়ন করে আমি লাকি
 রা সেই অন্ন পতিদিন খাই পরে তাহার গিয় মিত্র বীণা
 কর্ণ নামা সম্মাসী এক দিবস আইল তাহার সহিত কথা
 পুনর্বে উপবিষ্ট হইয়া আমার জ্ঞানের নিমিত্তে জর্জর
 বংশলব্ধদ্বারা ভূমি তাড়ন করিতেছিল তখন বীণাকর্ণ কহি
 ল হে মিত্র কি আমার কথাতে বিরক্ত কেননা আমি অন্য

^{under not in P.D.} ^{is} ^{this mouse my} ^{is not present} ^{inattention am not} ^{low}
 নামা হইতেহ চড়াকর্ণ কহিল সখা আমি বিরক্ত নই কিন্তু
^{is} ^{vice into} ^{P.D.} ^{the elephant tooth having seen} ^{have}
 দেখে এই উদ্ভূর আমার অপকারী না কিয়া সবদা পাত্রস্থিত
^{little mouse} ^{mouse is far} ^{having jumped} ^{therefore for the}
 ভিক্কাই খায় বীণাকর্ণ নাগদন্তক দেখিয়া কহিল কিপুকারে
^{some cause} ^{exists} ⁱⁿ ^{product} ^{human beings}
 অনু বলবান্ মষিক এত দূরে লা কিয়া উঠে অতএব ইহাতে
 কোনহ কারণ থাকিবে । পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন ।

FABLE V.

Be it known, said he, that there is a city called Cham-pakavati, where many mendicants are wont to resort. Amongst the rest there was one, whose name was Churākarna. This mendicant having placed the dish, containing what was left of the alms he collected, upon a forked stick fixed in the wall, used to go to sleep, whilst I every day, contrived to jump from a distance, and devour the hoard. At length, one day his friend, another mendicant, whose name was Vinākarna, came in, and whilst he was engaged with him, talking over various subjects, Churākarna, in order to frighten me away, struck the ground with a piece of a bamboo. This being observed by Vinākarna, he said,—What, at present, thou art inattentive to my story, and employed about something else. To this Churākarna replied, I am not inattentive to thy story. Behold what it is! this mouse is my plunderer. He is for ever devouring the meat I get by beging, out of that dish. Upon this, Vinākarna having examined the forked stick in the wall, said,—What, is it this little weak-looking mouse, who contrives to jump so very far; there must be some reason to account for this; as in the subject of these lines:

তথাচোক্তং অকস্মাত্ যুবতী বৃদ্ধ' কেশে ধ্বাঙ্কয্য চুম্বতি ।
 পতিং নির্দয়মালিঙ্গ্য হেতুত্বং ভবিষ্যতি ॥ চূড়া কর্ণঃ পৃচ্ছ
 তি কথমেতৎ । বীণাকর্ণঃ কথয়তি অস্তি গৌড়োযে কৌশা
 ম্বীনা মনগরী তস্যাং চন্দনদাসনামা বণিক্ মহাধনো
 নিবসতি তেন পশ্চিমে বয়সি বর্ত্তমানেন কামাধিষ্টিত
 চেতসা ধনদর্পাল্লোলাবতী নাম্নী বণিকপুত্রী পরিণীতা
 সা চ মকরকেতোর্বিজয়বৈজয়ন্তী ব যৌবনবতী বমূব
 স চ বৃদ্ধপতিস্তস্যাঃ সন্তোষায় নাभवत् ॥ যতঃ ॥ শশি
 নীব হিমার্ত্তানানাং ঘর্ম্মার্ত্তানানাং রবাবিব । মনোন রমতে
 স্ত্রীণাং জরাজীর্ণেন্দ্রিয়ে পতৌ ॥ *❀*❀*❀*❀*

যুবতী স্ত্রী বৃদ্ধ পতিকে অকস্মাৎ নিতর আনির্জন করিয়া
 চূলে ধরিয়া চূষন করিল ইহাতে কারণ থাকিবে । চূড়া কর্ণ
 জিজ্ঞাসা করিতেছে এ কি পুকার । বীণাকর্ণ কহিতেছে ।
 গৌড়দেশে কৌশাম্বী নামে এক নগরী আছে তাহাতে
 চন্দনদাস নামে বৃদ্ধ ধনী এক বণিক বাস করে সেই বণিক
 বৃদ্ধাবস্থাতে ধনমত্ততা হেতুক কামপাড়িত হইয়া লীলাবতী
 নামে বণিকপুত্রীকে বিবাহ করিল সে লীলাবতী কন্দর্পের
 জয়পতাকার ন্যায় যৌবনবিশিষ্টা হইল সে বৃদ্ধ স্বামী
 তাহার সন্তোষের নিমিত্তে হইল না যেহেতুক হিমাব্রজকে =

^{moon rays in} ^{is the mind} ^{enriched & not} ^{the} ^{heart}
 রদিগের চন্দ্রকিরণেতে যেমন মন তুষ্ট হয় না এবং ঘর্ষাভি
^{refers to one} ^{don't} ^{rays in} ^{as mind} ^{pleased & not}
 নোকে রদিগের সর্ষা কিরণেতে যেমন মন তুষ্ট হয় না
^{old husband & an} ^{excellent wife} ^{must} ^{subject} ^{is not}
 তেমনি বৃদ্ধ পতিতে যুবতী স্ত্রীরদের মন সন্তুষ্ট হয় না ।

Without an apparent cause, a young woman by force draweth an old man to her, and kisseth him. When a husband is embraced without affection, there must be some reason for it.

Chuiākarna having demanded what this meant, Vinakarna related the following story:

FABLE VI.

IN the country which is called Gowr, there is a city, by name Kowsamvi, where dwelt Chandana-dama, a merchant of immense wealth. When in the last stage of life, his understanding being blinded by desire, by the glare of his riches he obtained for his wife Lilavati, the daughter of another merchant. She was youthful, and, as it were, the victorious banner of Makaraketu, the god of love, so her aged partner was ill calculated to be agreeable to her; for,

As the hearts of those who are pinched with cold, delight not in the rays of the moon; nor of those who are oppressed with heat, in the beams of the sun; so the heart of a woman delighteth not in a husband stricken in years.

। অন্যত্র ॥ পলিতেষুপি দৃষ্টেযু পুংসঃ কামামিকাமிতা ।
 মৈষজ্যমিব সন্যন্তে যদন্যমনসঃ স্ত্রিয়ঃ ॥ সচ বৃদ্ধবতি
 স্তস্যামতীবানুরাগবান্ ॥ যতঃ ॥ ধনাশা জীবিতাশা
 চ গুৰ্বী প্রাণমৃতাং সদা । বৃদ্ধস্য তরুণী ভার্য্যা প্রাণেশ্যো
 পি গরীয়সী ॥ অপি চ ॥ নোপভোক্তুং ন চ ত্যক্তুং শক্নোতি
 বিষয়ান্ জরা ॥ অস্থি নির্দেয়নশ্চৈব জিহ্বা লেডি কেবলং ॥
 অথ সা লোলাবতী যৌবনদর্পাদতিক্রান্তকুলমর্য্যা দা
 কেনাপি বণিকপুত্রেণ সহানুরাগবতৌ বভূব ॥ যতঃ ॥ স্বা
 তং পিতৃমন্দিরে নিবসতির্য্যাত্নোৎসবে সঙ্কতিঃ গোষ্ঠীপুরুষ
 সন্নিধাবন্যমোবাসোবিদেশে তথা । সংসর্গঃ সহ পুংস্বলী
 মিরসগ্রহৃৎ তের্নিজায়াঃ স্ত্রিঃ পত্যুর্বার্দ্ধকমীর্ষিতং প্রসবন
 নাশস্য হেতুঃ স্ত্রিয়াঃ ॥ *~*~*~*~*~*~*

আর পুরুষের মাংসাদি ললিত দেখিলে কাগের বিষয়
 কি যেহেতুক অনামনা স্ত্রী সেই পুরুষকে ঔষধের তুল্য
 জানে । সেই বৃদ্ধ স্বামী তাহাতে অত্যন্ত অনুরাগী হইল
 যেহেতুক পুণিরদের ধনাশা এবং জীবিতাশা সর্বদা সঙ্গী
 পেকিয়া বড় হয় বৃদ্ধের যবতী ভার্য্যা পুণিহইতে ও বড় হয়
 অপর বৃদ্ধ লোক বিষয়োপভোগ করিতে পারে না ও তাগ
 করিতে ও পারে না যেমন দস্তুরহিত কুকুর জিহ্বাতে করিয়া
 অস্থি কেবল আশ্বাদন করে । অনন্তর সেই লোলাবতী
 যৌবন-মদেতে কুলাচার অতিক্রমণ করিয়া কোন বণিক

পাণ্ডের সহিত অনুরাগিনী হইল । যেহেতুক কতৃৎ এবং
 পিতৃগৃহে বাস এবং যাত্রোৎসবে গমন এবং অনেক পুরুষের
 সন্নিধিতে বাস এবং বিদেশে বাস এবং ভুট্টা জীর সহিত
 বাস এবং আপন বৃত্তির বারবার ক্ষতি এবং পতির বান্ধব্যা
 আর পতির দ্বিষা আর পতির পুবাস এই সকল জীলোকের
 নাশের কারণ ।

Again:

What name shall we give to the passions of men,
 when their hairs are turned grey; since woman, with
 their heart fixed on others, regard them as a nauseous
 drug.

But her old husband was exceedingly fond of her;
 according to these sayings:

The lust of wealth, and the hope of life, are ever of
 importance to man; but a youthful wife to an old man
 is dearer than life itself.

Again:

An old man, like a toothless dog, that still licks bone
 with his tongue, can neither enjoy his property, nor
 can he abandon it.

Nevertheless, Lilāvati, through the intoxication of
 youth, broke through the bounds of the honour of her
 family, and attached herself to a certain merchant's son.

Too much liberty whilst resident in her father's house,
 attending festive processions, appearing in company, in
 the presence of men contrary to propriety, the same in
 by-ways, and associating with women of bad character,
 are the immediate destruction of innate morals. Sporting
 with their husband's infirmities, too, is to women the
 cause of ruin.

মূষিকো বিবরমালোক্য বল্লোপবিষ্টস্নেহে ইহ কেনাপি
 কারণেণ ভবিতব্যং চক্ষুঃ বিচিন্ত্য পরিব্রাজকেনোক্তং কারণ
 স্তাত্ বাহুস্ত্যাঙ্কনমেব ভবিষ্যতিতি ॥ যতঃ ॥ ধনবান্ বসু
 ধান্ লোকে সৰ্ব্বঃ সৰ্ব্বং সৰ্ব্বদা ॥ প্রভুত্বং ধনমুচ্চং হি রাজা
 মপ্যুপজায়তে ॥ ততঃ স্ননিব্রমাদায তেন বিবরং স্ননিত্বা
 চিরসঞ্চিতং মম ধনং গৃহীতং ততঃ প্রমুতি নিজশক্তিহীনঃ
 সত্বোত্সাহরহিতঃ স্বাহারমপ্যুত্পাদয়িতুমক্ষমঃ সত্রাসং
 মন্দং মন্দমুপসর্পন্ চূড়াকর্ণেণাবলোকিতঃ ॥ ততস্নেনোক্তং ॥
 ধনেণ বল্লোপালোক্যো ধনাভাবতি পণ্ডিতঃ ॥ পশ্যেৎ মূষিকং
 পাপং স্রজাতিসমতাং গতং ॥ কিঞ্চ ॥ অর্থম তু বিহীনস্য
 পুরুষস্ত্যাগ্যমেধসঃ ॥ ক্রিয়াঃ সৰ্ব্বাঃ বিনশ্যন্তি যীশ্মে কুস
 রিতো যথা ॥ * * * * *

মূষিক গর্ভ দেখিয়া বনেতে উপবিষ্টে হইয়াছে, অতএব
 ইহাতে কোনই কারণ থাকিবেক ॥ কিঞ্চিৎ কাল চিন্তা
 করিয়া পরিব্রাজক কহিল ইহাতে কারণ পুত্র ধন
 হইবে ॥ যেহেতুক লোকেতে সমস্ত সর্বদা সকল ধনবান
 লোকেই বলবান কেননা রাজারদের ও পুত্র ধন নাই
 হয় তাহার পর সে সন্ন্যাসী খন্ডা লইয়া বিবর খুঁড়িয়া
 আশ্রয় চিরকালের শক্তি ধন লইল সেই অবধি আগুন
 শক্তিতে হীন ও উৎসাহরহিত হইয়া কাতরে মন্মথ
 গমন করত আগুন আহঁর অর্জন করিতে অক্ষম হইলেন

In "F.N." same after but he ^{and} ~~referred~~ ^{referred} persons wealth in 1000
 ईहा चडाकन मेधिन अनन्तर ने कहिन लोक धनेते बन
 बान हय धनहते पण्डित हय ^{wealth by learning is - this simple mouse see} ~~पण्डित~~ ^{new own pieces which has received - it by wealth depends} ~~मधिकके देख~~
 एथन आपन जाति तुलातके पाहिन । आर धनेते रहित
^{little knowledge means whole works destroyed as at in summer}
 अनवधि पुरुषेस समस्त क्रिया नष्ट हय ^{low mean stream at winter distribute of water destroyed are -} ~~येमन गुण्य काले~~
 कुंसित नदी सकल जनरहित हईरा नष्ट हय ।

And hence there must be some hidden cause for the extraordinary strength of this mouse. He considered for a moment, and at length determined that the reason must be in a hoard of wealth: for

In this world the wealthy are, every one, every where, and at all times, powerful. Riches are the foundation of preferment, and an introduction to the prince.

Having said this, a spade was brought, and my hole being dug open by that mendicant, the hoard which I had been accumulating for many years, was carried away. After this, day by day, my strength decreased, and having little power to exert myself, I was unable to procure even sufficient to support life; and in this condition as I was fearfully and feebly sculking about, I was observed by Churākarnā, upon which he repeated the following lines:

With wealth all are powerful; from wealth a man is esteemed learned. Behold this wicked mouse! see, how he is reduced to the natural level of his species!

Deprived of riches, all the actions of man of little judgment disappear, like trifling streams in the summer's heat.

॥ অপরঞ্চ ॥ যস্যার্থীকৃতস্য মিত্রাণি যস্যার্থীকৃতস্য
 বান্ধবাঃ । যস্যার্থীঃ স পুমানলোকে যস্যার্থীঃ স হি
 ষাণ্ডিতঃ ॥ অন্যच्च ॥ অপুত্রস্য গৃহং শূন্যং সন্নিব্রতহিতস্য
 চ । মূৰ্খস্য চ দিশঃ শূন্যাঃ সৰ্ব্বশূন্যা দরিদ্রতা ॥
 অন্যच्च ॥ তানীন্দ্রিয়ান্যবিকলানি তদেব নাম সা
 বুদ্ধিরপ্রতিহতা বচনং তদেব । অর্থোঘাণা বিরহিতঃ পুরু
 ষঃ স এব অন্যঃ ক্লেণেণ ভবতীতি বিচित्रমেতৎ ॥ এতৎ
 সৰ্ব্বমাকৰ্ণ্য ময়াঃস্বলোচিতং সমাশ্রাবস্থানমযুক্তং
 ব্রহ্মদানীং যচ্চান্যস্মৈ এতৎ বৃত্তান্তকথনং তদপ্যনুচিতং ॥
 যতঃ ॥ অর্থনাশং মনস্তাপং গৃহে দুঃস্বরিতানি চ । বন্ধন
 চাপমানञ্চ মতিনান্ন প্রকাশয়েৎ ॥ *❀*❀*❀

again who has wealth - to him all persons (only) friends who wealth
 অপর যাহার ধন আছে তাহার সকল লোক মিত্র যাহার ধন
 has to him all persons (only or relation) who wealth has in the world
 আছে তাহার সকল লোক বান্ধব যাহার ধন আছে লোকে
 that friend is - he who has in other in a friend - again the
 তে সেই পুরুষ যাহার ধন আছে সেই পণ্ডিত । আর পুত্রহি
 & poor friends desolate of house empty & only and side
 তের এবং উত্তম মিত্রব্রহ্মিতের ঘর শূন্য ও মথের সকল দিক
 empty, poverty in enough empty - as complete of organs i.e. was even not
 শূন্য দারিদ্র্য সৰ্ব শূন্য । অপর যে ইন্দ্রিয় অন্যথা করা যায় না
 these organs are / the same contrary is not but is a name - who know
 সেই ইন্দ্রিয় যে নাম অন্যথা করা যায় না সেই নাম যে বুদ্ধির
 by time was more that is money made words mistaken & does
 প্রতিঘাত করা যায় না সেই বুদ্ধি যে বাক্যের প্রতিঘাত করা
 is at that money - what person wealth? interpretation with def
 যায় না সেই বাক্য যে লোক ধনের মন্তভাবে রহিত
 really man - to all time by doing another was no
 সেই পুরুষ আর সকল সময়েতে করিয়া অন্যপুকার হয়

এ কি আশ্চর্য্য। এই সকল শুনিয়া আমি আলোচনা করি
 লাম আমার এখানে অবস্থান উচিত নয় সম্প্রতি অন্য ব্যক্তি
 কে যে এই বস্তান্ত কহা সেও অনুপযুক্ত যেহেতুক ধননাশ
 ও মনস্তাপ ও গৃহের মন্দচরিত্র ও পরকতৃক বঞ্চনা ও অপ
 মান এই সকল বুদ্ধিমান লোক পুকাশ করিবে না।

And again:

He who hath riches hath friends, he who hath riches
 hath relations; he who hath riches is a man of conse-
 quence in the world, he who hath riches is esteemed a
 learned man

The house of the childless is empty, and so is the heart
 of him, who hath no wife The mind of a fool is empty;
 and every thing is empty, where there is poverty.

They say also,

Those faculties are not injured This is a mere saying.
 That judgment is unimpaired. That also is but an ex-
 pression, for the moment a man is deprived of the com-
 fort of riches, he is quite another. Is not this curious?

Having heard all this, I looked about me, and resolved
 that it would not, by any means, be proper for me to
 stay there Neither by the bye is it proper that I should
 communicate my affairs to others, for,

A wise man should not make known the loss of fortune,
 any mulepractices in his house, his being cheated, nor
 his having been disgraced.

তথা চোক্তং ॥ আয়বিত্তং গৃহচ্ছিদ্রং মন্থনৈথুন
 মেষজং । তপোদানাপমানম্ভ নব গোপ্যানি যত্নতঃ ॥ তথা
 চোক্তং । অত্যন্তবিমুখে দৈবে ব্যর্থ যত্নে চ পৌরুষে । মন
 স্থিনোদরিদ্রস্য বনাদন্যত্মকুতঃ সুখং ॥ অন্যচ্চ ॥
 মনস্বী ম্রিয়তে কামং কার্পণ্যং ন তু গচ্ছতি । অপি নি
 র্বাণমায়াতি নানলোয়াতি শীততাং ॥ কিচ্ছ ॥ কুসুম
 স্তবকস্যেব হ্রদে বৃন্তী তু মনস্থিনঃ । সর্বেষাং মূর্ধ্নি বা
 তিষ্ঠেদ্বিশীর্ষ্যেদথ বা বনে ॥ যচ্চাত্ত্রৈব যাত্ত্রয়া জীবনং
 তদতীত্ব গর্হিতং ॥ যতঃ ॥ বরং বিমবহীনেন প্রাণৈ সন্ত
 পিতোনলঃ । নোপচারপরিভ্রষ্টঃ ক্রপলঃ প্রার্থ্যতে জনঃ ॥

তাহা পণ্ডিতেরা বলিয়াছেন পরমায় অর্থ ধন আর গৃহ
 ছিদ্র আর মন্ত্রণা আর মৈথুন আর ঔষধ আর তপস্যা আর
 দান আর অপমান এই নয় যত্নেতে গোপন করিবেক। পণ্ডিত
 কতক তাহা উক্ত হইয়াছে দৈব অত্যন্ত বিমথ হইলে আর
 পুরুষনাথ্য ক্রিয়া ব্যর্থ হইলে দরিদ্রের বন ব্যতিরেক কোথা
 সখ অর্থাৎ অরণ্য মধ্যে বাস করা উপযুক্ত। অপর মনস্বি
 লোক মরে তথাপি কৃপণতাকে পায় না যেনন অগ্নি নিরাগ
 তাকে পায় তথাপি শিথিতাকে পায় না। ১৫এবং মনস্বি
 লোকের পুণ্ড্রবকের ন্যায় দুই বৃত্তি সকলের নাথাত্তে

থাকে অথবা বনেতে বিশীর্ণ হয় । এই স্থানেতেই যে যা
 হাতে পুণ ধারণ সে অত্যন্ত নিম্নিত যেহেতুক ধনহীন
 লোকের অগ্নিতে পুণ সমর্পণ করা ও ভাল উপচারহীন
 কৃপণ লোকের প্রার্থনা ভাল নয় ।

We should be careful not to divulge these nine things, age, wealth, domestic affairs, passion, medicine, devotion, gift, and injury.

They say, likewise;

When the frowns of fortune are excessive, and human endeavours are exerted in vain, where, but in the wilderness, can comfort be found for a poor man of sensibility.

A man of nice feelings willingly encountereth death, rather than submit to poverty. a fire meeteth extinction, before it will yield to be cold.

Again:

The fate of a man of feeling is, like that of a tuft of flowers, two-fold he may, either mount upon the head of all, or go to decay in the wilderness.

To live despised is reprobated exceedingly. Hence,

It is better that the (funeral) fire should be blown up by the breath of life of a man deprived of riches, than that he should be solicited by the poor, when destitute of the means of relief.

অন্যত্র ॥ দারিদ্র্যাছিয়মেতি ক্রীপরিগতঃ সত্বাৎ
 পরিভ্রম্যতে নিঃসত্বঃ পরিভূয়তে পরিभवান্নিर्वদমাपयते।
 निर्विघ्नः शुचमेति शेष। कनिष्ठतोषु द्वा परित्यज्यते निर्वुद्धिः
 क्षयमेत्यहो निधनता सर्वापदामास्यदं ॥ किञ्च ॥ वरं
 मौनं कार्यं न च वचनमुक्तं यदनृतं वरं लौक्यं पुंसां न च
 परकलत्राभिगमनं। वरं प्राणत्यागेन च पिशुनवाक्येष्व
 भिरुचिः वरं भिक्षाशित्वं न च परधनास्वादनमुखं ॥ वरं
 शून्या शाला न च खलु यरोदुष्टवृषभः वरं वेश्या पत्नी न
 पुनरविनीता कुलवधूः। वरं वासोरण्ये न पुनरविवेका
 धिपपुरे वरं प्राणत्यागेन पुनरधमानामुपगमः ॥ अपि च ॥
 सेवेव मानमखिलं ज्योत्স্বেব তমোজরেব লাবন্যং। हरि
 हरकथेवदुरितं गुणैः शतमप्यर्धिता हरति ॥ *❀*

এবং দরিদ্রতা হৈতক লজ্জা পায় পাণ্ডুলজ্জা লোক বনহইতে
 ভ্রষ্ট হয় বলরহিত লোক পরাভত হয় পরাভবহইতে অজ্ঞান
 হয় অজ্ঞান জন শৌক পায় পাণ্ডশৌক লোক বন্ধিহইতে ভ্রষ্ট
 হয় বন্ধিভ্রষ্ট লোক নষ্ট হয় অতএব দেখ কি আশ্চর্য্য দারিদ্র্য
 সকল বিপত্তির আশ্রয়। অপর বর মৌনবৃত্ত করিবেক
 নিখা বাকা কহিবে না পুরুষের নপুংসকতা ও ভাল পরস্ত্রী
 গমন ভাল নহে পাণ ত্যাগ ও ভাল খলবা কৌতে আসক্তি
 ভাল নহে তিক্ষা করিয়া ভোজন ও ভাল পরধনের আশা

दनसुखं भाल नहे गृहं शून्यं ओ भाल श्रेष्ठं दुष्टं वृषभं भाल
 नहे बेश्या पत्नी ओ भाल विनयरहिता स्त्री भाल नहे बनेते
 ओ वास भाल अन्यायि राजार नगरे वास भाल नहे पाप
 त्याग ओ भाल अधमेर समीपे गमनं भाल नहे । आर
 येमन सेवा समस्त मान हरण करे आर येमन ज्योत्स्ना
 अक्षकार हरे येमन वृद्धावस्था शरीरेर कांति नष्ट करे
 आर येमन विष्णु ओ शिवेर कथा पाप हरे अनि पुनर्धन
 गुणसमूहके हरण करे ।


Again:

From poverty a man cometh to shame, and being over-
 whelmed with disgrace, he is totally deprived of power.
 Without power he is oppressed, and from oppression
 cometh grief. Loaded with grief, he becometh melanco-
 ly; and unpaired by melancholy, he is forsaken by rea-
 son, and with the loss of reason, he goeth to destruction.
 Alas! the want of riches is the foundation of every mis-
 fortune.

Again:

It is better to guard silence, than that the words, which
 are uttered should be untrue. It is better to be nothing,
 than to seduce the wife of another. It is better to aban-
 don life, than to delight in cruel conversation. It is better
 to live by begging one's bread, than to gratify the mouth
 at the expence of others.

Want maketh even servitude honourable; light, total
 darkness; beauty, deformity, and even the words of
 Hari, and Hara with a hundred good qualities, crimes.

ইতি বিমৃশ্য তৎ কিমহং পরপিণ্ডেনাত্মানং পোষয়ামি
 কষ্টং ভোতদপি দ্বিতীয়ং মৃত্যুদ্বারং ॥ যতঃ ॥ পল্লবগ্ৰাহি
 পাণ্ডিত্যং ক্রৈয়কীতম্ভ মৈথুনং । ভোজনম্ভ পরাধীনং তিস্রঃ
 পুংসাং বিভম্বনাঃ ॥ অন্যম্ভ ॥ রোগী চিরপ্রবাসী পরান্ন
 ভোজী পরবাসশায়ী চ যজ্জীবতি তন্মরণং যন্মরণং
 সোঃস্য বিশ্বাসম্ভ ॥ ইত্যালোচ্যাপি লোভাত্ পুনরপ্যর্থং
 গ্রহীতুং গ্রহমকরবং ॥ তথা চোক্তং ॥ লোভেন বুদ্ধি
 ম্ভলতি লোভোজনয়তে তৃষাং । তৃষার্চোদুঃখমাপ্নোতি
 পরত্রেহ চ মানবঃ ॥ ততোঃহং মন্দং মন্দমুপসর্প স্তেন
 বীণাকর্ণেন জর্জরবংশলুণ্ডেন তান্ডিতম্ভাচিন্তয়ত্ লুণ্ডো
 হ্যসন্তুষ্ঠোনিযতমাভ্রদ্রোহী ভবতি । তথা চ । * 

ইহা চিন্তা করিয়া আনি আপনাকে কি পরপিণ্ডে পোষণ
 করিব ও হে সে ও কষ্ট দ্বিতীয় যমদ্বার যেহেতুক পল্লব
 গ্ৰাহি পাণ্ডিত্য এবং বেতন দিয়া স্ত্রীসংসর্গ এবং পরাধীন
 ভোজন এই তিন লোকের বিভ্রম । অপর রোগযুক্ত
 ব্যক্তি ও চিরকাল প্রবাসী ও পরান্ন ভোক্তা ও পরগৃহে
 শয়নকর্তা ইহারদের যে বাচন সেই মরণ যে মরণ সেই
 ইহারদের বিরাম ইহা বিবেচনা করিয়া ও লোভ পুথুক্ত পূন
 র্বার ও ধন সংগ্রহ করিবার নিমিত্তে জ্ঞান করিলাম । পণ্ডি

তেরা তাহা কহিয়াছেন লোভেতে বৃদ্ধি চঞ্চলা হয় লোভ
 তৃষ্ণাকে জন্মায় তৃষ্ণাপীড়িত মনুষ্য ইহলোকে ও পরলোকে
 দুঃখ পায়। অনন্তর মন্দং গমন করত আমি সেই বীণাকণ
 কতক জজ্বরবংশ খণ্ডদ্বারা তাড়িত হইয়া ভাবনা করি
 লাম লোভী ও অপরিবৃত্ত লোক অবশ্য আত্মঘাতী হয়

What then, shall I nourish myself with another's cake;
 This would be to open a second door to death. For,

When a man is in indigence, picking herbs is his phi-
 losophy, the enjoyment of his wife his only commerce,
 and vassalage his food.

Agam

Death is life to him who is subject to sickness, who
 hath been long an exile, who liveth upon another's bread,
 or sleepeth under another's roof; for death easeth him
 of all his pain.

Having considered all this, I have again, through covet-
 ousness, made up my mind to accept of some of thy
 provisions. But it is said,

With covetousness reason departeth: covetousness
 engendereth avarice; and the man who is tormented
 with avarice experienceth pain, both here and hereafter.

Hence, after I had been struck with the broken piece
 of bamboo by Vinākarna, I began to consider, that the
 covetous were unhappy, and assuredly their own enemy.
 It is said,

সৰ্ব্বাঃ সম্যক্তয়স্কস্য সন্তুষ্টং যস্য মানসং । উপান
 দ্রুতপাদস্য ন তু চৰ্ম্মাবৃত্তেব ভূঃ ॥ অপরঞ্চ ॥ সন্তোষামৃত
 তৃপ্তানাং যত্‌সুখং শান্তচেতসাং । কুতস্তদ্বনলুভ্যানামিত
 স্তেষ্টস্য ধাবতাং ॥ কিञ्চ ॥ তেনাধীতং শ্রুতন্তেন তেন সৰ্ব্বমশ্রু
 তিতং । যেনাশাঃ পৃষ্টতঃ কৃত্বানৈরাশ্যমবলম্বিতং ॥ অপি
 চ ॥ অসেবিতেশ্বরদ্বারমদৃষ্টবিরহব্যয়ং । অনুক্তক্ৰীড়
 বচনং ধন্যং কস্মাপি জীবনং ॥ যতঃ ॥ ন যোজনশতং দূরং
 বাধ্যমানস্য তৃষ্ণায়া । সন্তুষ্টস্য করপ্রাপ্ত্যর্থং ভবতি
 নাদরঃ ॥ তদবাস্থ্যোচিত কার্য্যপরিচ্ছেদঃ শ্রেয়ান্ ॥
 উক্তञ্চ ॥ কোধৰ্ম্মোভূতদয়া কিং সৌখ্যং নিত্যমরোগিতা
 জগতি । জন্তোঃ কঃ স্নেহঃ সজ্জাবঃ কিং পাণ্ডিত্যং পরিচ্ছেদং

তাহা কহিয়াছেন যাহার মন পরিতুষ্ট তাহার সকল সম্পত্তি
 যেমন জুতাতে আবৃত পা। যাহার তাহার সমস্তই চক্ষুতে আ
 বৃত কিন্তু পৃথিবী চক্ষুতে আবৃত নাহে । অপর পরিতোষ
 রূপ অন্তে তপ্ত অথচ শান্তান্তঃকরণ লোকেরদের যে সুখ সে
 সুখ ইত্যন্তো ধাবন করে যে ধনলোভিরা তাহারদের কোথা
 অর্থাৎ সে সুখ তাহারদের হয় না। আর সে অধ্যয়ন করিয়াছে
 শ্রবণ করিয়াছে সে সকল করিয়াছে যে লোক আশাকে প
 ক্ষাৎ করিয়া নৈরাশ্য অবলম্বন করে । এবং সে লোকের জী
 বন ধন্য যৎকর্তৃক ধনিদ্বার সেবিত না হয় ও বিরহদুঃখ দৃষ্ট
 না হয় ও নপুংসক বাক্য কথিত না হয় যেহেতুক ধনতৃষ্ণাতে
 লোকের শতযোজন ও দূর নয় সমুদ্রের হস্তস্থিত ধনেতে ও

आदर नाई সেইহেতুক এখানে আপন দশার উপযুক্ত কর্ম
করাই মঙ্গল। পাণ্ডিতেরা ইহা কহিয়াছেন সমসারে পুণিস্ত
ধর্ম কি এই পুণিতে উত্তর পুণি সকলে দয়া মুখ কি এই
পুণিতে উত্তর স্বদা অরোগিতা মুখ কি এই পুণি উত্তর
সদাৰ পাণ্ডিত্য কি এই পুণি উত্তর সদসদ্বিবেচনা।

He, whose mind is at ease, is possessed of all riches. Is it not the same to one, whose foot is inclosed in a shoe, as if the whole surface of the earth were covered with leather?

Again.

Where have they, who are running here and there in search of riches, such happiness as those placid spirits enjoy, who are gratified at the immortal fountain of happiness?

All hath been read, all hath been heard, and all hath been followed by him, who having put hope behind him, dependeth not upon expectation.

Fortunate is the life of that man, by whom the door of the noble hath not been attended, by whom the pain of separation hath not been experienced, and by whom the voice of an eunuch hath not been heard.

Again:

To one, O Nārādā, borne away by the thirst of gain, a hundred Yōjanā appears not far, even after he hath the treasure in his hand.

It is good, then, to be entirely separated far from the usual occasions of life.

What is religion? compassion for all things which have life. What is happiness? to animals in this world, health. What is kindness? a principle in the good. What is philosophy? an entire separation from the world.

॥ তথা চ ॥ পরিচ্ছেদেহি পাণ্ডিত্যং যদাপন্বা বিপ
 ন্নয়ঃ । অপরিচ্ছেদকট্ট্রুণাং বিপদঃ স্যুঃ পদে পদে ॥ তথা
 হি । ত্যজেদকং কুলস্যার্থে গ্রামস্যার্থে কুলং ত্যজেত্ । গ্রামং
 জনপদস্যার্থে স্বাভ্যর্থ্যে পৃথিবীং ত্যজেত্ ॥ অপরঞ্চ ॥ পা
 নীয়ং বা নিরায়াসং স্বাদন্নং বা ভয়োত্তরং । বিচার্য্য খলু
 পশ্যামি তত্ সুখং যত্র নির্বৃতিঃ ॥ ইত্যালোচ্যাহং নিঃস
 নবনমাগতঃ । যতঃ ॥ বরং বনং ব্যাঘ্রগজেন্দ্রেপিতং দুমাল
 যঃ পক্ষপল্লাম্ভভোজনং । তৃণানি শস্যানি পরিধানবস্ত্রকলং
 ন বন্যন্যে ধনহীনজীবনং ॥ ততোঃ পক্ষ্যসমুৎপন্নবলোদয়া
 দনেন মিত্রেণাহং স্নেহানুগৃহ্যা অনুগ্রহীতঃ অধুনা পুণ্য
 বলোদয়াৎ ভবদাশ্রয়ঃ সর্গং নয়া প্রাপ্তঃ ॥

বিত্তেরা তাহা কহিয়াছেন বিন্দুদ্রবীতে ও যে সদসদ্বি
 বেচনা সেই পাণ্ডিত্য সদসদ্বিবেচনা রহিতের পক্ষে বিপত্তি।
 আর কালের নিমিত্তে এক জনকে ত্যাগ করিবেক গানের নি
 মিত্তে কলকে ত্যাগ করিবেক দেশের নিমিত্তে গ্রাম ত্যাগ করি
 বেক আপনার নিমিত্তে পৃথিবী ত্যাগ করিবেক অপর অন্য
 গ্রামপাণ্ড জনই বা ভয়ের পর স্বাদু অন্নই বা নিশ্চয় বিচার
 করিয়া দেখিতেছি সেই সুখ যাহাতে নিবাহি । এই পরামর্শ
 করিয়া আমি নিজের বনে আইলাম যেহেতুক বায়ু ও বহু
 হস্তিমেবিত অরণ্য ও ভাল বৃক্ষ আশ্রয় ভাল পক্ষ কল ও জন

আহার ও ভাল তৃণশাখা ও ভাল বৃক্ষের বাকল পরিধান ও
ভাল বান্ধব লোকের মধ্যে ধনরহিতের জীবন ভাল নহে।
তদনন্তর ও আমার পুণ্যবলহেতুক এই মিত্রকত্ব গীতিতে
অমি অনগীত হইয়াছি ইদানী পুণ্যবলের প্রকাশহেতুক
তোমার আশ্রয় আনার স্বগ ই পাণ্ড হইল।

The learned have said, that he is esteemed wise, who finds out resources in times of danger: and he, who is devoid of this qualification, meets danger at every step.

It is said,

A man may forsake one person to save a family, he may desert a whole family for the sake of a village, and sacrifice a village for the safety of the community, but for himself, he may abandon the whole world.

It is either water without labour, or sweet bread attended by fear and danger. I have examined this; and I plainly see, that is happiness, wherein there is ease.

So, having considered all this, I am come to an uninhabited wilderness, for,

It is better to dwell in a forest haunted by tigers and lions, the trees our habitation; flowers, fruits and water for food; the grass for a bed, and the bark of the trees for garments, than to live amongst relations, after the loss of wealth.

Wherefore, as long as the stock of virtue acquired by birth shall last, I will, with this true friend, be attached to thee by kind services, and by this single virtuous act, I may obtain that place in heaven, which is consecrated to friendship. They say,

যতঃ ॥ সংসারবিষবৃক্ষস্য ই অত্র রসবত্ফলে ।
 কাব্যামৃতরসাঙ্গাদঃ সঙ্গমঃ সুজনৈঃ সহ ॥ মন্যরত
 বাচ । অর্থাঃ পাদরজোপমাগিরিনদোবেগোপমং যৌবনং
 আয়ুষ্যং জলবিন্দুলোলচপলং ফেণোপমং জীবিতং । ধর্ম্য
 যোন করোতি গিন্দিতমতিঃ স্বর্গার্গলোদ্ধাটনং পশ্চাত্তা
 পযুতোজরাপরিগতঃ শোকাগ্নিনা দহ্যতে ॥ যুষ্মাভিরতিসু
 শ্চয়ঃ কৃতসুস্যাযং দোষঃ । শৃণু । উপাভিজিতানাং বিত্তানাং
 ত্যাগএব হিরল্লণং । তডাগোদরসংস্থানাং পরোবাছদ্ববা
 ম্ভসাং ॥ অন্যচ্চ ॥ যদধোদধঃ চিত্তো বিত্তং নিচলানমিত
 ম্যচঃ তদধোনিলয়ং গন্তুং চক্রে ঘন্থানমদ্রতঃ ॥ অন্যচ্চ ॥
 নিজসৌখ্যং নিরুন্ধানোয়োধনাজ্জর্জনমিচ্ছতি পরার্থভার
 বাছোব লেগস্যৈব হি ভাজনং ॥ *❀*❀*❀*❀

যেহেতুক সংসার রূপ বিষবৃক্ষের রসাল ফল দুটি কাব্য
 রূপ অমৃতরসের আচ্ছাদন এক আর সুজনের সহিত মিলন
 এক । মস্তুর কহিল ধন পায়ের ধুলার ন্যায় আর যৌবন পর্ষ
 তনদীর বেগের ন্যায় আর জল বিন্দু যেমন চঞ্চল এমনি অ
 স্থির পরিণাম আর জীবন কেণার ন্যায় ইহা জানিয়া যে মন্দ
 বুদ্ধি স্বর্গের অর্গলের উদ্ভাটক যে ধর্ম্য তাহা না করে সেনোক
 পশ্চাৎ বদ্ধাবস্থাপাশ হইলে তাপিত হইয়া শোকরূপ অগ্নি
 তে দহ হইয়াতুনি অত্যন্ত সঞ্চয় করিয়াছিল তাহার এই দোষ
 শুন জনাশয় মধ্যস্থিত জনের বহনেতেই যেনন জল অধিক

হয় এমনি অর্জিত ধনের দানেতেই ধনের রক্ষা হয়। অপর
কৃপণ লোক নৃত্তিকাতে যে নীচেই ধন পৌঁতে সে আগেতেই
নীচস্থানে যাইবার নিমিত্তে পথ করে অপর আত্মীয় সুখ
নিরোধ করত যে লোক ধনার্জন ইচ্ছা করে সে পরের
নিমিত্তে তার বাহকের ন্যায় কেবল দুঃখের ভাজন হয়।

Of the poisonous tree, the world, two species of delicious fruit are produced, poetry, whose taste is like the immortal juice, and the society of good men.

Riches are as the dust of the feet, youth like the rapidity of a river flowing down a hill, manhood like a drop of water, transient and unsteady, and human life like froth. He who doth not perform the duties of religion, with a steady mind, to open the bars of heaven's gate, will, hereafter, when smitten with sorrow, and bent down with old age, burn with the fire of contrition.

To all this the tortoise Mānthārā replied, Sir, your fault was this: you laid up too large a stock. It is said, Giving away is the instrument for accumulated treasures: it is like a bucket for the distribution of the waters deposited in the bowels of a well.

He, who in opposition to his own happiness, delighteth in the accumulation of riches, carrieth burthens for others, and is the vehicle of trouble.

॥ অপরञ্চ ॥ দানোপভোগহীনেন ধনেন ধনিনোযদি ।
 ভবামঃ কিমু তেনৈব ধনেন ধনিনোবচং ॥ অন্যञ্চ ॥ অস
 ম্মোগেন সামান্যং কৃপণস্য ধনং পরৈঃ । অস্ব্যেদমিতি সম্ব
 দ্ব্যাহানো দুঃখেন গম্যতে ॥ তথাচোক্তং ॥ দানং প্রিয়বাक्
 সহিতং জ্ঞানমগর্ভং ত্তমান্বিতং শৌর্য্যং । বিত্তং ত্যাগনিযুক্তং
 দুর্লভমেতচ্চতুষ্টয়ং লোকে ॥ উক্তञ্চ ॥ কৰ্ত্তব্যঃ সञ্চয়োনিত্যং
 কৰ্ত্তব্যোনাতিসञ্চয়ঃ পস্য সञ্চয়শীলোসৌ ধনুধা জম্বুকো
 হতঃ ॥ তাবাহতুঃ কথমেতত্ । মন্থরঃ কথয়তি অস্তি
 কল্যাণকটকে বাস্তব্যে ধৈর্য্যোনাম্না ব্যাঘঃ সচৈকদা
 মৃগান্বিষ্যমাণো বিম্ব্যাটধীং গম্বান্ ততঃশেন প্যাপা
 দিতং নৃগমাদায় গচ্ছতা ঘোরাভ্রতিঃ শূকরোদৃষ্টঃ তেন
 ব্যাধেন মৃগং ভূমৌ নিধায় শূকরঃ শরেষাহতঃ ॥

এক দান ও উপভোগ রহিত ধনেতে যদি লোক ধনবান হয়
 তবে সেই ধনেতে আগারী ও ধনবান হই। অপর উপভোগ
 রহিত হইতুক কৃপণের ধন পর ধনের তুল্য ইহার এ ধন এই
 সম্বন্ধমাত্র আর ধন নষ্ট হইলে দুষ্ট্যতে আগারী ও নষ্ট হয়।
 পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন প্রিয় বা ক্যসহিত দান ও অহঙ্কার
 রহিত জ্ঞান ও ক্রমায়ুক্ত শরতা ও দান নিযুক্ত ধন সংসারে
 এই চারি দুর্লভ। বিজ্ঞেরা কহিয়াছেন সর্বদা সঞ্চয় করিবেক
 কিন্তু অত্যন্ত সঞ্চয় করিবেক না দেখ অতিসঞ্চয়ী শরগাল
 ধনুতে নষ্ট হইল। সেই কাক ও মূষিক বলিল এ কি পুকার।

नष्टर कहितेछे । कल्याणकटक नामे गुामे भैरव नामे
ब्याध थाके से एक दिवस भूग अश्वेषण करत बिस्वाटवी
गेल । अनन्तर एक भूगके नष्ट करिया नईया याहितेहिन
ईतोनधो एक भयानकशरीरबराहके देखिन परे सेई
ब्याध हरिणके भनिते राखिया शरैते ई शकरके मारिन ।

Another

If we are rich with the riches, of which we neither give
nor enjoy, we are rich with the riches, which are buried
in the caverns of the earth.

Without enjoyment, the wealth of the miser is the
same to him, as if it were another's. But when it is said
of a man, *he hath so much*, it is with difficulty he can
be induced to part with it.

Giving with kind words, knowledge without pride,
heroism accompanied by clemency, and wealth with li-
berality, are four excellences hard to be found.

It is said,

*A hoard should always be made, but not too great a
hoard. A jackal, through the fault of hoarding too
much, was killed by a Bow.*

How was this, demanded Hirānyaka; and Manthara
related the following story.

FABLE VII.

A certain huntsman, by name Bhairava, an inhabitant
of Kalyāna-kataka, being fond of flesh, once upon a
time went to hunt in the forests of the Vindhya moun-
tains, and having killed a deer, as he was carrying him
away, he chanced to see a wild boar of a formidable
appearance. So laying the deer upon the ground, he
wounded the boar with an arrow;

শূকরেণাপি ঘনঘোরগর্জনং কৃत्वा ব্যাধস্য মুক্ধদেশে হতঃ
 ব্যাধশ্চিক্নুদ্রুমদ্রব ভূমৌ নিপপাত ॥ যতঃ ॥ জলমগ্নিবিঞ্চ
 শস্ত্রং চুদ্বাধীপতনং গিরেঃ নিমিত্তং কিঞ্চিদাসায দেহী প্রা
 ণান্ বিমুञ্চতি ॥ অথ তयोঃ পাদাস্প্রা লনেন সর্পেণি স্মৃতঃ
 অথানন্তরং দীর্ঘরবো নামা জম্বুকঃ পরিধমন্নাহারার্থী
 তান্মৃতান্মৃগব্যাধসর্পশূকরান্ অপস্যত্ অচিন্ত্য চ ব্রহ্ম
 অয় মহদ্ধো উয় মে সমুপস্থিতং ॥ অথবা ॥ অচিন্তিতানি
 দুঃখানি যথৈবাযান্তি দেহিনাং । সুস্থান্যপি তথা মন্যে
 দৈবমত্রাতিরিচ্যতে ॥ তদ্বদতু এষাং মাংসৈর্ভাসত্রয়ং মে
 সুখেণ গমিষ্যতি উক্তা চ । মাংসমেকং নরো যাতি দ্বৌ মাংসৌ
 সৃগশূকরৌ । অহিরেকং দিনং যাতি অয় মচ্ছ্যো ধনুর্গুণঃ ।

শূকর ও তর্জন গর্জন করিয়া ব্যাধের অঙ্কোষে মারিল ব্যাধ
 ছিন্ন বৃক্ষের ন্যায় ভূমিতে পড়িয়া মরিল। যেহেতুক জন কিসা
 অগ্নি কিসা বিষ কিসা শস্ত্র কিসা ক্ষুধা কিসা রোগ কিসা
 পর্ষত ইহাতে পতন ইত্যাদি যৎকিঞ্চিৎ নিমিত্ত পাইয়া জীব
 পাণত্যাগ করে। অনন্তর বরাহ ও ব্যাধের পা আছড়ানেতে
 এক সর্পও মরিল। তাহার পর দীঘরব নামে শূগল আই
 রের নিমিত্তে ভ্রমণ করত মৃত সেই মগ ও ব্যাধ ও সর্প ও
 বরাহকে দেখিল এবং চিন্তা করিল কি আশ্চর্য্য আজি বড়
 খাদ্য দ্রব্য আগার উপস্থিত হইল কিসা পাণিরদের দুঃখ
 চিন্তিত না হইলে ও যেমন আইসে তেমনি সুখ ও মানি

ইহাতে দৈবই অতিরিক্ত হন তাহা হউক সম্প্রতি ইহারদেহ
 মাংসেতে আমার তিন মাস সুখেতে যাইবে আর ও কহিল
 মনুষ্য এক মাস যাইবে নৃগ ও শকর দুই মাস যাইবে সর্প
 এক দিন যাইবে অদ্য ধনুর ছিলাভক্ষণ করিব।

but, upon his approaching him, the horrid animal set up a roar dreadful as the thunder of the clouds, and wounding him in the groin, he fell like a tree cut off by the axe.

For,

The body having encountered some efficient cause, water, fire, poison, the sword, hunger, sickness, or a fall from an eminence, is forsaken by the vital spirits.

By the violent agitation of their feet, a serpent was also killed.

In the mean time, a jackal, by name Dirgha-rava, prowling about in search of prey, discovered the deer, the huntsman, the serpent and the boar, and having observed them said to himself,—Here is a fine feast prepared for me.

As, to corporeal beings, unthought-of troubles arrive; so, in like manner, do blessings make their appearance. In this, I think providence hath extended them farther than usual.

Be it so, as long as with their flesh I shall have food to eat. The man will last me for a whole month, and the deer and the boar for two more; then the serpent will serve me a day; and let me taste the bow-string too.

ততঃ প্রথমবুভুক্ষায়ামিদং নিঃস্বাদু কোদण्डলগ্নং স্নায়ুব
 ম্ভনং স্নাদামীত্যুক্তা তথা ক্তে সতি দ্বিগ্নে স্নায়ুবম্ভনে
 উত্পত্তিতেন ধনুষা হৃদি নির্ভিন্নঃ সদীর্ঘরবাঃ পঞ্চত্বমা
 গতঃ। অতোহং ব্রবীমি কৰ্ত্তব্যঃ সঙ্কথোনিত্যমিত্যাदि।
 তথা চ। যদ্বদাতি যদশ্নাতি তদেব ধনিনো ধনং। অন্যে
 মৃতস্য ক্রাডন্তি দারৈরপি ধনৈরপি ॥ কিञ्च ॥ যদ্বদাতি
 বিশিষ্টেभ्यো যচ্চাশ্নাতি দিনে দিনে। তন্নে বিত্তমহং মন্যে
 সেবং কস্মাপি রক্তসি ॥ যাतु किमिदानीमतिक्रान्तोपव
 र्णनेन ॥ यतः ॥ नाप्राप्यमभिवाङ्कन्ति नष्टं नेच्छन्ति शो
 चितं। आपत्स्वपि न मुह्यन्ति नराः पण्डितबुद्धतः॥ तत् सखे
 सर्वदा त्वया सोत्साहेन भवितव्यं ॥ यतः ॥ शास्त्राण्यधी
 त्यापि भवन्ति मूर्খा यस्तु क्रियावान् पुरुषः सविद्वान्।
 सुचिन्तितञ्चौषधमातुराणां न नाममात्रेण करोत्यরोगাं।

অনন্তর পুথম কুখাতে এই আশ্বাদনরহিত ধনুস্থিত চন্মের
 ছিল। এই ইহা করিয়া তাহা করিল। পরে স্নায়ুব বন্ধন ছিড়ি
 লে ধনু হৃদয়ে লাগিয়া। সে দীর্ঘরব পঞ্চত্ব পাইল। অতএব
 আমি বলি সঞ্চয় অবশ্য করিবেক কিন্তু, অতিশয় সঞ্চয়
 করিবেক না। তাহা কহিয়াছেন মৃত ব্যক্তির স্ত্রীতেও ধনে
 তে অন্য লোকেরা ক্রীড়া করে অতএব যাহা দেও ও যাহা
 খাও সেই ধনবানের ধন অপর বিশিষ্ট পাত্রকে যাহা দেও
 আর প্রতিদিন যাহা ভোজন কর সেই তোমার ধন আমি

এই নানি নতুবা কাহার ও ভোগ্য ধন রক্ষা কর যাহা হউক
 সম্পত্তি যাহা হইয়াছে তাহার বগনে কি পুয়োজন যেহেতুক
 জ্ঞানি লোকেরা অপাণ্ড বস্তুকে অভিলাষ করিবেন। নষ্ট বস্তু
 কে শোক করিতে ইচ্ছা করিবে না। বিপত্তিতে ও নষ্ট হইবে
 না সেইহেতুক হে মিত্র তুমি নিরন্তর উৎসাহী হইবা যেহেতুক
 শাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়া ও মুখ হয় যেপুরুষ ক্রিয়া করে সেই
 পণ্ডিত যেমন সুচিন্তিত ঔষধনামমাত্রেরে রোগ দূর করে না ।

But, in the first place, let me try that which is the 'least savoury'. Suppose, then, I eat this catgut line which is fastened to the bow: saving so, he drew near to eat it; but the instant he had bit the gut in two, his belly was ripped open by the spring of the bow; and he was reduced to the state of the five elements.

Besides. What a rich man gives, and what he consumes, that is his real wealth, when he dies, other covetous men will sport with his riches, and with his women.

That I esteem wealth, which is given to the worthy, and what is, day by day, enjoyed; the rest is a reserve for one knoweth not whom.

Then, at present, what is the purport of this excessive use of the force of words to exemplify?

Men of philosophic minds do not long for what is not attainable, and are not willing to lament what is lost: neither are they wont to be embarrassed in times of calamity.

Follow this practice my friend and be content.

Those who have even studied good books, may still be fools. That man is learned, who reduceth his learning to practice. That medicine is well imagined, which doth, more than nominally, restore the health of the afflicted.

অন্যত্র ॥ ন স্বল্পমপ্যধ্যবসায়ভীরাঃ কৰোতি বিজ্ঞান
 বিধির্গুণং চি। অন্মস্য কিং হস্ততলস্থিতোপি প্রকাশয়ত্য
 ধর্মিহ প্রদীপঃ ॥ তদত্র সখে দশাবিশেষে শান্তিঃ কর
 শীয়া এতদপ্যতিকষ্টং ত্বয়া ন মন্থ্যং ॥ যতঃ ॥ রাজা
 কুলবধূর্বিপ্ৰামদ্বিংশ পয়োধরাঃ স্থানম্ভ্রষ্টান শোভন্তে
 দন্তাঃ কেশানরানসাঃ ॥ ইতি বিজ্ঞায সতিমান্
 স্বস্থানং ন পরিত্যজেত্ । কাপুরুষবচনমেতৎ ॥ যতঃ ॥
 স্থানমুন্মূঢ়্য গচ্ছন্তি সিংহাঃ সত্পুরুষাগজাঃ । তত্রৈব
 নিধনং যান্তি কাকাঃ কাপুরুষামৃগাঃ ॥ তথা চোক্তং ॥
 কোধীরস্য মনস্বিনঃ স্ববিষয়ঃ কোবা বিদেশস্তথা যং
 দেশং শ্রয়তে তমেব কুরুতে বাজপ্রতাপার্জিতং । যদ্বানস
 স্তাঙ্গুলপ্রহরণঃ সিংহোবনং গাহতে তস্মিন্বেব হতদ্বিপেন্দ্র
 রুধিরৈস্তুষ্টাং হিনত্যাঙ্গনঃ ॥ *❀❀❀❀❀❀

আর উৎসাহ রহিতের শাস্ত্রজ্ঞান অতান্ন ও গুণ করে না
 অন্ধের হস্তোপরি স্থিত ও পুদীপ কি ঘট পটাদি পুকাশ
 করে । সেই হেতুক এখানে হে নিত্র অবস্থা বিশেষে শাস্ত্র
 কল্পব্য তুমি ইহা ও অত্যন্ত কষ্ট করিয়া জানি ও না যেহেতুক
 রাজা ও কুলদ্বী ও বাকগ ও মন্ত্রী ও মেঘ ও দস্ত ও চুল ও
 মনুষ্য ও নথ এ সকল স্থানচ্যুত হইলে শোভা পায় না ইহা
 জানিয়া বুদ্ধিমান লোক স্বস্থান পরিত্যাগ করিবেন। এ কাপু
 কয়ের বাক্য যেহেতুক সিংহ ও মৃগপুরুষ ও হস্তী ইহারা স্থান

ত্যাগ করিয়া যায় তাহাতেই কাক ও কাপুরুষ ও মৃগ ইহারা
 মরে । পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন বীরের ও পণ্ডিতের কি
 স্বদেশ কিবা বিদেশ যেদেশ আশ্রয় করে সেই দেশকেই
 বাহুবলেতে জয় করে দত্ত ও নখ ও লাল ন এই সকল অস্ত্র
 যে সিংহের সে যে বনে যায় তাহাতেই নষ্ট হস্তীশ্রেষ্ঠের রক্ত
 করণক আপনার পিপাসা নিবৃত্তি করে ।

The precepts of philosophy effect not the least benefit to one confirmed in fear. To a blind man, of what use is a lamp, although it be burning in his hand?

After all, added the tortoise, it is best to be satisfied in this region of good and evil destiny.

I cannot agree to that, replied Hiranyaka.

Since it is written:


A prince, a woman of high rank, a priest, a counsellor, a cloud, teeth, men, hair, and nails, never prosper by leaving their native places.

Conscious of this, the wise never quit their native country. This however, is the speech of a weak man, replied Manthara.

Since others write:

Lions, elephants, and brave men, leave their country and prosper; while ravens, cowards, and deer remain in theirs, and perish.

To a hero of a sound mind, what is his own, and what a foreign country; wherever he halteth, that place is acquired by the splendour of his arms. He quencheth his thirst with the blood of the royal elephant, even in the forest, which the lion teareth up with his teeth, and his claws the weapons of his feet.

অপরञ্চ ॥ নিপানমিব মण्डूकाः सरःपूर्णमिवाण्डजाः
 सोद्योगं नरमायान्ति विवशाः सर्वसम्पदः ॥ अन्यच्च ।
 सुखमापतितं सेवे दुःखमापतितं तथा । चक्रवत् परिवर्त-
 न्ते दुःखानि च सुखानि च ॥ अन्यच्च ॥ उत्साहसम्पन्न-
 दीर्घমूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तं । शूरं कृतज्ञं दृढ-
 सौहৃদञ्च लল্লীः स्वयं याति निवासहेतोः । विशेषतश्च ।
 विनाप्यथৈर्ধीरः स्पृশति वज्रमानोन्नतिपदं समायुक्तो-
 प्यर्थैः परिभवपदं याति कृपणः । स्वभावादुद्भूतां गुण-
 सुदयोवापि विषयां द्यুतिं सैहীं किं श्वा धृतकनकमा-
 लোपि लभते ॥ किञ्च ॥ धनवानिति हि मদোমে किं
 गतविभवोविषादमुपयासि । करनिहितकन्दुकसमा-
 पातोत्पातामनुध्याणां ॥ *

অপর যেমন বেঁগ সকল কুণ্ডিতে যায় আর যেমন মণ্ডুকা
 দি জলপূর্ণ জলাশয়ে যায় এমনি সকল সম্পত্তি অবশ্য হই-
 য়া উদ্যোগি মনুষ্যকে পায় আর আগত সুখকে সেবা করি-
 বেক এবং আগত দুঃখকেও সেবা করিবেক যেহেতু দুঃখ
 ও সুখ চক্রের ন্যায় ভ্রমণ করে । অপর উদ্যোগবিশিষ্ট ও
 অটিক্রিয় ও কষ্টজাত ও ব্যসনেতে অসক্ত ও বীর ও কৃতজ্ঞ
 ও অনেকের মিত্র এতাদৃশ পুরুষকে লক্ষী আপনি বাস করি-
 বার কারণ পানাবিশেষে শূর পুরুষ ধনব্যতিরেকে ও অনেক
 সম্মানেতে উপপদপায় কৃপণ লোক ধনবান হইয়া ও পরা-

ভব পায় ইহাতে দৃষ্টান্ত স্বভাবেতে জাত অথচ গুণসমূহেতে
 প্রাপ্ত যে সিংহসম্বন্ধিকাস্তি ইহা, কি কুকুর স্বর্ণমালা ধারণ
 করিয়া ও পায়। এবং ধনবত্তা পুষ্ট যে অক্ষর সে কি গত
 বিভব হইয়া ও বিষাদকে পায় অর্থাৎ বিষন্ন হইবে না কেন
 না মনুষ্যেরদিগের পড়া ও উঠা হস্ত স্থিত ভেটার ন্যায়।

Again:

As frogs to the pool, as birds to a lake full of water;
 so doth every species of wealth necessarily flow to the
 hands of him who exerteth himself.

They say,

When pleasure is arrived, it is worthy of attention;
 when trouble presenteth itself, the same pains and plea-
 sures have then revolutions like a wheel!

Again:

Lakshmi herself attendeth a man in search of a resi-
 dence, who is endued with resolution, of noble princi-
 ples, acquainted with the rules of action, untainted with
 lawless pleasure, brave, a judge of merit, and of steady
 friendship.

Again:

A wise man, even destitute of riches, enjoyeth eleva-
 ted, and very honourable stations, whilst the wretch,
 endowed with wealth, acquieth the post of disgrace.

How can a dog, by running away with a necklace of
 gold, obtain the noble spirit of a lion, whose nature leads
 to the acquisition of eminent virtues?

Hear this, my friend, added the tortoise.

What, though thou wert rich and of high esteem, dost
 thou yield to sorrow, because of thy loss of fortune? The
 risings and sinkings of human affairs are like those of
 a ball, which is thrown by the hand.

অপরঞ্চ ॥ অম্রকায়া খলপ্রীতির্নবসখ্যানি যো
 পিতঃ । কিঞ্চিত্ কালোপভোগ্যানি যৌবনানি ধনানি
 চ ॥ অন্যঞ্চ ॥ ইত্যর্থং নাতিচেष्टেত সা হি ধাত্ৰৈব
 নির্মিতা । গৰ্ভাদুৎপত্তিতে জন্মো মাতুঃ প্রসুতঃ স্তনৌ ॥
 অপিচ ॥ সৰ্বং যেন শুক্লোক্তাহংসাঃ শূকাস্থ হরিতো
 ক্তাঃ । ময়ূরাশ্চত্রিতা যেন স তে হ্যন্ত বিধাষ্যতি ॥
 ॥ অপরঞ্চ ॥ সতাং রহস্যং শ্রুণু মিত্র । জনযত্নজর্জনে দুঃখং
 তাপয়ন্তি বিপত্তিষু । মোহয়ন্তি চ সম্পত্তৌ কথমর্থ্যঃ
 সুখাবহাঃ ॥ অপরঞ্চ ॥ ধর্মার্থং यस্য বিত্তেহা বরং তস্য
 নিরীহতা । প্রচালনাঙ্ঘ্রি পঙ্কস্য দূরাদস্পর্শনং বরং ॥
 যতঃ । যথা ছ্যামিষমাকাশেপল্লিभिः শ্বাপদৈর্ভুবি ।
 भक्ष्यते सलिले नक्रैस्तथा सर्वत्र वित्तवान् ॥ *❀*

এব° নেচক্ষায়ী ও খলের গৌম ও নতন শস্য ও স্ত্রী ও
 যৌবন ও ধন এ সকল কিঞ্চিৎ কাল উপভোগের বিষয় ।
 অপর ধনের নিমিত্তে অত্যন্ত চেষ্টা করিবে না যেহেতুক
 বিধাতাই তাহা সৃষ্টি করিয়াছেন কেননা গভহইতে জীব
 জন্মিলেই মাতার দুই স্তনের দুগ্ধ করে এবং হে মিত্র যিনি
 হংসকে শুক্ল করিয়াছেন আর শূকপক্ষিকে হরিত্বর্ণ করি
 য়াছেন আর ময়ূরকে যিনি চিত্রিত করিয়াছেন তিনি তো
 মার বস্ত্রি বিধান করিবেন । আর হে মিত্র উত্তম লোকের
 দেব রহস্য শুন অর্থোপার্জনে দঃখ জন্মায় আর নষ্টেতে
 তাপ জন্মায় আর সম্পত্তিতে মোহ জন্মায় তবে অর্থ

কি প্রকারে সুখদায়ক হয় অপর ধন্যমানুষের নিমিত্তে
 বাহার ধনচেষ্টা তাহার নিশ্চেষ্টতা ভাল যেহেতুক কদমের
 পুঙ্কালনহইতে দূরে থাকিয়া স্পর্শনা করা ভাল। যেহেতুক
 যেন পক্ষিরা আকাশে আনিষভোজন করে আর ব্যাঘ্রেরা
 পৃথিবীতে আর কুস্তীরেরা জলেতে ভোজন করে তেমনি
 এই সকল লোক ধনবান।

Observe,

The shadow of a cloud, the friendship of wicked men, new corn, women, youth, and riches, are to be enjoyed but for a short time.

Again:

Man should not be over-anxious for a subsistence, for it is provided by the creator. The infant no sooner dropeth from the womb, than the breasts of the mother begin to stream.

My friend:

He, by whom the geese were formed white, parrots are stained green, and peacocks painted of various hues,—even he will provide for their support.

Attend also, my friend, to these secrets of the wise men.

How are riches the means of happiness; in acquiring they create trouble, in their loss they occasion sorrow, and they are the cause of endless divisions amongst kindred!

It were a blessing, for the sake of virtue, if he, who hath a lust of gain, were deprived of desire Where there is a splashing of dirt, it is good not to meddle, and to keep far away

As meat is devoured by the birds in the air, by the beasts in the field, and by the fishes in the waters; so, in every situation, there is plenty.

অন্যত্র ॥ রাজতঃ সলিলাদগ্নেষ্ণারতঃ কুজনাদপি ।
 ময়মর্ঘবতাং নিত্যং মৃত্যোঃ প্রাণমৃত্যুতানিব ॥ তথা হি ।
 জন্মানি লেখবদ্ধলে কিন্তু দুঃখমতঃ পরং দৃচ্ছা সম্যদ্য
 তোনাশ্চি যত্রচ্ছান নিবর্ততে । অন্যত্র ॥ ভ্রাতঃ শৃণু ।
 ধনং তাবদসুলভং লব্ধং কৃচ্ছ্রেণ রচ্ছতি । লব্ধনাশো
 যথা মৃত্যুস্তস্মাদেতন্ন চিন্তয়েৎ ॥ তৃষ্ণাং চেহ পারিত্য
 ক্ত্বা কোদরিদ্রঃ কর্দ্বশ্বরঃ । তস্যাশ্বেত্ প্রসরোদত্তোদাস্যশ্চ
 শিরসি স্থিতং ॥ অপরশ্চ ॥ যদ্যদেবহি বাঙ্ক্রেত ততোবা
 ঙ্গা প্রবর্ততে । প্রাপ্তএবার্থতঃ সোর্থস্ততো বাঙ্ক্ৰা নিবর্ত
 তে ॥ কিং বজ্জনা মম পক্ষপাতেন ময়ৈব সহ্যত্র কালো
 নীয়তাং ॥ যতঃ ॥ আমরণান্তাঃ প্রণয়াঃ কোপাস্তত্
 ত্শ্চলমঙ্গুরাঃ । পরিত্যাগাশ্চ নিঃসঙ্গাভবন্তি হি মহাত্মনাং ।

অপর রাজাইহতে এব° জনইহতে এব° অগ্নিইহতে এব°
 চৌরইহতে এব° খলইহতে ও ধনিরদের সর্বদা ভয় যেমন
 যমইহতে পুণিরদের সর্বদা ভয় এব° দুঃখসমূহ সংসারে
 ইহার পর দুঃখ কি যাহাতে ইচ্ছানুরূপ সম্পত্তি হয় না আর
 যাহাতে ইচ্ছা ও নিবৃত্তি হয় না হে ভ্রাতঃ আর শুন ধন অতি
 দুর্লভ ধন পাইলে কষ্টেতে রক্ষা হয় আর পাণ্ডধনের নাশ
 মৃত্যুতলা সে হেতুক ধন চিন্তা করিবেনা ধন বিষয়ে তৃষ্ণা
 পরিত্যাগ করিলে কে দরিদ্র কে ধনী যদি তৃষ্ণার স্থান দেয়
 তবে দাস্য নাথার উপর থাকে । অপর বিষয়কে যত বাঙ্ক্ৰা

करे ततई पुबुद्ध हय विषय प्राप्त हईनेई ताहा हईते
बाह्या निबुद्धि आर आमार अनेक पक्षपाते कि पुयोजन
आमारि सहित एथाने काल बापन कर येहेतुका उद्धम
लोकेर दिगेर पुति नरण पर्याप्त थाके आर क्रोध
अत्यन्त काले नष्ट हय आर परित्याग सङ्ग्रहित हय ।

The rich man hath cause of fear, from the magistrate, from water, from fire, from the robber, not less from his own people, even as from death the living.

In this life of many troubles, what pain is greater than this;—Desire without ability, when that desire turneth not away!

Man should consider this: that riches are not easily acquired, when acquired, they are with difficulty preserved; and that the loss of what hath been acquired, is like death.

Be not therefore anxious for wealth.

Were the thirst of gain entirely forsaken, who would be poor, who would be rich? If way were given to it, slavery would stand upon the head.

Whatever a man should long for, from that his inclination turneth away. He, whose inclination turneth away from an object, may be said to have obtained it.

But why so much upon this subject, let us beguile the time together in amusing conversation.

Men who are acquainted with their own nature, pass their days, until the period of death, in gladness, free from anger, in the enjoyment of the present moment, unmindful of the world, and free from apprehension.

ইতি শ্রুত্বা লঘুপতনকোব্রুতে ধন্যোসি মন্থর সর্বথা
 শ্লাঘ্যগুণোসি ॥ যতঃ ॥ সন্তেষব সতাং নিত্যমাপদুহর
 লঘুমাঃ। গজানাং পঙ্কময়ানাং গজাএব ধুরম্বরাঃ। শ্লাঘ্যঃ
 সএকোভূবি মানবানাং সউত্তমঃ সতপুরুষঃ সধন্যঃ।
 যস্যার্থিনোবা শরণাগতাবা নাশাবিভঙ্গাবিসুখাঃ
 প্রযান্তি ॥ অথ তদেবন্তে স্বেচ্ছাহারবিহারং কুর্বাণাঃ
 সন্তুষ্টাঃ সুখং নিবসন্তি অথ চিত্রাঙ্গনামা মৃগঃ কৈনাপি
 ত্রাসিতস্তত্রাগত্য মিলিতস্ততপস্বাদাযান্তং মৃগসব
 লোক্য ভয়ং সঁচিন্ত্য মন্থরোজলং প্রবিষ্টোমূষিকশ্চ বিবরং
 গতঃ কাকোপি উড়ীয বৃদ্ধমারুঢ়স্ততোলঘুপতনকেন
 সুদূরং নিরুপ্য ভয়হেতুর্ন কোপ্যাযাতিত্যালোচিতং পস্বা
 ন্নদ্রচনাদাগত্য পুনঃ সর্ব মিলিত্বা তত্রৈবোপবিষ্টাঃ।

ইহা শুনিয়া লঘু পতনক কহিতেছে মন্থর তুমি ধন্য তুমি
 পুশংসিতগুণবিশিষ্ট যেহেতুক উত্তম লোকেরদের উত্তম
 লোকই বিপত্তারযোগ্য ইহাতে দৃষ্টান্ত পঙ্কপাতিত হস্তির
 হস্তাই উদ্ধারকর্তা। পৃথিবীতে মনুষ্যেরদের মধ্যে কেবল
 সেই পুতিষ্ঠিত সেই মহৎ সেই সৎপুরুষ সে ধন্য যাহার
 নিকটে যাচকেরা এবং শরণাপন্ন লোকেরা নিরাশ হইয়া
 বিমুখ হইয়া না যায়। অনন্তর তাহার। এই পুকারে আ
 পনং ইচ্ছাতে আহার বিহার করত সন্তুষ্ট হইয়া সুখেতে
 বাস করে পরে এক দিবস চিত্রাঙ্গনানী মৃগ কোন ব্যক্তি

কর্তৃক ভীত হইয়া সেখানে আসিয়া মিলিল পরে আগত
 মৃগকে দেখিয়া ভয় সম্ভাবনা করিয়া মম্বর জলে পুৰিষ্ট
 হইল আর উন্মুর গর্তমধ্যে গেল আর কাক ও উড়িয়া বৃক্ষে
 আরোহণ করিল তাহার পর লঘুপতনক অতিদূর পর্যন্ত
 দেখিয়া ভয়ের কারণ কিছুই আইসে না ইহা আলোচনা
 করিল পশ্চাৎ কাকের বাক্যোতে সকলে পুনর্বার আসিয়া
 সেই স্থানে মিলিয়া বসিল।

O! thou art a worthy person, Manthara, observed the crow,—a place of confidence, and a being for protection!

The good are always ready to be the upholders of the good in their misfortunes Elephants even are wont to bear the burthens of elephants, who have sunk in the mire.

Again:

He is one in this world worthy to be praised of mankind, he is a great and a good man, from whom the needy, or those, who come for protection, go not away with disappointed hopes, and discontented countenances.

In this manner did they pass their time; and, contented with their particular food, they dwelt happily together.

After a while, one day a certain deer, by name Chitrangä, who had been alarmed by some one, came there with his heart panting with fear, and was joined by the rest; but as they expected that he was pursued by something, which had been the cause of his apprehensions, Manthara went into the water, the mouse into a hole, and the crow flew to the top of a tree. Lāghū-patanaka looked on all sides; and being satisfied respecting their fears, they all joined company again.

মন্যরেণোক্তং ভদ্রং মৃগ স্বাগতং স্বেচ্ছয়া উদকাচাছারো
 নুভূয়তাং অত্রাবস্থানেন বনমিদং সনাথীক্রিয়তাং
 চিচাক্লোব্রুতে লুম্বকত্রাসিতোহং ভবতাং শরণমাगतঃ
 ভবদ্বিঃ সহ সখ্যমিচ্ছামি । হিরণ্যকোঽবদত্ মিত্রং
 তাবদস্মাভিঃ সহ ভবতা যত্নেন মিলিতং ॥ যতঃ ॥ অৌ
 রসং কৃতসম্বন্ধং তথা বংশক্রমাগতং । রক্তিতং ব্যসনেভ্যশ্চ
 মিত্রং জ্ঞেয়ং চতুर्वিধং ॥ তদত্র ভবতা স্বমৃদহনির্ধিশেষ
 স্যোয়তাং । তচ্ছুত্বা মৃগঃ সানন্দোভূত্বা স্বেচ্ছাছারং
 কৃত্বা পানীয়ং পীত্বা জলাসন্নতরুচ্ছায়াচামুপবিষ্টঃ
 অথ মন্যরেণোক্তং সখে মৃগ এতস্মিন্নির্জনে বনে কোন ত্বং
 ত্রাসিতঃ কদাচিত্ কিং ব্যাধাঃ সঞ্চারন্তি । মৃগেণোক্তং

মহর কহিল হে মৃগ সুখেতে আইনে ইহা জিজ্ঞাসিয়া
 কহিল আপন ইচ্ছাতে জল তৃণাদি আহার করহ এ স্থানে
 অবস্থান করিয়া এই বনকে সন্মানিক করহ চিচ্ছাছা বনি
 তেছে আনি ব্যাধকর্তৃক ত্রাসিত হইয়াছি আপনকারদের
 শরণাগত হইলাম আপনকারদিগের সহিত সখা ইচ্ছা করি
 তেছি । হিরণ্যক বলিল হে মিত্র তুমি আগারদিগের সহিত
 অনেক কষ্টেতে মিলিয়াছ যেহেতুক মিত্র চারি পুকার হয়
 তাহা কহিয়াছেন ঔরস অর্থাৎ পুত্রাদি আর কৃতসম্বন্ধ
 অর্থাৎ যাহার সহিত মিত্রতা করা যায় পক্ষবানকৃগে
 মিত্র আর বামনহইতে রক্ষিত এইহেতুক আপনি এখানে

আপন গহের ন্যায় থাকুন তাহা শুনিয়া হরিণ আহাদিত
হইয়া আপন ইচ্ছাতে আহার করিয়া জল পান করিয়া
জল সন্নিধিতে বৃক্ষছায়াতে বসিল অনন্তর মস্থর কহিল
হে মিত্র নৃগ এই নিজেন বনে কাহাকর্তক তুমি ভীত হইয়াছ
এ বনে কখন কি ব্যাধ আইসে নৃগ কহিল।

Health! friend deer, said the tortoise, thou art welcome
Mayst thou find provisions to thy heart's desire in this
situation! may this forest never be rendered the property
of a master!

To this the deer Chitrāṅgā replied,— I was alarmed
by a huntsman, and I am come to you for protection.
And I wish also to cultivate a friendship with you. Sir,
said the mouse,—Your friendship with us is accomplished
without much trouble.

For,

Friends are said to be of four distinctions: one's own
offspring, a connexion, one descended from the same
genealogical series, and one whom we may have preserv-
ed from misfortunes.

So let us dwell together, added the mouse, without dis-
tinction. The deer, upon hearing this was rendered hap-
py. He ate of what was his usual food, and having drank
some water, he laid himself down in the shade of a tree
which grew in the stream. Friend deer, said the tortoise
Māntharā, by whom wert thou alarmed? What, are there
huntsmen coming to this desolate forest? There is some
very important news, said the deer, which I will com-
municate

অস্মি কলিঙ্গবিধয়ে স্বমাহ্নদো নামা নরপতিদিগ্বিজয়
 ব্যাপারক্রমেণাগত্য চন্দ্রভাগানদীতীরে সমাবাসিত
 কটকোবর্ত্ততে প্রাতঃ তেনাভাগত্য কর্পূরসরঃ সমীপে
 ভবিতব্যমিতি ব্যাধানাং মুখাৎ কিম্বদন্তা শ্রুয়তে তদ
 ভাপি প্রাতঃবস্থানং ভয়হেতুকমিত্যালোচ্য যথাবসর
 কার্যমারম্ভতাং তচ্ছুত্বা কূর্মঃ সমমাহ জলাশয়া
 ন্তরং গচ্ছামি । কাকশৃগাবপি উক্তবন্তাবেবমস্তু । ততো
 । হরণ্যকোবিহস্যাহ জলাশয়ান্তরে প্রাপ্তে মন্থরস্র কু
 শলং স্থলে গচ্ছতঃ কঃ প্রতীকারঃ ॥ যতঃ ॥ অস্মাংসি
 জলজন্তুনাং দুর্গা দুর্গনিবাসিনাং । স্বভূমিঃ শ্বাপদাদীনাং
 রাজ্ঞাং মন্ত্রী পরং বলং ॥ রুখে লঘুপতনকানেনোপদে
 শেন তথা ভবিতব্যং । স্বয়ং বীচ্য যথাবধ্বাঃ পীড়িতং
 কুচকুদ্রলং । বলিকপ্তব্রোভবেদাং দী ত্বং তথৈব ভবিস্যসি ॥

কলিঙ্গদেশে এককালীন নামে ভগীল আছেন তিনি দিগ্বিজয়
 করিতে আসিয়া চন্দ্রভাগা নদীর তীরে কটক সংগ্রহ করিয়া
 বাস করিতেছেন প্রাতঃ কালে তিনি আসিয়া কর্পূর সরো
 বর নিকটে থাকিবেন ইহা বাধের নথিতে জনশ্রুতি
 শুনিতেছি সেই হেতুক এখানেতে ও ভয়ের কারণ ইহা
 বিবেচনা করিয়া যাঁহা কহিয়া হয় তাঁহা কর। ইহা শুনিয়া
 কচ্ছপ ভীত হইয়া কহিল অন্য পুরুষের কাছে বাই কা
 ক এক ইরিগ কহিল এই হউক পরে হিরণ্যক হোমিয়া বলিল

অন্য হৃদে গেলে মন্থরের মন্থন কিন্তু স্থলে যাইবার কি
উপায় যেহেতুক জনজন্তুর জন বড় বল, দুর্গবাসির দুর্গ
বড় বল ব্যাঘ্রাদির স্বস্থান বড় বল রাজার মন্ত্রী বড় বল
সখা লঘপতনক এই পরামর্শেতে সেই পুকার হইবে যেমন
বণিকপুত্র রাজপুত্র কতক আপন জীর কূচকোরক নদিত
আপনি দেখিয়া দুঃখী হইল তেমনি তুমি হইবা।

In the country, which is called Kalinga, there is a prince, whose name is Rukmāṅga. He is just returned from his conquests of the countries about him, and has taken up his residence upon the banks of the river Chandra-bhāgā. To-morrow early, he has resolved to come to the lake Karpūra. This I overheard from the mouth of one sportsman. Having investigated this affair, so much to be dreaded, let the necessary means be pursued for our safety. The tortoise, upon hearing these words, fearfully exclaimed,—I will flee to the water for protection! The crow and the deer said,—Be it so. The mouse, Hiranyaka, laughed, and said: When Manthara shall be in the water, it will be good for him. It appeareth to me improper that he should be found crawling upon dry ground.

They say,

The strength of aquatic animals is the waters; of those who dwell in towns, a castle; of lions, their own station, of princes, a minster.

But friend Laghū-patanaka, I hope by this advice, he will not suffer the regret experienced by a certain merchant's son, in beholding his wife caressed by a young prince.

তেজস্বীঃ ক্রমমেতৎ । হিরণ্যকঃ কথয়তি অস্মি
 কাণ্ডকুজবিষয়ে বীরসেনো নাম রাজা তত্র বীরপুরনাম
 নগরে নিবসতি তেন তুরঙ্গবলো নাম রাজপুত্রো ভোগযতিঃ
 ক্রান্তঃ সচ মহাধনস্তরুণঃ একদা স্বনগরং ত্যজ্যত্নতি
 প্রৌঢ়ৌবনাং স্লাম্যকর্তা নাম বণিকপুত্রবধূমালো কথ্য
 আস ততঃ স্বহৃদ্যং গতা স্মরা কুলমতিস্বস্থাঃ ক্রান্তে চ
 দূতী প্রেযিতবান্ ॥ যতঃ ॥ সম্ভাগস্তাদদস্তে প্রভদতি
 পুহ স্তাদদেদেদ্রিয়াং লজ্জা তাবদ্বিধতে বিনয়মপি
 সমালম্বন্তে তাবদদয় । ধূচাপাশ্চমুখাঃ শ্রবণপথগতা
 নীলপচ্ছাণ্যে তাবদস্তৌলাবতীনাং ন হৃদি পরিহৃতা
 দৃষ্টিবাণাঃ পতন্তি ।

তাহার। বলিল এ কি পকার । হিরণ্যক কহিতেছে ।
 কাণ্ডকুজ দেশে বীরপুর নাম নগরে বীরসেন নাম এক
 রাজা থাকেন তিনি তুরঙ্গবল নামে রাজপুত্রকে সর্বাধিকার
 করিলেন সে রাজপুত্র মহাধনী ও বীর । এক দিবস
 আপন নগর ভ্রমণ করত অত্যন্ত যবতী লাবণ্য বতী নামে
 বণিকপুত্রবধূকে দেখিলেন । অনন্তর আপন অটালি
 কাতে গিয়া কামাকুলচিত্ত হইয়া তাহার নির্মিত্তে দূতী
 পাঠাইলেন যেহেতুক তাবৎপর্যন্ত সংপথ থাকে আর
 তাবৎপর্যন্ত পুরুষ ইন্দিয়েরদের পত্ন হইন আর তাবৎ
 পর্যন্ত লজ্জা থাকে আর তাবৎপর্যন্ত বিনয় আলম্বন

করে যাবৎ পর্যন্ত সন্দরী নারীদিগের দৃষ্টিরূপ অব্যর্থবাণ
 a man's mind not fails - other arrows sometimes fallible are this
 পুরুষের হৃদয়ে না পড়ে অন্য বাণকদাচিত ব্যর্থও হয় এবাণ
 ear failing is not - & other arrows a bamboo bow by drawing
 কখন ব্যর্থ হয় না আর অন্য বাণ বংশনির্মিত ধনতে আকৃষ্ট
 being - Horned and - the arrow-jewel-like bow by drawing being thrown on
 হইয়া ক্রিষ্ট হয় এ শরাজ্জকপ ধনতে আকৃষ্ট হইয়া ক্রিষ্ট হয়
 and other arrows can as fast as they discharged are & other arrows
 আর অন্য শর কণপ্যন্ত গিয়া মুক্ত হয় আর অন্য শরের
 various coloured feathers and - the have eyes leaves blue colour feathers
 নানাবর্ণ পাখা থাকে এ শরের চক্ষুর পাতাই নীলবর্ণ পাখা ।

How was this? said they; — and Hiranyaka recounted as follows:

FABLE VIII.

In the country of Kānya-kūbjā there was a rājā, whose name was Virra-sēna, by whom his royal son, by name Turanga-vela, had been appointed yuva-rāja over the city of Vira-pura. He was young, and possessed of great riches. Once upon a time, as he was walking about his own city, he saw a certain merchant's wife, who was in the very prime of youth, and was exquisitely beautiful. The young rājā being returned to his palace, with a heart quite occupied with love, sent a female messenger to her.

For,

A person will pursue the right way, will be master of his passions, will evince modesty, and will be possessed of affability, so long as his heart is not pierced by the irresistible arrows of a beautiful woman's eyes. Other shafts sometimes fail in their aim, but that is not the case with the above-mentioned; the former are drawn by, and shot from, a bow made of bamboo, the latter are drawn by, and darted from, the bow formed by the eye-draws; those are decorated with feathers of various hues, and these are likewise adorned with the feathers of the blue eye-lids.

সাপি লাঘণ্যবতী তদবলোকনচক্ষণাত্ প্রভৃতি তদেকা
 হৃদয়াভবত্ ॥ অথ দূতীবচনং শ্রুত্বা লাঘণ্যবত্যা
 অহং পতিব্রতা কথমেতস্মিন্নধর্মে পতিলঙ্ঘনে প্রবর্তে ॥
 যতঃ ॥ সা ভার্য্যা যা মৃছে দত্তা সা ভার্য্যা যা প্রজা
 বতী । সা ভার্য্যা যা পতিপ্রাণা সা ভার্য্যা যা পতি
 ব্রতা ॥ ন সা ভার্য্যেতি বক্তব্য্য যস্যামর্ত্তা ন তুষ্যতি ।
 তুষ্টে মর্ত্তরি নারীণাং সন্তুষ্ঠাঃ সৰ্ব্বদেবতাঃ ॥ মর্ত্তা
 যস্যাগুণান্ ব্রূতে শীলধর্ম্ম সমন্বিতান্ । অগ্নিসান্নি
 কমর্য্যাদোমর্ত্তা হি শরণং স্ত্রিয়াঃ ॥ ততো যদ্যদাদি
 শতি মে প্রাণেশ্বরস্তদেবাহমবিচারিতং কেরামি । *

এবং সে লাঘণ্যবতী ও তাহার দর্শন করণ অবধি তদৈকচিত্তা
 হইল। অনন্তর লাঘণ্যবতী দূতীর বাক্য শুনিয়া কহিল আমি
 পতিব্রতা কিপুকারে এই ভক্তার ত্যাগরূপ পাপ কর্ম্মে পূব্ভা
 হইব। যেহেতুক যে স্ত্রী গৃহ ব্যাপারে নিপুণা সেই পত্নী যে
 স্ত্রী পুত্রবতী সেই পত্নী যে স্ত্রী পতির পিয়া সেই পত্নী যে স্ত্রী
 সাধী সেই পত্নী যাহাকে স্বামী তুষ্ট না হয় তাহাকে
 ত্যাগাই বলি না স্বামী যাহাকে তুষ্ট হয় তাহার সকল দেব

^{pleased with - (husband) woman's nature & nature} ^{for} ^{near} ^{recent} ^{expect} ^{to} ^{hope}
 তাই সন্তুষ্ট তর্জা যে ছীর স্বভাব ও ধর্মের পুণ্যসা করে
^{the woman's refuge - the} ^{my} ^{"life and soul"} ^{what command} ^{into}
 সেই উত্তম। যেহেতুক অগ্নি নিকটে পুণ্ড্রময়াদ তর্জাই
^{that} ^{the} ^{desires} ^{not} ^{done} ⁱⁿ ^{the} ^{way}
 ছীরক্ষক এইহেতুক আমার পুণ্যনাথ যাহা ২ আজ্ঞা করেন
 তাহাই আমি বিবেচনা না করিয়া করি ।

She also, whose name was Lāvanyavati, having observed him, gladly became of one mind with him.

Lāvanyavati having attended, to her words, made this reply — I am faithful to my husband, how can I then commit such a crime? For,

She is a wife, who is clever in the house, she is a wife, who is fruitful in children; she is a wife, who is the soul of her husband; she is a wife, who is faithful to her husband.

She is not worthy to be called a wife, in whom the husband delighteth not. All the gods are pleased with her, in whom the husband is happy.

That wife is best, who is praised by his husband for her good temper, and piety; for, the husband is the asylum of women; and of his honour the fire beareth testimony.

And according to this doctrine, I make it a rule to do whatever the lord of my life directs, without examination.

দূত্ববাচ সত্যতমমেতৎ । লাবণ্যবত্ববাচ ধ্রুবং সত্য
 মেতৎ । ততোদূতিকায়া গত্বা তত্তৎ সৰ্ব্বং তুরঙ্গবলস্যাগে
 নিবেদিতং । তচ্ছুত্বা তুরঙ্গবলোব্রবীৎ স্বামিনানোয
 সমর্পয়িতব্যেতি কথমেতৎ শক্যং ॥ কুট্টিন্যাহ উপায়ঃ
 ক্রিয়তাং ॥ তথা চোক্তাং ॥ উপায়েন হি যৎ শক্যং ন তৎ
 শক্যং পরাক্রমৈঃ । শৃগালেণ হতোহস্তী গচ্ছতা পঙ্কবৰ্জনা ॥
 রাজপুত্রঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ । সা কথয়তি অস্মি ব্রহ্মা
 রণ্যে কৰ্পূরতিলকো নাম হস্তী তমবলোক্য সৰ্ব্বশৃগালা
 স্খিন্তয়ন্তি স্ম যদযং কেনাপ্যুপায়েন স্মিয়তে তদাস্মাক
 মেতদেহেন মা সচতুষ্টয়স্য ভোজনং ভবিষ্যতি তত্র একেণ
 বৃহদশৃগালেণ প্রতিজ্ঞাতং ময়া বুদ্ধিপ্রভাবাদস্য মরণং
 সাধয়িতব্যং অনন্তরং সবলকঃ কৰ্পূরতিলকসমীপং গত্বা
 সাষ্টাঙ্গপাতং প্রণম্য উবাচ দেব দৃষ্টিপ্রসাদং কুরু ।

দূতী কহিল এ কথা অতিসত্য লাবণ্যবতী কহিল এ বাকা
 নিশ্চয় সত্য । অনন্তর দূতী যাইয়া সেই সকল তুরঙ্গবলে
 সমুখে নিবেদন করিল তাহা শুনিয়া তুরঙ্গবল বলিল ভগ্ন
 আনিয়া সনর্পণ করিবে ইহা কি কাপে ইহবে । অউনীকহিল
 উপায় ককণতা হা বিজেরা কহিয়াছেন যেহেতুক উপায়েতে
 যাহা করিতে শক্ত হয় তাহা বলেতে করিতে সমর্থ হয় না ।
 কেননা কদম পথে গমন করত শৃগাল কতক হস্তী নষ্ট
 হইল । রাজপুত্র জিজ্ঞাসিল এ কিপুকারা অউনীকহিতেছেন

বৃক্ষারণ্যেতে কপূরতিলক নামে এক হাতী থাকে তাহাকে
 দেখিয়া সকল শূকরগণ চিন্তা করিল যদি একোন উপা-
 য়েতে মরে তবে ইহার শরীরে আনারদের চারি মাসের
 ভোজন হয় তাহাতে এক বৃদ্ধ জম্বুক পুতিজ্ঞা করিল যে
 আমি বৃদ্ধ পুতাবেতে ইহার মরণ সাধিব। পরে সে
 বৃদ্ধক কপূরতিলকের নিকটে গিয়া অষ্টাদশ পুণাম করিয়া
 কহিল হে মহারাজ দৃষ্টি পুনাদ করুন।

To this the messenger replied,—It is right; and Lāva-nyavati observed, that it was even so.

The messenger having heard the whole of what Lāva-nyavati had to say, reported it to Tuṅgavala, who observed, that he would invite her with that dear husband of hers, and, in his presence, pay her great attention and respect To this the messenger replied,—This is impracticable Let art be used, for it is said,

That which cannot be effected by force may be achieved by cunning. An elephant was killed by a jackal, by going over a swampy place.

How was this? demanded the rāja's son. And the messenger related the following story.

TABLE IX.

In the forest Brahmāṇya, there was an elephant, whose name was Karpūratilaka, who having been observed by the jackals, they all determined, that if he could by any stratagem be killed, he would be four months provisions for them all. One of them, who was exceedingly viciously inclined, and by nature treacherous, declared, that he would engage, by the strength of his own judgment, to effect his death. Some time after, this deceitful wretch went up to the elephant, and having saluted him by bending his whole body, said, godlike Sir! condescend to grant me an audience.

হস্তী ব্রূতে কল্ব' কুতঃ সমায়াতঃ। সোঽবদৎ জম্বুকোহঁ
 সর্বৈর্বনবাসিभिঃ পশুभिর্নিলিত্বা ভবত্সকাশং প্রস্থাপিতঃ
 যদ্বিনা রাজ্ঞা অবস্থাতি ন যুক্ত' তদ্রাটবীরাভ্যেঽভি
 বেক্তু' ভবান্ সর্ব'স্বামিগুণোপেতোনিরূপিতঃ ॥ যতঃ ॥
 যঃ কুলাভিজনাচারৈরতিশুদ্ধঃ প্রতাপবান্। ধার্মিকো
 নীতিকুশলঃ সস্বামী যুজ্যতে মুবি ॥ অপরঞ্চ পশ্য ॥
 রাজান প্রথমং বিন্দেত্ততোভার্য্য' ততোধনং। রাজন্যসতি
 লোকেস্মিন্ কতোভার্য্য' কতোধনং ॥ অন্যচ্চ ॥ পর্য্যন্য
 ইব ভূতানামাধারঃ পৃথিবীপতিঃ। বিকলেপি হি পর্য্যন্যে
 জীযত ন তু ভূপতৌ ॥

হস্তী বলিতেছে কে তনি কোথা হইতে আইলা সে कहिल
 আমি শগাল সমস্ত বনবাসী পশুরা मिलिया आपनार निकट
 পাঠাইয়াছেন যে রাজাব্যতিরেকে বাস করা অনুপযুক্ত এই
 हेतुक बनराज्योते অভিषेक करिबार निमित्ते सकल राज
 नरुणैते यत्तु आपनाके निरूपण करियाछे। ये हेतुक
 कलाचारादि ते अति पवित्र एव' बलवान् एव' धर्मिष्ठ एव'
 ज्ञानो से व्यक्ति पृथिवी ते राजा र उपायुक्ता आर देखे पुथम
 राजाके आशुय करिबेक पश्चात् तायीके लडिबेक अन

^{meattho cakkhāya} ^{unā} ^{do} ^{for} ^{the} ^{earth} ⁱⁿ ^a ^{king} ^{not}
 স্তর ধনাজন করিবেক কেননা এই পৃথিবীতে রাজা না
^{being} ^{where} ^{imp?} ^{where} ^{meattho} ^{as} ^{cloud} ^{as}
 থাকিলে কোথা ভয়া কোথা ধন। অপর যে যেন
^{name} ^{by} ^{all} ^{creatures} ^{life} ^{meant} ^{of} ^{son} ^a ^{king} ^{all}
 বৃষ্টিদ্বারা সকল পানির জীবনোপায় এমন রাজা সকল
^{realised} ^{refuse} ^{cloud} ^{no} ^{being} ^{on} ^{the} ^{each} ⁻⁻ ^a ^{king}
 জীবের আশ্রয় যেমন না থাকিলে ও জীব সকল বাঁচে রাজা
^{it} ^{being} ^{it} ^{exists} ^{not} ⁻⁻
 না থাকিলে বাঁচে না।

Who art thou? demanded the elephant, and whence comest thou? My name, replied he, is Kshudrā-buddhi, a jackal, sent into thy presence by all the inhabitants of the forest, assembled for that purpose, to represent, that as it is not expedient to reside in so large a forest as this, without a chief, your highness, endued with all the cardinal virtues, hath been selected to be anointed rājā of the woods.

It is said,

He who, by walking for ever in the ways of those who are preferred, is exceedingly pure, of a noble mind, virtuous and just, and experienced in the rules of policy, is worthy to be chosen master of the earth.

Observe again:

Let a man first choose his king, next his wife, and then acquire riches; for without a king, of what use are wives and riches in this world!

Besides:

The lord of the land, like the clouds, is the reservoir of the people; for when the clouds fail, do they not find succour in their king?

নিমিত্তবিষয়বস্তী প্রায়শোদণ্ডযোগাজ্জগতি পরবসেহ্মিন্
দুর্লভঃ সাধুবৃত্তঃ । কশ্যমপি বিকল বা ব্যাধিত বাধন
বা পতিসপি কুলনারী দণ্ডভীত্যাভ্যুপৈতি ॥ * * *

তদ্বা সন্মধেলা ন বিচলতি তথা কৃতা সত্বরমা
গম্যতাং দেবেন । ইত্যুক্তা উত্থায চলিতঃ । ততোঽসৌ রাজ্য
লোভাক্ষণঃ কর্পূরতিলকঃ শৃগালবর্জনা ধাবন্মহাপঙ্কে
নিমগ্নঃ ততস্তেন হস্তিনা উক্তং সখে শৃগাল কিং অধুনা
বিধেয়ং পঙ্কে নিপতিতোঽহং স্মিমে পরাষ্ট্র্য পশ্য । শৃগালে
বিহস্যোক্তাং দেব মম পুচ্ছকাবলম্বনং কৃতা উত্তিষ্ঠ যস্য
মদ্বিধস্য বচসি ত্বয়া প্রত্যয়ঃ কৃতঃ তদনুভূয়তামশ
রণং দুঃখমিতি ॥ তথাচোক্তা ॥ যদি সত্বজ্ঞানিরতো ভবিষ্যসি
ভবিষ্যসি । তথা সজ্জনগোষ্ঠীষু পতিষ্যসি পতিষ্যসি ॥

অপর রাজদণ্ডেতেই লোক পায় আপন উপযুক্ত কর্ম
করে কেননা এই পরাধীন সংসারে সচ্চারিত্র লোক দুর্লভ ।
তত্বাৎ কুশ ইন কিম্বা অজহীন ও ইন কিম্বা কপ ও ইন
কিম্বা নিধন ও ইন তথাপি হুও ভয়েতে কুলজী তাহাতে
উপগত ইন এইহেতুক যে পুকারে লগ্নসময় না যায় সে
পুকার করিয়া মহারাজ শীঘ্র আসুন ইহা কহিয়া উঠিয়া
চলিল । তৎপর রাজ্যলোভেতে লক্ইয়া এই কর্পূর
তিলক নামে গজ শৃগালের পাথে থাকিতে বহুপঙ্কে পতিত
হইল অনন্তর হস্তী কহিল হে বন্ধু শৃগাল এখন কি কর্তব্য

আমি পাকৈ পড়িয়া নরি কিরিয়া দেখ শৃগাল হাস্য করিয়া
 কহিল হে মহারাজ আমার লাজ ল আলম্বন করিয়া উঠ
 যেহেতুক আমার তুল্য লোকের কথাতে বিশ্বাস করিয়াছ
 সেইহেতুক অরক্ষিত দুঃখ অনুভব কর । পণ্ডিতকর্তৃক
 তাহা উক্ত হইয়াছে যদি সাধু লোকেরদের সঙ্গেতে আসক্ত
 হইবাং তবে সজ্জন সমূহে পড়িবাং ।

But,

In this world, which is subject to the power of one above, a man of good principles is hard to be found: for the most part, he performs his duty from the fear of the rod. Thus a woman of good repute, is obliged from the dread of the rod, to take him for a husband, who is weak, or unfortunate; sick, or poor.

Then, that we may not lose the lucky moment, continued the jackal, be pleased to follow quickly. Saying this, he cocked his tail, and went away. The elephant, whose reason was perverted by the lust of power, took the same road as the jackal, and followed him so exactly, that, at length, he stuck fast in a great mire. O my friend! cried the elephant, what is to be done in this disaster? I am sinking in a deep mire! The jackal laughed, and said,—Please your divine highness, take hold of my tail with your trunk, and get out! This is the fruit, added he, of your confidence in my deceitful speech.

They say,

As often as thou shalt be deprived of the society of the good, so often shalt thou fall into the company of knaves.

মতোমহাপদে নিমগ্নো হস্তী শৃঙ্গাসৌর্মলিতঃ । অতোহঁ ব্রবো
 মি উপাধিন হি যচ্ছকমিত্যাদি মতঃ কুটিল্যুপদেশে
 ম চানুদত্তনামানং বণিকপুত্রং স রাজপুত্রঃ সেবকং চকার
 মতোসৌ তেন সর্ঘবিশ্বাসকার্য্যে নিয়োজিতঃ একদা
 তেন রাজপুত্রেণ স্তানোপস্থিতেন কনকরত্নালঙ্কারধারিণা
 শ্রোক্তং অদ্যারম্ভ্য মাশমেকং নৌরোব্রতং কৰ্ত্তব্যং তদত্র
 প্রতিরাজমেকাং কুলীনাং যুবতীমানীষ সমর্পয় সা মধ্য
 যথোচিতেন বিধিনা পূজয়িতব্যাত্মনঃ স চানুদত্তঃ
 তথাবিধাং নবযুবতীমানীষ সমর্পয়তি পশ্চাত্ প্রচ্ছন্নঃ
 সন্ কিসয়ং কৰোতীতি নিরুপয়তি সচ তুরঙ্গবল্লভাং
 যুবতীমস্পৃশনৈব দূরাহল্লালঙ্কারগন্ধচন্দনৈঃ স্পৃজ্য
 রক্তকং দত্ত্বা প্রস্থাপয়তি ॥

অনন্তর মহাপদে পতিতহস্তীকে জম্বুকেরা তক্ষণ করিয়া এই
 নিমিত্তে আমি বনি উপায়েতে যে করা যায় তাহা পরাক্রমে
 করা যায় না । তাহার পর কুটিলার উপদেশেতে সে রাজপুত্র
 চাকরদত্ত নামী বণিকপুত্রকে ভৃত্য করিল অনন্তর রাজপুত্র
 তাহাকে সকল বিশ্বাস কায়েতে নিযুক্ত করিলেন । এক
 দিবস সেই রাজপুত্র স্বর্ণ ও রত্নেতে নিষ্পিত অভরণ ধারণ
 করিয়া গান করিতে উপস্থিত হইয়া কহিলেন আজি অবধি
 এক মানপয়াস্ত আমি গৌরীবত্ন করিব সেইহেতু পুত্র
 রাজিতে এক কুলীনা যুবতী ছীকে আনিয়া দেও সে ক্রী

অথ বণিকপুত্রেণ তত্ ইষ্টোপজাতবিশ্বাসেন লোভা
 দৃষ্টমনসা স্ববধূং সৌভাবতীং সমানীয সমর্পিতা
 সচ তুরঙ্গবলস্তাং হৃদয়প্রিয়াং সাবল্যবতীং বিজ্ঞায়
 স্বসম্মমসুত্যায নির্ভরমালিঙ্গ্য নিমোলিতাচ্চ পথ্যঙ্কে
 তয়া সহ বিললাস তদালোক্য বণিকপুত্রস্ত্রিলিখিত
 ইবেতি কল্চব্যতামূढঃ পরং বিপাদমুপগতঃ অতোহং ব্রবীমি
 স্বয়ং বীচেত্যাদি । তথা ত্বয়াপি ভবিতব্যমिति তদ্বি
 তববচনমবধীয়ং মহতা ভয়েন বিমুগ্ধইব তজ্জলাশ্রয়
 মুমূজ্য মন্থরস্থলিতঃ তেপি দ্বিরল্যকাদয়ঃ স্নেহাদনিষ্ট
 শঙ্ক্যমানা মন্থরমনুগচ্ছন্তি । ততঃ স্থলে গচ্ছন্
 কেনাপি ব্যাধেন কাননং পথ্যটতা মন্থরঃ প্রাপ্তঃ

অনন্তর বণিকপুত্র তাহা দেখিয়া বিশ্বাস করিয়া ধনলোভেতে
 আকৃষ্টচিত্ত হইয়া আপন স্ত্রী সৌভাবতীকে আনিয়া সমর্পণ
 করিল । সেই তুরঙ্গবল অন্তঃকরণের প্রিয়া সেই সাবল্যব
 তীকে জানিয়া শীঘ্র উঠিয়া নিভর আনিজন করিয়া পুরু
 ষলোচন হইয়া তাহার সহিত পালঙ্কেতে বিলাস করিল
 তাহা দেখিয়া কণ্ডাবাকবোতে অবিবেচক বণিকপুত্র চিত্র
 লিখিত পুস্তলিকার গায় স্থির হইয়া অতিবড় বিষন্ন হইল
 অতএব আনি বনি বণিকপুত্র আপনবধুর কূচ রাজপুত্র
 কতক মর্দিত দেখিয়া দুঃখা হইল তেমনি তুনি হইবা ।

মহুৱ সে হিতবাক্য অবজ্ঞা করিয়া বড় ভয়েতে মুখ হইয়া
 সে জলাশয় ত্যাগ করিয়া চলিল সে হিরণ্যক ও লঘুপ
 তনক ও চিত্রাক সুহৃদযুক্ত অমঙ্গল আশঙ্কা করিয়া মন্থ
 রের পশ্চাৎ গেল তাহার পর স্থলে যাইতেছিল যে মহুৱ
 সে অরণ্যেতে ভ্রমণ করত কোন ব্যাধতাহাকে পাইল

Chārudatta observed all this:— So that, through the confidence created by this stratagem, his mind being biassed by the lust of gain, he fetched his own wife, and presented her to the young rājā, who upon beholding Lāvanyavāti, the darling of his heart, got up from his seat, and, quite forgetful who was present, began to embrace her, and at length, with his eyes half closed with extreme happiness, he led her to a sofa richly ornamented with strings of precious gems; whilst Chārudatta, the miserable husband, stood gazing at her, motionless as a statue. And thus was a fool, by his own contrivance, plunged into the greatest distress. Now, I fear lest a similar fate should befall thee, concluded the mouse.

Manthara having attended to what had been said by the mouse, in great fear cried out,—My friends, I must go for security into the water. Saying this, he marched away, and Hiranyaka and the rest followed him; but they had not gone far, before Manthara was seized by a certain sportsman, who chanced to be hunting about in that forest,

প্রাপ্য তং মৃহীত্বা উত্থাপ্য ধনুশ্চ বজ্রা ধমন্ ক্লেষাত্
 স্তুতিপাসাকুলঃ স্বমৃচ্ছাভিমুখং চলিতঃ অথ মৃগবায
 সমূষিকাঃ পরং বিষাদং গচ্ছন্তস্তমনুজগমু ততঃ হিরণ্যকো
 বিলপতি । একস্য দুঃখস্য ন যাবদন্তং গচ্ছাম্যহং
 পারমিবার্ণবস্য । তাবদ্বিতীয়ং সমুপস্থিতং মে ক্লিষ্ট্রেষ্বনর্থ্য
 বজ্রলীভবন্তি ॥ স্বাভাবিকং তু যন্মিত্রং ভাগ্যেনৈবাভিজা
 যতে । তদক্ৰমসৌহার্দমাপত্যপি ন মুচ্যতি ॥ ন মাতরি
 ন দারেষু ন সৌদর্য্যৈ ন চাত্মনি । বিশ্বাসস্তাদৃশঃ পুংসাং
 যাবন্মিত্রে স্বभावजे ॥ ইতি মুক্তবিশিষ্টস্য অহো দুর্দৈব
 ॥ যতঃ ॥ স্বকর্মসন্তাপবিচেষ্টিতানি কালান্তরা
 বর্ত্তিগুণাশুভানি । ইহৈব দৃষ্টানি ময়েব তানি জন্মা
 ন্তরাণীব দশ্যান্তরাণি ॥ অথ বা ইত্যমেবৈতৎ ॥

তাহাকে পাইয়া ধরিয়া উঠাইয়া ধনুতে বান্ধিয়া ভ্রমণ
 করত শুমপুয়ুক্ত ক্ষুধা ও পিপাসাতে ব্যাকুল হইয়া আপন
 গৃহের আভিমুখে চলিল । অনন্তর মৃগ ও কাক ও উন্মুক্ত
 বড় বিষম হইয়া পশ্চাৎ গেল । তৎপর হিরণ্যক বিলাপ
 করিতে লাগিল সমুদ্রের পারে যাওয়া যেমন অসম্ভব
 এগনি এক দুঃখের শেষ না পাইতে, আমার দ্বিতীয় দুঃখ
 উপস্থিত হয় কেননা ছিদ্র উপস্থিত হইলে অমঙ্গল অনেক
 হয় স্বাভাবিক যে মিত্র সে ভাগ্যেতেই মিলে যোহেতুক

সে অকৃত্রিম মিত্রতা বিপৎকালেতে ও যায় না স্বাভাবিক
মিত্রিতে লোকের যত পুতায় হয় তত পুতায় না তাতে
হয় না এবং জ্ঞাতে হয় না এবং সহোদরে হয় না এবং
আপনাতে ও হয় না । ইহা বারম্বার চিন্তা করিয়া কহিল
বশপুয়ুক্ত অবস্থান্তর ইহলোকেতেই নংকতৃক দৃষ্ট হইল

and who, finding himself hungry and fatigued, immediately fastened his game to the end of his bow, and turned his face towards home. The deer, the crow, and the mouse, were exceedingly sorry for this event, and Hiranyaka expressed his lamentations in these lines:

Before I have attained the end of one trouble, boundless as the great ocean, still a second is ready to succeed! How many misfortunes come upon me for my faults!

A friend, who is so by nature, is the gift of providence. Such unfeigned friendship is not extinguished, even in misfortunes.

Men have not that confidence in their mothers, in their wives, in those of the same womb, nor in their own offsprings, as in one who is a friend in principle.

In this manner having lamented the fate of the tortoise, the mouse continued, crying out,—Oh! how hard is my fate!

By me have been experienced, even here, as the fruits of the state of existence, in some certain birth, the good and evil shut up in time, which are the seekings of the offsprings of our own words.

কাযঃ সন্নিহিতোপাখ্যঃ সম্যদঃ পদমাপদাং । সমা
 নমাঃ সাপগমাঃ সৰ্ব্বমুত্পাদি ভঙ্কুরং ॥ পুনর্দ্বিসৃষ্টাছ ।
 ধোকারাতিময়ত্রাণং প্রীতিবিশ্রমভাজনং । কেন রত্নমিদং
 সৃষ্টং মিত্রমিত্যস্তুরদ্বয়ং ॥ কিञ্চ ॥ মিত্রং প্রীতিরসাযনং
 নয়নযোরানন্দনং চेतসঃ পাশং যত্ সুখদুঃখयोः सह
 भवेन्मित्रेण तदुर्लभं । ये चान्ये सुहृदः सहृद्विसमये
 द्रव्याभिलाषाकलास्ते सर्वत्र मिलन्ति तत्त्वনिकषयावा
 तु तेषां विपत् ॥ इति वज्र विलप्य हिरण्यकाञ्चिच्चाङ्ग
 मनुপতনকাবাহ যাবদয়ং ব্যাধাবনাশ নিঃসরতি
 তাবন্মন্থরং মোচয়িতুং যত্নঃ ক্রিয়তাং ॥ তাবুচতুঃ সত্বরং
 কার্য্যসুচ্যনাং । হিরণ্যকোব্রুতে চিত্রাঙ্গোজলসমীপং গত্বা
 মৃতমিব আত্মানং দর্শয়তু ॥ *❖*❖*❖*❖

শরীর আসক্ত মৃত্যু অর্থাৎ শরীর গ্রহণ করিলে অবশ্য
 মৃত্যু হয় আর সম্পত্তিই বিপত্তির স্থান অর্থাৎ সম্পদ
 হইলে অবশ্য বিপত্তি হয় আর ধনাতির সমাগমই অপ
 গম অর্থাৎ ধনসঞ্চিত হইলেই অবশ্য নষ্ট হয় এই পকার
 যাবৎ জনাবস্ত সকল নশ্বর । পুনর্বার বিবেচনা করিয়া
 বিনল শোক ও শত্রুভয় হইতে রক্ষাকর্তা এবং প্রীতির
 বিশ্বাসপাত্র রত্নস্বরূপ মিত্র এই অক্ষর দুটি কে সৃষ্টি
 করিয়াছে । অপর যে মিত্র চক্রদ্বয়ের প্রীতিকরীরসের
 স্থান ও চিত্তের আনন্দজনক ও সুখ দুঃখের পাত্র সে মিত্র

দলভ অন্য যে ধনাকাক্ষি মিত্র সে সম্প্রাপ্তিকালে সহত্রই
 মিলে তাহারদিগের যথা বন্ধিবার নিমিত্তে বিপাত্তি
 কষ্টিপাথরস্বরূপ । এণুকারে অনেক রোদন করিয়া
 হিরণ্যক চিত্রাঙ্গ ও লঘপতনকে বলিল যাবৎপাশ্চ এই
 ব্যাধ বনহইতে নিগত না হয় সে প্যন্তু মন্তুরকে ছাড়াইতে
 যত্ন কর তাহারা দুই জন বলিল শীঘ্র পরামর্শ কর । হির
 ণ্যক বলিতেছে চিত্রাঙ্গ জন সন্নিধিতে গিয়া আপনাকে
 মৃতশরীরের ন্যায় দেখাউন ।

The body is compounded with disorders, the state of opulence with calamities, advantages with disadvantages! Thus every thing is produced with a companion who shall destroy it.

Having again pondered for a while, he exclaimed,

By whom was constructed that jewel of a word, the monosyllable FRIEND, that dispeller of fear the harbinger of grief, and the confidential repository of our joys?

But,

A friend, who is a pleasing collyrium to the eyes, the delight of the heart, and a vessel in which may be deposited both joy and sorrow; is hard to be found.

All other friends, tainted with the lust of gain, are every where to be found in times of prosperity; but adversity is their touchstone.

Hiranyaka having in this manner greatly lamented the fate of his friend, said to the deer Chitrānga and the crow Laghupatanaka,—Let our efforts be exerted for the deliverance of Manthara, before the hunter departs from the forest. Let us, said they, be instructed in what we should do. Let Chitrānga go near the water, said Hiranyaka, and feign himself senseless and dead. and

কাকস্য তস্যোপরি স্থিত্বা চক্ষুঃ কিমপি বিলিखतু মূন
 মনেন লুম্বকেন তত্র কচ্ছপং পরিত্যজ্য সৃগমাংসার্থিনা
 সত্বরং গন্তব্যং ততোহং মন্থরস্য বম্বনং কেষ্যামি সমাहितৈ
 লুম্বকে ভবঙ্গাং পলায়িতব্যং চিত্রাঙ্কলঘুপতনকাভ্যাং
 শীঘ্রং গত্বা তথানুষ্ঠিতৈ সতি স ব্যাধঃ শ্রান্তঃ পানীয়ং
 পোত্বা তরোরধস্তাদুপবিষ্টঃ তথাবিধং সৃগমপশ্যন্ত ততঃ
 কৰ্ত্তরিকামাদায় প্রহৃষ্টমনাসৃগান্তিকং চলিতঃ তত্রা
 ন্তরে হিরণ্যকেনাগত্য মন্থরস্য বম্বনং ছিন্নং স কূর্মঃ
 সত্বরং জলাশয়ং প্রবিবেশ সসৃগআসন্নং তং ব্যাধং বিলোক্য
 উত্থায় পলায়িতঃ প্রত্যাৱৃত্য লুম্বকো যাবচ্চরতল
 মায়াতি তাবচ্ কূর্ম মপশ্যন্নচিন্তয়ত্ । * * *

কাক তাহার উপরে থাকিয়া ঠোটে করিয়া আঁচড়াউক
 তবে নিশ্চয় এই ব্যাধ সে স্থানে কচ্ছপকে রাখিয়া মগ
 নাগের নিমিত্তে বরাতে যাইবে তাহার পর আনি মগের
 বন্ধন ছেদন করিব ব্যাধ নিকটে আইলে তোমরা দুজনে
 পলাইবা । অনন্তর চিত্রাঙ্ক ও লঘুপতনক বরাতে গিয়া
 সেইকপ করিলে পর সেই লুক্কশাস্ত হইয়া জলপান
 করিয়া বন্ধের গলে বসিয়া সেইকপ মগকে দেখিল ।
 অনন্তর কাক তাহা লইয়া পুকুরচিহ্ন হইয়া মগের নিকটে

^{went into the water} চলিল ইতোমধ্যে ^{the hunter} হিরণ্যক ^{quickly} আসিয়া ^{he} মস্তুরের ^{he} বন্ধন ^{he} ছেদন ^{he} করিল ^{he} সে ^{he} কচ্ছপ ^{he} শীঘ্র ^{he} জলাশয়ে ^{he} পুবেশকরিল ^{he} এ ^{he} হরিণ ^{he} সেই ^{he} ব্যাধকে ^{he} নিকটে ^{he} আসিতে ^{he} দেখিয়া ^{he} উঠিয়া ^{he} পালাইল ।
^{he} লুন্ধক ^{he} ফিরিয়া ^{he} যখন ^{he} গাছের ^{he} তলাতে ^{he} আইল ^{he} তখন ^{he} কুম্ভকে ^{he} না ^{he} দেখিয়া ^{he} ভবিনা ^{he} করিল ।

let the crow appear as if he were pecking at him; when the hunter, spying a deer, and longing to taste of his flesh, will be overjoyed, and so laying the tortoise upon the ground, will run to secure him. In the mean time I will gnaw asunder the cords by which Manthara is confined. The deer and the crow did as they were instructed immediately. The hunter being thirsty, laid the tortoise upon the ground, and having drank some water, sat down in the shade of a tree, when he discovered the deer in the situation above described. He concluded, that he had been killed by some sportsman, and pleased with his good fortune, went towards him with a knife in his hand. In the mean time Hiranyaka contrived to loosen the cords by which Manthara was held; who finding himself at liberty made haste into the water; whilst the deer seeing the hunstman approaching, started up and ran away. The hunstman then turned back, and repairing to the foot of the tree, and not finding the tortoise there, he began to reflect in this manner.

উচিতমেবৈতন্মমাসমোচ্চ্যকারিণঃ ॥ যতঃ ॥ যোধ্রুবাণি
পরিত্যজ্য অধ্রুবাণি নিষেবতে । ধ্রুবাণি তস্য নশ্যন্তি
অধ্রুবং নষ্টমেব হি ॥ ততোসৌ স্বকৰ্ম্মবশান্নিবাশকটকং
প্রবিষ্টঃ ॥ কৰ্ণব্যানি চ মিত্রাণি দুৰ্গমানি বনানি
চ পশ্য কৰ্ম্মপতির্ঘড়োমূষিকেণ বিমোচিতঃ ॥ মন্থরা
দযঃ সৰ্বে ত্যক্তাপদঃ স্বস্থানং গত্বা যথাসুখমাশ্রিতাঃ ।
অথ রাজপুত্রৈঃ সানন্দচেতোभिঃ সৰ্ঘং তত্ অতঃ সৰ্ঘং তে
সুখিনঃ সম্যগ্নাস্তস্মাত্ সিদ্ধং নঃ সমোদিতং ॥ বিঘ্নাশ্রম্ণী
বাচ এতাবতা ভবতামভিলষিতং সম্যগ্নং অপরমপী
দমস্তু । *❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*

ভদ্রা ভদ্রা বিবেচনা না করিয়া কৰ্ম্ম করি যে আমি সে আমার
এ উপযুক্তই বটে যেহেতুক যে লোক নিশ্চিত বিষয়কে
পারিত্যাগ করিয়া অনিশ্চিত বিষয়কে চেষ্টা করে তাহার
নিশ্চিত বিষয় নষ্ট হয় অনিশ্চিত বিষয়ত নষ্ট হইয়াছে
অনন্তর এ ব্যাধ বাসস্থানে গেল ॥ অত এব দুর্গম বনকে
ও মিত্র করিবেক দেখে ব্যাধকতক বদ্ধ কৰ্ম্ম শ্রেষ্ঠ নৃষিক
কতক মোচিত হইল । নহরপুত্রিত সকলে বিপদভীণ
হইয়া আপন স্থানে যাইয়া সখেতে থাকিল ।

পরে রাজকুমারেরা আত্মাদ চিত্তেতে সে সমস্ত গুনিলেন
তাহারা সকলে সুখা হইলেন সেইহেতুক আনারদের
অভিলষিত সম্পূর্ণ হইল । বিষয়না বলিলেন এই পুস
ক্ষেতে তোমারদের বাঞ্ছিত সিদ্ধি হইল অন্য ও এই হউক ।

I have been served right, said he, for not having been more circumspect.

He who forsaketh a certainty, and attendeth to an uncertainty, loseth both the certainty and the uncertainty, together.

So having said this, he returned home disappointed by his own folly. Make friends, therefore, both strong and weak, as you see how the tortoise was released from the bondage of the hunter by a rat. The tortoise with the rest remained together in mutual happiness.

The rājā's sons, then said,—We have all been greatly entertained; and now is completed what we first wished for. May every other of your Highnesses inclinations, replied Vishnu-Sarma, be accomplished like this!

মিত্রং প্রাপ্নুত সজ্জনাজনপদৈর্লক্ষ্মীঃ সমালম্বতাং ॥
 ভূপালাঃ পরিপালয়ন্তু বসুধাং শাস্বত্ স্বধর্মে স্থিতাঃ ॥
 জ্ঞাতাং মানসতুষ্টয়ে সুকৃতিনাং নীতির্নবোদেব বঃ । কল্যা
 ণং কুরুতাং জনস্য ভগবাংস্বন্দ্রাঙ্ঘৃডামণিঃ ॥ ইতি
 হিতোপদেশে মিত্রলাভো নাম প্রথমকথাসংগ্রহঃ সমাপ্তঃ ॥

5 good people you friends find and all men
 হে সৎ লোকেরা তোমরা মিত্রকে পাও আর জনসকলেরা
 wealth obtain & king always away reach
 সম্পত্তিকে পাওক আর রাজাসকল অনবরত স্বকীয় ধর্মে
 with down the earth govern & with in man
 থাকিয়া পৃথিবীকে পুতিপালন করুন আর নবোদ্দায়িক
 as a mind man's pleasure for word & his
 যেনন পুরুষের মনের সন্তোষের নিমিত্তে হয় এমনি নীতি
 science God man's mind pleasure for his
 বিদ্যা সৎপুরুষের চিত্তের পরিতোষের নিমিত্তে হউক ।
 omnipotent sheet persons good make
 আর ভগবান শিব লোকসকলের মঙ্গল করুন ।
 the free & obtaining his
 ইতি মিত্রলাভ কথা সমাপ্ত ।

May you, ye good! find friends in this world! May
 Lakshmi be for ever to be found! May princes, resting
 upon their particular duty, govern and protect the earth!

May the conduct of those who act well afford pleasure
 to the mind! By words alone no one is great. May he, on
 whose diadem is a crescent, cause prosperity to the
 people of the earth!

THE END OF THE MITRALA BHA.

॥ अथ सुहृद्भेदः ॥

अथ राजपुत्राञ्जुः आर्यं मित्रलाभः श्रुत्वावदत्ता
भिरिदानीं सुहृद्भेदं श्रोतुमिच्छामः। विष्णुसर्मोवाच॥
सुहृद्भेदं तावत् शृणुत यस्यायमाद्यः श्लोकः ॥ वर्द्धमानो
महास्त्रेहोष्ट्रेन्द्ववृषयोर्वने। पिशुनेनापि लुब्धेन जम्बुकेन
विनाशितः ॥ * * * * *

अनन्तरं राजनमनेन बलिनेन हे शूरो आनरा निबलात्
गुनिलान् सम्पुति सुहृद्भेदं गुनिते इच्छा करितेहि विष्णु
शर्मा बलिनेन तोनरा सुहृद्भेदं गुन याहार पुथम श्लोकैर
अर्थ एह अरण्येते मोती अथच खल शृगाल कत क सिंह
उ बलीबर्द्धेन बर्द्धनशाल अतिशय पुन नष्ट इहिन।

CH A P. II.

THE SEPARATION OF A FAVOURITE.

HAVING, Sir, said the young princes, heard *The Acquisition of a Friend*, we are now anxious to be informed of what respects *The Separation of a Favourite*.

Attend then, answered Vishnu-Sarmā, and you shall hear concerning the separation of a favourite; of which these lines are an introduction:

In a certain forest there subsisted a great and increasing friendship between a lion and a bull, which is destroyed by a cruel and very envious jackal.

রাজপুত্ররূপে কথমেতৎ বিষ্ণুশৰ্ম্মা কথয়তি অস্মি
 দক্ষিণাপথে সুবর্ণবতী নাম নগরী তত্র বর্দ্ধমানো নাম
 ধনিক নিবসতি ॥ তস্য প্রচুরেऽপি বিত্তে অপরান্ বভূনতি
 সমৃদ্ধান্ সমোচ্চ্য পুনরর্থবৃদ্ধিঃ করণীয়েতি মতির্বভূব
 ॥ যতঃ ॥ অধোধঃ পশ্যতঃ কস্য মহিমা নোপচীযতো উপর্যু
 পরি পশ্যন্তঃ সৰ্ব্বং তব দরিদ্রতি ॥ অপরঞ্চ ॥ ব্রহ্মচারি
 নরঃ পুজ্যো যস্যাস্তি বিপুলং ধনং । শশিনস্তু ত্যবংশোপি
 নির্দমনঃ পরিভূয়তে ॥ অন্যঞ্চ ॥ অক্লবসাধিনমলসং দৈব
 পরং সাহস্যচ পরিহীনং । প্রমদেব বৃদ্ধপতিং নেচ্ছত্যুপগ
 হোতুং লক্ষ্মীঃ ॥ কিঞ্চ ॥ আলস্যং স্ত্রীসেবা সরোগিতা জন্ম
 ভুমিবাৎসল্যং । সন্তোষোতিমীরূত্বং ষড়্ভয়াঘাতাসহত্বস্য

রাজকুমারের। কহিলেন এক পুত্রের বিষ্ণুশৰ্ম্মা বলিতে
 ছেন। দক্ষিণপথে সুবর্ণবতী নামে এক নগরী আছে তাহাতে
 বদ্ধমান নামে এক বণিক বাস করে তাহার অনেক বিভব
 থাকিতে ও অন্য বান্ধবদিগে প্রিয়বান দেখিয়া পুন
 র্বার ধন বাড়ান কতব্য এই বুদ্ধি হইল যেহেতুক আপন
 অপেক্ষা ক্ষুদ্র লোককে দেখত কাহার মহত্ব না বাড়ে আর
 আপন অপেক্ষা বড় লোককে দেখত সকল লোকেই দরিদ্র
 হয় । অপর যাহার অনেক ধন থাকে সে লোক বদ্ধযু
 হইলে ও গুজনিয় হয় চন্দের তুল্য বংশ হইলে ও দরিদ্র
 লোক অপমানিত হয় । অপর যুবতী স্ত্রী যেমন বদ্ধ

পতিকে গৃহণ করিতে বাঞ্ছা করে না এমনি অব্যবসায়ী
 ও অলস ও দৈবপর ও সাহসরহিত পুরুষকে সম্পত্তি
 সংগ্ৰহ করিতে অভিলাষ করে না। আর আলস্য ও দ্রী
 সেবা ও কপ্ততা ও জন্মস্থানের সৌহ ও পরিতোষ ও অতি
 শয় ভয় এই ছয় নব্বৈর পুতিবদ্ধক হয়।

How was this? demanded the rājā's sons; and Viṣṇu-Sarmā relates the following story:

FABLE I.

On the southern road is a city, by name Ratnavati, where used to dwell a merchant's son, who was called Varddhamāna, though possessed of abundant wealth, seeing others his relations very rich, his resolution was, that his own greatness should still be increased. They say;

Greatness doth not approach him, who is for ever looking down; and all those, who are looking high, are growing poor.

Again:

Even a man who hath murdered a Brāhman is respectable, if he hath abundant wealth. He may be of a race like that of the moon, still, if he be without riches, he will be despised.

Lakshmi, like a young woman an old husband, doth not like to take unto her one without energy, the idle, him who trusteth in fate alone, or the man who is become destitute by his own extravagance.

Idleness, the worship of women, the being afflicted with disorder, a foolish partiality for one's own native place, discontentedness, and timidity, are six obstructions to greatness.

॥ যতঃ ॥ সম্যদা সুস্থিতং মন্যো ভবতি স্বল্পখ্যাপি
 যঃ । কৃতকৃত্যো বিধির্মন্যে ন বর্হয়তি তস্য তাং
 ॥ অপরশ্চ ॥ নিরুত্সাহং নিরানন্দং নির্ধার্য্যমরিনন্দনং ।
 মাঙ্গল্য সীমন্তিনো কাচিত্ জনয়েত্ পুত্রমীদৃশং ॥
 তথা চোক্তং ॥ অলব্ধম্ভৈব লিপ্তে লব্ধং রত্নেদবদ্ব্যত ।
 রত্নিতং বর্হয়েত্ সম্যক্ বৃহৎ ত্যর্থৈষ নিঃসিপেত্ ॥ যতঃ ॥
 অলব্ধমিচ্ছতো ঽর্থযোগাদর্থস্য প্রাপ্তিরেব । লব্ধস্য
 প্যরত্নিতস্য নিধেরপি স্বয়ং বিনাশঃ ॥ অপি চ ॥ অবর্হ
 মানস্বার্থঃ কালে স্বল্পখ্যযোপ্যজ্ঞনবত্ স্যমতি ॥
 অনুপভুজ্যমানশ্চ নিষ্প্রয়োজন এব সঃ ॥ তথা চোক্তং ॥

যেহেতুক যেমনুষ্য অত্যন্ত সম্পত্তিতে আপনাকে স্বচ্ছন্দ
 করিয়া মানে ইহাতে আমি এই বুঝি যে বিধাতা আপনাকে
 কৃতকৃত্য জানিয়া তাহার সম্পত্তি আর বাড়ান না । অপর
 উৎসাহরহিত ও আনন্দরহিত ও পরাক্রমরহিত ও শত্রু
 পক্ষের আত্মদজনক এতাদৃশ পুত্রকে কোনহ নারী না জন্মা
 উক । বিজ্ঞ কতৃক তাহা কথিত আছে অপূর্ণ যে ধন তাহা
 পাইবার চেষ্টা করিবেক পূর্ণ যে ধন তাহা চোরাদিহইতে
 রক্ষা করিবেক রক্ষিত যে ধন তাহাকে নানা পুকারে বাড়াই
 বেব বন্ধিত যে ধন তাহা সৎকর্মেতে ব্যয় করিবেক ।
 ধনসংবন্ধে অপূর্ণধন পাইবার নিমিত্তে চেষ্টা করে যে

person his use the obtain - obtained, measure & person not-
 लोक তাহার ধনের প্রাপ্তি হয় লক্ষ নিধির ও রক্ষা না
 done both it destruction is made not as
 करिने आपनि ताहार नाश হয় । आरु मसी येमन
 little expenditure he gains in him is destroyed - this now increases
 अतान्न बाय हईले कालेते कय पाय এই कप अवक्षित
 in little both expenditure being not in him is destroyed what wealth
 अर्थ अतान्न बाय हईले ओ कालेते नाश पाय । ये अर्थ
 enjoyed is not that useful - that spoken is -
 भुज्यामान ना হয় से निष्प्रयोजनई ताहा कथित आहे ।

He, who thinks himself well provided for by small possessions, will not, in my opinion, have them increased by the creator of the world.

May women be unable to bring forth a son, who shall not exert himself, who is discontented, weak, and giving pleasure to his foes.

It is also said,

A man should try to obtain what he hath not, having obtained it he should keep it with care, what hath been preserved he should increase, and being increased he he should give it away at places of holy visitation.

• From the endeavours of one who longeth for what he hath not got, resulteth the acquisition. Property which hath been acquired, not being taken care of, wasteth of itself.

Riches which are not recruited, like a collyrium, by ever so small an expenditure, are in time reduced to nothing; if they are not appropriated, they are useless.

ধনেন কিং যোন দদাতি নাস্তুতে বস্তুনে কিং যস্য রিপুহ
 বাধতে। শ্রুতেন কিং যোন চ ধর্মমাশ্বরেত্ ক্রিমাৎমনা
 যোন জিতেন্দ্রিয়োভবেত্ ॥ যতঃ ॥ জলবিन्दুনিপাতেন
 ক্রমশঃ পূর্য্যতে ঘটঃ। স হেতুঃ সর্ধবিদ্যানাং ধর্মস্য চ
 ধনস্য চ ॥ দানোপভোগরহিতাদিবসায়স্য যান্তি वै।
 সকর্মকারমস্ত্রেব অসন্নপি ন জীবতি ॥ ইতি সচ্ছিন্য
 মন্দকসঞ্জীবকনামানৌ দৃষমৌ ধুরি নিযুজ্য। শকট
 নানাবিধদ্রব্যপূর্ণং কৃৎবা বাণিজ্যেন গতঃ কাশ্মীরং প্রতি
 ॥ অন্যচ্চ ॥ অজ্ঞনস্য স্ত্যং দৃষ্ট্বা বল্লমীকস্য চ সচ্ছয়ং।
 অবস্থ্যং দিবসং কুর্য়াদানাদ্যয়নকর্মসু ॥ যতঃ ॥
 কোতিভারঃ সমর্থানাং কিং দূরং ব্যবসায়িনাং। কোবিদেশঃ
 সবিদ্যানাং কঃ পরঃ প্রিয়বাদিনাং ॥ *❀*❀*❀

যে না দেয় ও না থায় তাহার ধনে কি পুয়োজন যে বৈরিকে
 দমন না করে তাহার পরাজয়ে কি পুয়োজন যে পুণ্যানুষ্ঠান
 না করে তাহার অধ্যয়নে কি পুয়োজন যে জিতেন্দ্রিয় না হয়
 তাহার শরীরে কি পুয়োজন। যেহেতুক জলবিন্দুপতনেতে
 যেমন ক্রমেতে ঘট পরিপূর্ণ হয় এই রূপ সকল বিদ্যা ও ধর্ম
 ধনের ক্রমেতে বৃদ্ধি হয়। দান ও ভোগ ব্যতিরেক যাহার
 দিবস সকল যায় সে কানারের জাঁতার ন্যায় স্থান থাকিতে
 ও জীবিত নয়। এই চিন্তা করিয়া নন্দক সঞ্জীবক নাম দুই
 বল্লীবর্দকে শকটে যোজনা করিয়া নানা পুকার দুবোত

শকট পরিপূর্ণ করিয়া বাণিজ্য করিতে কাশ্মীরদেশে গেল।
 অপর কালিরনাশ এবং উইনন্দনের বন্ধি দেখিয়া দান এবং
 পাঠ এবং বাণিজ্যাদি কয়েতে দিন নিরর্থক করিবে না
 যেহেতুক বলবানের ভার কি ব্যবসায়ির দূর কি গুণবানের
 বিদেশিক পুত্রভাষির পর কি।

What hath he to do with wealth, who neither giveth nor enjoyeth? What hath he to do with strength, who doth not exert it against the foe? What hath he to do with the holy law, who doth not practice virtue? What hath he to do with a soul, who doth not keep his passions in subjection?

By the fall of drops of water, by degrees, a pot is filled. Let this be an example for the acquisition of all knowledge, virtue, and riches.

He, whose days are passed away without giving or enjoying, puffing like the bellows of a blacksmith, liveth but by breathing.

These were the cogitations of the merchant; who, accordingly took two bulls, the one called Sang-jivaka, the other Nandanaka, and having yoked them to a cart loaded with sundry precious articles, departed for Kāsmīra, Again:

Having beheld the decrease of a collyrium, and the collected heap of the white ant, a man should spend his days, which are not to be retarded, in acts of charity, and the study of virtue.

What is too great a load for those who have strength? What is distance to the indefatigable? What is a foreign country to those who are skilled in science? Who is a stranger to those, who have the habit of speaking kindly?

অথ গচ্ছতস্তস্য সুদুর্গনাস্তি মহারণ্যে সঞ্জীবকোভগ্ন
জানুর্নিপতিতস্তমালোক্য বর্দ্ধমানোঽচিন্তয়ত ॥ কৰোতু
নামনীতিজ্ঞো ব্যবসায়মিতস্ততঃ । ফলং পুনস্তদেবাস্য
যদ্বিধেৰ্ননসি স্থিতং ॥ কিন্তু ॥ বিস্ময়ঃ সর্বথা হেয়ঃ প্রত्यूহঃ
সর্বকর্মণাং । তস্মাদ্বিস্ময়মুন্মূজ্য সাধ্যে সিদ্ধির্বিধী
যতাং ॥ ইতি সঙ্ঘিন্য সঞ্জীবক তত্র পরিত্যজ্য বর্দ্ধমানঃ
পুনঃ স্বয়ম্ভর্ম্মপুং নাম নগরং গত্বা মহাকাশমন্মদ্বষম
মেকং সমানোয ধুরি নিযোজ্য চলিতস্ততঃ সঞ্জীবকোপি
কথং কথমপি খুরত্বে ভরং হ্রত্বোত্থিতঃ ॥ যতঃ ॥ নিমগ্নস্য
পয়োরাশৌ পর্বতাৎ পতিতস্য চ তত্কেণাপি দৃষ্টস্য
আয়ুর্ম্মর্মাণি রক্ষতি ॥ নাকালে ঘিয়তে জন্তুর্বিহঃ
শরশতৈরপি কুশাগ্রেনৈব সংসৃষ্টঃ প্রাপ্তকালো ন জীবতি ।

অনন্তর সুদুর্গনানে মহারণ্যে গমন করত তাহার সঞ্জীবক
ভগ্নপদ ইহা পড়িল তাহাকে দেখিয়া বর্দ্ধমান চিন্তা করিল
নীতিজ্ঞ লোক ইতস্ততো ব্যবসায় করক কিন্তু ইহার কল
পুনঃ তাহাই হয় যাহা বিধাতার মনে থাকে কিন্তু সকল
কর্মের বিষ যে বিস্ময় ইহা সর্ব পুকারে ত্যাজ্য সেইহেতুক
বিস্ময়কে পরিত্যাগ করিয়া সাধ্য কর্ম্মতে সন্ধি বিধান করা
ইহা ভাবনা করিয়া সঞ্জীবককে সেই স্থানে পরিত্যাগ করিয়া
বর্দ্ধমান পুনর্বার আপনি ধর্ম্ম পূরনাননগরে গিয়া বৃহৎ শরীর
এক অন্য বলীবর্দ্ধকে আনিয়া তার যোজনা করিয়া চলিল ।

অনন্তর সঞ্জীবক ও কোন পুকারে তিন খরেতে ভয়
 করিয়া উঠিল যেহেতক অগাধজলেতে নদী ও পদতহইতে
 পতিত ও তক্ষককতক দষ্ট ইহারদের নদীকে পরমায়
 রক্ষা করে । শত শত শত বিজ ইহলে ও পানী অকালে
 নরেনা কুশাগেতে স্পষ্ট ইহিয়া কালপাপ্ত ইহলে বাচে না ।

As they were going over the forest, called Sudurga, Sang-jivaka fell down and brake his knee; seeing which, Varddha-māna meditated in this manner:

One acquainted with men and manners may exercise his endeavours here and there; but, after all, the fruit will be whatever is in the will of providence.

But,

Hesitation should be abandoned as the opponent of every action, whence, having forsaken hesitation, let success attend the performance.

Having thus determined, Varddhamāna quitting Sang-jivaka went to the city, called Dharma-pura, and brought from thence another bull of great bulk. He yoked him to the cart, and having packed up his goods, pursued his journey. The poor bull Sang-jivaka, by resting his whole weight upon three feet, contrived to get up; for,

The destined age of every one defendeth the vitals of one plunged into the water, fallen from a precipice, or bitten by a serpent.

Although a person is pierced by hundreds of arrows, yet his vital spirits do not forsake him at an unseasonable time, but when his destined period comes, he dies even by the touch of a straw.

অরক্ষিতং তিষ্ঠতি দৈবরক্ষিতং সুরক্ষিতং দৈবহতং বিনশ্যতি ।
 জীবত্যনাথোপি বনে বিসর্জিতঃ কৃতপ্রযত্নোপি গৃহে ন
 জীবতি ॥ ততোদিনেষু গচ্ছত্সু সঞ্জীবকঃ স্বেচ্ছাহার
 বিহারং কৃत्वा অরণ্যং ভ্রাম্যন্ হৃষ্টপুষ্টাক্লোবলবান্ননাৎ
 তস্মিন্ বনে পিঙ্গলনামা সিংহঃ স্বমুজোপার্জিতরাজ্য
 সুখমনুभवন্নিবসতি ॥ তথা চোক্তা ॥ নাভিষেকোন সংস্কারঃ
 সিংহস্য ক্রিয়তে মৃগৈঃ । বিক্রমার্জিতরাজ্যস্য স্বয়মেব
 মৃগে-দ্ভনা ॥ সচৈকদা পিপাসাকুলিতঃ পানীয়ং পাতু
 যমুনাং কচ্ছমগচ্ছত্সু তেন চতত্র সিংহেনানুভূতমকাল
 ঘনগর্জিতমিব সঞ্জীবকনর্দিতমশ্রাবি তচ্ছুত্বা পানীয়
 মপাত্বা সচকিতঃ পরিবৃত্ত্য স্বস্থানমাगत্য কিমিদমি
 ত্যালোচয়ন্তুষ্ণীং স্থিতঃ ॥ *❀*❀*❀*❀*

অন্তরঙ্গ কতৃক অরক্ষিত ব্যক্তি ও দৈবরক্ষিত হইলে থাকে
 অন্তরঙ্গ কতৃক সুন্দররূপে রক্ষিতব্যক্তি ও দৈবহত হইলে
 নষ্ট হয় কাননেতে তাক্ত অনাথব্যক্তি ও বাঁচে গৃহেতে
 যত্ন করিলে ও বাঁচে না । অনন্তর কএক দিন গৌলে
 পরে সঞ্জীবক আপন ইচ্ছাতে আহার বিহার করিয়া
 অরণ্যে ভ্রমণ করত হৃষ্টপুষ্ট হইয়া শব্দ করিল । সেই
 বনেতে পিঙ্গল নামে এক সিংহ আপন বাহুবলোপার্জিত
 রাজ্য সুখানুভব করত বাস করে । সে কথা পশ্চিমের
 কহিয়াছেন যে মৃগেরা সিংহের অভিষেক করে না সংস্কার

ও করে না কিন্তু আপনি পরাক্রমাজিত রাজ্যের নৃগেন্দ্র
 পায়। সেই সিংহ এক দিবস তৃষ্ণা হইয়া জলপান করি
 বার নিমিত্তে যমুনায় তীরে গেল সেই সিংহ এ স্থানে অকাল
 নেয়গজনের ন্যায় সঞ্জীবকের শব্দ শুনিল তাহা শুনিয়া
 জলপান না করিয়া সভয় হইয়া ফিরিয়া আপন স্থানে
 আসিয়া এ কি ইহা আলোচনা করত চুপ করিয়া থাকিল।

He who is neglected by his friends liveth, if protected by fate; and he who is guarded by his friends dieth, if forsaken by fate. Thus the helpless person who is exposed in a forest liveth, while he who is protected at home dieth.

In a few days, by feeding well upon what was most agreeable to him, he grew plump and full of spirits, and as he wandered about through the tracks of the forest, he made a great bellowing. In this same forest, there resided Pingalaka, a lion, in the full enjoyment of the pleasures of a dominion acquired by the strength of his own arm; for it is said,

There is no ceremony of anointing, or inauguration, performed by the other animals upon the lion. To be head of the beasts is the natural right of him, who subdueth the kingdom by his prowess.

One day, the lion being thirsty, went to the river Yamunā to drink of its waters; when, hearing the bellowing of Sang-jivaka, a kind of noise he had never heard before, and which to him appeared as dreadful as the unseasonable roaring of a cloud, he turned away without drinking, and went back to his abode trembling with fear; where he stood silently meditating, what it could be.

সব তথাবিধঃ করটকদমনকাভ্যামস্য মন্দি
 পুত্রাভ্যাং শৃগালাভ্যাং দৃষ্টঃ তং তথা বিধং দৃষ্ট্বা দম
 নকঃ করটকমাহ সখৈ করটক কিমিত্যর্থং উদ
 কার্থী স্বামী পানীয়মপীত্বা সচক্ৰিতোমন্দং মন্দম
 বতিষ্ঠতে । করটকোব্রূতে মিত্র দমনকাস্মিন্মতে নাস্য
 সেবৈব ন ক্রিয়তে যদি তথা भवति तर्हि किमनेन
 স্বামিচেষ্টানিরূপणेनाস্মাকং যতস্থানেন রাজা বিনাঃপ
 রাধেন চিরদিবসমবধীরিতাভ্যামাবাভ্যাং মহদ্বঃখম
 নুভূতং ॥ অপরञ्च पश्य ॥ सेवया धनमिच्छद्भिः सेवकैः
 पश्य यत् कृतं । स्वातन्त्र्यं यच्छरीरस्य मूढैस्तदपि हारितं
 ॥ अपरञ्च ॥ शीतवातातपक्लेशान् सहन्ते यान् परा
 श्रिताः । तदंशेनापि मेधावी तपस्तप्त्वा सुखी भवेत्

ইহার মন্দিপুত্র করটক দমনক দুই শৃগাল মিত্রকে সেই
 পুকার দেখিল । তাহাকে সেই পুকার দেখিয়া দমনক করট
 ককে বলিল যে মিত্র করটক এই জলপানার্থী রাজা কেন
 জল পান না করিয়া ভীত হইয়া আস্তে অবস্থান করিতে
 ছেন । করটক বলিতেছে সখে দমনক আমার মতে ইহার
 সেবাই করা যায় না যদি তাহা হয় তবে এ স্বামীর চেষ্টা নিক
 পাণে আমারদের কি পুয়োজন যেহেতুক এই রাজাকতক
 অপরাধ ব্যতিরেকে আমরা অবজ্ঞাত আর বহুদিন বড়দুঃখ
 পাইয়াছি । আর ও দেখ ভূত্যেরা সেবার দ্বারা ধনেচ্ছা করত




যাহা করে তাহা দেখ শরীরের যে স্বাতন্ত্র্য তাহা ও মূর্থ
কতক হারিত হয় অপর পরাশ্রিত লোক শীত ও বাতাস
ও ব্রোদেতে যে ক্লেশ সহ্য করে বুদ্ধিমান লোক তাহার
একাংশেতে ও তপস্যা করিয়া সুখী হয়।

In this situation the rājā having been discovered by two jackals, sons of his minister, Karataka and Damana-
ka, the latter said to the former,—How is this, my friend,
that the lion, although thirsty, has not drank his usual
draught, and stays at home so dull and dejected? Friend
Damanaka, replied Karataka, in my opinion we ought
not to serve this same rājā any longer, and that being the
case, for what purpose should we investigate his moti-
ons, when we have served him so many years and ex-
perienced nothing but trouble?

See what is done by serving by those slaves who are
covetous of wealth! And see also what liberty the body
is deprived of by those fools!

Again:

Those who are the dependents of another suffer cold,
and wind, and heat, and fatigue! A wise man with a
portion of it could do penance and be happy.

॥ অন্যঞ্চ ॥ এতাবজ্জন্মসাফল্যং যদনাথনবৃত্তিতা ।
 য পরাধীনতাং যাতাশ্চে বৈ জীবন্তি কে সৃতাঃ ॥ অপরঞ্চ ॥
 এহি গচ্ছ পতোন্তিষ্ট বদ মৌনং সমাচর । এবমাশাশ্রয়
 যশ্চৈঃ ক্রীডন্তি ধনিমোর্থিभिঃ ॥ কিঞ্চ ॥ অবুধৈরর্থলাভায়
 পণ্যস্বামীভিরিব স্বয়ং । আত্মা সংস্কৃত্য সংস্কৃত্য পরোপকর
 ণীকৃতঃ ॥ কিঞ্চ ॥ যা প্রকৃত্যেব চপলা নিপতত্যশুচাবপি ।
 স্বামিনোবজ্জ মন্যন্তে দৃষ্টিন্তামপি সেবকাঃ ॥ অপরঞ্চ ॥
 মৌনান্মূৰ্খঃ প্রবচনপটুর্বাতুলোজল্যকোবা । ছান্য
 মৌর্যাদি ন সহতে প্রায়শোনাভিজাতঃ । ধৃষ্টঃ পার্শ্ব
 বসতি নিয়তং দূরতশ্চাপ্রগলমঃ সেবাধর্মঃ পরমগহনো
 যোগিনামপ্যগম্যঃ ॥ বিশেষতশ্চ ॥ ****

অপর পরের অনধীন যে জীবিকা এই জন্মের সাফল্য যাহারা
 পরাধীনতাকে পাইয়াছে তাহারা যদি বাঁচে তবে কে নরি
 য়াছে । এবং আইস যাও পড় উঠ মৌনাবলম্বন কর এই
 পুকার আশারূপ গৃহেতে গন্ত যাচকেরদের সহিত ধনবা
 নেরা ক্রীড়া করে । আর বেশ্য যেমন ধন পাইবার নিমিত্তে
 বেশ বিন্যাস করিয়া আপন শরীরকে পরের উপকার করে
 এমনি মট লোক ধনলাভের নিমিত্তে বেশ করিয়া আপন
 শরীরকে পরের উপকারক করে আর অপবিত্রেতে ও
 পাড়ে স্বভাবত চঞ্চল যে স্বামির দৃষ্টি সে দৃষ্টিকে ও ভতোরা
 বড় করিয়া মানে । অপর সেবা ধর্ম অত্যন্ত দুষ্কর

योगিরদের ও অবোধ্য কেননা যদি মৌনেতে থাকে তবে
 তাহাকে নর্থ বলে যদি বাকপটু হয় তবে তাহাকে পাগল
 বলে কিম্বা বহুভাষী বলে যদি ক্ষমা থাকে তবে তাহাকে
 ভীষ বলে যদি কিছু সহ্য না করে তবে তাহাকে পায়
 অনভিজাত বলে যদি সমীপে বৈসে তবে তাহাকে অনভ্য
 বলে যদি দূরেতে থাকে তবে তাহাকে নৃদু বলে বিশেষ

So far life is worth having: to possess a livelihood without constraint, for if those who dwell under the authority of others live, pray who are the dead?

Come, go, fall, rise, speak, be silent! In this manner do the rich sport with those needy men, who are held by the gripe of dependence!

Fools for the sake of gain, as harlots do, dress themselves, and dress themselves, to become the implements of others!

Farther:

Servants, that their master may not be in a passion, strictly obey his very look, which, by its nature, is variable.

If he is silent, he is stupid; if rich in words, a madman, or an empty prattler; by patiently submitting, he is a coward, and if he will not suffer patiently, for the most part, he is an artful fellow. Seen on one side, he is an errant rascal, and if standing at a distance, he is not to be found. The duties of servitude are extremely profound, and impracticable, even to Yōgis.

Here is another very particular picture of a servant:

প্রাণমধ্যম্নতিহেতোর্জীবিতহেতোর্বিসৃজতি প্রাণান্ । দুঃখী
 যতি সুখহেতোঃ কোমুদঃ সেবকাদন্যঃ ॥ দমনকো ব্রূতে মিচ
 সঘথা মনসাপি নৈতৎ কৰ্ত্তব্যং ॥ যতঃ ॥ কথং নাম ন
 সেব্যন্তে যত্নতঃ পরমেশ্বরাঃ অচিরেণৈব য়ে তুষ্টাঃ পূরয়ন্তি
 মনোরথান্ ॥ অন্যচ্চ পশ্য ॥ কুতঃ সেবা বিহীনানাং চাম
 রোদ্ভূতসম্পদঃ । উদ্বলধবলকুচবাজিবারণবাহিনী ॥
 করটকো ব্রূতে তথাপি কিমনেনাঙ্গাং ব্যাপারেণ ॥ যতঃ ॥
 অব্যাপারেণ ব্যাপারঃ সর্বথা পরিহরণীয়ঃ । পশ্য ॥ অব্য
 পারেণ ব্যাপারং যোনরঃ কৰ্ত্তু মিচ্ছতি ॥ স ভূমৌ নিহতঃ শে
 তে কীলোত্যাটীব বানরঃ ॥ দমনকঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ ॥
 কাটকঃ কথয়তি অস্মি মগধদেশে ধর্ম্মারণ্যসন্নিহিত
 বসুধায়াং সুভদ্রতনাস্নানকাযস্থেন বিহারঃ কৰ্ত্তু মারব্যঃ

বড় হইবার নিমিত্তে নত হয় জীবনের নিমিত্তে পান পরি
 ত্যাগ করে সুখের নিমিত্তে দুঃখী হয় অতএব চাকরহইতে
 অন্য নুর্থ আর কে । দমনক বলিতেছে হেঁ নিত্ৰ কোন
 পুকারে মনেতে ও ইহা কভুবা নয় যেহেতুক যাহারা তট
 হইলে অল্প কালেতেই মনস্কামনা পূর্ণ করে এমন যে ধনি
 লোক তাহার কেন যত্নেতে সেবা নয় । আরও দেখ
 সেবারহিতের চামরেতে উদ্ধত সম্পদ কোথা আর উদগু
 ও শ্বেতকুত্র ও গজও সেনা কোথা । করটক বলিতেছে
 তথাপি আমারদের এ ব্যাপারে কি পুয়োজন যে নিমিত্তে

অব্যাপারেতে ব্যাপার স্বরূপকারে তাজা দেখে যে লোক
অব্যাপারেতে ব্যাপার করিতে বাঞ্ছাকরে সে কালোৎপাটি
বানরের ন্যায় নষ্ট হইয়া ভূমিতে শয়ন করে । দমনক
জিজ্ঞাসিতেছে এ কি পুকার করটক কহিতেছে । নগধ
দেশে ধর্ম্মারণের নিকটে পৃথিবীতে শুভদত্ত নামে
কায়স্থ কেলিগৃহ করিবার নিমিত্তে আরম্ভ করিয়াছিল

He humbleth himself to be exalted; for a living he ex-
pendeth his vitals; he suffereth pain to acquire ease.
Who is then so great a fool, as he who serveth?

What thou proposest, my friend, said Damanaka, is
by no means to be put in practice.

How! are not the mighty lords to be diligently served by
thee, who, without delay, gladly fulfil the desires of the
heart?

When do those without employ enjoy those elevated
stations distinguished by the Chāmara, the white umbrel-
la spread upon a lofty pole, the horse, the elephant, and
the splendid litter.

Notwithstanding all this, observed Karataka, what
have we to do with this affair? One should always avoid
meddling with other folks' business. See what is said
upon this occasion:

*The man, who will have to do in matters with which he
hath no business, may be repulsed and sleep upon the
ground, like the ape, who drew out the wedge.*

How, was that? demanded Damanaka; and he related
the following story:

FABLE II.

IN the country which is called Magadha, Subha-datta,
a man of the Kāyastha tribe, had begun to build a thea-
tre for an entertainment.

তত্র করপত্রদ্যর্থমানৈকসংখ্যস্য কিঞ্চিদূরপ্কাটিতস্য
 কাষ্টলুপ্কাটদ্বয়মধ্যে কীলকং নিধায় সূত্রধারেণ ধৃতং তত্র
 বলবান্ বানরযুথঃ ক্রীড়ন্তে কোবানরঃ কালপ্রেরিতদ্রব তং
 কীলকং হস্তাভ্যাং ধৃত্বোপবিষ্টঃ তত্র তস্য মুচ্ছদ্বয়ং লম্ব
 মানং কাষ্টলুপ্কাটদ্বয়াভ্যন্তরে প্রবিষ্টং অনন্তরং সচ সহজচ
 পলতয়া মহতা প্রয়ত্নেন তং কীলকং আকৃষ্টবান্ আকৃষ্টে
 চ কীলকে চূর্ণিতাষ্টদ্বয়ঃ পশ্চত্বে গতঃ অন্যোহং ব্রবীমি
 অব্যাপারেণ ব্যাপারমিত্যাदि । দমনকোব্রূতে তথাপি
 স্বামিচেष्टানিরূপশং সেবকেनावश्यं करणीयं । करटको
 ब्रूते सर्वस्मिन्नधिकारे यएव नियुक्तः प्रधानमस्त्री सकरोतु
 यताऽनुजीविना पराधिकारचर्चा शर्वथा न कर्त्तव्या ।

তাহাতে করাত দ্বারা বিদ্যমান এক স্তম্ভের কিয়ৎপার্শ্বভাগ
 দুই খণ্ড হইয়াছিল এই খণ্ডদ্বয়ের মধ্যে সূত্রধার এক কীলক
 নিধান করিয়া রাখিয়াছিল তাহাতে বানরের পালকীড়া
 করিতেছিল এক বানর কাল পৌরিতের নাম সেই কীল
 ককে দুই হাতে ধরিয়া বসিল সেই কাষ্টদ্বয়ের মধ্যে
 তাহার দুই অণ্ডকোষ লম্বা হইয়া পড়িয়াছিল । অনন্তর
 সে সভাবত চাপলাহতক বড় পরাসেতে এই কীলক
 টানিল কীলক আকৃষ্ট করিলে পরে দুই অণ্ডকোষ বিদগ্ধ
 হইয়া পঞ্চত্ৰ পাইল এই জন্যে আমি বলি যে লোক

অব্যাপারেতে ব্যাপার করিতে ইচ্ছা করে ইত্যাদি।
 দমনক বলিতেছে তথানি স্বামির চেষ্টা নিকপণ সেব
 কের অবশ্য কর্তব্য করটক বলিতেছে সমস্ত কাষেতে
 নিযুক্ত যে প্রধান মন্ত্রী সেই ককক যেহেতুক ভৃত্যেরদের
 পরাধিকার চলি কোন পুরকারে কর্তব্য নহে।

One of the carpenters having with his saw cut some way through a piece of timber, put a wedge into the slit. In that place a troop of apes came playing tricks; and one of them as if directed by the wand of time, took hold of that wedge with his two hands, and sitting down, his lower parts hung within the slit. At length, from the natural giddiness of his species, with great difficulty he drew out the wedge, so that the boards closing, what was between them was entirely destroyed and he deprived of his life. Wherefore, I say,

The man who will &c.

For all this, said Damanaka, the concerns of the master should certainly be looked into, even by the servant. The prime minister, observed Karataka, being employed in the superintendence of all affairs, let him do it. An inferior should, on no occasion, interfere with the department of another; for,

পশ্য। পরাধিকারচর্চা যঃ কুর্য্যাত্ স্বামিহিতৈচ্ছয়া।
 স বিষাদতি ভোক্তারাদ্বর্দ্ধমস্তাভিতোযমা ॥ দমনকঃ
 পৃচ্ছতি কথমেতৎ করটকোব্রূত অস্মি বারাণস্যাং কপূর
 পটকৌনাম রজকঃ স চাভিনববয়স্কথ্যাবধ্বা সহ
 চিরং নিধুবনং কৃत्वा নির্ভরমালিঙ্গ্য প্রসুপ্তঃ তদনন্তরং
 তদ্রূহদ্রব্যোণি হৃত্তুং চৌরঃ প্রবিষ্টঃ তস্য প্রাঙ্গণে গর্দ
 ভোবদ্বস্তিষ্ঠতি কুকুরস্বোপবিষ্টোঽস্মি অথ গর্দভঃ শ্বান
 মাহ সখৈ ভবতস্তাবদ্যং ব্যাপারস্তত্ কিমিতি ত্বমুচ্যৈঃ
 শব্দং কৃत्वा স্বামিনং ন জাগরথসি। কুকুরোব্রূত ভদ্রং
 মম নিয়োগস্য চর্চাত্বয়া ন কৰ্ত্তব্য ত্বমেব কিং ন
 জানাসি যথা তস্যাহর্নিশং মৃহরচ্চাং করোমি যতোঽয়ং
 চিরান্নিবৃত্তোমমোপযোগং ন জানাতি। *❖❖❖❖

দেখ যে জন পুভূতিতেচ্ছাতে পরাধিকার চর্চ। করে সে
 বিষয় ইন্দ্ৰিয়মেন চৌকাবেতে গর্দভ তাড়িত হইয়াছিল। দমন
 নকপূর করিতেছে ইহা কি পুকার করটক কহিতেছে।
 কাশাতে কপূরপটক নামে এক রজক থাকে সেনব
 যুবতী বধুর সহিত রতি করিয়া নির্ভর আলিঙ্গন করিয়া
 নিদ্রিত হইয়াছে তৎপরে তাহার ঘরের দুবা সকল চুরি
 করিবার নিমিত্তে চৌর পবেশ করিয়াছে। তাহার উঠা
 নেতে এক গাধা বাঁধা থাকে এক কুকুর ও বসিয়া থাকে।
 অনন্তর গাধা কুকুরকে বলিল * হে মিত্র তোমার এই

ব্যাপার তব্ব কেন তুমি উচ্চৈঃস্বরেতে পুতকে না জাগা ও
কুকুর কহিতেছে তান আমার কন্ঠের চক্ষ। তোমার কণ্ঠবা
নয় তুমি ইহা কি জান না যেহেপোতে দিবা রাত্রি আমি
তাহার গৃহ রক্ষা করি যেহেতুক চিরকাল নিবৃত্ত এ ব্যক্তি
আমার উপ যোগিতা জানে না।

*He who shall meddle with the department of another,
out of zeal for the welfare of his master, may repent;
like the ass who was punished for braying.*

Damanaka enquired how that happened; and Kara-
taka recounted the following story:

FABLE III.

At Bārānāsi there lived a washerman, whose name was Karpura-pataka. Once upon a time, having spent the evening until it was very late in the agreeable company of his young wife he went to bed fatigued, and slept soundly. In the mean time, a thief got in with an intention to rob the house. In the court, there were an ass and a dog. The ass said to the dog, upon hearing the thief,— This is thy business; then why dost thou not get up, and by barking contrive to rouse thy master? What hast thou to do with my department? replied the dog. Thou knowest full well, how I watch and guard this house all day and night, and yet this master of ours doth not consider my merit;

তেনাধুনাপি মনোহারদানে মন্দাদরঃ যতোবিদ্যা বিধুর
 দর্শনং স্বামিন উপজীবিশু মন্দাদরা ভবন্তি ॥ গর্ভভোব্রুতে
 শ্রুণু রেবর্ষর । আচতে কার্যকালৈ যঃ সক্তি মৃত্যুঃ সক্তি
 সুহৃৎ । অকার্যকার্যকর্তা যত্ননা দিষ্টো প্যসৌ সুহৃৎ ॥
 কুকুরো ব্রুতো মৃত্যুনা স্ভাষয়েৎ স্তু কার্যকালৈ সক্তি প্রমুঃ ॥
 যতঃ ॥ আশ্রিতানাং মৃত্যুস্বামি সেবায়াং ধর্মসেবনে ।
 পুত্রস্ব্যোত্পাদনে চৈব ন সন্তি প্রতিহস্তকাঃ ॥ ততো গর্ভভঃ
 স্কোপমাহ অরে দুষ্টমতে পাপো যাংস্বং যদ্বিপন্নৌ স্বামি
 কার্য্য উপেক্ষাং কৰোষি ভবতু তাবৎ যথা স্বামী আগরি
 য়তি তন্ময়া কৰ্ত্তব্যং ॥ যতঃ ॥ পৃষ্টতঃ সেবয়েদর্কং জঠ
 রেণ জ্ঞাতাশনং । স্বামিনং সর্বভাবেন পরলোকমনাথয়া ॥
 ইত্যুক্তা অতীবচীল্কারশব্দং কৃতবান্ ॥ *❀*❀

সেই হেতুক এখন আমার আহীর দানিতে অনাদির ইইয়াছে
 যেহেতুক বৈকুণ্ঠ দর্শন ব্যতিরেকে ভূতোতে স্বামির মন্দাদর
 হয় গর্ভভ বলিতেছে শুনরে ববর কাষাকালে যাচঞা করে
 সে কি দাস আর সে নিতাইবা কি আঙ্কা পাণ্ড না হইনে ও যে
 জন অন্য কতব্য ব্যাপার ও করে সেই নিতকুকুর কহিতেছে
 কাষাকালে যে লোক ভূতের দিগে কে সন্তুষ্ট করে সে
 কি পুত্রে যেহেতুক আশ্রিতের দিগের পোষণেতে এব° স্বামি
 সেবাতে এব° গুণানুষ্ঠানেতে এব° সন্তান জন্মানেন্তে পুতি
 নিধি নাই । অনন্তর গাথা ক্রোধ করিয়া কহিন অরে

crashy one they dinner and - for an calumny nation work neglect-
 दुर्द्धि दुई पाणिष्ठ बेहेतुक बिपत्ति ते पुत्रकार्यो उपेक्षा
do not - but so - which the master overtake that not
 कारनि हउक ये पुकारे दामी जागेन, ताहा आमार
debt - on the back - the don't - worshippings should be - to
 कर्त्तवा । येहेतुक पडेते सुयाके सेवा करिवेक उर
valley are the fair - should be worshippings - at all times - the master
 रेते अग्निके सेवा करिवेक सवपुकारे पुत्रके सेवा
should be - direct without the other words - should be worshipped
 करिवेक मायाराहितेते परलोकके सेवा करिवेक
when saying name such bringing some made
 इहा बलिवा अतिवड्छांकार शक करिन ।

and I am even stinted in my allowance of provision. Now masters in general, without spying some fault in their servants, are not wont to shorten their allowance. Hear me, barbarian! exclaimed the ass.

Is he a servant, is he a friend, who hesitateth at the time of action? Should the business be ruined, could it be occasioned by a servant, or by a friend!

The dog replied,—Hear me for a moment.

Is he a master who, at a proper season, doth not consider his servants? Are not they who keep servants on all occasions to cherish them?

Do they not also say,

Dependants should have no interrupters in their meals, in their amusements, in the execution of their religious ceremonies, nor in doing good for the sake of virtue.

The ass in a rage exclaimed,—Villain! thou neglectest thy masters' business. Be it so, but it is my duty to do something that shall wake him; for,

The sun should be worshipped on the back, the god of fire on the belly, a master in every way, and the world above without deceit.

Having repeated these lines, he began to make a great noise by braying;

ততঃ সরজকসেনা চীৎকারেণ প্রবুড়োনিদ্রাভঙ্গকোপাদিত্যায়
 গর্ভমং স্নগুডেন তাড়য়ামাস তেনাসৌ পঞ্চত্বমগমত অতোহং
 ব্রহ্মীনি পরাধিকারচর্চা মিত্বাদি পশ্য পশুনা মন্বৈষণে
 বাসম্নিযোগঃ স্ননিযোগচর্চা ক্রিয়তাং বিমৃশ্য কিত্বয়
 তথা চর্চয়া ন প্রয়োজনং ততঃ প্রায়োঃ স্ননিতশেষাচারঃ
 প্রচুরোস্তি দমনকঃ সরোষমাচ্ছ কথমাহারার্থী ভবান্
 কেবলং রাজানং সেবতে এতদ্যুক্তমুক্তং ত্বয়া ॥ যতঃ ॥
 সুহৃদামুপকারকাৰণাত দ্বিষতামপ্যপকারকাৰণাত ।
 নৃপসংশ্রয়দৃশ্যতে বুধৈর্জ্ঞাটরং কোন বিমর্শিতং কেবলং ॥ জীবিতং
 যস্য জীবন্তি বিপ্রামিত্রাণি বাম্ভবাঃ । সফলং জীবিতং
 তস্য আত্মার্থে কোন জীবতি ॥ অপি চ ॥ যস্মিন জীবতি
 জীবন্তি বহবঃ সতু জীবতু । কাকোপি কিং ন কুরুতে
 চণ্ডা সোদরপূরণং ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

পরে সে রাজক সেই চীৎকার শব্দে জাগু হইয়া নিদ্রা ভঙ্গ
 হইতে উঠিয়া লগুড়দ্বারা গাধাকে নারিন তাহাতে এই
 গন্ধত পঞ্চত্ব পাইল। এই জন্যে আমি বলি পরাধিকারচর্চা
 কর্তব্য নহে ইত্যাদি । দেখ পশুরদের অন্য বিষয় অশ্রেষণ
 করাই অসম্মিযোগ সম্প্রতি অনিয়োগের চর্চা কর কিন্তু
 আজি সে চর্চাতে ও পুয়োজন নাই কেননা আমারদের দুই
 জনের ভুক্তাবশিষ্ট আহার যথেষ্ট আছে। দমনক কোণ করিয়া
 কহিল তুমি কি কেবল আহারের নিমিত্তেই রাজাকে

সেবা কর ইহা তুমি অনুপযুক্ত কহিল। যেহেতুক বন্ধু
লোকেরদিগের উপকারের নিমিত্তে আর শত্রুর অপকারের
নিমিত্তে রাজার আশ্রয় পণ্ডিতেরা অভিলষ করেন কেবল
আপন পেটে কে না ভরে যাহার বাঁচিতে বাঞ্ছন ও বাঞ্ছন
বাঁচে তাহারই জীবন সার্থক আপনার নিমিত্তে কে না বাঁচে
অপর যে বাঁচিলে অনেক বাঁচে সেই বাঁচুক নতুবা কাক
ও কি চক্ষুতে করিয়া আপন উদর পূরণ করেন।

So that the washerman was alarmed, but, although exceedingly drowsy, he got up and gave the ass a good beating with a large stick. I repeat, therefore, *He who shall meddle &c.*

Observe: our employment is searching for game; then let us attend to our proper business. But now I have considered, I think there is not any occasion for our doing that to-day; for there is plenty of provisions for us, and some to spare Damanaka, displeased at this observation, exclaimed,—What! Dost thou serve his highness the rājā, merely for the sake of food? This is very unwise; as is declared in these lines:

By the wise the patronage of princes is sought to gain the assistance of friends, as well as aid against the treachery of enemies; for, who doth not simply fill his belly?

They say,

Worthy is the life of him, in whose living the Brāhmans and the relations live, for, who doth not live for himself?

Let him live, in whose living many live. Doth not even the booby fill his belly with his bill?

॥ পশ্য ॥ পঞ্চমিধ্যাতি দাসত্বং পূরুৈঃ কোপি মানবঃ ।
 কপি লক্ষ্যৈঃ কতো কোপি লক্ষ্যৈরপি ন লভ্যতে ॥ অন্যচ্চ ॥
 'মনুষ্যজাতৌ তুল্যাচাং মৃত্যুত্বমুতিগেহিতং । প্রথমোযোন
 তত্রাপি স কিং জীবন্তু গণ্যতে ॥ তথা চোক্তং ॥ বাজিবারণ
 লৌহানাং কাষ্টপাষণবাসসাং নারীপুরুষতোযানামন্ত
 রং মহদন্তরং ॥ তথা হি স্বল্পমপ্যতিরিচ্যতে স্বল্পম্ভাযুব
 শ্রাবশেষমলিনং নির্মাংসমথ্যস্থিকং ॥ শ্ৰী লব্ধ্বা পরিতোষ
 মেতি ন ভবেত্তল্য চুধঃ শান্তয়ে । সিংহো জম্বুকমঙ্কমাগত
 মপি ত্যক্তা নিহন্তি দ্বিপং সর্ধঃ কচ্ছগতোপি বাঙ্কতি জনঃ
 সত্যানুরূপং ফলং ॥ অপরঞ্চ ॥ সেব্যসেবকযোরন্তরং পশ্য ।

দেখ কোন মনুষ্য পাঁচ কাহ্নেতে দাসত্ব পায় উপযুক্ত কেহ
 লক্ষকাষাপেতে দাসত্ব পায় কোনলোক লক্ষকাহ
 নেতে ও পাওয়া যায় না অপর সমান যে, মনুষ্য জাতি
 তাহাতে দাসত্ব বড় নিন্দিত তাহাতে ও যে পুধান নয় সে
 কি জীবিতের মধ্যে গণ্যায় । পণ্ডিত কতক তাহা কথিত
 আছে ঘোড়া ও হস্তী ও লোহের এবং কাষ্ট ও পুস্তর
 ও বস্ত্রের এবং স্ত্রী ও পুরুষ ও জনের যে অন্তর সে অনেক
 অন্তর । আর অতন্ন ও অতিরিক্ত হয় অতন্ন নাড়ী বসা
 ও বেদ অবশিষ্ট মলিন মাংসরহিত অস্থি ও পাইয়া
 কুকুর সন্তোষ পায় তাহার কুখা নিবৃত্তির নিমিত্তে হয়

ना सिंह क्रोড়েते प्राप्त शृगालके ও ত্যাগ করিয়া হস্তিকে
নষ্ট করে সমস্ত পুণী কষ্ট পাইনে ও আপন উপযুক্ত
কল বাঞ্ছা করে । অপর সেবা ও সেবকের অন্তর দেখ

With five panas of shells any man may procure attendance, and any man, by a stronger reason, with a hundred thousand! But a servant, who acts well, is not acquired by ten myriads.

Mankind being by birth upon an equality, the state of servitude is reproachful. He who is not the first of his species, is counted among those who are dependants.

It is said also,

The difference which is between horses, elephants, and iron, wood, stone, and cloth, women, men, and water, is a very great difference.

A trifling thing is sometimes reckoned as a very great one.

For,

A dog having found a bone with a few sinews sticking about it, dirty, loathsome, and without a bit of meat upon it, is rendered exceedingly happy, although it be not sufficient to satisfy his hunger.

Whilst,

The lion permitteth the jackal to come near and escape, and killeth the elephant. Every man, although reduced to distress, longeth for fruit suitable to his strength.

Observe the difference in the behaviour of him who serveth, and of him who is served:

ছাঙ্গুলচালনমথস্বরূপাবপাতং ভূমৌ নিপত্য বদনোদর
 দর্শনম্ভ। শ্বা পিণ্ডদস্য কুরুতে গজপুঙ্গবস্তু ধীরং বিলোক
 যতি চাটুশ্ননৈশ্চ ভুক্তো ॥ কিঞ্চ ॥ যজ্জীবতি চাণমপি
 প্রথিতং মনুষ্যৈঃ বিজ্ঞানবিক্রমযশোভিঃ ভজ্যমানং ।
 তন্মাস জীবিতমিহ প্রবদন্তি তজ্জাঃ কা কোপি জীবতি
 চিরায় বলিঞ্চ ভুক্তো ॥ অপরঞ্চ ॥ যোনা তনুনা ন চ গুহর্ন
 চ মৃত্যুর্ধর্গে দোনে দয়াং ন কুরুতে ন চ বন্ধ্যুর্ধর্গে ॥ কিন্তস্য
 জীবিতফলেণ মনুষ্যলোকে কা কোপি জীবতি চিরঞ্চ
 বলিঞ্চ ভুক্তো ॥ অপরমপি ॥ অহিতহিতবিচারশূন্যবুদ্ধেঃ
 শ্রুতিসমর্থৈর্বজ্জমিস্তিরস্কৃতস্য । উদরভরণমাত্রকো ব
 লেচ্ছোঃ পুরুষপশোঃ পশোশ্চ কো বিশেষঃ ॥ * * * * *

কুকুর গাঙ্গ পরিমিত অন্নদাতার নিকটে লাঙ্গুল লাড়ে
 আর পদতলে পাড়ে আর ভগিতে পাড়িয়া মুখ ও উদরের
 দর্শন করায় উত্তম হস্তী বন্দ্য অবলোকন করে অল্পে
 ভোজন করে। অপর মনুষ্যকৃত খ্যাত হইয়া বিজ্ঞান ও
 পরাক্রম ও কীৰ্ত্তিতে অভজ্যমান হইয়া এক ক্ষণ ও যে বাচন
 পাণ্ডিত্যে তাহাকেই জীবিত কহিয়াছেন কাক ও চিরকাল
 বাচে বলি ও ভোজন করে। অপর যে আপনার উপ
 দেশক নয় আর দাসবর্গে দয়া না করে আর দরিদ্র লোকে
 দয়া না করে আর নিম্নবর্গে দয়া না করে মনুষ্যালোকে

তাহার জীবনে কি কল কাক ও অনেক কান বাঁচে
 বলি ও ভোজন করে। অপর ও বেদোক্ত আচারেতে
 রহিত ও অনেক লোককতৃক তিরস্কৃত ও উদরভরণ
 মাত্রাভিলাষি ও ভদ্রাভদ্রবিবেচনারহিতাস্ত্রকরণ যে পুরুষ
 পশু তাহার আর অন্যপশুর ভেদ কি।

Shaking the tail, falling down at the feet, and, prostrated upon the ground, looking up at his face and stomach: all this the dog performeth to his master who feedeth him. But the noble elephant looketh boldly, and eateth not, unless he liketh, with an hundred kind entreaties.





But,

That life, although it endure but for a moment, which is celebrated by mankind, as being attended by knowledge, valour, and renown, is, by those who know it, alone distinguished by the name of life. A crow liveth a long time, and a raven eateth.

In this world, of what use is his life, who is not an instructor to himself, who doth pity his servants, the poor, and his friends?

For,

How is that brute-like man distinguished from a beast, whose understanding is void of the power to discriminate between good and evil, who is destitute of the many benefits of the sacred records, and whose only inclination is the filling of his belly?

করটকোব্রূতে আবাং তাবদপ্রধানৌ তদাপ্যাবযোঃ কিম
 মযা বিচারণযা । দমকোব্রূতে কিযতা কালেনামাত্যাঃ
 প্রধানতামপ্রধানতাম্বালভন্তে ॥ যতঃ ॥ ন কস্য চিত্
 কস্বিদিহ স্বভাবাঙ্গবল্যুদারোভিমতঃ স্খলোবা । লোকে
 গুরুত্বং বিপরোততাম্বা স্বচেষ্টিতান্যেব নরং নযন্তি ॥ কিঞ্চ ॥
 আরোপ্যতে শিল্পা শৈল্যে যত্নেন মহতা যথা । নিপাত্যতে
 স্ত্রোণেনাধস্তথাআ গুণদোষযোঃ ॥ যাত্যধো ধোব্রজত্যুচ্চৈর্নরঃ
 স্ত্রৈরেব কর্ম্মভিঃ । কূপস্য ত্বণিতা যদ্বৎ প্রাকারস্যেব
 কারকঃ ॥ তদ্বদ্রং স্বয়নাযন্তোহ্যাত্মা সর্বস্য । করটকো
 ব্রূতে অথ ভবান্ কিং ব্রবীতি স আহ অযন্তাবত্ স্বামী
 পিঙ্গলকঃ কুতোপি কারণাত্ সচকিতঃ পরিত্য্যোপবিষ্টঃ ।
 করটকোব্রূতে কিং তত্বং জানাসি । ****

করটকবলিতেছে আমরা দুইজন অপুধান তবে আমারদের
 বিচারে কি পুয়োজন । দমনক বলিতেছে নজ্বিরা কত
 কালে পুাধান্য কিম্বা অপুাধান্য পায় বেহেতুক স্বভাবেতেই
 কেহ কাহার ও অভিমত হয় না খল জ্ঞান ও হয় না স্বদীয়
 চোষ্টেই মনুষ্যকে মহত্ত্ব কিম্বা ক্ষুদ্রত্ব পাওয়ায় আর যেমন
 পর্বতেতে অত্যন্ত পুরাসে পুস্তর উঠায় অতান্ন কালেতেই
 নীচেতেই ফেলে সেইরূপ গুণ ও দোষেতে আত্মা । কূপের
 খণনকর্তা যেকণ নীচেতেই যায় এবং পুাচীরকর্তা যাদৃশ

উচ্চতে যার এই রূপ মনুষ্য আপন কর্মদ্বারাই নীচতে
 যায় এবং উচ্চতে যায় সে ভাল সকলের আত্মা আপন
 পুয়াসে আয়ত্ত । করটক বলিতেছে ইহার পর তুমি কি
 বল সে কহিল এই রাজা পিঙ্গলক কি কারণেতে সভয়
 হইয়া ফিরিয়া বসিয়াছেন । করটক কহিতেছে তুমি কি
 যথার্থ জান

But what have we, interrupted Karataka, to do with these reflections; we, who are of little power, and not the principals? In a very short interval of time a minister may enjoy the principal station, or the reverse, replied Damauaka, for, they say,

No one is, by nature, noble, respected of any one, nor a wretch. His own actions conduct him either to wretchedness, or to the reverse.

Again:

As by repeated efforts, a stone is mounted upon the summit of a hill, and instantly thrown down, so may we ourselves, by our virtues and our vices, be elevated and cast down.

As the digger of a well descends down, and the builder of a wall rises up, so is a man degraded or elevated by his actions.

But after all, observed Karataka, what is it thou art speaking of? The curious story, replied Damanaka, of his highness Pingalaka's returning without drinking, and staying at home. What! demanded Karataka, art thou acquainted with it?

দমনকোব্রূতে কিমত্রাবিদিতমস্মি ॥ উক্তম্ ॥ উদীরিতো
 ঽর্থঃ পশুনাপি মৃচ্ছ্যতে হৃদাশ্চ নাশাশ্চ বহুন্তি দেশিতাঃ ।
 অনুক্তমপ্যুহতি পণ্ডিতোজনঃ পরেঙ্জিতজ্ঞানফলাহি
 বুদ্বয়ঃ ॥ আকারৈরিঙ্জিতৈর্গত্যা চেষ্টয়া ভাষণেন চ ।
 নেত্রবক্তৃবিকারেণ লচ্ছ্যতেঽন্তর্গতং মনঃ ॥ অত্র ময়প্রস্তাবে
 প্রজ্ঞাবলেনাহমেদং স্বামিনমাভ্যর্থ্য করিষ্যামি ॥ যতঃ ॥
 প্রস্তাবসদৃশং বাক্যং সজ্ঞাবসদৃশং প্রিয়ং । আত্মশক্তিসমং
 কোপং যোচ্যনামি স পণ্ডিতঃ । করটকোব্রূতে সখে ত্বং
 সেবানভিজ্ঞঃ ॥ পশ্য ॥ অনাহুতোবিষেদ্যস্তু অপ্রচোবজ্জ
 ভাষতে আত্মানং মন্যতে প্রীতং ভূপালস্য স দুর্ম্মতিঃ । দম
 নকোব্রূতে ভদ্র কথমহং সেবানভিজ্ঞঃ ॥ পশ্য ॥ *❀*

দমনক বলিতেছে ইহাতে অজ্ঞাত কি আছে বিজ্ঞেরা
 কহিয়াছেন কথিত বিষয় পশুতে ও বোঝে আদেশিত
 হইলে অশ্রের ও হস্তিরা বহন করে পণ্ডিতলোক অক
 থিত হইলে ও বিতর্ক করে যেহেতুক বুদ্ধিপরের ইঞ্জি
 তজ্ঞা হয় । আকারদ্বারা ও ইঞ্জিতদ্বারা ও গমনদ্বারা ও
 চেষ্টাদ্বারা ও কথনদ্বারা ও চক্ষু আরমুখের বিকারদ্বারা
 মন অন্তঃকরণস্থ বিষয় জানে । এই ভয় পুনর্জন্মে বুদ্ধি
 পুভাবেতে আমি এই রাজাকে আশ্রয় করিব যেহেতুক
 পুস্তাবের তুল্য বাক্য ও সস্তাবের তুল্য পুয় ও আপন
 শক্তি তুল্য ক্রোধ যে জানে সেই পণ্ডিত । করটক বলি

তেছে হে বন্ধো তুমি সেবানভিজ্ঞ দেখে যে আহত না হইলে
নিকটে যায় ও জিজ্ঞাসিত না হইলে অনেক কহে ও
আপনাকে রাজার পুত্র করিয়া জানে সে লোক নির্বোধ।
দমনক বলিতেছে হে মিত্র কেন আমি সেবানভিজ্ঞ দেখ।

Is there any thing, said Damanaka, unknown to a wise man? It is said,

A declared meaning is comprehended even by brutes: horses and elephants understand when they are told; but a wise man findeth out even what is not declared. The advantage to be derived from our senses is to conceive what is only signified by another.

By the appearance of a person, his gait, and address; by the end of his conversation, the change of his countenance, and the motion of his eyes, the mind can discover the inmost counsels of his heart.

Then, I will now, through the opportunity given by his fears, turn the fault to my own advantage, with the superiority of wisdom; for,

He is a wise man who knoweth, that his words should be suited to the occasion, his love to the worthiness of the object, and his anger according to his strength.

Friend, said Karataka, thou art unacquainted with the ways of service.

He who entereth uncalled for, unquestioned speaketh much, and regardeth himself with satisfaction, to his prince appeareth one of a weak judgment.

How am I therein ignorant of the ways of service? demanded Damanaka, for,

কিমপ্যস্ति स्वभावेन सुन्दरं वाप्यसुन्दरं । यदेव रोक्षते
 यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरं ॥ यतः ॥ यस्य यस्य हि योभाव
 स्तेन तेन हि तं नरं । अनुপ্রविश्य मेधावी क्षिप्रमात्मवशं
 नयेत् ॥ अन्यच्चा।कोवेत्यहमिति ब्रूयात् सम्यगादेशयेति च
 । आज्ञामवितथां कुर्यात् यथाशक्ति महीपतेः ॥ अपाञ्च ॥
 अल्पे ক্ষুৰ্ঘৃতিমান্ প্রাঙ্গ-ক্ষায়েবানুগতঃ সদা। আদিষ্টান
 বিকল্যেত স রাজবসতৌ বসেৎ ॥ করটকো ব্রূতে কদাচি
 ত্ত্বানবসরপ্রবেশাদবমন্যতে স্বাসী । মচাঃ অস্ত্বেব
 তথাপ্যনুজীপিনা স্বামিসান্নিধ্যমবশ্যং করণীয়ং ॥
 যতঃ ॥ দোষভীতেরনারম্ভস্তত্ কাপুরুষলক্ষণং । কৈরজীর্ণ
 ভয়াৎ আতর্ভাজনং পরিহীযতে ॥ * * * * *

স্বভাবেতে সন্মর কিস্বা কংনিত কি আছে যাহাতে যাহার
 কচি সেই তাহার সন্মর হয় । যেহেতুক যাহার যের
 ভাব সেই ভাবেতে সেই মনুষ্যকে পুবেশ করিয়া বুদ্ধিমান
 লোক স্ববশ করিবে । অপর এখানে কে ইহা জিজ্ঞাসিলে
 আমি ভ্রমক ইহা কহিবেক এবং আজ্ঞা কবন ইহা
 কহিবেক আর শক্ত্যানুসারে রাজার আদেশলঙ্ঘন করিবে
 না । এবং অল্লাকাঙী ও ধৈর্যাবান বিজ্ঞ লোক ছায়া
 ন্যায় স্বদা অনুগত থাকিবেক আজ্ঞা পাণ্ডু হইলে আজ্ঞা
 লঙ্ঘন করিবে না সে লোক রাজস্থানে বাস করে । কর
 টক বলিতেছে অসময়েতে পুবেশের কারণেতে পাছে রাজা

তোমাকে অপমান করেন সে কহিল তাহঁকে তথাপি
 স্বামির সাক্ষাৎ ভক্তের অবশ্য কণ্ঠব্য যেহেতুক দোষের
 ভয়েতে যে কন্মের আরম্ভ না করা সে কাপুরুষের লক্ষণ হে
 তাই অজ্ঞান ভয়েতে কেনিকটস্থ ভোজন পরিত্যাগ করে।

Is there any thing of its own nature beautiful or not beautiful? The beauty of a thing is even that by which it shineth. One of a sound judgment, having pursued a man with those very qualities of which he is possessed, may presently lead him into his power.

Again:

Upon hearing, *Who is here?* he should answer, *I!*—*please to command*. And he should execute the orders of his sovereign to the best of his abilities.

Farther:

He who is steady in trifling matters, wise, like a shadow constantly in attendance, and who being ordered may not hesitate, is a proper person to dwell in the court of a prince.

Sometimes, observed Karataka, thy master is displeased with thee for thy unseasonable intrusions. It is true, replied Damanaka, nevertheless, attendants must, unavoidably, make their appearance. They say,

The non-commencement of any thing, from the fear of offence, is the mark of a weak man. Who, brother, leaveth off eating entirely, from the dread of indigestion?

পশ্য ॥ আসন্নমেবনৃপতির্ভজতে মনুষ্যং বিদ্যাবিহীনমকু
 স্ত্রীনমসঙ্গতং বা। প্রাচেষু ভূমিপত্যঃ প্রমদাস্ততাশ্চ যঃ
 পার্শ্বতোবসতি তং পরিবেষ্টয়ন্তি ॥ করটকোব্রূতে অথ তত্র
 গত্বা কিং বক্ষ্যতি ভবান্ । স আহ অণু কিমনুরকো
 বিরক্তো বা ময়ি স্বামীতি জ্ঞাস্যামি ॥ করটকোব্রূতে কিং
 তজ্জ্ঞানলক্ষণং দমনকোব্রূতে অণু । দূরাদবেক্ষণং হাসঃ
 সম্প্রশ্নে সাদরোমৃগং ॥ পরোক্ষেপি গুণস্বাধা স্মরণং প্রিয়ব
 স্তুপু। তদেব । অসেবকো চানুরক্তির্দানং সপ্রিয়ভাষণং অনুর
 ক্তেপু চিহ্নানি দোষেপি গুণসংগ্রহঃ ॥ অন্যত্র ॥ কালযাপন
 মাশানাং বর্দ্ধনং ফললব্ধনং বিরক্তেশ্বরচিহ্নানি জানী
 যান্মতিমান্নরঃ । এতজ্জ্ঞাত্বা যথা চাযং মমায়ত্তো
 ভবিষ্যতি তথা করিষ্যামি ॥ *❖*❖*❖*❖*

দেখ নিগুণ ও অকুনীন ও অনিষ্টই বা নিকটেই মনুষ্যকে
 রাজা অনুগৃহ করেন কননা পুয় রাজারা ও স্ত্রী
 লোকেরা ও লতা সকল নিকটে যে বাস করে তাহাকে
 বেষ্টন করে । করটক বলিতেছে অনন্তর সেখানে
 গিয়া তুমি কি বলিবা সে কহিল শুন আনাতে পুতু অনু
 রক্ত কিবা বিরক্ত ইহা জানিব করটক বলিতেছে সে
 জ্ঞানের চিহ্ন কি দমনক কহিতেছে শুন দরহইতে দেখা
 ইহিলে হাস্য আর পুষ্পেতে অতিশয় আদর আর অসাক্ষাৎ
 কারে ও গুণের প্রশংসা আর উত্তম দুবা দেখিলে মনে

করা ও সেবা যে না করে তাহাতে ও আনুরক্তি আর
 পুষ্যবাক্যের সহিত দান আর দোষেতে ও গুণগুহণ অনু
 রক্তেতে এই সকল চিহ্ন অগর পুত্যানার কাল বাপন
 করা আর কলরহিত বাড়ান বন্ধনান লোক এই সকল
 বিরক্ত রাজার চিহ্ন জানিবেক ইহা জানিয়া যে পুকারে
 ইনি আমার বশীভূত হন তাহা করিব।

Observe:

The sovereign favours the man who is near him, although destitute of learning, of no family, or without acquaintance. Princes often, like women and vines, twine about him who sitteth by his side.

Well, said Karataka, if thou go there, what wilt thou say to his highness? Attend, replied Damanaka: first of all, I will find out whether he is attached to me, or not attached. What signs, demanded Karataka, are there of such a discovery? I will tell thee, said Damanaka; the signs of attachment are,

Joy at discovering at a distance, great attention and respect in enquiries, commending qualifications in absence, and remembering in those things which are favourites.

Such knowledge of attachment, even in a servant, is an addition to one's happiness. The marks of attachment, even to a fault, are an accumulation of virtues.

A wise man may also discover these signs in those servants, who are not attached: squandering of time in idleness, increasing of hopes, and destroying the fruit.

When I have made this discovery, I will declare what my purpose shall be.

যতঃ ॥ অপায়সন্দর্শনজাং বিপত্তিনুপায়সন্দর্শনজাঞ্চ
 সিদ্ধিঃ। মেধাবিনোদনীতিবিধিপ্রযুক্তাং পুরঃ সফুরন্তীমিব
 দর্শয়ন্তি ॥ করটকৌব্রূতে তথাপ্যপ্রাপ্তে প্রস্তাবে ন বক্তু
 মর্হসি ॥ যতঃ ॥ অপ্রাপ্তকালবচনং বৃহস্যতিরপি ব্রুবন্
 প্রামুখ্যাদুদ্বাবজ্ঞানমপমানঞ্চ শাস্বতং । দমনকৌব্রূতে
 মিত্র মা ভৈষীর্নাহমপ্রাপ্তাবসরং বচনং বদিষ্যামি ॥ যতঃ ॥
 আপদ্যুত্মার্গগমনে কার্য্যকালাত্যয়েষু চ । অপৃষ্টেনাপি
 বক্তব্যং মৃত্যেন দ্বিতমিচ্ছতা ॥ যদি চ প্রাপ্তাবসরেণাপি
 ময়া মদ্বোজ বক্তব্যস্তদামন্ত্রিত্বমেব সমানুপপত্তা ॥ যতঃ ॥
 কল্পয়তি যেন বৃত্তিঃ যেন চ লোকে প্রশস্যতে সঙ্গিঃ ।
 সগুণস্তুেন চ গুণিনা সন্ততঃ সংবর্জ্জনীয়শ্চ ॥ *❀**

যেহেতুক অপায় দর্শনেতে জন্মে যে বিপত্তি এবং উপায় দর্শ
 নেতে জন্মে যে সম্পত্তি তাহাকে মেধাবিনোদকের নীতি
 শাস্ত্রদ্বারা অগেতে প্রকাশনানের ন্যায় দেখে । করটক বলি
 তেছে তথাপি পুসঙ্গ উপস্থিত না হইলে কহিতে যোগ্য হইবে
 না যেহেতুক বহুস্পতি ও অপাসঙ্গিক বাক্য কহত নিবন্ধি
 তা এবং বহুকালব্যাপক অপমান পান দমনক বলিতেছে
 হে সখে ভয় করিও না আমি অপাসঙ্গিক বচন বলিব না
 যেহেতুক বিপৎকালেতে এবং পথত্যাগ করিয়া যাও
 নের কালেতে এবং কার্য্যকালের অতিক্রম হইলে জিজ্ঞা

সিত না হইলে ও হিতৈষি দাসেরা জিজ্ঞাসা করিবেক
 আমি অবসর কাল পাইয়া ও যদি মন্ত্রণা না বলি তবে
 আমার মন্ত্রিহই ব্যাহত হয় যেহেতুক যে গুণেতে জীবিকা
 হয় আর যে গুণেতে পৃথিবীতে পণ্ডিতেরা প্রশংসা করে গুণ
 লোক সে গুণ রক্ষা অবশ্য করিবেক* এবং বাড়াইবেক

The wise exhibit, as clearly as if it were displayed before our eyes, the doctrine belonging to the science ethics. That danger arises from pointing out evil, and success from pointing out a remedy.

Karatika then said,—Notwithstanding this, it doth not behove thee to speak, until thou hast found a proper opportunity. For,

Even Vrihaspati, should he utter words unseasonably, would incur contempt for his understanding, and eternal disgrace

Do not be alarmed, my friend, cried Damanaka, I shall not speak unseasonably; for,

In misfortune, in error, and when the time appointed for certain affairs is about to elapse, a servant, who hath his master's welfare at heart, ought to speak unasked.

Indeed, if I were not to give my counsel whenever I find an occasion, my office of counsellor would be useless.

The qualification by which a man earneth his bread, and for which he is celebrated in the world, should be nourished and improved.

তদ্বদানুজানোহি মাং গচ্ছামি । করটকোব্রূতে শুভমহু
 শিবাশ্তে পন্থ্যানঃ যথামিলিপিতমনুষ্যোযতানিতি ॥ ততো
 দমনকো বিস্মিতঃ পিঙ্গলকসমীপং গতঃ স্বথ দূরাদেব
 সাদরং রাজ্ঞা প্রবেশিতঃ সাষ্টাঙ্গপ্রাণিপাতং প্রাণিপত্যোপবিষ্টঃ
 রাজাহ চিরাদৃষ্টোহসি । দমনকোব্রূতে যদ্যপি ময়া সেবকেন
 শ্রীমদেবপাদানাং ন কিञ্চিত্ প্রযোজনমস্মি তথাপি প্রাপ্ত
 কালমনুজোবিদ্যা সান্নিধ্যমবশ্য কৰ্ত্তব্যমিত্যাগতোহসি ॥
 কিञ্চ ॥ দন্তস্য নির্ঘর্ষণকেন রাজন্ কর্ণস্য কণ্ডুচ্যনকেন
 বাপি । ত্বণেন কার্য্যং भवतीশ্চরাণাং কিমঙ্কবা কপাণি
 মতা নরেণ ॥ যদ্যপি চিরেণাবধীরিতস্য দেবপাদৈর্মে
 বুদ্ধিনাশঃ শঙ্ক্যতে তদপি ন শঙ্কনীযং ॥ *❀*❀*❀*

এই নিমিত্তে হে ভদ্র আমাকে অনুমতি কর যাত্রা করি ।
 করটক বলিতেছে মঙ্গল হউক পাথে তোমার মঙ্গল
 হউক যাহা বাঞ্ছিত তাহা কর । তদনন্তর সে বিস্ময়া
 পন্নের ন্যায় পিঙ্গলকের সমীপে গেল পরে দূরহইতেই
 আদরেতে রাজাকর্তক প্রবেশিত হইয়া অষ্টাঙ্গ পূজান
 করিয়া বসিল । রাজা কহিলেন অনেক কালের পর দেখা
 হইল দমনক বলিতেছে যদ্যপি আমাহেনভ্যোতে শ্রীযত
 মহারাজের পায়ের কিছ পুয়োজন নাই তথাপি সেবকেরা
 সময়বিশেষে অবশ্য সাক্ষাৎ করিবেক এ জন্য আমি
 আইলাম । অপর হে মহারাজ দন্তের ঘষণকারক আর

^{and to pick} ^{- grafts} ^{the} ^{the} ^{the}
 कर्णैः कण्ठयनकारकं यासते ও রাজারদিগের কার্য হয়
^{the} ^{much} ^{hand} ^{many} ^{men} ^{by} ^{that} ^{work} ^{is} ^{the} ^{only}
 তবে অল্পবাক্যহস্তবিশিষ্ট মনুষ্যেতে যে কার্য হয় তাহা কি
^{with} ^{long} ^{time} ^{you} ^{perhaps} ^{by} ^{disregard} ^{my}
 বলিব যদিপি বহুকাল দেবপাদকতৃক অবজ্ঞাত আমার
^{standing} ^{distant} ^{is} ^{not} ^{far} ^{even} ^{my} ^{is} ^{not}
 বুদ্ধি নাশের শঙ্কা হয় সে শঙ্কা ও কতব্য নয়।

Then, peace be with thee! for know that I am going, concluded Damanaka. And may success attend thy design! replied Karataka.

Damanaka, accordingly, repaired into the presence of Pingalaka, with hesitation, as it were; and when the rājā, from a distance, ordered him, with kindness, to enter the cave, he made a respectful bow, by prostrating his whole body, and sat down. The king said,—It is long since I have seen you, Sir! Damanaka replied,—I have not the least occasion to attend your divine feet; nevertheless, a servant should indispensably attend the presence at proper times; and thence it is that I am now here. There is a use for the most trifling implements; as is mentioned in this line:

Sovereigns, O prince, have occasion even for straws to rub the teeth, or pick the ears; but how much more for an able speaker, and a dexterous obviator of difficulties?

Perhaps my noble master suspects, that being oppressed with years, my understanding is lost; but that is not the case.

॥ যতঃ ॥ কদর্থিতস্ত্যাপি চ ধৈর্য্যবৃৎসেৰ্ভুদ্বৈর্ভিনাশোন হি
 শঙ্কনীয়ঃ । অধঃ কৃতস্ত্যাপি তনুনপাতোনাধঃ শিলা
 ত্যাদি কদাচিৎ দেব ॥ দেব তত্ সৰ্ব্বথা বিশেষজ্ঞেন স্বামিনা
 ধ্বনিতং ॥ যতঃ ॥ মণিলুণ্ঠতি পাদেষু কাচঃ শিরসি
 ধার্য্যতে । যথৈবাস্তে তথৈবাস্তাং কাচঃ কাচোমণির্মণিঃ
 ॥ অন্যচ্চ ॥ নির্বিশেষোঘদা রাজা সমং সৰ্ব্বেষু বৰ্ত্ততে ।
 তদোদয়মঃ সমর্থানামস্তাহঃ পরিহীযতে ॥ কিঞ্চ ॥ ত্রিবিধাঃ
 পুরুষারাজন্ উত্তমাধমমধ্যমাঃ । নিয়োজয়েত্তথৈবৈতাংস্তি
 বিধেয়ৈব কর্ম্মষু ॥ যতঃ ॥ স্থানং নিয়োজ্যন্তে ভৃত্যা
 স্চাভরণানি চান হি চুডামণিঃ পাদে নুপূরং শিরসা ক্রতাং

যেহেতুক অবজ্ঞাত হইলে ও ধৈর্য্যবৃত্তিভ্রমোক্তের বুদ্ধিনাশ
 শঙ্কা নহে কেননা অধি অধঃকৃত হইলে ও তাহার শিখা
 কখন অধতে যায় না । হে মহারাজ এইহেতুক সর্বপকারে
 রাজা বিশেষ জ্ঞাত হইবেন যেহেতুক প্রায়শ্চৈব মণি লুণ্ঠিত
 হয় মস্তকেতে কাচ ধৃত হয় যে যে পুকার আছে সে সেই
 পুকারেই থাককাবে মণি সে মণি যে কাচ সে কাচ অপর যথ
 ন বিশেষ জ্ঞানরহিত হইয়া সকল পুণিতে সমানরূপ বর্ত্তেন
 তখন সমর্থশত্রুপক্ষের যুদ্ধাদিতে উদ্যোগ হয় আর উৎসাহ
 নষ্ট হয় । আর হে মহারাজ উত্তম মধ্যম অধম তিন
 পুকার পুরুষ হয় তিন পুকার কৰ্ম্মেতে এই তিন পুকার

পুরুষকে নিয়োগ করিবেক যেহেতুক ভূতা আর অলঙ্কার
 উপযুক্ত স্থানেতেই নিয়োগ করিবেক, কেননা পায়েতে
 চূড়ামণি পরে না নুপুর মস্তকে পরে না ।

For,

It should not be suspected of a man, whose life hath been spent in noble deeds, that his reason is lost, when he is only involved in trouble. A fire may be overturned, but its flame will never descend.

Therefore, O Lord, a prince ought always to be particularly acquainted with every thing.

Since:

Although a gem be tied at the feet, and a piece of glass be worn upon the head, yet still, glass is glass, and gems are gems.

Again:

When the master passeth over all alike, without distinction, then the endeavours of those who are capable of exertion are entirely lost.

There are, O rājā, three degrees amongst mankind: the highest, the lowest, and the middling; and accordingly, they should be engaged in three degrees of employment.

Servants and houses should be suited to the situation. A gem should not be placed at the feet. The same is to be understood of an able man.

॥ অপি চ ॥ কনকভূষণসংগ্রহলোচিতো যদি মণি
 স্তপুণি প্রলিখ্যতে । ন স বিরোতি ন চাপি শোভতে
 ভবতি যোজয়িতুর্বচনীযতা ॥ অন্যচ্চ ॥ মুকুটে
 রোপিতঃ কাচশ্চরণাভরণে মণিঃ । ন হি দোষো
 য়ে রস্তু কিন্তু সাধোরবিজ্ঞতা ॥ পশ্য ॥ বুদ্ধিমাননুর
 ক্তো যময়ং শূরভূতো ভয়ং । ইতি মৃত্যুবিচারশ্চোমৃত্যৈরাপূর্যতে
 নৃপঃ ॥ তথা হি । অশ্বঃ শস্ত্রং শাস্ত্রং বীণা বাণী নরশ্চ
 নারী চ । পুরুষবিশেষং প্রাপ্য ভবন্তি যোগ্যা অযোগ্যাশ্চ
 ॥ অন্যচ্চ ॥ কিম্মক্तेনা সমর্থেন কিং শক্तेনা পকারিণা ।
 ভক্তাং শক্তশ্চ মাং রাজদ্বাবজ্ঞাতুং ত্বমর্হসি ॥ *❀*

অপর স্বর্ণালঙ্কারে খচিত করিবার উপযুক্ত মণি যদি সীসকে
 খচিত করে তবে সে মণি রৌদ্রন করে না শোভাই পায় না
 কিন্তু যোজনকর্তারই নিম্নতা হয় । আর মুকুটেতে স্থাপিত
 কাচ আর পাদাভরণে স্থাপিত মণি ইহাতে মণির দোষ
 নাই কিন্তু সাধুব্যক্তির অবিদ্যাতা । দেখ এই ব্যক্তি
 বুদ্ধিমান অথচ অনুরক্ত এই ব্যক্তি শূর ইহাহইতে ভয়
 এই কপে ভূত্যের ভদ্রাভদ্র বিবেচনাকর্তা রাজা ভূত্যেতে
 পরিপূর্ণ হয় । তাহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন অশ্ব আর শস্ত্র
 আর শাস্ত্র আর বীণা আর বাণী আর পুরুষ আর স্ত্রী
 ইহারা মনুষ্য বিশেষকে পাইয়া যোগ্য এবং অযোগ্য হয়

अपार अशक्त अनुरक्त भूतोते कि पुयोजन अपकारक
 समर्थ दासेतेई वा कि पुयोजन । हे महाराज उक्त
 अथच समर्थ आमाके अवज्ञा करिते तुनि योग्य हउना

Thus:

If a gem which is worthy to be studded in an ornament of gold, be placed at the feet, it doth not complain, nor doth it appear with splendour: he who placed it there is to be spoken to.

If a piece of glass be set in a crown, and a gem in an ornament for the feet; then no fault is found out of the gem, but the person who wears it, betrays a want of common sense.

Observe:

This is man of judgment, and attached; and this a giddy fellow, and undisciplined. The chief, who knoweth how to judge of servants in this manner, is well served.

They say,

A horse, a weapon, a book, a *vinā* (lute,) a speech, and a man or woman, are, or are not, to be employed, when their merits have been examined.

Again:

What is to be done with a faithful servant who is spiritless, or a courageous one, who is an opponent? Me, who am both dear to thee, and able to serve thee, O king! thou shouldest not despise.

॥ যতঃ ॥ অবজ্ঞানাৎ প্রাজ্ঞো ভবতি মতিছীনঃ পরিজনঃ
 ততস্তত্ প্রামাণ্যাত্ ভবতি ন সমীপে বুদ্ধজনঃ। বুদ্ধস্যক্তে
 রাজ্যে নহি ভবতি নীতির্গুণবতী বিপদায়াং নীতৌ
 সকলমবলং সৌদতি জগৎ ॥ অপরহঃ ॥ জনং জনপদানিত্য
 মর্ষয়ন্তি নৃপাচ্ছিতং। নৃপেণাবসতো যন্তু সসর্বে রথমন্যতে
 ॥ কিঞ্চ ॥ বালাদপি গ্রহীতব্যং যুক্তমুক্তং মনীষিभिঃ।
 রবেরবিষয়ে কিং ন প্রদীপস্য প্রকাশনং ॥ পিঙ্গলকোঃ
 বদত্ ভদ্র দমনক কিমেতৎ ত্বমস্বদীয়প্রধানামাত্য
 পুত্রদ্বয়ন্ত কালং যাবৎ কুতোপি ললবা ক্যাদ্ভাগতোঃ সিস
 ইদানীং যথাভিসমং ব্রূহি। দমনকো ব্রূতে দেব পৃচ্ছামি
 কিঞ্চিদুচ্যতাং উদকার্থী স্বামী পানীয়মপীত্বা কিমি
 তি বিস্মিতব্রবতি চ্চতি ॥ * * * * *

যেহেতুক বিজ্ঞ পরিবার লোক অবজ্ঞাতে নিব্বন্ধি হয়
 অনন্তর সেই দৃষ্টিতে নিকটে পণ্ডিত লোক থাকে না পণ্ডি
 তকর্তৃক রাজ্য। তান্ত্র হইলে নীতি গুণবতী হয় না নীতি
 নষ্ট হইলে সমস্ত জগৎ বিষন্ন হয়। এবং রাজানুগৃহীত
 লোককে দেশস্থ সর্বজনেতেই উপাসনা করে আর রাজা
 কর্তৃক অবজ্ঞাত যে জন সে সকললোককর্তৃক অবমানিত
 হয়। আর বলক হইতে ও ন্যায়া বা ক্য পণ্ডিতেরা গৃহণ
 করিবেক কেননা যে স্থানে সূর্য্যের পুকাশ নাই সে স্থানে কি
 পুরীপের পুকাশ হয় না। গিঙ্গলক বলিল তদু দমনক এ

^{let them and chief "counselors" down}
 কি তুমি আমার প্রধান মন্ত্রির পুত্র, ^{so long} এতকালপর্যন্ত
^{any} কোন খেলের ^{useful} বাক্যেতে ^{most in} আইস ^{no} নাই এখন কি ^{even} পুকার
^{a man} মানস ^{that say} তাহা ["] বল। ^{said} দমনক ^I বলিতেছে ^{great king} হে মহারাজ ^{a question} পুত্র করি
^{a little say} কিঞ্চিৎ ^{choose} বনন ^{good king} জলাথী ^{water} মহারাজ ^{not drink} জল পান না করিয়া
^{why} কেন ^{filled with surprise, exclaiming} বিস্ময়াপন্নের ^{etc.} ন্যায় রহিয়াছেন।

When a kingdom is forsaken by its wise men, the administration ceaseth to be efficacious; and for want of good regulation, the whole nation sinketh, without power to resist.

Again:

Mankind are for ever wont to respect him, who is respected by the prince; for he who is in disgrace with the sovereign, is disrespected by all.

What wise men have declared proper, may be received even from a child. When the sun is invisible, how useful is the appearance of the lamp?

It is good, replied Pingalaka; but what of all this. Damanaka? Thou hast been for a long time our head Mantri-putra; whither, then, hast thou been wandering in pursuit of vulgar saying? Now, speak as thy mind prompts thee.

Damanaka then said,—May it please your divinity, I am about to propose a question: what was the reason your highness, when oppressed with thirst, refused to drink, and now remains at home in a state of amazement?

पिङ्गलोऽवदत् भद्रमुक्तं त्वया किन्तु एतद्ब्रह्मस्यं वक्तुं
काचिद्दिश्याशभूमिर्नास्ति तथापि निभृतं कृत्वा कथयामि
शृणु संप्रति मनसोदमपूर्वसत्त्वाधिष्ठितं अतोऽस्माकं
त्याज्यं अनेन हेतुना विस्मितोऽस्मि तथा च श्रुतोमयापि
महानपूर्वशब्दः शब्दानुरूपेणास्य प्राणिनो महता वस्त्रेण
भवितव्यं । दमनको ब्रूते देव अस्ति तावदयं महान्
भयहेतुः स शब्दोऽस्माभिरप्याकर्णितः किन्तु स किं मन्त्रो
यः प्रथमं भूमित्यागं पश्चात् युद्धं चोपदिशति ॥ अपरश्च ॥
अस्मिन् कार्यशब्दे हे भृत्यानामुपयोग एव ज्ञातव्यः
॥ यतः ॥ बन्धुस्त्रीभृत्यवर्गस्य बुद्धेः सत्वस्य चात्मनः । आप
न्निकपपाषाणे नरो जानाति सारतां ॥ सिंहो ब्रूते भद्र
महतो शङ्का मां बाधते । *❀*❀*❀*❀*

" ^{in the} ^{How} ^{with} ^{such} ^{spoken} ^{but this is} ^{count}
 পিঙ্গলক কহিল তুমি বিলক্কণ কহিয়াছ কিন্তু এ রহস্য বলি
 বার নিমিত্তে কোন পুত্ৰ্য স্থান নাই তথাপি নিজ্জন করিয়া
 কহি শুন ইদানী এই বন অপর পুণিতে অধিষ্ঠিত হইয়াছে
 অতএব আমি রদিগের ত্যাজ্য এই নিমিত্তে বিস্ময়াপন্ন হই
 য়াছি এবং আমি ও বড় আশ্চর্য্য শব্দ শুনিয়াছি শব্দানুসারে
 তে এ পুণির বড় বল হইবে। দমনক বলিতেছে হে মহারাজ
 এ বড় ভয়ের কারণ বটে সে শব্দ আমরা ও শুনিয়াছি
 কিন্তু সে কি মন্ত্রী যে আগেতেই স্থান ত্যাগ করায় পশ্চাৎ
 বন্ধ উপদেশ করে আর এই ক্রিয়ার সান্নিহেতে দাসেরদের

উপযোগিতা জানিবেক যেহেতুক নিত্র ও স্ত্রী ও দাসবর্গের
 আর বজ্রির আর বলের আর শরীরের সারস্ব বিপত্তিরূপ
 কষ্টপাথরেতে লোক জানে । সিংহ বলিতেছে হে তদু
 আমার বড় শঙ্কা হইতেছে ।

It is well spoken, answered Pingalaka. How pleasant it is to repose a secret in a place of confidence! I am about to tell thee Attend! Know that this forest is infested by some beast, before unknown to us; wherefore it behoveth us to abandon it. Hast thou not heard a strange loud noise? To judge by his voice, the strength of this monster must be excessive!

Please your divinity, replied Damanaka, there is indeed great cause for apprehension. We too have heard the voice; but he is unworthy to be a minister, who, in the first instance, adviseth either to quit the field, or to fight. Besides, your highness has now an opportunity to experience the use of your servants; for,

By the touchstone of misfortune a man discovereth the quality of wife, relation, and servant; and of his own strength and judgment.

It is good, replied the lion; but I am prevented by my great apprehensions.

দমনকঃ পুনরাহ স্বাগতং অন্যথা রাজ্যমুখং পরিত্যজ্য
 স্থানান্তরং গন্তুং মাং সম্ভাষসে প্রকাশব্রূতে দেব যাযদহং
 জীবামি তাবদ্বয়ং ন কৰ্ত্তব্যং কিন্তু করটকাদয়োঃ প্ৰা
 শ্বাস্যন্তাং যস্মাদাপত্ৰতোকারকালে দুৰ্লভঃ পুরুষসম
 বায়ঃ ততস্তু দমনককরটকৌ রাজ্ঞা সৰ্বস্বেনাপি পূজিতৌ
 ভয়প্রতীকারং প্রতিজ্ঞায় চলিতৌ করটকৌ গচ্ছন্ দমন
 কমাহ সখ্যে কিং শক্যপ্রতীকারো ভয়হেতুঃ শক্যপ্রতীকারো
 বেতি ন জ্ঞাত্বা ভয়োপশমনং প্রতিজ্ঞায় কথময়ং মহাপ্রসা
 দোঃ হোতঃ যতো ন পকুর্ঘাণেন কস্যাপি উপায়নং গৃহীতৌ
 যাতু বিশেষো রাজ্ঞঃ ॥ পশ্য ॥ यस्य প্রসাদে পদ্মাস্তে বিজ
 যন্ত পরঃ ক্রমে । মৃত্যুশ্চ বসতি ক্রোধে সৰ্ব্বতেজোময়োহিসঃ ॥

দমনক পুনর্বার কহিল সুখে আগিয়াছ এই কণ না হইলে
 রাজ্য সুখ পরিত্যাগ করিয়া স্থানান্তরে যাইবার নিমিত্তে
 আমাকে সম্ভাষ করিতেছ দমনক স্পষ্ট করিয়া বলিতেছে
 হে মহারাজ যাবৎ পর্যন্ত আমি বাঁচিয়া আছি তাবৎ
 পর্যন্ত ভয় করিয়া নয় কিন্তু করটক পুত্রটিকে ও আশ্বাস
 করুন যেহেতুক বিপদের পুত্রীকারের সময় অনেক পুরুষ
 পাওয়া দুঃখ । অনন্তর সেই দমনক করটক রাজকর্তক
 সম্বন্ধ দ্বারা সম্মানিত হইয়া ভয়ের পুত্রীকার করিতে পুত্রীকা
 কবিতা চলিল করটকগণন করত দমনককে কহিল হে মিত্র

ভয়ের কারণ কি পুতীকারের বোগ্য কিম্বা পুতীকারের অযোগ্য ইহা না জানিয়া ভয়ের শাস্তি করিতে পুতিজ্ঞা করিয়া কি পুকারে এ মহাপুসাদ গহণ করিনা যেহেতক উপকার না করিয়া কাহার ও উপটোকন লইবোঁ না বিশেষে রাজার দেখা যাহার পুসন্নতাতে ধনবৃদ্ধি হয় এবং পরাক্রমেতে জয় হয় এবং ক্রোধেতে মৃত্যু হয় অতএব সর্ব তেজঃপুঞ্জ তাহাকেই জান ।

Damanaka having considered what he should do, at length said,—What! dost thou speak to us about a total abdication of the enjoyment of thy dominions? I tell your highness plainly, that as long as I live, I shall not be afraid; but it is necessary that the minds of Karataka and the rest should be pacified also; for in time of necessity, it is difficult to assemble people together.

After that Karataka and Damanaka together, having received their sovereign's gracious commission, promised to defeat the threatened danger, and departed accordingly.

As they were going, Karataka said to Damanaka,—Is the cause of apprehension possible to be defeated, or not possible? Till this had been determined, why did we, in promising to apply a remedy, accept of this great appointment? For it is said, that no one, unless he hath the power to perform, should accept of any one's commission, and, in particular, that of a king.

Observe,

He is all-glorious, on whose pleasure fortune waiteth, in whose valour victory, and in whose anger death

তথা হি । বালোপি নাবমন্ত্যোমনুষ্যইতি ভূমিপঃ ।
 মহতী দেবতাছোষা নররূপেণ তিষ্ঠতি ॥ দমনকোবিহ
 স্যাৎমিত্র নুণীমাস্যতাং জ্ঞাতং ময়া ভয়কারং বলীবর্দ
 নর্দিতং তত্ দৃষমাশ্বাস্মাকমপি ভক্ত্যাঃ কিং পুনঃ সিংহস্য
 করটকো ব্রূতে যদেবং তদা কিং পুনঃ স্বামিত্রাসঃ তত্রৈব
 কিমিতি নাপনীতঃ । দমনকো ব্রূতে যদি স্বামিত্রাস
 স্তত্রৈব মুচ্যতে তদা কথময়ং মহাপ্রসাদলাভঃ স্যাৎ ॥
 অপরঞ্চ ॥ নিরপেक्षান কৰ্ত্তব্যো ভূত্যৈঃ স্বামী কদাচন ।
 নিরপেक्षং প্রভুং কৃत्वा ভূত্যঃ স্যাৎ অধিকৰ্ণবৎ ॥ করটকঃ
 পৃচ্ছতি কথমেতৎ । দমনকঃ কথয়তি অস্তুত্তরাপথে
 অব্যুদগিশ্বরনাম্নি পৰ্বতে দুর্দান্তো নাম মহাবিক্রমঃ
 সিংহস্তস্য পৰ্বতকন্দরমধিশয়ানস্য কেসরাগ্রং কশ্চিন্মু
 খিকঃ প্রত্যহং হ্রিনতি ॥ *~*~*~*~*~*~*

বালক রাজাকেও এ মনুষ্য ইহা বলিয়া অবজ্ঞা করিবেক না
 যেহেতুক ইনি মহতী দেবতা মনুষ্যরূপে আছেন । দমনক
 হাসিয়া বলিল হে বন্ধু চপ করিয়া থাক আমি ভয়ের কারণ
 জানিয়াছি অর্থাৎ ডিগা গরুর শব্দ সে বলিবর্দ আমাদের ভয়
 গায় সিংহের কথা কি । করটক বলিতেছে যদিও এমন তবে
 পুত্রের ভয় কি সেই স্থানেতে কেমন ভীতিখণ্ডন করিল না ।
 দমনক বলিতেছে যদি রাজার ভয় সেই স্থানেতেই যায়

Then have the great power secured? —
 তবে কি পুকার এ মহাপ্রসাদ লাভ হয়। এবং ততোরা
 স্বানীকে কখন নিরপেক্ষ করিবেন। পুত্রে নিরপেক্ষ
 করিয়া ভৃত্য দধিকর্ণের ন্যায় হইবে। করটক পুশ্ণকার
 তেছে একি রূপ দমনক কহিতেছে। উত্তরাপথে অবদ
 শিখর নামে পর্বতে মহাপরাক্রমবিশিষ্ট দুর্দান্ত নামে
 এক সিংহ থাকে পর্বতের গহ্বরেতে নিদ্রিত তাহার জটীর
 অগুণ্ডাগ কোন উন্মূর পুতাহ কাটে।

The sovereign, although but a child, is not to be despised, but to be respected as a man; or as a mighty divinity, who presideth in human form.






Damanaka, laughing, said,—Hold thy peace, friend; I am acquainted with the cause of this fear: it is only the bellowing of a bull, our proper food, as well as that of the lion. If this be the case, observed Karataka, why were not his highness fears instantly appeased? If, replied Damanaka, they had been satisfied immediately, how would this great commission have been obtained? They say,

The master should never be rendered free from apprehension by his servants, for a servant having quieted the fears of his master may experience the fate of Dadhukarna.

How was that? demanded Karataka; and Damanaka related the following story.

FABLE IV.

UPON the mountain Arbuda-sikhara, there was a lion, whose name was Mahāvīkrama, the tips of whose mane a mouse was wont to gnaw, as he slept in his den

ততঃ কেসরাণ্যং লুনং দৃষ্ট্বা কুপিতো বিবরান্তর্গতং মূষিক
 মল্লভমানো ঽচিন্তয়ত ॥ চুদ্রশত্রুর্ভবেদ্যস্তু বিক্রমাত্নৈব
 লভ্যতে । তমাচ্ছন্তু পুরস্কার্যঃ সটশস্তস্য সৈনিকঃ ॥
 ইত্যালোচ্য তেন গ্রামং গত্বা বিশ্বাসং কৃত্বাদধিকর্ণ
 নামা বিডালোযত্নেনানীয মাংসাচ্ছারং দত্ত্বা স্বকন্দরে
 স্থাপিতঃ অনন্তরং তদ্বাণ্যাম্মূষিকোপি বিলান্ন নিঃসরতি
 তেনাসৌ সিংহোঽন্ততকেসরঃ সুখং শ্রুতি মূষিকশব্দং
 যদা যদা শৃণোতি তদা মাংসাচ্ছারদানেন তম্বিডালং
 সংবর্জয়তি অথৈকদা স মূষিকঃ শুধাপোড়িতোবহিঃ
 সচ্ছরন্ বিডালেণ প্রাপ্তোব্যাপাদিতস্ত অনন্তরং স সিং
 হোনেককালং বাবন্মূষিকং ন পশ্যতি তত্কতরাবমপি
 ন শৃণোতি তদা তস্যানুযোগাদ্বিডালস্যাপ্যাহার
 দানে মন্দাদরোষমূব । ******






তদনন্তর কেশাগৃহিষ্ম দেখিয়া ক্রুদ্ধহইয়া গর্তমধ্যে স্থিত মূ
 ষিককে না পাইয়া ভাবনা করিল যে ক্ষুদ্র শত্রু হয় পরাক্রমে
 তে ধরা না যায় তাহাকে নষ্ট করিবার নিমিত্তে তাহার তলা
 সেনা করিবেক এই আলোচনা করিয়া সেই সিংহ গায়ে গিয়া
 বিশ্বাস করিয়া দধিকর্ণ নামে বিডালকে বহুতে আনিয়া
 মাংস আহার দিয়া আপন কন্দরেতে রাখিল অনন্তর সেই
 ভয়েতে মূষিক ও বিবরহইতে বাহির হয় না সেইহেতুক এ

lion understood he to long slept in hole when the mouse
 सिंहअच्छिन्न जटा हईया सुखेते निदु याय यथन२ उन्दरेर
 lion's head then flesh eating by the cat-
 शक्यशुने तथन२ नांस भोजन द्वारा से विडालके सङ्कना
 after the one day the mouse hungry a lion
 करे । ताहारपर एक दिवस सेई मुषिक क्कधातु हईया
 cat looking for food by him accident demanded after that
 बाहिरे चरत माजारीताहाके पाईया, भक्षण करिन तदन
 the lion for a long time the mouse saw not and
 सुरसेई सिंहअनेक कालपर्याप्त मुषिकके देखे ना ताहार
 shak-
 शक्यशुने ना तथन ताहार अनुपयोगिताहेतुक विडा
 cat and foot jump sight seen in
 लेर ओ आहार दानेते मन्दार हईन ।

The noble beast, having discovered that his hair was bitten, was very much displeased; and as he was unable to catch the offender, who always slipped into its hole, he meditated what was best to be done; and having resolved, said he,

Whoso hath a trifling enemy, who is not to be overcome by dint of valour, should employ against him a force of his own likeness.

With a review of this saying, the lion repaired to the village, and by means of a piece of meat thrown into his hole, with some difficult caught a cat, whose name was Dadbikarna. He carried him home, and the mouse, for some time not venturing out for fear, the lion remained with his hair unmipped. At length, however, the mouse was so oppressed with hunger, that creeping about, he was caught and devoured by the cat. The lion now no longer hearing the noise of the mouse, thought he had no further occasion for the services of the cat, and so began to be sparing of his allowance; and in

ততোসা বাহ্যাবিরহাত্ দুৰ্বলো দধিকর্ণো বসম্নো বভূব
 অতোহং ব্রবীমি নিরপেক্ষো ন কৰ্ত্তব্য ইত্যাদি। ততো দমনক
 করটকৌ সঞ্জীবকসমীপং গতৌ তত্র করটকস্তরুতলে সাটো
 পমুপবিষ্টঃ ॥ দমনকঃ সঞ্জীবকসমীপং গত্বা ব্রবীত্ অরে
 বৃষভ এষোহং রাজা পিঙ্গলকেনারণ্যরক্ষার্থং নিযুক্তঃ
 সেনাপতিঃ করটকঃ সমাজ্ঞাপ্রযতি সত্বরমাগচ্ছ নচেদ
 স্মাদরण्याদূরমপসর অন্যথা তে বিবৃদ্ধং ফলং ভবিষ্যতি
 ন জানে কুহঃ স্বামী কিং বিধাষ্যতি তচ্ছুত্বা সঞ্জীবক
 স্মায়াত্। আজ্ঞাভঙ্গে নরেন্দ্রাণাং ব্রাহ্মণানাং মনাদরঃ ॥
 পৃথক্ শয্যা চ নারীণামশস্ত্রবিহিতো বধঃ ॥ ততো দেশ
 ব্যবহারানভিজ্ঞঃ সঞ্জীবকঃ সমভয়মুপসৃত্য সাষ্টাঙ্গপাত
 করটকং প্রণতবান্ । ******

পরে অনাহারহেতুক দধিকর্ণ দুর্বল হইয়া অবসন্ন হইল ।
 এই নিমিত্তে আমি বলি পুত্ৰকে নিরপেক্ষ করিয়া ইত্যাদি ।
 তৎপরে দমনক করটক সঞ্জীবকের নিকট গেল সেখানে
 করটক গাছের তলাতে সাটোপ করিয়া বসিল দমনক
 সঞ্জীবকসমীপে যাইয়া বলিল অরে বলদ এই আমি
 রাজা পিঙ্গলক কতৃক বন রক্ষার নিমিত্তে নিযুক্ত করটক
 নামে সেনাপতি আজ্ঞা করিতেছেন শীঘ্র আইস নতবা
 এই বনহইতে দূরে যা অন্যথা তোমার মন্দ ফল হইবে

ना जानि पुत्र कूणित हईया कि करिबेन ताहा पुनिया
 सज्जीबक आईल। राजादिगेर आज्ञालइन ओ बाज्जगेरदिगेर
 अनादर ओ ज्जीलोकेरदेर पृथक् शया एव० अबैध हिंसा
 अर्थां कर्तव्य नय ईहा बिबेचना करिया ताहारपर देशाचा
 गानाबिद्ध सज्जीबक तीत हईया निकटे गिया करटकके
 साष्टाङ्ग पुणाम करिलेक ।

consequence, poor puss pined away and died for want.
 Wherefore, I say,—*The master should never be ren-
 dered &c.*

After this Damanaka and Karataka advanced towards the bull Sang-jivaka; and Karataka seated himself in state at the foot of a tree, whilst Damanaka addressed the bull in these words:—O bull I am placed here by king Pingalaka to gaurd these fōrests. The general Karataka commands you to attend him directly, or else retire at adistance from these woods, otherwise the fruits of thy disobedience will be painful.

For,

Disobedience to the commands of a sovereign, disrespect to a Brāhmana, the separate bed of a woman, and strength without knowledge, are all dangerous things.

The poor bull, ignorant of the affairs of the country he was in, fearfully advanced towards Karataka, and made him a profound reverence.

তথাচোক্ত। মতিরেব বলাহরীষসী যদभावे करिणा
 मियं दशा। इति घोषयतवि डीण्डिमः करिणो हस्तिप
 काहतः क्कणन् ॥ अथ सञ्जीवकः साशङ्कमाह सेनापते
 किं मया कर्त्तव्यं तदभिधीयतां। करटकोब्रूते वृषभञ्च
 कानने तिष्ठसि अस्मद्देवपदारविन्दं प्रणम ॥ सञ्जीवको
 ब्रूते तदभयवाचं मे यच्छ गच्छामि करटकोब्रूते अणुरे
 वलोवद् अलमनया शङ्कया ॥ यतः ॥ प्रतिवाचमदत्त
 केशवः शपमानाय न चेदिभूभुजे। अनुज्जंकुरुते घनध्व
 निं न हि गोमायुरुतानि केसरी ॥ अन्यच्च ॥ हणानि नो
 न्मूलयति प्रभञ्जनोमृदूनि नीचैः प्रणतानि सर्वतः। स
 मुच्छितानेव तरून् प्रवाधते महान्महत्येव करोति वि
 क्रमात्ततस्तौ सञ्जीवकं कियदूरे संस्थाप्य पिङ्गलकसमीपं
 गतौ ततो राज्ञा सादरमालोकितौ प्रणम्योपविष्टौ।

তাহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন বলহইতে বুঝিই বড় যাহার
 না থাকিতে হস্তির এই অবস্থা। অনন্তর সঞ্জীবক শঙ্ক হইয়া
 কহিল হে সেনাপতে আমার কি কর্তব্য তাহা কহন কর
 টক বলিতেছে হে বৃষভ এই বনেতে থাক আমারদিগের ভণ্ড
 তির চরণকমলকে পূজান কর সঞ্জীবক বলিতেছে অভয়বাক্য
 আমাকে দেও তবে যাই। করটক কহিতেছে শুন রে বৃষভ
 এ শঙ্কা বৃথা যেহেতুক আক্রোশকারি শিশুপালকে ত্রীকৃষ্ণ

পুতুলের পুতুল করেন নাহি কারণ মেঘের ধনিকে সিংহ
 পুতিধনি পুতান করে শূণ্যের শব্দকে পুতি শব্দ পুতান
 করেন। আর দেখ। সবপুকারে নীচেতে নমু ও কোমল ঘাস
 কে বায়ু উন্মুলন করে না অতিউচ্চ বৃক্ষ সকলকেই উৎ
 পাটন করে কেননা বড়লোক বড় লোকেতে পরাক্রম
 করে। তদন্তর তাহার। সঞ্জীবকে কিছু দূরে রাখিয়া
 পিঙ্গলকের সন্নিধানে গেল। তাহার পর রাজা তাহার দিগ
 কে সাদরে দেখিলেন তাহার। পুণাম করিয়া বসিল।

It is said,

Wisdom is of more consequence than strength. The want of it is a state of misery. The Dindima proclaimeth this, sounding, *The miserable are defeated.*

Sang-jivaka, with a loud voice, said,—What, O General, am I to do? And Karataka replied,—If it be thy wish to remain in these forests, bow down to the dust of his highness's feet. Give me thy word, that there is no danger, said Sang-jivaka, and upon those terms I am ready to go. These suspicions, observed Karatāka, are unnecessary; for,

Keshaba did not make a reply to the king Chid, who reviled him, for the lion returns the sound of a cloud, but not that of a fox,

Again:

The tempest never rooteth up the grass, which is feeble, humble, and shooteth not up on high; but exerteth its power even to distress the lofty trees; for the great use not not their might, but upon the great

Saying this, leaving Sang-jivaka at a little distance, they repaired unto the presence of the lion, by whom having been received with attention, they made their reverence, and sat down.

রাজাহ ত্বয়া সৃষ্টঃ ॥ দমনকোব্রূতে দেব দৃষ্টঃ কিন্তু যহ
 বেদ জ্ঞাতং তত্থা মহানেবাসৌ দেবং দ্রষ্টুমিচ্ছতি কিন্তু
 মহাবলোঽসৌ ততঃ সজ্জীভূয়োপবিষ্য দৃশ্যতাং শব্দ
 মাচা দেব ন ভেতব্যং ॥ তথা চোক্তং ॥ শব্দমাচান্ন ভেত
 ত্বমজ্ঞাত্বা শব্দকারণং । শব্দহেতুং পরিজ্ঞায় কুড়িনী
 গৌরবং গতা ॥ রাজাহ কথমেতৎ । দমনকঃ কথয়তি
 অস্তি শ্রীপৰ্বতমধ্যে ব্রহ্মপুরাণ্যং নগরং তচ্ছিত্তরপ্রদেশে
 ঘণ্টাকর্ণো নাম রাশসঃ প্রতিবসতোতি জনপ্রবাদঃ শ্রুত
 তে একদা ঘণ্টামাদায় পলায়মানঃ কশ্বিচৌরোব্যা
 ঘ্রেণ ব্যাধাদতঃ তত্পাণিপতিতা ঘণ্টা বানরৈঃ প্রাপ্তা
 বানরস্তাং ঘণ্টামনুদ্রষ্টুং বাদয়তি ততোনগরজনৈঃ স মনু
 ষ্যঃ খাদিতোদৃষ্টঃ প্রতিল্পণং ঘণ্টারবস্ব শ্রুয়তে । *

ভূপাল কহিলেন তাহাকে তোমরা দেখিয়াছ দমনক বলিল
 মহারাজ দেখিয়াছি কিন্তু মহারাজ যাহা জানিয়াছেন সেই
 রূপ এ অতিবড় মহারাজকে দেখিতে অভিলাষ করে
 কিন্তু এ অতিশয় বলবান অতএব সমজ্ঞ হইয়া বসিয়া
 দেখুন শকমাত্রেরেই ভয় করিবেন না বিজেরা তাহা
 কহিয়াছেন ভয়ের কারণ না জানিয়া শকমাত্রের ভয়
 কতব্য নয় শব্দের নিমিত্ত জানিয়া কাউনি গৌরব পাই
 য়াছিল । রাজা জিজ্ঞাসিলেন এ কি প্রকার । দমনক
 কহিতেছে । শ্রীপৰ্বতের মধ্যে বৃক্ষপূর নামে নগর আছে

তাহার শিখরের এক প্রদেশে ঘণ্টাকর্ণ নামে এক রাজস
বান করে এই জঙ্গল ঘূর্ণা যায়। এক দিবস ঘণ্টা নইয়া
পলায়মান কোন চোর ব্যাঘ্রকতক ভক্ষিত হইল তাহার
হাতহাতে পতিত ঘণ্টা বানরেরা পাইল বানর সেই ঘণ্টা
সর্বদা বাজায় তাহারপর নগরস্থ লোকেরা সেই মনুষ্যকে
ভক্ষিত দেখিল আর সর্বদা ঘণ্টারব ও শুনে।

Have you seen him? said the king. We have Sir, answered Damanaka, but he is, as our lord imagined, of amazing strength, and is desirous of visiting your highness, wherefore, arm yourself, and let him draw near, But be not alarmed at a mere sound, for, it is said,

It is not proper to be alarmed at a mere sound, when the cause of that sound is unknown. A poor woman obtaineth consequence for discovering the cause of a sound.

The lion asked how that was; and Damanaka recounted the following story.

FABLE V.

BETWEEN the mountains Sri-parvata there is a city called Brahma-pura, the inhabitants of which used to believe, that a certain giant, whom they called Ghantā-karna, infested one of the adjacent hills. The fact was thus: a thief, as he was running away with a bell he had stolen, was overcome and devoured by a tiger; and the bell falling from his hand having been picked up by some monkeys, every now and then they used to ring it. The people of the town finding that a man had been killed there, and hearing continually the noise of the bell,

অনন্তরং ঘণ্টাকর্ণঃ কুপিতো মনুষ্যান্ ছাদয়তি ঘণ্টাশ্চ
 বাদয়তি ইত্যুক্তা সৰ্ঘে জনানগরাৎ পলায়িতাঃ ততঃ
 করালম্বা নাম কুট্টিম্বা বিমৃশ্য অনবসরোঃ যং ঘণ্টা
 বাদঃ তত্ কিং মর্কটাক্ষণাং বাদয়ন্তি ইতি স্বয়ং বিজ্ঞায়
 রাজা বিজ্ঞাপিতঃ দৈব যদি কিঞ্চিদনোপলব্ধ্যঃ ক্রিয়তে
 তদাহমেতং ঘণ্টাকর্ণং সাধয়ামি ততো রাজ্ঞা তস্যৈ ধনং
 দত্তং কুট্টিন্যাচ মণ্ডলং কৃত্বা তত্র গণেশাদিপূজাগৌরবং
 দর্শয়িত্বা স্বয়ং বানরপ্রিয়ফলান্যাদায বনং প্রবিশ্য
 ফলান্যাকীর্ণানি ততো ঘণ্টাং পরিত্যজ্য বানরাঃ ফলাস
 ক্তাবম্ভবুঃ কুট্টিনী চ ঘণ্টাং গৃহীত্বা নগরমাগতা সৰ্ঘে
 জনপূজ্যামবত্ অতোহ ব্রবীমি শব্দমাচান্ন ভেদব্যমি
 ত্যাदि। ততঃ সজ্জীবকঅনীয দর্শনং কারিতঃ পশ্চাত্তন্যে
 বাশ্রিততয়া অন্যান্যং পরমপ্ৰীত্যা চিরং নিবসতি ।


তাহারপর ঘণ্টাকর্ণ কষ্টে ইহঁয়া মনুষ্য সকলকে খায় ঘণ্টাও
 বাজায় ইহা বলিয়া সকল লোক নগরহইতে পলাইল । অন
 স্তর করানো লাগে কুট্টিনী পরামর্শ করিয়া অনুজ্ঞা এই ঘণ্টা
 বাদ্য হয় তবে কি বানরেরা ঘণ্টা বাজায় ইহা আপনি
 জানিয়া রাজাকে জানাইল হে মহারাজ যদিও কিছু ধন
 ব্যয় কর তবে আমি এই ঘণ্টাকর্ণকে সাধন করি তাহা
 রপর রাজা তাহাকে ধন দিল কুট্টিনী মণ্ডল আঁকিয়া
 গণেশাদি পূজার বড় বাছিয়া দেখাইয়া আপনি মর্কটের

দিয়ের পিয় ফল লইয়া বনে পুরেশ করিয়া ফল সকল
ফেলিয়া দিল তৎপরে বানরেরা ঘণ্টা পরিভ্যাগ করিয়া
ফলাসক্ত হইল কাঁড়না ঘণ্টা লইয়া নগরে আসিয়া সর্ব
জনের মান্য হইল অতএব আমি বলি ভয়ের কারণ না
জানিয়া শকমাত্রেতেই ভয় কতব্য নয়। অনন্তর সঞ্জীবককে
আনিয়া দেখা করাইলেক। পশ্চাৎ সেই স্থানেতেই আশ্রিত
হইয়া পরস্পর অত্যন্ত পীতিতে বহু কাল বাস করে।

used to declare, that the giant Ghantā-karna being enraged, was devouring a man, and ringing his bell; so that the city was abandoned by all the principal inhabitants. At length, however, a certain poor woman having considered the subject, discovered that the bell was rung by the monkeys. She accordingly went to the rājā, and said,—If divine Sir, I may expect a very great reward, I will engage to silence this Ghantā-karna. The rājā was exceedingly well pleased, and gave her some money. So having described some circles, and exhibited the worship of Ganeśha and other gods in a conspicuous manner, she provided such fruits as she conceived the monkeys were fond of, and went into the wood; where strewing them about, they presently quitted the bell, and attached themselves to the fruit. The poor woman, in the mean time, took away the bell, and repaired to the city; where she became an object of adoration to its inhabitants. Wherefore, I say,

It is not proper to be afraid of a mere sound &c.

Having concluded his story, Damanaka and Karataka brought Sang-jivaka, and introduced him to the lion; after which the bull resided in that forest in great good fellowship.

অথ কদাচিত্তস্য সিংহস্য স্নাতা স্তম্বকর্ণনামা সিংহঃ
 সমাগতঃ তস্যাতিথ্যং কৃत्वा সমুপবিষ্য পিঙ্গলকস্তদাহা
 রায় পশুং হন্তুং চলিতঃ অত্রান্তরে সঞ্জীবকো বদতি দেব
 অথ হতমৃগাণাং মাংসানি ক্ব রাজাহ দমনককরটকৌ
 জানোতঃ । সঞ্জীবকো ব্রূতে জ্ঞাথতাং কিমস্মি নাস্মি বা
 সিংহো বিমৃশ্যাৎ নাস্ত্যেব তত্ ॥ সঞ্জীবকো ব্রূতে কথমে
 তাবন্মাংসং তাভ্যাং খাদিতং রাজাহ খাদিতং অঘিতং
 অঘধীরিতঞ্চ প্রত্যহমেষ ক্রমঃ । সঞ্জীবকো ব্রূতে কথং
 শ্রীমদ্বেদপাদানামগোচরেণৈব ক্রিয়তে । রাজাহ মদীয়া
 গোচরেণৈব ক্রিয়তে ॥ অথ সঞ্জীবকো ব্রূতে নৈতদুচিতং ॥
 তথা চোক্তং ॥ নাস্তিবেদ্যং প্রকুর্ভীত ভর্ত্যুঃ কিञ্চিদপি
 স্বয়ং । কার্য্যমা পত্ৰপ্ৰতীকারাদন্যত্র জগতীপতে । *

অনন্তর কদাচিৎ সেই সিংহের ভাতা স্তম্বকর্ণনামা সিংহ
 আইল তাহার আতিথ্য করিয়া বসিয়া পিঙ্গলক তাহার
 ভোজনের নিমিত্তে পশু নষ্ট করিতে চলিল ইত্যবসরে সঞ্জী
 বক বলিতেছে হে মহারাজ আজিনষ্ট মৃগের মাংস কোথায়
 ভপতি কহিল দমনক করটক জানে সঞ্জীবক বলিতেছে
 জানুন কি আছে বা নাই সিংহ বিবেচনা করিয়া বলিল তাহা
 নাই সঞ্জীবক বলিতেছে তাহার কি পুকারে এত মাংস থা
 ইল রাজা বলিল খাইয়াছে ব্যয় করিয়াছে অবজ্ঞা ও করি
 য়াছে পুতাহই এই কণ সঞ্জীবক বলিতেছে শ্রীযুত মহা

রাজার চরণের অজ্ঞাতে কি কাণে এমন করে নৃপতি কহি
 লেন আমার অগোচরেতেই করে। অনন্তর সঞ্জীবক বলিল
 ইহা উপযুক্ত নহে বিজ্ঞের ইহা কহিয়াছেন হে নহারাজ
 বিগতপতীকার ব্যতিরেকে স্বামিকে নিবেদন না করিয়া
 আপনি কোন কন্ম করিবে না।

Sometime after, a brother of the lion's whose name was Stabdha-karna, coming to see him, Pingalaka having entertained him, they went forth to hunt for prey. Upon their return, Sang-jivaka asked the lion what was become of the flesh of the deer which had been killed that day; and the rājā told him that Damanaka and Karataka knew. Let it be understood, said Sang-jivaka, whether there is or is not any. There is not, then, replied the lion, laughing. What! said Sang-jivaka, has so much flesh been eaten by those two? Eaten, wasted, and given away, answered the lion; and this is what happens every day. How are such things transacted, demanded the bull, without the knowledge of your highness? Why not? said the lion. Because it is not proper, observed the bull: for it is said,

A servant should never do any thing of himself, without having informed the sovereign his master; except it be what he may do to prevent a misfortune.

॥ অন্যত্র ॥ কমললুপমোমাত্যস্তুত্যাগোবজ্জয়হঃ ।
 নৃপতে কিং লুপো মূর্খোদরিদ্রঃ কিং বরাটকঃ ॥ সচ্ছমাত্যঃ
 সদা শ্রেয়ান্ কাঙ্কিনীং যঃ প্রবর্জयेत् । কোষঃ কোষবতঃ
 প্রাণাঃ প্রাণাঃ প্রাণান্ ভূপতে ॥ কিঞ্চিৎস্বান্যৈর্ন কুলাচারৈঃ সেব্য
 তামেতি পুরুষঃ । ধনহীনঃ স্বপনত্যাপি ত্যজ্যতে কিং পুনঃ
 পরৈঃ ॥ এতচ্ছরাস্ত্রঃ প্রধানং দূষণং ॥ অতিব্যয়োনবেচ্চা চ তথা
 জ্ঞানমধর্ম্মতঃ । পোষণং দূরসংস্থানাং কোষব্যসনমুচ্যতে ॥
 যতঃ । ত্ৰিপ্রমায়মনালোচ্য ব্যয়ানশ্চ স্ববাঙ্ক্ষয়া । পরি
 ছীযতএবাসৌ ধনী বৈশ্রবণোপমঃ ॥ স্তব্ধকর্ণোব্রূত শৃণু
 শ্রাতশ্চিরশ্রিতাবেতৌ দমনককরটকৌ সন্ধিবিগ্রহকা
 র্য্যাধিকারিণৌ চ কদাচিদ্র্যাদিকারেণ নিযোক্তব্যৌ

অপর যেমন গাভু মুখেরদ্বারা অনেক জনাদির গৃহগ করে
 নামের দ্বারা অল্পভাগ করে এইরূপ মস্ত্রিনোক অনেক
 মুদাদি আদায় করিবেক অল্প ব্যয় করিবেক কেন না হে
 মহারাজ ক্ষণ মাত্র না পড়ায় কি মর্থ হবে ইহা মনে করিয়া
 আলস্য করিলে সে পুরুষ মর্থ হয় আর এক বরাটক সঞ্চয়
 করিলে কি ইহাবে ইহাতে দরিদ্র হয় সেই মস্ত্রী সর্বদা ভাল
 যে পাঁচ গণ্ডা কাড়ি কে বাড়ায় কোষাধিকারির কোষই পূর্ণ
 রাজার পূর্ণ পূর্ণ নহে আর অন্য কুলাচারেতে পুরুষ মান্য
 হয় না কেননা নির্ধন ইহিলে আপন জী ও ভাগ করে পর
 কি । রাজার এ বড় দোষ ধনাদির অতিরিক্ত ব্যয় আর না

देखा आर अधर्मेते उपार्जन आर अधिक दान आर दूरस्थ
 लोकेरदिगेर पोषण এই সকল ভাণ্ডারের ব্যসন যেহেতুক
 আর না দেখিয়া আপন ইচ্ছাতে শীঘ্র ব্যয় করিলে কুবেরের
 তুল্যধনবান ও দরিদ্র হয়। শুদ্ধ করণ বলিতেছে শুন ভাই এই
 দমনক করটক চির কালের আশ্রিত সন্ধি বিগৃহ, কাযোতে
 ইহারা নিযুক্ত আছে ধনাধিকারেতে নিয়োগ কত্তব্য নহে।

main.

The minister should be like a Kamandalu, in which there is deposited a vast collection. Of what use to a sovereign is a poor idle fool, or a mere empty hull?

For,

He is the best minister who enricheth the state but a Kākini. The treasury is the vitals of him who hath a treasury. The animal spirits are not the vitals of princes.

For a man will not arrive at the state of being respected by any other means. When a man is destitute of riches, he is sometimes forsaken, even by his wife, and how much more by others!

What great evils these are also in a state!

Great expenditures, and the want of inspection; so, unlawful accumulation, plundering, and a distant situation, are called the evils of the treasury.

The rich man spendeth like Vaisravana, (Plutus) who squandereth, according to his inclinations, his income immediately, without regard to its amount.

Hear me, brother, said Stabdhakarna, it is my opinion, that these two, Karataka and Damanaka, being employed in the superintendence of the affairs of peace and war, are improper persons to preside at the head of the treasury.

অপরঞ্চ নিয়োগপ্রস্তুতং যন্ময়া শ্রুতং তৎ কথ্যতে ।
 ব্রাহ্মণঃ স্ত্রিয়োবম্ভূর্নাধিকারে প্রশস্যতো ব্রাহ্মণঃ সিদ্ধ
 মর্থং কচ্চেণাপি ন যচ্ছতি ॥ নিযুক্তঃ স্ত্রিয়োদ্রব্যে স্ত্রী
 দর্শয়তে ধ্রুবং । সর্ধং যসতে বম্ভুরাক্রম্য জ্ঞাতিभावतः ॥
 অপরাধোপ নিঃশঙ্কো নিয়োগী চিরসেবকঃ । স স্বামিনম
 বজ্রায় চরেচ্চ নিরবগ্রহঃ ॥ উপকর্ত্তাধিকারস্য স্বাপরাধ
 ন মন্যতে । উপকারং ধ্বজীকৃত্য সর্ধমেবাবলুপ্যতি ॥ উপা
 শুকীভিতোऽমাত্যঃ স্বয়ং রাজায়তে যতঃ । অবজ্ঞা ক্রিয়তে
 তেন সदा পরিচয়াত্ধ্রুবং ॥ অন্তর্দুঃখঃ স্ত্রীমাযুক্তঃ সর্ধান
 র্থকারঃ কিল । শকুনিঃ শকটারস্য দৃষ্টান্তাবশ্য ভূপতে ॥
 সদামাত্যোন সাধ্যঃ স্যাৎ সৃষ্টঃ সর্ধং এব হি। সিদ্ধানাম
 যমাदेशकद्विस्त्रित्तविकारिणी ॥ ❀❀❀❀

আর নিয়োগের পুনঃক্ষেতে আমি যাঁহা শুনিয়াছি তাঁহা কহি।
 ব্রাহ্মণ ক্রিয় ব্রাহ্মণ ইহারা অধিকারেতে পুশস্ত নয় ব্রাহ্মণ
 ন্যায়া ধন কষ্টেতে ও দেয় না ক্রিয় ধনেতে নিযুক্ত হইলে
 অবশ্য অস্ত্র দেখায় বন্ধু জ্ঞাতিভাবেতে সর্ধম্ আক্রমণ করি
 য়। গুপ্তকরের বহুকালের দাস নিযুক্ত হইয়া অপরাধে ও শঙ্কা
 রহিত হয় সে পুত্ৰকে অন্যথা করিয়া যথেষ্টাচরণ করে উপ
 কারক ব্যক্তি অধিকারী হইয়া আপন অপরাধ মানেনা উপ
 কারকে ধুজাতে করিয়া সমস্তই লুকাই ক্ষুদ্রস্বরেতে পরা
 মর্শ কারক মন্ত্রী আপনি রাজার ন্যায় আচরণ করে সে

লোক সর্বদা পরিচয়েতে নিশ্চয় অবজ্ঞা করে অস্তঃকরণ দুষ্ট
করাবান্ লোক নিশ্চয় সকল অনর্থকারক হয় হে মহারাজ
ইহাতে দৃষ্টান্ত রাজা দুর্যোধনের মন্ত্রী শকুনি আর শূদ্রক
রাজার মন্ত্রী শকটীর । অমাত্য সর্বদা সাধ্য নহে কেননা
সকলই ধনবান্ হয় যেহেতুক সিদ্ধ লোকেরদিগের এই
আজ্ঞা যে ধন চিন্তের বিকারকে করে ।

I will just repeat what I myself have heard upon the subject of persons to be employed.

A priest, a soldier, and a relation, are not proper to be employed at the head of affairs. The priest, even when the object for which he was engaged hath been completed, refuseth to resign.

If a soldier be employed in an affair, he directly sheweth his sword; and the relation, swalloweth up all the profits.

If an old servant be appointed, he will be fearless, even in the commission of crimes; and, in despite of his master, he may quit his service without reproof.

One who hath been useful, in offending, payeth no attention to his offence. He maketh his services a standard, under which to plunder and destroy.

What minister is inattentive among riches? The man forceth himself to be attached; and from intimacy he is for ever sure to behave with insolence and contempt.

The man who thinketh of nothing but the acquisition of wealth, always devoureth the whole without reserve. The eagle and the vulture may serve a prince as examples of such a minister.

A minister is always incorrigible, when he shall be grown too great. It is a maxim of those who are esteemed perfect, that abundance is the perverter of reason.

প্রাপ্তার্থগ্রহণং দ্রব্যপরীবর্ত্তোঽনুরোধনং । উপেক্ষাবুদ্ধি
 হীনত্বং ভোগোঽমাত্যস্য দূষণং । নিযোগ্যার্থগ্রহোপায়ো
 রাজ্ঞাং নিত্যপরীক্ষণং । প্রতিপত্তিপ্রদানঞ্চ তথা কৰ্ম্ম
 বিপর্য্যয়ঃ ॥ নিপীড়িতাবমন্যুচ্চরন্তঃসারং মহীপতে দুষ্ট
 ব্রহ্মণ্যেব প্রায়োভবন্তি হি নিযোগিনঃ ॥ মুহূৰ্ণিযোগিনো
 বোধ্যবসুধায়ামহীপতে সত্ত্বত্ কিং পীড়িতস্নানবস্ত্রং
 মুञ্চেত্ দ্রুতম্পয়ঃ ॥ এতত্ সৰ্ব্বং যথাবসরং জ্ঞাত্বা
 ব্যবহৰ্ত্তব্য ॥ সিংহোব্রূতে অস্তি তাবদেধ কিম্ভু এতৌ সৰ্ব্ব
 থা ন মম বচনকারিণৌ । স্বম্বকর্ণোব্রূতে এতত্ সৰ্ব্বম
 নুচিতং সৰ্ব্বথা ॥ যতঃ ॥ আজ্ঞাভঙ্গকরান্নাজা ন ক্ৰমেত্
 স্বসুতানপি । বিশেষঃ কোঽনুরাগস্য রাজচিত্তগতস্য চ ॥

পুষ্ণু ধনের সংগ্ৰহএবং দুবোর বিনিময় এবং উপরোধ এবং
 উপেক্ষা এবং নিবুদ্ধিতা এবং উপভোগ এই সকল মন্ত্রির
 দোষনিযুক্ত লোকের স্থানে ধন লইবার উপায় আর রাজপুরু
 ষেরদিগেরপুত্ৰ্যহ পরীক্ষা আর পুতিপত্তি করাণ আর অধি
 কারেরপরিবর্ত্ত এ সকল দুষ্টবুণ যেমন অতিশয় পীড়িত হই
 লেঅন্তরঙ্গ পুত্ৰাদিকে উদ্ধার করে হে মহারাজ তেমনি অধি
 কারস্থ লোকেরা অতিশয় পীড়িত হইলে অন্তরঙ্গ বস্তুর
 বাহির করে । হে মহারাজ নিযুক্ত লোকেরদিগেকে বার
 স্বার বুঝিবেক একবার পীড়ন করিলে কি নানবস্ত্র শাঘু
 জলতাগ করে এই সকল সমস্তানুসারে জানিয়া ব্যবহার
 কর্ত্তব্য । সিংহ বলিতেছে এই পুকার বটে কিন্তু ইহার

দুই জন সর্বথা আমার বচনকারী নয়। শুদ্ধকৰ্ণ বলিতে
ছে এ সকল সর্বপুকারে অনুপযুক্ত যেহেতুক আদেশের
লঙ্ঘনকারক আপন পুত্রেরদিগেকে ক্ষমা করিবেন। অতএব
রাজার মনোগত অনুরাগের আর বিশেষ কি।

Not taking the advantages which are found, concealing the expenditure of things, inattention, want of judgment and the being addicted to pleasures, are all faults in a minister.

The collection of the revenues is the business of the officers, but a constant circumspection, the payment of stipends, and of the return for labour, are the duties of the sovereign.

Until they are pressed, they will not disgorge the royal treasures they have embezzled; for the officers of revenue are like obstinate tumours, that must be pressed before they will properly discharge.

And the compulsive power of the sovereigns of the earth should be exerted repeatedly upon their officers; for will a piece of cloth, by being once squeezed, yield up all the water it may have imbibed?

The whole of this advice, concluded the lion's brother, should be put in practice, as often as there is found occasion.

The rājā then said,—It is even so, that these two are not always ready to obey my commands. And that, replied his brother, is at no time becoming in them: for,

A sovereign should not forgive those who disobey his commands, although they were his sons. Especially if it be to the hurt of the revenue, or relative to any thing he may have fixed his heart upon.

স্বাস্থ্যস্য মশ্যতি যশোবিষমস্য মৈত্রী মণ্ডেন্দ্রিয়স্য কুল
 মৰ্য্যপরস্য ধর্ম্মঃ । বিদ্যাফলং ব্যসনিনঃ কৃপণস্য সৌখ্যং
 রাজ্যং প্রমত্তসচিবস্য পরাধিপস্য ॥ অপরঞ্চ ॥ তস্মিন্
 ভ্যোনিযুক্তোভ্যঃ শত্রুভ্যোনৃপবল্লভাৎ । নৃপতির্নিজলোভাচ্চ
 প্রজারক্তে পিতৃব হি ॥ স্নাতঃ সর্বথা স্নাত্ব চ ন ক্রিয়তাং
 ব্যবহারোপ্যস্মাভিঃ কৃতং তস্মৈ সঙ্গীবকঃ শস্যমল্লকো
 স্ত্রীধিকারে নিযুজ্যতাং এতদ্বচনানুষ্ঠিতে সতি তদা
 রম্য পিঙ্গলকসঙ্গীবকযোঃ সর্ববন্ধুপরিত্যাগেন মহতা
 স্নেহেন কালোঃ স্তি বর্জ্যতে ততোऽনুজীবিনামপ্যাহারদানে
 শ্রৌতিল্যদর্শনাৎ দমনককরটকাবন্যোন্ম চন্তয়ত স্নাত্ব
 দমনকঃ করটকং মিত্র কিং কৰ্ত্তব্যং আত্মকতোঃ স্যং দোষঃ
 স্বয়ং কৃতোপি দোষে পরিদেবনমপ্যনুচিতং ॥ *❀*❀*

স্বক ব্যক্তির যশ নষ্ট হয় অশিষ্টলোকের মিত্রতা নষ্ট হয়
 অজিতে দ্রুয়ের কুল নষ্ট হয় ধনপরব্যক্তির ধর্ম্ম নষ্ট হয়
 ব্যসনি লোকের বিদ্যা নষ্ট হয় কৃপণ জনের সুখ নষ্ট
 হয় যে রাজার মন্ত্রী পুষ্ট হয় তাহার রাজ্য নষ্ট হয় ।
 অপর চোরহইতে এবং নিয়োগিপুরুষহইতে এবং বিগন্ধ
 হইতে এবং রাজার পুত্র লোকহইতে আর আপন লোভহই
 তে পুজারদিগকে রাজা পিতার ন্যায় রক্ষা করিবেক । হে
 ভাই সর্বপুকারে আমার বাক্য কর আনরা ও ব্যবহার
 করিয়াছি এই সঙ্গীবক শস্যমল্লক অর্থাধিকারে ইহাকে

নিয়োগ করা। এই কথাতে তাহা করিলে পরে তদবধি সমস্ত
পরিভ্রমণ করিয়া অতিশয় স্নেহেতে গিহ্লক সঞ্জীবকের
কাল যাইতেছে। অনন্তর দাসেরদের ও আহাৰ দানেতে
শৈথিল্য দর্শনহেতুক দমনক করটক পরস্পর ভাবনা
করিতে২ দমনক করটককে কহিল হে মিত্র কি কর্তব্য
আত্মকৃত এ দোষ আপনি দোষকরিলে খেদ করা অনুচিত।

The indolent person loses his fame, the wicked his friendship, the libertine his caste, the avaricious his religion, the sick his learning, the miser his happiness, and the king whose minister is careless, his kingdom.

The rājā should, like a father, protect his subjects from robbers, from the officers of government, from the common enemy, from the royal favourites, and from his own avarice.

Brother, continued he, let my advice be followed: we have made our meal for to-day. Then let the bull, Sang-jivaka, who eats nothing but grass and corn, be appointed to superintend the provision.

After that, he being appointed accordingly, the lion and the bull passed their time together in great mutual kindness. But the two jackals, upon experiencing a relaxation in serving out the provisions to the officers and dependants, began to consult together what was to be done. It is an evil of our own seeking, said Damana-sa, and it is not proper to lament about a misfortune of one's own making.

তথা চোক্তং স্বর্ণরেখামহং সৃষ্টা বজ্রাভ্যামনন্ত
 দূতিকা । আদিত্যুঃ স্বমলিং সাধুঃ স্বদোষাদুখিতা
 ইমে ॥ করটকোব্রূতে কথমেতৎ । দমনকঃ কথয়তি ।
 অস্মি কাঞ্চনপুরনাম্নি নগরে বীরবিক্রমো রাজা তস্য
 ধর্মোদ্ধিকারিণা কশ্চিন্নাপিতো বধ্যভূমিঃ নীযমানঃ
 কন্দর্পকেতু নাম্না পরিব্রাজকেন সাধুদ্বিতীয়কেন নাযং
 হন্ত্যদ্যুত্থা বস্ত্রাশ্চ লে ধৃতঃ । রাজপুরুষা উচুঃ কিমি
 তি নাযং বধ্যঃ । স আহ শ্রুয়তাং স্বর্ণরেখামহং সৃষ্টে যদি
 পঠতি তত্রাজঃ কথমেতৎ । পরিব্রাজকঃ কথয়তি অহং
 সিংহলদ্বীপে ভূপতের্জীমূতকেতোঃ পুত্রঃ কন্দর্পকেতু নাম
 একদা কেলিকাননাবস্থিতেন ময়া পোতবাণি মুখাচ্ছুতং

তাহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন আমি স্বর্ণরেখাকে স্পর্শ করি
 যা আর দূতী আপনাকে বাঞ্চিয়া আর সাধু আপন রত্ন
 লইতে ইচ্ছা করিয়া আপনদোষেতে ইহারা দুইটি ত ইহারা ছে
 করটক বলিতেছে এ কি পুংকার । দমনক কহিতেছে ।
 কাঞ্চনপুর নাম নগরে বীরবিক্রম নামে এক রাজা থাকে
 তাহার ধর্মোদ্ধিকারি বধ্যভূমিতে কোন নাগিতকে আনত
 এক সাধুর সহিত কন্দর্পকেতু নামে জনাঙ্গী তাহাকে
 দেখিয়া কহিল এই লোক বধ্য নয় ইহা কহিয়া তাহার

বস্ত্রের আঁচলে ধরিল রাজপুরুষেরা কহিল কেন এ বধ্য
নহে । সম্যাসী কহিতেছে সিংহলদ্বীপেতে জীমূতকেতু
রাজার কন্দর্পকেতু নামা পুত্র আমি এক দিন আমি ক্রীড়া
বাননে থাকিয়া জাহাজি সওদাগরের মুখেতে শুনিলাম ।

It is said,


1, for having touched Suarna-rekha; the barber's wife, for having bound herself; the merchant, for having attempted to steal a jewel: All these suffered for their own faults.

How was this? demanded Karataka; and Damanaka related the following stories:

FABLE VI.

IN the city which is called Kānchana-pura, there was a rājā, whose name was Vira-vikrama. Once upon a time, as his chief officer of justice was conducting a certain barber to the place of execution, one devout man, named Kandarpa-ketu, accompanied by a merchant, taking him by the skirt of his garment, cried out,—This man is not guilty ! How so ! said the king's officers; not guilty, sayest thou? Hear me ! said he, and he immediately began to repeat these lines:—*Having touched Suarna-rekha, &c.* What does this mean, demanded the officers; and the devotee recounted the following adventure:

The king of Singhala-dwipa, whose name is Jimuta-ketu, hath a son called Kandarpa-ketu, and I am he. One day a boat-man, who attended in the pleasure gardens, told me,

যদ্যঃ সমুদ্রমধ্যে চতুর্দশ্যামাধিভূতকল্পতরুতলে
 রত্নাবলীকিরণকর্ষুপ্যর্ক্বে স্থিতা সর্বালাঙ্কারভূষিতা
 লক্ষ্মীরিব বীণাং বাদয়ন্তী কন্যা কাচিদৃশ্যতে ইতি
 ততোঃ পোতবলিজনাদায পোতমাক্ষয়্য তত্রগতঃ ।
 অনন্তরং তত্র গত্বা পর্য্যঙ্কেঃ স্নানমগ্না তথৈব সা অবলোকিতা
 ততঃ সা সখীসমেতা সমুদ্রমধ্যে মগ্না দৃশ্যামবত ততস্তু
 স্রাবণ্যগুণাক্রষ্টেন মর্যাপি তত্পশ্চাত্ ভক্ষ্যঃ প্রদত্তঃ
 তদনন্তরং কনকপত্ননং প্রাপ্য সুবর্ণপ্রাসাদে তথৈব পর্য্যঙ্কে
 স্থিতা বিদ্যাধরীভিরূপাস্থ্যমানা ময়ালোকিতা তথাঃ
 প্যহং দূরাদেব দৃষ্ট্বা সখীং প্রস্থাপ্য সাদরং সম্ভাষিতঃ
 তত্‌সল্যা চ ময়া পৃষ্ঠয়া সমাল্ব্যাতং । **

যে এই সমুদ্রমধ্যে চতুর্দশীতিথিতে আবিভূত কল্পবৃক্ষের ত
 লেতে রত্নমূহের কিরণদ্বারা মনোহর পানক্ষেতে উপবিষ্ট।
 স্বরীভরণে ভূষিতা লক্ষ্মীর ন্যায় সুন্দরী বীণা বাজাইতেছে
 এমন কোন কন্যা দেখা যায় । অনন্তর আমি ঐ মণ্ডাগর
 কে লইয়া জাহাজেতে আরোহণ করিয়া সেখানে গেলাম ।
 তাহার পর সেখানে গিয়া পর্য্যক্ষেতে অর্ধমগ্না সেই পুকার
 তাহাকে অবলোকন করিলাম তৎপরে সে লক্ষ্মীর সহিত
 সাগরমধ্যে মগ্না অদৃশ্য হইল । তাহার পর তাহার সৌ
 ন্দর্য্য গুণেতে আকৃষ্ট হইয়া আমি ও তাহার পশ্চাৎ যাম্

দিলাম তদনন্তর এক সুবর্ণপুত্রী পাইয়া সুবর্ণ পুসাদে সেই
রূপ খটাতে স্থিতা বিদ্যাধরীকৃতক বেবাম্বান। তাহাকে
আমি দেখিলাম সেও আমাকে দূরহইতে দেখিয়া সখাকে
পাঠাইয়া আদরেতে সম্ভাষ করিল তাহার সখাকে আমি
দেখিয়া জিজ্ঞাসিলে সে কহিল।

that on the fourteenth day of the moon, there was to be seen in the sea, which was near, under what had the appearance of the Kalpa-taru, or tree of thought, seated upon a silver sofa, ornamented with a fringe of precious gems, a certain nymph playing upon a Vina, as it were the goddess Lakshmi. At the proper time I sent for the boat-man, and getting into the boat, set sail for the appointed place; and there I beheld a damsel, with only one half of her body appearing above the surface of the water. In short, attracted by the beautifulness of her appearance, I leaped behind her; and was immediately transported to her golden place; where I found her waiting in an apartment of gold, seated upon a bed of the same materials, attended by Vidya-dharies. I no sooner saw her, than, spying me at a distance, she sent a damsel, who addressed me with respect. On my enquiry, the damsel said.

ଏଷା କନ୍ଦର୍ପକେଶିନୀସୋ ବିଦ୍ୟାଧରଚକ୍ରବର୍ତ୍ତିନଃ ପୁତ୍ରୀ ରତ୍ନ
ମଞ୍ଜୁରୀ ନାମ ପ୍ରତିଜ୍ଞାପିତା ବିଦ୍ୟତେ ଯଃ କନକପତ୍ତନଂ ଶ୍ଵଚ
ଶୁଭାଗତ୍ୟ ପଶ୍ୟତି ସେବ ପିତୁରଗୋଚରୋପି ମାନ୍ୟରିଣେଷ୍ଠ
ତୀତି ମନସଃ ସଂକ୍ଷୁଦ୍ରତାଃ ତଦେନାଂ ଗନ୍ଧର୍ବବିବାହେନ ପରିଣୟତୁ
ଭବାନ୍ ଅଥ ତତ୍ତ୍ଵଂ ଶ୍ଵଚ ଗନ୍ଧର୍ବବିବାହେ ତଥା ସହ ରମଣୀୟ
ଶ୍ଵଚାହଂ ତିଷ୍ଠାମି ତତଃକଦା ରହସି ତଥୋକ୍ତାଂ ଶ୍ଵାମିନ୍ ଶ୍ଵେ
ଚ୍ଛୟାସର୍ବମିଦମୁପଭୋକ୍ତବ୍ୟଂ ଏଷା ଚିତ୍ରଗତା ଶ୍ଵର୍ଣ୍ଣରେଖା ନାମ
ବିଦ୍ୟାଧରୀନ କଦାଚିତ୍ ସ୍ମୃଷ୍ଟବ୍ୟା ପଞ୍ଚାଦୁପଜାତକୌତୁକେନ
ମୟା ଶ୍ଵର୍ଣ୍ଣରେଖା ଶ୍ଵଚ୍ଛେନ ସ୍ମୃଷ୍ଟା ତଥା ଚିତ୍ରଗତୟାପ୍ୟହଂ
ଚରଣପଦ୍ମେନ ଶ୍ଵାଦିତ ଆଗତ୍ୟ ଶ୍ଵରାସ୍ତ୍ରଂ ପତିତଃ ଅଥ ଦୁଃଖା
ତାହଂ ପରିବ୍ରଜିତଃ ପୃଥିବୀଂ ପରିଭ୍ରାମ୍ୟନ୍ ଇମାଂ ନଗରୀମନ୍
ପ୍ରାପ୍ତଃ ଅଥ ଚାତିକାନ୍ତେ ଦିବସେ ଗୋପମୁହେ ସୁମ୍ନଃ ସନ୍ନପଶ୍ୟ

କନ୍ଦର୍ପକେଶି ନାମେ ବିଦ୍ୟାଧର ଚକ୍ରବର୍ତ୍ତୀର ରତ୍ନମଞ୍ଜୁରୀ ନାମେ
କନ୍ୟା । ଇନ୍ଦ୍ରାଣି ଇହାର ନିୟମ ଆଛି । ସେ ବାଞ୍ଛିଆସିଲା ଆପନ
ଚକ୍ଷୁରେ ଏହି କନକ ପତ୍ତନ ଦେଖିବେକ ସେହି ପିତାର ଅଗୋଚରେ
ତେ ଓ ଆମାକେ ବିବାହ କରିବେକ ଏହି ମନେର ପ୍ରତିଜ୍ଞା
ଏହିହେତୁକ ଇହାକେ ଗାନ୍ଧର୍ବ ବିବାହେତେ ଆପନି ଶ୍ଵୀକାର
କଲନ । ଅନନ୍ତର ଗାନ୍ଧର୍ବ ବିବାହ ହଇଲେ ପରେ ତାହାର
ମହିତ ଜୁଡ଼ା କରତ ସେହି ସ୍ଥାନେ ଆମି ଥାକି । ତାହାର
ପରେ ଏକ ଦିବସ ନିର୍ଜନେତେ ସେ କହିଲ ହେ ନାଥ ଆପନ
ଈଚ୍ଛାତେ ଏହି ନଗର ଉପଭୋଗ କର କିନ୍ତୁ ଚିତ୍ରିତ ଏହି ଶ୍ଵର୍ଣ୍ଣରେଖା

नामे विद्याधरीके कदाच स्पर्श करिषा ना । पश्चात् आम्नि
 कोतुकाविष्ट हইয়া স্বর্ণরেখাকে আপন হস্তেতে স্পর্শকরি
 য়া চিত্তিত। সেই স্বর্ণরেখা আমাকে পাদপঙ্কজদ্বারা তা
 ডিত করিল তাহাতে আসিয়া আপন দেশেতে পড়িলাম
 অনন্তর ব্যথিত হইয়া সম্যাসী হইয়া পৃথিবীতে ভ্রমণ করত
 এই নগরী কে পাইলাম । পরে গত দিবসে গোপগৃহেতে
 শয়ন করিয়া দেখিলাম ।

That is nymph Ratna-manjari, the daughter of Kan-
 darpakeli, the king of the Vidyā-dhara. She has resolved
 to give her hand, even without the knowledge of her
 father, to the person, who will come and behold this
 golden city with his own eyes; therefore consent to be
 united by the Gandharva mode of marriage. After this,
 I was married to her according to the ceremony of
 the Gandharvas (by exchanging necklaces) and con-
 tinued a long time delighted with her. One day, as
 we were in private together, she said,—Husband, thou
 mayst enjoy every thing which is here according to thy
 wish, except it be the beautiful Swarna-rekhā, a certain
 Vidyā-dhārī, who is not to be touched of any one.
 Sometime after this, at an entertainment, being in a
 merry mood, I was tempted to touch the orbs of her bo-
 som, and for my presumption she spurned me with the
 sole of her foot; after which I found myself in this coun-
 try; and at length travelling about in great distress, I
 chanced to discover this city, and having wandered
 about all day, I went to sleep at the house of a certain
 cow-keeper.

প্রদোষসময়ে সুহৃদাং পালনং কৃत्वा স্বনেহমাগতো গোপঃ
 স্ববধূং দূত্যা সহ কিমপি নম্রয়ন্তীমপধ্যত্ ততস্তাং
 গোপীং তাডযিত্বা স্তম্ভে বদ্ধা সুম্নঃ ততোঽর্জুনাচে এতস্য
 নাপিতস্য বধূর্দূতী পুনস্তাং গোপীমুপেতা বদত্ তব বিরহা
 মলদগ্ধোঽসৌ স্মরশরজর্জরিতোমমূর্ষুরিব বর্নতে ।
 তথা চোক্তং ॥ রজনীচয়নাথেন লুপ্তিতে তিমিরে নিশি
 যুনাং মনাंसি বিব্যাধ দৃষ্টা দৃষ্টা মনোভবঃ ॥ তস্য
 তাদৃশীমবস্থামবলোক্য পরিলিষ্টমনাস্বামনুবর্নিতু
 মাগতা তদহমচাত্মানং বদ্ধা তিষ্ঠামি ত্বং তত্র গত্বা তং
 সন্তোষ্য সত্বরমাগমিষ্যসি তথানুষ্ঠিতে সতি সগোপঃ
 প্রবুদ্ধোঽবদত্ ইদानीং ত্বাং পাপিষ্ঠাং জারান্তিকং নম্যামি
 ততোযদাসৌ ন কিञ্চিদপি ব্রূতে । *❀*❀*❀*

জঙ্ঘা কালে আশ্রয় অন্তরঙ্গের পালন করিয়া গোপ
 আপন গৃহে আসিয়া আপন ভার্যাকে দূতীর সহিত
 কোন পরামর্শ করিতে দেখিল তাহার পর সেই
 গোপাকে তাড়না করিয়া শুভ্রতে বন্ধন করিয়া শয়ন
 করিল অনন্তর অর্জুনাভ্যেতে এই নাগিতের স্ত্রী দূতী সেই
 গোপির নিকট যাইয়া কহিল তোমার বিরহরূপঅনলে
 দগ্ধ এই ব্যক্তি কন্দর্পবাণেতে জর্জরিত মূমূর্ষুত্বা আছে ।
 গণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন রাজিতে চন্দ্রকর্তৃক অন্ধকার
 বিনাশিত হইলে কন্দর্প দেখিয়া যুবরদিগের মনকে বেধ

করে তাহার সেইরূপ অবস্থা দেখিয়া দুঃখিতান্তঃকরণ হইয়া
তোমার অনুবর্তিতে আসিয়াছি সেইহেতুক আমি এখানে
আপনাকে বান্ধিয়া থাকি তুমি সেখানে যাইয়া তাহাকে পরি
তোষ করিয়া স্বরাতে আসিবা সেই পুকার করিলে পরে সে
গোপ জাগিয়া বলিল ওরে পাপাত্মা সম্প্রতি তোরে উপ
পতির নিকটে লই । অনন্তর যখন এ কিছুই না বলিল ।

This man, too, perceiving the season for the commission of crimes was approaching, prudently quitted the conversation of his friends, and came home, where he found his wife consulting with a procuress. So, having given her a good beating, he made her fast to a post, and went to sleep. About midnight, the same procuress, who was the barber's wife, returning, said to the cow-keeper's wife,—Such an one, burning with the fire of separation, is ready to die for thee.

For, it is said,

As in the night darkness is kept at a distance, by the lord of shades, (the moon,) thus love by seeing and being seen, delights the heart of the young.

Having seen him in that condition, my heart was touched with pity, and I am therefore come to thee. Go, then, to speak to him, and return quickly; and in the mean time, I will bind myself to the post, and stay till thou shalt come back. Things having been thus managed, it so fell out, that the cow-keeper waked. Why dost not now go to see thy gallant, my dear? said he; to which no answer being made,


তদা ক্রুদ্ধো গোপঃ দর্পাঙ্গম বচসি প্রত্যুত্তরমপি ন দদাসি
 ইত্যুক্তা কোপেন তেন কৰ্ণিকামাধায়া স্যাসিকা ছিন্না
 তথা কৃৎবা পুনঃ সুশ্লোগোনিদ্রাসুপগতঃ অথাগত্য গোপী
 দূতীমপৃচ্ছত্ কা বার্তা । দূত্যোক্তং পশ্য মাং মুখমেব বার্তাং
 কথয়তি অনন্তরং সা গোপী তথা কৃৎবা আত্মানং বদ্ধা স্থি
 তা ইয়ম্ব দূতী তাং ছিন্নাসিকাং গৃহীত্বা স্বগৃহং প্রবি
 শ্য স্থিতা ততঃ প্রাতরেবানেন নাপিতেন স্ববধুং তুরমাণ্ডং
 আচিতা সতী তুরমেকং প্রাদাত্ ততোঃ সময়মাণ্ডে প্রাপ্তে
 সমুপজাতকোপোয়ং নাপিতঃ তত্ তুরং দূরাদেব গৃহে তিস্র
 বান্ অথ কৃতার্চনারা বা ইয়ং বিনাপরাধন মে নাসিকা
 অনেন ছিন্না ইত্যুক্তা ধৰ্ম্মাধিকারিসমীপমেনমানীতবতী
 সা চ গোপী তেন গোপেন পুনঃ পৃষ্ঠোবাচ ।

তখন সে গোপ কষ্টে বইয়া অহঙ্কারেতে আনার বাক্যেতে
 উত্তর ও দিলি না বইয়া কহিয়া রোষেতে ছুরি নইয়া ইহার
 নাসিকা কাটিল তাহা করিয়া পুনর্বার শুইয়া নিদ্রা গেল ।
 অনন্তর গোপী আসিয়া দূতীকে জিজ্ঞাসা করিল বৃত্তান্ত
 কি দূতী কহিল আনাকে দেখ মুখই বৃত্তান্ত বহিতেছে ।
 ইহার পর সেই গোপা ঐ রূপ করিয়া আপনাকে বান্ধিয়া
 থাকিল ঐ দূতী সেই ছিন্ন নাসিকা লইয়া আপন গৃহে
 প্রবেশ করিয়া থাকিল । তাহার পর পুভাত সময়েতে ঐ

নাপিত আপন ভাষার নিকটে ক্ষুরভাণ্ড চাহিলে পাত্র এক
খানি ক্ষুর দিলেক । তদনন্তর সমস্ত ভাণ্ড না পাইয়া জাভ
ক্ৰোধ হইয়া ঐ নাপিত সেইক্ষুর দূরহইতে য়েতে ফেলিয়া
দিল । অনন্তর দূতী আর্ভধনি করিয়া এ ব্যক্তি অপরাধ
ব্যতিরেকে আমার নাসিকা ছেদন করিল ইহা বলিয়া
ধর্মাধিকারির নিকটে ইহাকে আনিলেক । ঐ গোপী
সেই গোপকর্তৃক পৃষ্ট হইয়া কহিলেক ।

he containedd saying,—Pray who has taught thee to
be so proud, that thou wilt not deign to give me an an-
swer. And saying this, he got up in a great rage, cut
off her nose, and lay himself down to sleep again. After
a while, the cow-keeper's wife returning, asked the pro-
cureess what news. What news! said she; look in my
face, and see what news! The cow-keeper's wife now
takes her place, and binds herself to the post as before;
and the barber's took up her nose and repaired to her
own house. Early in the morning, when the barber or-
dered his wife to bring him the razor case, she said,—
here is a razor, putting one into his hand; but as it did
not chance to please him, he threw it in a passion upon
the ground; upon which his wife seized the occasion to
cry out,—Oh! without the least provocation, he hath cut
off my nose! And away she went to the officer of justice.

In the mean time, the cow-keeper's wife, being ques-
tioned by her husband, exclaimed,—

অরে গাণ কোমাং মহাসতীং নিরূপয়িতুং সমর্থঃ মম ব্যব
 হারমকলমসমষ্টৌ লোকপালাএব জানন্তি ॥ যতঃ ॥
 আদিত্যচন্দ্রাবনিলোঃনলশ্চ যৌৰ্ভূমিরাপো হৃদয়ংমমশ্চ।
 অহশ্চ রাত্রিশ্চ উভে চ সন্ধ্যে ধৰ্ম্মশ্চ জানাতি নরস্য
 বৃত্তং ॥ যদ্যহং পরমসতী স্যাং ত্বাং বিহাযান্যং ন জানে পুরু
 ষান্তরং স্বপ্নেঽপি নহি ভজে তেন ধর্মেণ ছিন্নাপি মম
 নাসিকা অচ্ছিন্নাস্তু ময়া ত্বং মম কৰ্ত্তুং শক্যতে কিন্তু
 স্বামী ত্বং লোকমযাদুপেক্ষতে পশ্য মন্মথং ততো যাবদসৌ
 গোপোদীপং প্রজ্বাল্য তন্মুখমবলোকতে তাব দুগ্ধসং মুখ
 মবলোক্য তচ্চরণ্যোঃ পতিতঃ ধন্যোহং যস্মৈদৃশী ভার্য্যা
 পরমসাধ্বীতি ঘোষমাশ্তে সাধুরেতদ্বৃত্তান্তমপি কথয়া
 মি অথং স্বয়ংহান্নির্গতোদ্বাদশবর্ষে মল্লযোপকণ্ঠাদিমাং
 নগরীমনুপ্রাপ্তঃ । **

অরে গোণ আনি মহাসতী আনাকে কে নিরূপন করিতে
 পারে আনার নিষ্পাপ ব্যবহার অষ্ট দিকপালেরা জানেন
 যেহেতুক সূর্য্য চন্দ্র বায়ু অগ্নি স্বর্গ পৃথিবী জল অন্তঃকরণ যম
 দিবা রাত্রি দুই মক্ষা ধর্ম্ম ইহার। মনুষ্যের চরিত্র জানেন
 যদি আনি পরম সতী হই তোমাকে ত্যাগ করিয়া অন্যকে
 না জানি অন্য পুরুষকে স্বপ্নেতেও না ভজি তবে সেই পুণ্য
 তে আমার এছিন্ন নাসা অচ্ছিন্ন হউক আনি তোমাকে

ভক্ষ করিতে পারি কিন্তু তুমি ভর্তা লোক ভয়েতে উপেক্ষা
করি দেখ আমার মুখ তাহারপর যখন গোপ পুদীপ জ্বালি
য়া তাহার মুখ দেখে, তখন তুঙ্গনাসিক বিশিষ্ট মুখ দেখিয়া
তাহার পায়েতে পড়িল আমি ধন্য যাহার গৃহিণী এতাদৃশী
পরম সতী । এই যে সন্ন্যাসী আছেন ইহার বৃত্তান্ত ও বলি
ইনি নিজ গৃহহইতে বাহির হইয়া দ্বাদশ বৎসরেতে মলয়
সমীপ হইতে এইপূরি পাইয়াছেন ।

Who guilty wretch, thinkest thou, is able to disfigure
one so very chaste as I? The eight guardians of the uni-
verse are acquainted with all my actions! Is it not said,


The sun and moon, fire and air, heaven, earth, and
water, the heart, and conscience; day and night, with
morning and evening; justice and all, are witnesses
of a man's actions!

Then, let this be the trial of my innocence:

Ye mighty angels who guard the universe! if I am a
chaste and virtuous wife, let this my countenance remain
no longer without a nose!

I can reduce you to ashes, but as you are my husband,
I pardon you. Now, said she, look at my face! Accord-
ingly, her husband, having brought a light, examined
her face; and when he beheld that it was free from any
appearance of having been wounded, he fell down at her
feet, and, with a joyful heart exclaimed.—He who
possesses such a wife is chief among men!

Now attend to the history of the merchant. He left his
own house, and after an absence of twelve years, he re-
turned to this city, from the neighbourhood of the Malaya
mountains,

অত্র বেষ্মাঘটে সুমস্তস্বাঃ কুটিল্যামহদারিস্থা
 পিতকাষ্টনঠিতবেতাশস্য নূর্দ্বজি রতমেবামুত্কাষ্টমাতে
 তত্র লুণ্ঠেনাগেন সাধুনা রাবাবুণ্ডায রত্নং মট্ঠীতুং
 যত্নঃ কৃতঃ তদাতিেন বেতাশেন সূত্রসম্ভারিতবাজ্জম্বা
 পীড়িতঃ সম্ভার্ত্তনাদময়ং চকার পশ্চাদুত্থায কুটিল্যো
 ক্তং পুত্র মলয়োপকণ্ঠাঙ্গতোসি তত্ সর্ঘরত্নানি প্রয
 ক্ষ্যাস্মৈ নো চেদনেন ন ত্যক্তব্যেতি ইত্যমেবাযং চেটকঃ
 ততোঽনেন সর্ঘরত্নানি সমর্পিতানি যথাযমপহৃতসর্ঘ
 স্তোম্যাসু সমাগত্য মিলিতঃ এতত্ সর্ঘং শ্রুত্বা রাজ
 পুরুষৈর্ন্যায়ে ধর্ম্মাধিকারী প্রবর্ত্তিতঃ অনন্তরং তেন সা
 দূতোগোপী চ যামাঙ্গহির্নিঃসারিতা নাপিতস্ব মট্ঠকৃতঃ
 অতোঽহংব্রবীমি স্বর্ণরেখামহং স্পৃষ্টেত্যাदि । *

এ স্থানে বেশ্য গৃহে শয়ন করিয়াছিলেন সেই স্ত্রীটিনীর গৃহ
 ঘাট্রেতে কাঠ নির্মিত এক বেতান ছিল তাহার নিকটে
 এক উত্তন রত্ন থাকে তাহাতে এই লোভি সাধু ব্রাহ্মিতে উঠি
 য়া নগ্ন হইবার নিমিত্তে যত্ন করিলেন তখন সেই বেতান
 কর্তৃক সূত্রসম্ভারিত হস্তদ্বয়ের দ্বারা ধৃত হইয়া ঐ ব্যক্তি
 আত্মস্বর করিল । অনন্তর স্ত্রীটিনী উঠিয়া কহিল পুত্র মল
 যের নিকটে হইতে তুমি আসিয়াছ সে সকল রত্ন ইহাকে
 দেও নতুবা এতোমাকে ছাড়িবে না এ চেষ্টক এই পুকার ।

তাম্রভূজ ইনি সমস্ত রত্ন সমর্পণ করিলেন এ পুকারে ইনি
হতসর্বস্ব হইয়া আসিয়া আমার দ্বিগেহে সহিত মিলিলেন ।
এই সকল শুনিয়া রাজপুত্রেরা ন্যায়েতে ধর্ম্মাধিকারিকে
পুত্র করাইলেক । অনন্তর তিনি সেই দূতীকে আর গোপী
কে গুমহইতে বাহির করিয়া দিলেন নাগিত আপন গৃহে
গেল । অতএব আমি বলি স্বর্ণ রেখাকে আমি স্পর্শ করিয়া
ইত্যাদি । ২

and went to sleep at a house of ill fame. The mistress of the house kept on the gateway a wooden image of a certain spirit, on whose head she had placed a valuable gem. The merchant, instigated by avarice, got up in the middle of the night; but just as he had put his hand to the jewel, he was caught between the arms of the image, which were hung by wires, and squeezed very closely, so that he cried out with pain. The mistress of the house got up immediately. Ho, ho! master merchant! Thou art come from Malaya! Then deliver all thy jewels, or else thou wilt not be released from thy present confinement. In short, he was helpless, and so sent for all his treasures, and made an offering of them for his enlargement; since which, having been thus plundered of all his wealth, he has joined our party of pilgrims.

All this being heard, the king's (inferior) officers persuaded the chief justice to do justice to the case. He accordingly drove out the procuress, and the wife of the cow-keeper from the village, and the barber being released, returned home.

I repeat, therefore,—*I for having touched the damsel Swarna-rekha &c.*

অথ স্বয়ং কৃতোযং দোষোঽত্র বিস্ময়নং নোচিতং ক্লৃপং বিমৃ
 শ্যামিচ্চ যথানযোঃ সৌহার্দ্যং ময়া কারিতং তথা মিচ্চ
 ভেদোপি ময়া কার্য্যঃ । যতঃ ॥ অতথ্যান্যপি তথ্যানি
 দর্শয়ন্ত্যতিপেশলাঃ । সমেনিস্তোদ্রতানীব চিত্রকর্ম্মবি
 দোজনাঃ ॥ অপরচ্ছ ॥ উত্পশ্বেষ্বপি কার্য্যেষু মতির্যস্য
 ন হীযতে । স নিস্তরতি দুর্গাণি গোপী জারহ্বয়ং যথা ॥
 করটকঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ ॥ দমনকঃ কথয়তি অস্তি
 দ্বারবত্যাং পুথ্যাং কস্যচিদ্রোপস্য বধূর্ব্বম্বকী সা গ্রামস্য
 দাণ্ডনায়কেন তত্পুত্রেণ চ সমং রমতে । তথা চোক্তাং ॥ না
 মিস্তৃপ্যতি কাষ্টানাং নাপগানাং মহোদধিঃ । নান্তকঃ
 সর্ব্বভূতানাং ন পুংসাং বামলোচনা ॥ *❀*❀*

অনন্তর এই দোষ স্বয়ং কৃত ইহাতে বিনাগ উচিত নয়
 কিঞ্চিৎ কাল বিবেচনা করিয়া কহিল হে মিত্র ইহার
 দিগের যেমন সৌহার্দ্য আমি করাইয়াছি তেমন সুহৃদ্ভেদ
 ও আমি করি যেহেতুক চিত্রকর লোকেরা যেমন সমান স্থান
 কেও উচ্চ নীচ দেখায় তেমন অতিশয় খল লোকেরা
 মিথ্যাকে ও সত্য করিয়া দেখায় । অপর কার্য্য উপস্থিত
 হইলে যাহার বুদ্ধি ভ্রংশ না হয় সে লোক বিপৎসকলকে
 তরে যেমন গোপী দুই উপপতি ব্রজহিত বিপৎ হইতে তরি
 য়াছিল । করটক জিজ্ঞাসা করিলেক এ কি পুকার ।
 দমনক কহিতেছে । দ্বারবতী নামে পুরীতে কোন গোপের

বধু থাকে সে তুষ্ট। পুনের কোটালের এবং তাহার পুত্রের
সহিত ক্রীড়া করে তাহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন যে কাঠেতে
অগ্নি তৃপ্ত হয় না নদীতে সমুদ্র তৃপ্ত হয় না সমস্ত পুণিতে
ও যম তৃপ্ত হয় না পুরুষেতে জী লোক তৃপ্ত হয় না।

Now continued Damanaka, as this also is an evil of our own seeking, it does not become us to grieve about it. And having considered for a moment, he added, — Friend, the friendship which subsists between them was brought about by me, and, by me, that friendship may be dissolved; for,

Skilful men make falsehood look like truth; and those acquainted with the painter's art, make an even surface appear uneven





The understanding which, upon unexpected occurrences, remaineth unaffected, may pass through the greatest difficulties, like the farmer's wife with her two gallants.

How was that? demanded Karataka, and Damanaka recounted the following story:

FABLE VII.

AT a place called Dwāravatī, a certain farmer had a beautiful wife, who used to keep company, at the same time, with the magistrate of the place, and his son, according to these sayings:

The fire is never satisfied with the addition of fuel, the ocean with the influx of rivers, the angel of death with the mortality of all things which have life, nor a beautiful woman with the conquest of all mankind!

ଅଥ କଦାଚିତ୍‌ ସା ଦଢ଼ନାୟକ ପୁତ୍ରେଣ୍‌ ସହ ରମଣାଣା
 ତିଷ୍ଠତି ଅଥ ଦଢ଼ନାୟକୋପି ରନ୍ତୁଂ ତତ୍ରାଗତଃ ତମାୟାନ୍ତଂ
 ଦୃଷ୍ଟ୍ବା ତତ୍‌ପୁତ୍ରଂ କୁଶୁଲେ ନିଃସ୍ନିପ୍ୟ ଦଢ଼ନାୟକେନ ସହ ତଥୈବ
 କ୍ରୀଡ଼ତି ଅନନ୍ତରଂ ତସ୍ୟାଭର୍ତ୍ତା ଗୋପୋଗୋଷ୍ଠାତ୍‌ ସମାଗତଃ
 ତମାଲୋକ୍ୟ ଗୋପ୍ୟୋକ୍ତଂ ଦଢ଼ନାୟକ ଧ୍ବଂ ଲଗୁଡ଼ଂ ଗୃହୀତ୍ବା
 କୋପଂ ଦଶୟନ ସତ୍ବରଂ ଗଚ୍ଛ । *****

ଅନନ୍ତର ଏକ ଦିନ ସେ ଦଣ୍ଡ ନାୟକେର ପୁତ୍ରେର ସହିତ କ୍ରୀଡ଼ା
 କରିତେହିଲ ପରେ ଦଣ୍ଡନାୟକ ଓ କ୍ରୀଡ଼ା କରିବାର ନିମିତ୍ତେ ସେ
 ସ୍ଥାନେ ଆଇଲ ତାହାକେ ଆସିତେ ଦେଖିଯା ତାହାର ପୁତ୍ରେକେ
 ଡୋଲେତେ କେଲିଯା ଦଣ୍ଡନାୟକେର ସହିତ ସେହି ପ୍ରକାରେହି କ୍ରୀଡ଼ା

করিতেছে অনন্তর তাহার ভর্তা গোপ গোষ্ঠহইতে আইল
তাহাকে দেখিয়া গোপী কহিল হে কোটাল তুমি লণ্ড
লইয়া ক্রোধ দেখাইয়া শাস্ত্র যাও।

One day, as she stood playing with the magistrate's son, she happened to see his father coming towards them; upon which hiding the young man in the barn, she began to amuse herself with the justice himself. In the mean time, however, the husband making his appearance, she hastily told the magistrate to take a stick in his hand, and depart in a hurry, and with his eyes flaming, as it were, with anger.

মথা তেনানুষ্ঠিতে গোপেন গৃহমাগত্য भार्या पृष्ट्वा केन
कार्येन दण्डनायकः समागत्यात्र स्थितः । सा ब्रूते
अथं केनापि कार्येन पुत्रस्योपरि क्रुद्धः स च भार्यमाणो
प्यत्रাগत्य प्रविष्टः मया कुशुले निःक्षिप्य रक्षितः । तत्
पित्रा चान्निध्यात्र न दृष्टः अतएवायं दण्डनायकः क्रुद्ध
एव गच्छति ततः सा तत्पुत्रं कुशुलाद्वहिष्कृत्य दर्शित
वती ॥ तथा चोक्तं ॥ आहारोद्दिगुणः स्त्रीणां बुद्धिस्ता
सां चतुर्गुणा । षड्गुणो व्यवसायश्च कामश्चाष्ट गुणः
स्मृतः ॥ अतोऽहं ब्रवीमि उत्पन्नेष्वपि कार्येषु इत्यादि।
करटको ब्रूते अस्त्वेवं किन्त्वनयोर्महानन्योन्यनिसर्गे।
पजातस्त्रेहः कथं भेदयितुं शक्यः दमनको ब्रूते उपायः
क्रियतां ॥ तथा चोक्तं ॥ उपायेन हि यच्छक्यं न तच्छक्यं
पराक्रमैः । काक्या कनकसूत्रेण कृष्णसर्पे। निपातितः ॥

কোটাল সেই পুকার করিলে পরে গোপ গৃহেতে আসিয়া
পত্নীকে জিজ্ঞাসিলেক কি নিমিত্তে দণ্ডনাযক এ স্থানে আসি
য়াছিল সে কহিতেছে এ ব্যক্তি কোন কার্যের নিমিত্তে
পুত্রের উপর ক্রুদ্ধ হইয়াছে সে পুত্র ও তাড়মান হইয়া এখা
নে আসিয়া পুৰিষ্ট হইয়াছে আমি তাহাকে ডোলে ফেলিয়া
রাখিয়াছি। তাহার পিতা অশ্বেষণ করিয়া দেখিতে পাইল
না এই নিমিত্তে এ কষ্ট হইয়া যাইতেছে তাহার পর সে
কোটাল পুত্রকে ডোলহইতে বাহির করিয়া দেখাইল। তাহা

পণ্ডিতকর্তৃক কথিত আছে স্ত্রী লোকেরদিগের আহার দ্বিগুণ
বুদ্ধি চতুগুণ ব্যবসায় ছয়গুণ কাম অষ্টগুণ অতএব আনি
বলিকার্য্য উপাশ্রিত হইলে যাহার বুদ্ধি নষ্টা না হয় ইত্যাদি।
করটক বলিতেছে এই পুকার হউক কিন্তু ইহারা পরস্পর
স্বভাবেতে উপজাত অতিবড় স্নেহ কি পুকারে ভেদ করা
ইতে সমর্থ হইবে দমনক বলিতেছে উপায়কর পণ্ডি
তেরা তাহা কহিয়াছেন উপায়েতে যাহা করিতে শক্য হয়
বিক্রমেতে তাহা করিতে শক্য হয় না যেমন কাকী স্বর্ণ
সূত্রের দ্বারা কাল সপর্কে নষ্ট করিয়া ছিল।


This being done accordingly, the farmer came up to his wife, and asked her what had occasioned the justicetobe there in such a passion. Why, said the artful woman, you must know, that, for some cause orother, he isangry with his son, who flying here for protection, I concealed him in the barn; but the father coming, and not finding him, is gone away in a rage. Saying this, she conducted her young gallant from the barn, and introduced him to her husband, according to this saying.

What women eat, we are told, is two-fold; their cunning four-fold; their perseverance six-fold; and their passions eight-fold.

Wherefore, I repeat,—*The understanding &c.*

Be it so, replied, Karataka; but how will it be possible to dissolve the ingrafted friendship which subsists between them. Some artifice must be thought of, replied Damanaka; according to this saying:

That may be effected by stratagem, which could not be effected by strength. A female crow, by means of a golden chain, caused the death of a black serpent.

করটকঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ । দমনকঃ কথয়তি
 কস্মিন্স্থিতরৌ বায়সদম্পতী নিবসতঃ তয়োশ্চাপত্যানি
 তত্‌কোটরাবস্থিতানি কৃষ্ণাসপেঁঞ খাদিতানি । ততঃ
 পুনর্গর্ভবতৌ বায়সৌ বায়সমাহ নাথ ত্যজ্যতাময়ং তস্মৈ
 স্বত্রাবস্থিতকৃষ্ণাসপেঁঞাবযোঃ সন্ততিঃ সততং ভক্ষ্যতে
 ॥ যতঃ ॥ দুষ্টা भार्या शठं मित्रं भृत्याश्चेत्तरदायकाः॥
 সসপেঁচ গৃহে বাসোমৃত্যুরেব ন সংশয়ঃ ॥ বায়সোব্রূতে প্রিয়ে
 ন ভেতব্যং বারে বারং ময়েতস্য মহাপরাধঃ সোড়ঃ ইদানীং
 পুনর্ন চিন্ত্যঃ । বায়স্যাহ কথমেতেন বলবতা সার্দ্ধং
 ভবান্ বিগ্রহিতং সমর্থঃ । বায়সোব্রূতে অলমনয়া
 শঙ্কয়া ॥ যতঃ ॥ बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्वुद्धेस्तु कुतोबलं ।
 পশ্য সিংহোমদোন্মত্তঃ শশকেণ নিপাতিতঃ ॥ বায়সৌ বি
 হস্যাহ কথমেতৎ বায়সঃ কথয়তি । **

করটক জিজ্ঞাসা করিতেছে এ কি গুণ্ডার। দমনক কহিতেছে
 কোন এক বৃক্ষেতে কাকদম্পতী বাস করে বৃক্ষকোটরে
 স্থিত তাহারদিগের সম্ভান সকলকে কালসপেঁতে খায় ।
 তদনন্তর পুনর্বার কাকী অন্তরাপতা হইয়া কাককে কহিল
 হে স্বামি এই বৃক্ষ ত্যাগ কর এই তরুতে অবস্থিত কৃষ্ণসর্প
 সর্বদা আমরদিগের সম্ভানকে ভক্ষণ করে যেহেতুক ভুট্টা জী
 খল মিত্র গুণ্ডান্তরদায়ক দাস আর সর্পের সহিত বর্তমান
 গৃহেতে বাস এই সকল নৃত্যর বন্ধন ইহাতে সম্বন্ধ নাই ।

বায়স বলিতেছে হে পুয়ে ভয় কর্তব্য নয় মুহূৰ্ত্ত আমি
ইহার অতিশয় অপরাধ সহিয়াছি সম্প্রতি আর ক্রমা কর্তব্য
নয় । বায়সী কহিল কিপুকারে এই বলবানের সহিত তুমি
যুদ্ধ করিতে সমর্থ হইবা । কাক কহিতেছে এ শঙ্কা বৃথা
যেহেতুক যাহার বুদ্ধি তাহার বল নির্বুদ্ধির কোথায় বল
দেখ শশককর্তৃক মদোদ্বস্ত সিংহ বিনাশিত হইল । কাকী
কহিল ইহা কি পুকার । কাক কহিতেছে ।

How was this brought about? demanded Karataka; and Damanaka told the following story.

FABLE VI.

THE female companion of a crow resided in a certain tree, where she had young ones; but they were all devoured by a black serpent, who concealed himself in the hollow of its trunk. Now, finding herself breeding again, she said to her mate,—My dear, let us abandon this tree; for we shall never be able to raise any of our offsprings, because of that vile black serpent; for, you know,

A bad wife, a false friend, servants who give pert answers, and living in a house infested by serpents, is death, as it were, inevitable.

My dear, replied the crow, thou shalt have no farther cause to be alarmed. I have pardoned his offence again and again; but this time he shall be prevented. How, husband, said the female, wilt thou be able to contend with one so powerful? Never fear, answered her mate;

He who hath sense hath strength. Where hath he strength who wanteth judgment? See how a lion, when intoxicated with anger, was overcome by a rabbit.

How was that? demanded the female; and the crow related the following tale:

ଅସ୍ତି ମନ୍ଦ୍ରନାମ୍ନି ପର୍ବତେ ଦୁର୍ଦ୍ଦାନ୍ତୋନାମ ସିଂହ: ସର୍ବ ସର୍ବଦା
 ପଶୁନାଂ ବଧଂ କୁର୍ବନ୍ନାସ୍ତି । ତତ: ସର୍ବୈ: ପଶୁଭିର୍ମିଳିତ୍ବା ସ ସି
 ହୋ ବିଶ୍ରାନ୍ତ: ସୃଗେନ୍ଦ୍ର କିମର୍ଥମେକଦା ପଶୁଘାତ: କ୍ରିୟତେ ଯଦି
 ପ୍ରସାଦୋ ଭବତି ତଦା ବୟମେବ ଭବଦାହାରାୟ ପ୍ରତ୍ୟହମେକୈ
 କପଶୁମୁପଘୈକଧାମ: । ତତ: ସିଂହେନୋକ୍ତଂ ଯଦେତଦଭିମତଂ ଭବ
 ତାଂ ତର୍ହି ଭବତୁ ତତ: ପ୍ରଭୃତି ଏକୈକଂ ପଶୁମୁପକାଳ୍ପିତଂ ଭକ୍ତ୍ୟ
 ନ୍ନାସ୍ତି ଅଥ କଦାଚିତ୍ ଦୃଢ଼ଶଶକସ୍ୟ ବାର: ସ ମାୟାତ: ସୋ
 ଽଚିନ୍ତୟତ୍ । ନାସହେତୋର୍ବିନୀତିସ୍ତୁ କ୍ରିୟତେ ଜୀବିତାଶ୍ରୟା ।
 ପଞ୍ଚତ୍ବଂ ଶେଢ଼ମିଷ୍ଠାମି କିଂ ସିଂହାନୁନୟେନ ମେ ॥ ତନ୍ମନ୍ଦଂ ମନ୍ଦଂ
 ଗଚ୍ଛାମି ତତ: ସିଂହୋପି କ୍ତୁଧାପୋଡ଼ିତ: କୋପାନ୍ତମୁବାଚ
 କୁମରଂ ବିଲମ୍ବ୍ୟ ସମାଗତୋସି ।

ମନ୍ଦ୍ର ନାମ ପର୍ବତେ ଦୁର୍ଦ୍ଦାନ୍ତ ନାମେ ଏକ ସିଂହ ଥାନ୍ତେ ସେ ନିରନ୍ତର
 ପଶୁମାନଙ୍କର ବଧ କରେ । ଅନନ୍ତର ସକଳ ପଶୁମାନେ ମିଳିମିଶ୍ରି
 ସିଂହଙ୍କ ନିବେଦନ କରନ୍ତି ଯେ ସିଂହ କି ନିମିତ୍ତେ ଏକ କାଳେ
 ତେହି ପଶୁମାନଙ୍କର ବଧ କର ଯଦି ଅନୁଗ୍ରହ ହୁଏ ତବେ ଆମମାନେ
 ଆପନଙ୍କର ଆହାରର ନିମିତ୍ତେ ମୁଁ ତାହା ଏକ ପଶୁ ଉପାଟିକା
 ଦେଇ ଅନନ୍ତର ସିଂହ ବଳିନ ତୋମାନଙ୍କର ଯଦି ଏହି ଅଭିମତ
 ତବେ ତାହାହିଁ ଉକ୍ତ ତଦବଧି ସେହି ସିଂହ ଏକ ପଶୁ ଉପାଟିକା
 ଭଜନ କରନ୍ତ ଥାନ୍ତେ । ଅନନ୍ତର ଏକ ଦିବସ ଏକ ବୃକ୍ଷଶାଖା
 ଖାଲି ଆସିଲା ସେ ଚିନ୍ତା କରନ୍ତି ଜୀବିତାଶାହେତୁକ ଭୟପୁରୁଷ

বিনয় করে যদি পঞ্চত্বই পাইব তবে সিংহের অনুময়েতে
আমার কি পুয়োজন এইহেতুক মন্দ করিয়া গমন করি।
তাহার পর সিংহ ও ক্ষুবর্ত হইয়া কোপেতে তাহাকে
কহিল কি নিমিত্তে তুই এত বিলম্ব করিয়া আসিতেছিস্ ।

FABLE IX.

Upon the mountain Mandara, there lived a lion, whose name was Durdānta, who was perpetually complying with the ordinance for animal immolation, so that, at length, all the different species assembled, and, in a body, represented, that as by this present mode of proceeding, the forest would be cleared all at once, if it pleased his highness, they would, each of them in his turn, provide him an animal for his daily food, and the lion gave his consent accordingly. So every beast delivered his stipulated provision, till at length, it coming to the rabbit's turn, he began to meditate in this manner—For the sake of our own souls, and in hope of life, homage is paid: but if I must meet this fate, what need have I to respect the lion! Then I will approach him slowly, as if fatigued. The lion, by this time, began to be very hungry; so, seeing the rabbit coming towards him, he called out in a great passion,—What is the reason thou comest so late?

શશકો બ્રવોત્ દેવ નાહમપરાધ્યઃ આગચ્છન્ પથિ સિંહાન્ત
રેણ વલાદૃતઃ તસ્યાગ્રે પુનરાગમનાય શપથં કૃત્વા સ્વામિ
નં નિવેદયિતુમત્રાગતોસ્મિ । સિંહઃ સકોપમાહ સત્વરં ગ
ત્વા દુરાત્માનં દર્શય ક્વા સ દુરાત્મા તિષ્ઠતિ તતઃ શશકર્તા
ઝહીત્વા ગમોરકૂપં દર્શયિતું ગતઃ તત્રાગત્ય સ્વયમેવ પશ્ય
તુ સ્વામીત્યુક્ત્વા તસ્મિન્ કૂપજલે તસ્ય સિંહસ્યૈવ પ્રતિવિમ્બં
દર્શિતવાન્ તતોઽસૌ પ્રકટિતદંઘ્રાનલપ્રકરકમ્પિતસ્ત
બ્ધકેસરઃ ક્રોધાત્ધ્માતોદર્પાન્તસ્યોપરિ આત્માનં નિઃસ્રિ
પ્ય પશ્ચત્વં ગતઃ અતોહં બ્રવોમિ બુદ્ધિર્યસ્યેત્યાદિ । વાય
સ્યાહ શ્રુતં મયા સર્વં સમ્પ્રતિ યથા કર્તવ્યં તદ્બૂહિ વાય
સોઽવદત્ અત્રાસન્ને સરસિ રાજપુત્રઃ પ્રત્યહમાગત્ય સ્નાતિ
સ્નાનસમયે તદક્ષાદવતારિતતીર્થશિલાનિહિતકનક
સૂત્રં ચઙ્ચા વિધૃત્યાનીયાસ્મિન્ કોટરે ધારયિષ્યસિ । *

શશક વાલન મહારાજ આમિ અપરાધી નહે પાથેતે આગ
મન કરત અનાસિંહ કર્તૃક વલેતે ધૃત હૈયાહિમાન
તાહાર જાક્ષાતે પૂનઃ આગમનેર નિમિત્તે દિવ્ય કરિયા
પુત્રુકે નિવેદનકરિતે એથાને આઈલામ સિંહ કષ્ટે હૈયા
કહિન શાઘુ ગિયા દેખા સે દુષ્ટાઆ કોથા થાકે તાહારગર
શશક તાહાકે લઈયા એક ગભીર કૂપ દેખાઈવાર નિમિત્તે
ગેલસેથાને યાઈયા પુત્રુ આપનિ દેખુન હૈયા કહિયા સેઈ
કૂપ જલે સિંહ આપનારિ પુતિવિશ્વ દેખિન અનન્તર એ

সিংহ কোপেতে কম্পিত হইয়া অহঙ্কারেতে তাহার উপরে
আপনি ঝম্পা দিয়া পঞ্চত্ব পাইল। অতএব আমি বলি যা
হার বুদ্ধি তাহার বল ইত্যাদি। বায়সী কহিল আমি সকল
শুনিলাম ইদানী যে পুকার কর্তব্য তাহা বল বায়স কহিল
এই সন্নিধিবর্ত্তি সরোবরে রাজপুত্র^১ পুতাহ আসিয়া স্নান
করেন স্নান কালে তাঁহার শরীরহইতে নামিত জল সমীপস্থ
পুস্তারতে স্থাপিত স্বর্ণসূত্র চক্ষুতে করিয়া ধরিয়া আনিয়া এই
কোটরে রাখিবা।

Please your highness, said the rabbit, as I was coming along, I was forcibly detained by another of your species; but having given him my word, that I would return immediately, I came here to represent it to your highness. Go quickly, said the lion in a rage, and shew me where this vile wretch may be found! Accordingly, the rabbit conducted the lion to the brink of a deep well, where being arrived,—There, said the rabbit, look down and behold him; at the same time he pointed to the reflected image of the lion in the water; who, swelling with pride and resentment, leaped into the well, as he thought, upon his adversary, and thus put an end to his life. I repeat, therefore, *He who hath sense &c.*

I have attended, said the female, to all this; and now, do as thou shouldest do in this matter. Every day, observed the crow, the king's son comes to bathe in the adjacent pool: do thou take up his necklace of gold which shall take off, and lay upon a stone on the bank, and drop it into the hole where the serpent is.

অথ কদাচিত্ স্নাতুং জলং প্রবিষ্টে রাজপুত্রৈ বায়স্যা তদনু
 স্তিতং অথ কনকমূত্রানুসরণপ্রবৃত্তৈ রাজপুরুষৈস্তত্র তরু-
 টরে কৃষ্ণসর্পো দৃষ্টো অ্যাপা দিতস্ত্ব অতোঃহং ব্রবামি উপা-
 ধেনহি যচ্ছক্যমিত্যাदि । করটকো ব্রুতে যদেবং তর্হি গচ্ছ
 ভবন্ শিবাশ্তে সন্তু পত্যাগঃ । ততো দমনকঃ পিঙ্গলক
 সমীপং গত্বা প্রণম্যোবাচ দেব অত্যধিকং কিসাপ মহা
 ভয়কারি কার্য্যং মন্যমানঃ সমাগতোস্মি ॥ যতঃ ॥
 আপদ্যুন্মার্গগমনে কার্য্যকালাত্যয়েযু চ। কল্যাণবচনং
 ব্রূয়াদপৃষ্টোপি হিতো নরঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ ভোগস্য ভাজনং
 রাজা ন রাজা কার্য্যভাজনং । রাজকার্য্যপরিধ্বংশী মদ্বী
 দোষেণ লিপ্যতে ॥ তথা হি পশ্য অমাত্যানা মেষ ক্রমঃ ॥

অনন্তর কোন দিন স্নান করিবার নিমিত্তে রাজভগ্নার জলে
 পুবেশ করিলে কাকী তাহা করিল । পরে রাজপুরুষেরা স্বর্ণ
 সূত্রের অনুেষণ করিতে গিয়া সেই বৃক্ষকোটরে কোন সর্পকে
 দেখিল এবং মারিল । অতএব আমি বলি উপায়েতে যাহা
 করিতে শক্ত হয় ইত্যাদি । করটক বলিতেছে যদি এইরূপ
 তবে তুমি গমন কর তোমার পথে মজ্জলহউক । অনন্তর দমন
 নক পিঙ্গলকের নিকট গিয়া পুণাম করিয়া কহিল হে মহা
 রাজ অতিশয় কোন মহাভয়জনক কার্য্য জানিয়া আই
 নাম যেহেতুক বিপৎকালেতে এবং উপপথগমন জনয়েতে

এবং কার্যকালের অতিক্রমণে সুহৃৎলোক জিজ্ঞাসিত
না হইলে ও মন্ত্রন বাক্য কহিবক অপর রাজা ভোগের পাত্র
কার্যের পাত্র নহে রাজকর্ম্মনষ্ট কারক মন্ত্রী দোষেতে
লিপ্ত হয় তাহা দেখ মন্ত্রিরদিগের এই ক্রম ।

Some time after, when the king's son was bathing in the pool, the female crow did as she was directed, and the people sent to look after the golden chain found it in the hole, and killed the serpent. Wherefore, *I say that may be effected by stratagem, &c.* If it be so, replied Karataka, go, and may thy ways be prosperous!

Damanaka, accordingly, went into the presence of Pingalaka; and having respectfully bowed, he addressed him in these words: please your highness, I am come upon an extraordinary piece of intelligence which, in my opinion, is not auspicious; for,

He who hath another's welfare at heart should, in cases of calamity, erring from the right path, or when time and opportunity are passing away, declare his wholesome counsel, even unasked.

Again:

The sovereign being a vessel for the distribution of happiness, and not for the execution of affairs, the minister who shall bring ruin upon the business of the state is a criminal.

They say also, speaking of ministers:

ধরং প্রাণপরিত্যাগঃ শিরসোবাপি কৰ্ত্তনং । ন তু স্বামি
 পদাভ্যুপাতিপাতকেচ্ছোরপেত্ৰণং ॥ পিঙ্গলকঃ সাদরমাচ্ছ
 অথ ভবান্ কিম্বক্তুমিচ্ছতি । দমনকোব্রূতে দেব
 সঞ্জীবকস্তবোপরি অসদৃশব্যবহারীব লক্ষ্যতে তথা
 চাক্ষুসম্নিধানে শ্রীমদেবপাদানাং শক্তিবয়নিন্দাং কৃत्वा
 রাজ্যমেবাভিলষতি এতচ্চুত্বা পিঙ্গলকঃ সমর্থ
 সাশ্চর্য্যং মত্বা তূষাণীং স্থিতঃ দমনকঃ পুনরাহ দেব
 সৰ্ব্বামাত্যপরিত্যাগং কৃत्वा একএবাযং যস্ত্বয়া সৰ্ব্বাধি
 কারী কৃতঃ স এবদোষঃ ॥ যতঃ ॥ অত্যুক্তিতে মন্নি
 যার্থিবে চ বিষ্টম্ভ পাদাবুপতিষ্ঠতে শ্রীঃ । সা স্ত্রীস্বভা
 বাদসহাভরস্য তयोर्द্বयोरेকतरং জহাতি ॥ *❀*

পুণ্য পরিত্যাগ ও ভাল মন্তকচ্ছেদন ও ভাল স্নানির পুণ্য
 পুণ্যকপ পাতককে ইচ্ছা করে যে লোক তাহার উপেক্ষা
 করা ভাল নয় । পিঙ্গলক আদর করিয়া কহিল ইহার পর
 তুমি কি বলিতে ইচ্ছা করিতেছ দমনক বলিতেছে হে মহা
 রাজ সঞ্জীবককে তোমার উপর অনুগম্য ব্যবহারির ন্যায়
 দেখিতেছি আর আমাদের সাক্ষাতে জীবিত মহারাজের চর
 ণেরপুণ্য উৎসাহ মন্তকপশক্তিভয়ের নিন্দা করিয়া রাজত্ব
 বাঞ্ছা করিতেছে । ইহা শুনিয়া পিঙ্গলক ভীত হইয়া চমৎ
 কার মানিয়া চুপ করিয়া থাকিল দমনক পুনশ্চ বলিল

হে পুভো সমস্ত মন্ত্রিদিগেকে ত্যাগ করিয়া এক এই সঞ্জী বককে যে তুমি সর্বাধিকারী করিয়াছ সেই দোষ রাজা ও মন্ত্রী অতুষ্টিত হইলে সম্পত্তি পাদদ্বয়কে অবলম্বন করিয়া থাকেন সে সম্পত্তি স্ত্রী স্বভাবহেতুক ভর না সহিতে পারিয়া তাহার দুয়ের মধ্যে অন্য তরকে ত্যাগ করেন ।

Cutting off the head, or forsaking life, is better than negligence, from the wicked lust of obtaining the station of the master.

The lion then graciously asked him, what it was that he wished to represent; and Damanaka replied,—Please your highness, this same Sang-jivaka is not such a faithful servant to thee, but that he can speak disrespectfully of thy three powers (resolution, authority, and good counsel) in my presence; and I know he has even an inclination for the sovereignty. Upon hearing these words, the lion was greatly alarmed, and remained in silent astonishment; whilst Damanaka continued thus: your highness, in dismissing all your ministers, and appointing this bull to the superintendence of all affairs, has committed a great error. It is said,

When both the sovereign and the minister are very highly exalted, Sree (Fortune) standeth tottering with both her legs. That female, by nature, being unable to support so great a load, is obliged to forsake one of the two.

সিংহো বিমৃশ্যাচ্ছ ভদ্র যদ্যপি এবং তথাপি সঞ্জীবকেন সহ
মম মহান্ স্নেহঃ ॥ পশ্য ॥ কুর্ধ্বন্নপি ব্যলোকানি যঃ প্রিয়ঃ
প্রিয়এব সঃ ॥ অশ্লেষদোষদুষ্টোপি কাযঃ কস্য ন বল্লভঃ ॥
অন্যচ্চ ॥ অপ্রিয়াণ্যপি কুর্বাণো যঃ প্রিয়ঃ প্রিয়এব সঃ ॥
দগ্ধমন্দিরসারেপি কস্য বজ্জাবনা দরঃ ॥ দমনকঃ পুন
রে বাহু দেব স এবাতিদোষঃ ॥ যতঃ ॥ যস্মিন্নেবাধিকং চতু
রারোহয়তি পার্থি ॥ ১ ॥ তুতে মা ত্যে প্যুদা গোনে স লক্ষ্ম্যাশ্রী য
তে জনঃ ॥ শ্রুণু দেব ॥ অপ্রিয়স্যাপি পথ্যস্য পরিণামঃ সুখা
বহঃ ॥ বঁক্কা যোতা চ যত্রাস্তি রমন্তে তত্র সম্পদঃ ॥
ত্বয়া চ মূলভৃত্যানপাশ্রয়মাগন্তুকঃ পুরচ্ছৃতঃ এতচ্ছানু
চিতং কৃত ॥ যতঃ ॥ মূলভৃত্যান্ পরিত্যজ্য নাগন্তুন্ প্রতি
যাল্লভেৎ ॥ নাতঃ পরতরা দোষো রাজ্যভেদকরো যতঃ ॥ সিংহো
ব্রুতে কিমাশ্চর্য্যমযা যদমথবাচং দত্বানীতঃ সংবর্হিতস্ব

সিংহ বিবেচনা করিয়া কহিল ভাল যদ্যপি এমন তথাপি
সঞ্জীবকের সহিত আমার বড় প্রীতি দেখ যে পুিয় সে অপিয়
কর্ম করিলে ও পুিয়ই থাকে অনেক দোষেতে নিগুহইলে ও
শরীর কাহার পুিয় না হয় আর অত্যন্ত অপিয় কার্য্য করিয়া
ও পুিয় হইতেছে দেখ উত্তম গৃহদাহ করিলে ও অগ্নিতে কা
হার আদর নাই । দমনক পুনর্বার কহিল হে মহারাজ সেই
বড় দোষ যেহেতুক নৃপতি যে পুণ্ড্রিতে বা অমাত্যেতে কিম্বা
উদাসীনেতে চক্ষুকে অধিক আরোহণ করণ সে লোক সম্প্র

স্ত্রির আশ্রয় হয় শুন হে মহারাজ অপূর্য অথচ পথ্য ইহার শেষ সুখ দায়ক হয় ঘাছাতে বজ্রা ও শ্রোতা থাকে তাহাতে ঐশ্বর্য্য ক্রীড়া করে তুমি পুধান দাসেরদিগকে পরিত্যাগ করিয়া আগন্তুকের পুরস্কার করিয়াছ ইহা অনুচিতকরিয়াছ যেহেতুক মূলভূতেরদিগকে পরিত্যাগ করিয়া আগন্তুককে পুতিপালন করিবেনা কেননা ইহাহইতে আর বড় দোষ নাই যেহেতুক রাজত্বের নষ্ট কারি। সিংহ বলিতেছে কি চমৎকার আমি অভয় বাক্য দিয়া আনিয়াছি এবং বাটাইয়াছি।

The lion having considered for a moment, replied,—
'Tis well; but provided it be as thou representest, still I have a great regard for Sangjivaka, and observe, that

He who is dear to one, is dear even in the very commission of a fault. When the materials of a house are burnt, upon whose fire falleth disgrace?

Please your highness, said Damanaka, that even should not be; but it is true, that

The man on whom the sovereign placeth an extraordinary degree of regard is the favourite of fortune; whether he be a son, a minister, or a stranger.

And please to observe,

To the unkind the ruin of the worthy bringeth delight. Fortune delighteth to be where there is a babblers, and a listener.

And thus a primitive servant is neglected, and a stranger promoted. They say,

A prince should not, because of the offence of an old servant, entertain a stranger, lest, between them disensions be created in the state.

Thy words, exclaimed the lion, fill me with astonishment! Didst thou not thyself quiet my apprehensions, and present him to me?

তত্ কথং মহ্যং দ্রুহ্যতি। দমনকো ব্রূতে দেব।। দুর্জনো নার্জবং
 য়াতি সেব্যমানোপি নিত্যশঃ। স্বেদনাভ্যজ্ঞনোপাধৈঃ শ্বপু
 চ্ছমিব নামিতং ॥ অপরঞ্চ ॥ স্বেদিতো মর্দিতশ্চৈব রজ্জু
 মিঃ পরিবেষ্টিতঃ। মুক্তো দ্বাদশভির্বর্ষৈঃ শ্বপুচ্ছঃ প্রকৃতিং
 গতঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ বর্জয়ন্ বাঘ সন্মানং খলানাং প্রীতয়ে
 কৃতঃ। ফলন্ত্যমৃতসেকেপি ন পথ্যানি বিষদ্রুমাঃ ॥
 অতোঃহং ব্রবীমি ॥ অষ্টোপি দ্বিতং ব্রূয়াৎ তস্য নেচ্ছেৎ
 পরাভবং। এষ এব সত্যং ধর্মো বিপরীতমতোঃ ন্যথা ॥
 তথা চোক্তং ॥ সস্তিগ্ধোঃ কুশলান্নিবারয়তি যস্তত্ কর্ম
 যন্নির্মলং সা স্ত্রী যানুবিধায়িনী স মতিমান্ যঃ সঙ্গি
 রভ্যর্চ্যতে। সা শ্রীর্থা ন মদং करोতি স সুখী যস্তৃষ্ণয়া
 মুচ্যতে তন্মিত্রং যদক্সত্রিমঃ স পুরুষো যঃ স্থিত্যতে নেन्द्रিযৈঃ।

তবে কি পুকারে আগাকে নষ্ট করিতে ইচ্ছা করে। দমনক
 বলিতেছে হে মহারাজ নিরন্তর সেব্যমান হইলে ও দুষ্ট লোক
 সারল্য পায় না। যেমন তাপ ও তৈলাদি মর্দন দ্বারা অগ্নির
 লাজুল কখন সোজা হয় না অপর অগ্নির পুচ্ছ স্বেদিত ও
 মর্দিত ও রজ্জুকরণক বেষ্টিত হইলে ও দ্বাদশ বর্ষের পর মুক্ত
 হইলে পুনশ্চ আপনার স্বভাবকে পায়। এব° সম্মানকে
 বাটাইলে ও খলের পুীতির নিমিত্ত কোথায় যেমন বিষ
 বৃক্ষ সুধাসিক্ত হইলে ও পথ্যকে পুসব করে না। অতএব
 আমি বলি যাহার পরাজয় ইচ্ছা না করিবেক তৎকর্তৃক

জিজ্ঞাসিত না হইলে ও হিত ব্যাক্য বলিবেক উত্তম লোকে
রদিগের এই ধর্ম যাহার পরাজয় ইচ্ছা করিবেক তৎক
তৃক পৃষ্ট হইলে ও অধম লোক হিত কহিবে না পণ্ডি
তেরা তাহা কহিয়াছেন যে লোক অমঙ্গল হইতে বারণ
করে সেই বয়স্য সেই কর্ম যে নির্ঝল সেই স্ত্রী যে সহকা
রিণী সেই বুদ্ধিমান যে পণ্ডিতকর্তৃক সম্মানিত হয় সেই
ঐশ্বর্য্য যে দত্ততা না জন্মায় সেই সুখী যে তৃষ্ণারহিত
সেই নিত্র যে অকৃত্রিম সেই পুরুষ যে ইন্দ্রিয়ের বশ নয়।

How then, now he is promoted, can he meditate evil?

Please your highness, said Damanaka,

The wicked, even whilst receiving favours, incline to their natural dispositions, as a dog's tail, after every art of anointing and chaffing, to its natural bend.

A cur's tail may be warmed, and pressed, and bound round with ligatures, and, after a twelve year's labour bestowed upon it, still it will return to its natural form.

Again:

In gratifying the wishes of men of vicious principles, when shall we find improvement, happiness, and purity? If the tree be poisonous, the fruit is unwholesome, although sprinkled with the water of immortality.

Wherefore, I say,

He who doth not wish another's ruin, should, even unasked, speak to him for his good. This is supreme duty, and the contrary is the opinion of bad men.

For it is declared,

He is kind, who guardeth another from misfortune; that is an action, which is free from impurity; she is a woman, who can command herself; he is a worthy person, who is much respected by good men; he is a minister, who doth not behave with insolence and pride; he is happy; who is forsaken by his passions; that is friendship, which is not feigned; he is a man, who doth not suffer his members and faculties to give him uneasiness.

যদি সঞ্জীবকব্যসনার্হিতোবিজ্ঞাপিতোপি ন নিবর্ত্ততে
 তদস্মদীদৃশি ভৃত্যে ন দোষঃ ॥ তথা চ ॥ নৃপঃ কামাশক্তো
 গণয়তিন কার্য্যং ন চ দ্বিতং যথেষ্টং স্বচ্ছন্দঃ প্রবিচরতি
 মনোঃগজদ্বব । ততোমানধ্মাতঃ সপততি যদা শোকগহনে
 তদা ভৃত্যে দোষান্ চ্যপতি ন নিজং বেত্যবিনয়ং ॥ পিঙ্গ-
 লকঃ স্বগতং । ন পরস্যাপরাধে ন পরেণাং দণ্ডমাচরেৎ ।
 আত্মনাবগতং কৃৎবা বম্নীয়াৎ পূজয়েচ্চ বা ॥ তথা চোক্তা ॥
 গুণদোষাবনিশ্চিত্য বিধির্নয়হনিয়হে । স্বনাশায় যথা
 ন্যক্তোদর্পাত্ সর্পমুখে করঃ ॥ প্রকাশং ব্রূতে তদা সঞ্জীবকঃ
 কিং প্রত্যাदिश्यतां । দমনকঃ সসংমমমাহ দেব সামৈব
 মেতাवता मन्त्रभेदो जायते ॥ তথা হ্যুক্তা ॥ *❀**

সঞ্জীবকের বাসনেতে পাড়িত মহারাজ বিজ্ঞাপিত হইলেও
 যদিও নিবৃত্ত নাহন তবে এতাদৃশ অন্য ভৃত্যেতে দোষ নাই
 তাহাজানি রাজা কামাসক্ত হইয়া কার্য্য গণনা করে না আর
 হিত ও গণনা করে না নতু হস্তির ন্যায় স্বচ্ছন্দ হইয়া
 যথেষ্ট গমন করে অনন্তর অপমানিত হইয়া সে যখন
 শোকরূপ অরণ্যেতে গড়ে তখন ভৃত্যেতে দোষ ক্রোধান
 করে স্বকীয় অবিনয় জানে না । পিঙ্গলক অন্তঃকরণে
 ভাবনা করিলেক যে পরের অপরাধেতে পরের দণ্ড ক-
 রিবে না আপনি জ্ঞাত হইয়া দমন করিবেক কিম্বা সন্মান
 করিবেক তাহা গণিতেরা কহিয়াছেন অহঙ্কারপুষ্ট

সপের মুখেতে হস্তদেওয়া যেমন আপনার নাশেরনিমিত্তে
হয় তেমনি গুণদোষ নির্ণয় না করিয়া অনুগৃহ করা আপন
নাশের নিমিত্ত হয়। গিঞ্জলক স্পষ্ট করিয়া বলিতেছে তবে
সঞ্জীবককে কি আজ্ঞা করিব দমনক সম্মুখেতে বলিল
হে ভূপতে এই পুকার করিবেন না এক্ষণে মন্ত্র ভেদ হয়
তাহা পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন।

But if when all the inconveniences respecting Sangji-
va' a have been pointed out, your highness does not
abandon him, there is no blame in your servant It is
said,

When a prince is attached to his inclinations, he nei-
ther counteth the business which should be done, nor
his own benefit. He proceedeth at liberty, wherever his
passions lead him, like an intoxicated elephant At
length, when puffed up with pride, he falleth into a pro-
found melancholy, he throweth the blame upon his ser-
vants, and doth not discover his own misconduct.

To all this the lion observed.—'Tis said,

One should not lift the rod against our enemies upon
the private information of another, but having, by our-
selves, made inquiry, we may either punish or commend.

They say also,

To seize and punish, before due investigation, may
tend to our own destruction. It is like rashly forcing
one's hand into the mouth of a serpent.

It speaks plainly; nevertheless, shall proclamation be
made that Sangjivaka is guilty of death?

Damanka, a little confounded at this, replied,—Please
your highness, not so by any means, for by such proce-
dure a breach is produced in our secret council, and
they say,

মন্ত্রবীজমিদং গুপ্তং রক্ষণীয়ং যথা তথা । মনাগপি ন
 ভিয়েত তদ্বিত্তং ন প্রোহতি ॥ কিञ্চ ॥ আদরস্য প্রধানস্য
 কৰ্ত্তব্যস্য চ কৰ্ম্মণঃ । ত্ৰিপ্রমক্রিয়মাণস্য কালঃ পিবতি
 তদ্রসং । তদবশ্যং সমারম্ভোমহতা প্রযত্নেন সম্বাদনীযং ।
 কিञ্চ ॥ মন্ত্রোযোধদ্বাধোরঃ সৰ্ব্বাঙ্গৈঃ সৎসতৈরপিচিরং ন
 সহতে স্খ্যাতুং পরেভ্যোভেদশঙ্কয়া ॥ যদ্যসৌ দৃষ্টদোষোপি ।
 দোষান্নিবর্ত্য সম্ব্যাতব্যস্তদতোবানুচিতং ॥ যতঃ ॥ সঙ্কদু
 ষ্টন্তু যন্মিত্রং পুনঃ সম্ব্যাতুনিচ্ছতি । স মৃত্যুমেব গৃহ্ণাতি
 গৰ্ভমশ্বতরো যথা ॥ কিञ্চ ॥ অন্তর্দৃষ্টত্বমায়ুক্তঃ সৰ্ব্বানর্থ
 করঃ কিল । শকুনিঃ শকটরশ্চ দৃষ্টান্তাবত্র ভূপতে ॥
 সিদ্ধোব্রূতে জ্ঞায়তাং তাবত্ কিমস্মাকমসৌ কৰ্ত্তুং সমর্থঃ
 দমনকআহ দেব ॥ অজ্ঞান্জিভাবমজ্ঞাত্বা কথং সামর্থ্য
 নির্ণয়ঃ । পশ্য টিট্টিমমাত্রেন সমুদ্রোব্যাকুলীকৃতঃ ॥

যেকগ অতান্ন ও ভেদ না হয় সেই পুকারে এ মন্ত্ররূপ বীজ
 কে গোপনে রক্ষা করিবে কেননা সে বীজভিন্ন হইলে আর
 অকুর হয় না ॥ আর পুধানের সমাদর ও কর্তব্য যে কৰ্ম্ম তাহা
 শাস্ত্র না করিলে কাল তাহার রস পান করে । সেইহেতুক
 আরক্ত কৰ্ম্ম অতি যত্নেতে সম্পন্ন করা আবশ্যক আর মূর্থ
 যোদ্ধা সৰ্ব্বাঙ্গ আবৃত হইলে ও যেমন শত্রু হইতে ভেদশঙ্কা
 পুষুক্ত চিরকাল যুদ্ধস্থলেতে থাকিতে পারে না এইরূপ মন্ত্র
 সৰ্ব্বাঙ্গ আবৃত হইলে ও শত্রু হইতে ভেদশঙ্কা পুষুক্ত চিরকাল
 থাকিতে পারেনা ॥ আর যদি এ লোক দৃষ্টদোষ হইলে ও

দোষহইতেনিবৃত্তি করিয়া সন্ধি কর্তব্য সে অত্যন্ত অনুপযুক্ত
যেহেতুক একবার দোষেতে দুষ্ট যে মিত্র তাহাকে পুনর্বার
সন্ধিকরিতেষেইচ্ছা করে সে মৃত্যুকেই গৃহণ করে খচরী যেমন
মৃত্যুরনিমিত্তে গর্ভ গৃহণ করে । অপর অন্তঃকরণ দুষ্ট অথচ
কর্মাবান লোক নিশ্চয়সমস্ত অনর্থকারী হেনমহারাজইহাতে
দৃষ্টান্ত শকুন আরশকটার । সিংহ বলিতেছে জান এ ব্যক্তি
আমারদিগের কি করিতে সমর্থ হয় সে বলিল হে মহারাজ
অঙ্গাঙ্গি ভাবনা জানিয়া কি পুকার শক্তির নিশ্চয় হইবে
দেখ টিটিউত পক্ষীমাত্র সমুদুকে ব্যাঘ্রল করিয়াছিল ।

Having sown the seed of secrecy, it should be properly guarded, and not in the least broken; for being broken, it will not prosper.—But, Time drinketh up the essence of every great and noble action, which ought to be performed, and is delayed in the execution.

This being the case, what hath been begun should certainly be prosecuted with the utmost vigour, for, The resolutions of counsel are like a timid warrior, who, although attended by all his troops, beareth not to stand long, for fear of being defeated by the enemy.

But after all, if when his offence shall be proved, he should be pardoned, and still retained, it will be exceedingly improper, for,

He who wisheth to keep a friend after he hath once offended, receiveth death, as the Aswatari the belly.

When a bad man is employed near one, whatever he doeth is unprofitable. The Sakuni and the Sakata may here serve a prince for emblems of such an one.

Let me understand, said the lion, what it is he may be able to do against us; and Damanaka replied in the following lines:

Not knowing the nature of a man's connexions, how shall we discover what he is able to do? The sea was once got the better of by a simple partridge.

সিংহঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ । দমনকঃ কথয়তি ॥ দক্ষিণ
সমুদ্রতীরে টিট্টিভদম্পতী নিবসতঃ তত্র চাসন্নপ্রসবাটি
ট্টিভী মর্ন্তারমাহ নাথ প্রসবযোগ্যস্থানং বিধৃতমনুস
ম্ভীয়তাং । টিট্টিভোঽবদৎ ভাষ্যং নন্বিদমেবস্থানং প্রসূ
তি যোগ্যং ॥ সা ব্রুতে সমুদ্রবেলয়া ব্যাপ্যতে স্থানমেতৎ ॥
টিট্টিভোঽবদৎ কিমহং নির্বলঃ সমুদ্রেণ নিগ্রহীতব্যঃ ।
টিট্টিভীবিহস্যাহ স্বামিস্ত্বয়া সমুদ্রেণ চ মহদন্তরং ॥
অথ বা ॥ পরাভবং পরিচ্ছেতুং যোগ্যা যোগ্যং ন বেতি যঃ ॥
অস্লীহ যস্য বিজ্ঞানং কচ্ছ্রেণাপি ন সীদতি ॥ অপিচ ॥
অনুচিতকার্য্যারম্ভঃ স্বজনবিরোধেবলীযসা স্পর্ধা ।
প্রমদাজনবিশ্বাসোমৃত্যোর্দ্ধারিণি চত্বারি ॥ ততঃ সঙ্ক
চ্ছ্রেণ স্বামিবচনাৎ সা তত্রৈব প্রসূতা এতৎ সর্ব্বং শ্রুত্বা
সমুদ্রেণাপি তচ্ছক্তিজ্ঞানার্থং তদাণ্ডান্যপহৃতানি । *

সিংহ পুশ্ন করিতেছে ইহা কি পুকার । দমনক কহিতেছে ।
দক্ষিণ সমুদ্রতীরে টিট্টিভেরা স্ত্রী পুরুষে বাস করে তাহাতে
পুসব কাল নিকট হইলে টিট্টিভী পতিকে বলিল হে নাথ
পুসবোপযুক্ত নির্জন স্থান অনুসন্ধান কর । টিট্টিভ বলিল হে
পুিয়ে এই স্থানে সে বলিল এস্থান সমুদ্রবেলাকর্তৃক আক্রান্ত
হয় টিট্টিভ বলিল আমি কি দুর্বল যে সমুদ্র আমাকে নিগৃহ
করিবেন টিট্টিভী হাসিয়া বলিল হে আমি তোমাতে আর
সমুদ্রতে বিস্তর অন্তর টিট্টিভ বলিল যে লোক জানেনা
অর্থাৎ যাহার বুদ্ধি নাই সে দুঃখের পরিচ্ছেদ করিতে পারেনা

আর ঘাঁহার বুদ্ধি আছে সে কষ্টেতেও অবসন্ন হয় না অনূপ
যুক্ত কার্যের আরম্ভ ও অন্তরঙ্গের সহিত বিরোধ ও বলব
নের সহিত আশ্চর্য্য ও জীলোকেরদিগেতে বিশ্বাস এই চারি
মূতুর দ্বার^১ অনন্তর পতির বাকাহেতুক সে ঐ স্থানেতেই
পুসব হইল । এই সকল শুনিয়া সমুদ্র ও তাহার মানার্থ
জানিবার নিমিত্তে সেই অণুসকল অপহরণ করিল ।

How was that? demanded the lion; and Damanaka related the following story:

FABLE V.

ONCE upon a time a female partridge, who resided upon the sea shore, finding herself pregnant, said to her mate,—My dear, pray let a private place be sought convenient for me to be brought to bed in. Is not this where we are a proper place for that purpose? demanded the partridge. No, replied the female, because it is frequently overflowed by the tide. What! exclaimed the male, am I so much less powerful than the sea, that I should suffer myself to be insulted, even in my own house? My dear! replied the female, laughing, there is a great difference between thee and the sea; otherwise,

He whose understanding can discern what is, and judge what should, or should not be applied to prevent misfortune, never sinketh under difficulties.

The commencement of an improper thing, quarrel with relations, defiance to the strong, and confidence in the woman, are a doors to death.

After this, however, and in obedience to the commands of her mate, she laid her eggs in the same place, and the sea, to try the power of the partridge, came and carried them off in triumph;

ততচ্চিট্টিভো শোকান্না মর্জারমাহ নাথ কষ্টমাপ্যতং
 তাস্ম্যন্ডানি মে নষ্টানি । চিট্টিভোঽবদৎ প্রিযে মা ভৈষীঃ
 ইত্যুক্তা পল্লিণাং মেলকং কৃत्वा পল্লিস্বামিনোগহুডস্য
 সমীপং গতঃ ॥ তত্র গত্বা সকলবৃক্ষান্সং চিট্টিভেন ভগব
 নোগহুডস্য পুরতোনিবেদিতং দেব সমুদ্রেণাহং স্বমৃচ্ছাম
 স্থিতোবিদ্যাপরাধেনৈব নিমৃচ্ছীতঃ ততস্তদ্বচনমাকর্ণ্য
 গুরুত্বমাতা প্রভুর্ভগবান্ নারায়ণঃ সৃষ্টিস্থিতিপ্রলয়হেতু
 বিজ্ঞপ্তঃ সমুদ্রং অন্ডদানায়াদিদেশ ততোভগবদাজ্ঞা
 মৌলৌ নিধায় সমুদ্রেণ তান্যন্ডানি চিট্টিভায় সমর্প
 তানি অতোঽহং ব্রবীমি অংগাঙ্গিভাবমজ্ঞাত্বা ইত্যাদি ।

তাহার পর চিট্টিভী সোকাতুরা হইয়া ভর্তাকে বলিল হে
 পুণনাথ দুঃখ উপস্থিত হইল আমার সেই অণ্ড নষ্ট হইল
 চিট্টিভ বলিল হে পুিয়ে ভয় করিও না ইহা বলিয়া পক্ষির
 দিগের মিলন করিয়া পক্ষিরদিগের পুধান গৰুড়ের নিকট
 গেল যেখানে যাইয়া চিট্টিভ সকল বৃত্তান্ত ভগবান গৰুড়ের
 অগ্রেতে নিবেদন করিল হে পুভো আপন গৃহেতে অবস্থিত
 আমি অপরোধ ব্যতিরেকে সমুদ্রকর্তৃক নিগৃহীত হইয়াছি ।
 অনন্তর তাহার বচন শুনিয়া সৃষ্টি স্থিতি পুণ্যের কারণ ভগ
 বান্ নারায়ণপুত্রে বিজ্ঞাপিত হইয়া সমুদ্রকে অণ্ডদানের নি

মিত্তে আদেশ করিলেন তাহার পর সমুদ্র ভগবানের আজ্ঞা
মস্তকে করিয়া সে অণু সকল টিউভকে সমর্পণ করিলেন।
অতএব আমি বলি অস্বাভাব না জানিয়া ইত্যাদি।

whereupon, the poor female, overwhelmed with affliction, said to her husband, O master of my heart, what a misfortune has befallen us! The sea has stolen all my eggs! My dear, replied the partridge, do not be alarmed, but wait and see what I am capable of doing. So, upon saying this, he assembled all the other birds, and repaired with them into the presence of the king of birds, and laid their grievance before him; who, having heard it, considered for a moment what he should do.—I will, said he to himself, state the case to the great and mighty lord, Nārāyana, the author of creation, preservation, and destruction, and he will wipe away our sorrows. Accordingly, the eagle, attended by the rest of the birds, addressed their complaint to Nārāyana, saying,—O Lord! Even whilst thou art master, the sea hath dared thus to overwhelm us! The deity having considered their complaint, commanded the ocean to surrender the eggs; and the king of waters placed the high decree upon his crown, and delivered up the eggs accordingly; and the birds having gained what they wanted, returned thanks, and retired to their own abodes. I repeat therefore, *Not knowing &c.*

শাস্ত্রান্নিক্রমমজ্ঞাত্বা বৈরমারমতে দ্বিষঃ । স পরামব
 মাপ্নোতি সমুদ্রমিব তিষ্টিমাৎ ॥ রাজাহ কথমসৌ জ্ঞাত
 ত্যোদ্রোহবুদ্ধিরিতি । দমনকোব্রূতে যদাসৌ সদৰ্পঃ শৃঙ্গা
 যপ্রহরণাভিমুখশ্চকিতমিব আগচ্ছতি তদা জ্ঞাস্যতি
 স্বামো । এবমুক্তা সঞ্জীবকসমীপং গতঃ তত্র গতশ্চ
 মন্দমন্দমুপসর্পন্ বিক্লিতমিবাत्মানমদর্শয়ত্ সঞ্জীব
 কেন সাদরমুক্তাং ভদ্র কুশলং তে । দমনকোব্রূতে অনু
 জীবিনাং কুতঃ কুশলং ॥ যতঃ ॥ সম্যক্তথঃ পরাধীনাঃ
 সদা চিন্তননির্ভৃতং । স্বজীবিতেষ্যবিশ্বাসস্তেষাং যে রাজ
 সেবকাঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ কোথান্ প্রাপ্য ন গর্বিতো বিষয়িনঃ
 কস্মাপদোক্তং গতাঃ । স্ত্রীभिঃ কস্য ন লুণ্ঠিতং ভুবি মনঃ
 কোবাঈ রাজ্ঞাং প্রিয়ঃ ॥ কঃ কালস্য ভুজান্তরং ন চ
 গতঃ কোর্ধী গতো গৌরবং । কোবা দুর্জনবাগুরাসু পতিতঃ
 ক্ষেমেণ যাতঃ পুমান্ ॥ *❀*❀*❀*❀*

রাজা বলিল ইনি হিংসুক ইহা কি পুকারে জানিব দগ
 দক বলিতেছে যখন এই সঞ্জীবক গর্ভিত হইয়া শৃঙ্গাগুরুপ
 শৃঙ্গাভিমুখ হইয়া আসিবেক তখন পুতু জানিবেন । এই
 রূপ করিয়া সঞ্জীবক নিকটে গেল সে স্থানে গিয়া অল্প
 নিকটে গমন করত বিষয়াপন্নের ন্যায় আপনাকে দেখা
 ইল সঞ্জীবক আদর করিয়া কহিল হে মিত্র তোমার মঙ্গল ।
 দমনক বলিতেছে ভূত্যেরদের দমন কোথায় যেহেতুক




যাহারা রাজার আশ্রিত তাহারদিগের সম্পত্তি পরায়ত্ত আর
অন্তঃকরণ সর্বদা দুঃখিত আর স্বকীয় পুণ্যেতে ও অপুণ্যায় ।
অপর কোন লোক ধন পাইয়া অহংকৃত নাইয় আর বিষয়ের
বিপৎ না হয় আর পৃথিবীতে কাহার মন স্ত্রী কতৃক খণ্ডিত
না হয় আর রাজার পুত্র কে হয় আর যনের হস্তদ্বয়ের মধ্যে
কে না যায় আর কোন যাচক গৌরব পায় আর কোন পুরুষ
দুর্জনের পাশেতে পতিত হইয়া মজল পায় ।

How shall we discover,, said the lion, when the bull is maliciously inclined? Your highness, replied Damanaka, will know when you shall behold him coming, with those weapons the tips of his horns pointed towards you, looking as if alarmed. Having said this, he went where Sangjivaka was; and being in sight of him, he advanced by slow degrees, and made himself appear as if agitated by something. Health and happiness attend thee! said Sangjivaka, with great marks of politeness. Alas! replied Damanaka, where is there any happiness for those who are in a state of dependance? For,

The fortunes of those who serve princes are in the power of others; their minds are never at ease; and they have no confidence even in their own lives !

Again:

Who having obtained riches, is not proud? From whose misfortunes do the luxurious become so? Whose heart hath not been tormented by women? Or who is dear to a king? Who is there not within the arms of time? What begger ever arriveth at consequence? Or what man who hath fallen into the snares of the wicked hath escaped in peace?

সঞ্জীবকোনেতান্ সখে ব্রূহি কিমেতৎ । দমনক আহ কিং
 ব্রবীমি মন্দভাগ্যঃ ॥ পশ্য। মজ্জনপি পথোরাশৌ লব্ধ্যা
 সর্পাবলম্বনং । ন মুচ্যতিন ঘাঘন্তে তথা মুগ্ধা স্মি সंप্রতি
 ॥ যতঃ ॥ একত্র রাজবিশ্বাসী নশ্যত্যন্যত্র বাস্তবঃ । কিং
 করোমি ক্ব গচ্ছামি পতিতো দুঃখসাগরে ॥ ইত্যুক্তা দীর্ঘ-
 নিঃশ্বস্যোপবিষ্টঃ সঞ্জীবকোব্রূতে নিত্র তথাপি সুবিস্তারং
 মনোগতমুচ্যতাং । দমনকঃ সুনিমৃতমাহ যদ্যপি রাজ-
 বিশ্বাসো ন কথনীয়স্তথাপি ভবাঃ স্নাদীযপ্রত্যয়াদা-
 গতঃ ময়া পরলোকার্থিনাবশ্যং তব হিতমাখ্যেয়ং শৃণু
 অয়ং স্বামী তবোপরি বিচ্যতবুদ্ধীরহস্যুক্তবান্ সঞ্জীবক-
 মেব হত্বা স্বপরিবারং তর্পয়ামি । ****

সঞ্জীবক কহিলহে সখে বন । দমনক বলিল মন্দভাগ্য
 আমি কি বলিব দেখে সমুদ্রে মজ্জন করিয়া সর্পকে অবলম্বন
 পাইয়া যেমন ভাগ করিতে পারে না ধরিতে ও পারেনা
 সেইরূপ ইদানী আমি মুগ্ধ হইতেছি যেহেতুক এক পুরুষের
 রাজার পুত্রায় নষ্ট হয় অন্যত্র বাস্কর নষ্ট হয় অতএব কি
 করি কোথায় যাই দুঃখার্গবে পতিত হইয়াছি ইহা কহিয়া দীর্ঘ
 নিশ্বাস ফেলিয়া বসিল । সঞ্জীবক বলিতেছে তুমি আমার
 কৃতজ্ঞ তথাপি হে সখে অন্তঃকরণস্থ তাবৎ কহ । দমনক


নির্জনে কহিল যদ্যপি রাজবিদ্বানস্বাক্য অবক্তব্য তথাপি
আমার পুত্রেতে তুমি আসিয়া এ স্থানে আছ সেইহেতুক
পরলোকাথা' আনি তোমার হিত অবশ্য কহিব শুন এইপুত্রে
তোমার উপরে বিকার প্রাপ্তচিত্ত হইয়া নির্জনেতে কহিলেন
মঞ্জীবককে নষ্ট করিয়া নিজপরিবারকে তর্পণ করিব।

Pray, friend, said the bull, inform me what all this means! Oh! my friend, replied he, what shall I say, but that I am very unfortunate!

I am now like one plunged in a deep water calling out for help, who findeth many things hanging down to assist him, which he neither quitteth nor taketh hold of.

Confidence in the prince, all at once, ruineth one friend or other! What shall I do? Whither shall I go? I am fallen into a sea of trouble!

Having said this, he heaved a deep sigh, and sat down; when Sangjivaka desired him to relate, more fully, the cause of his uneasiness, and Damanaka with great shew of secrecy said,— Although it be highly improper to abuse the confidence of one's sovereign, yet, as it was at our instance thou camest, it behoveth me, as I hope for welfare myself hereafter, to inform thee of what concerns thy own welfare. Attend then.—His highness is very much enraged against thee, and has declared in private, that he will have Sangjivaka killed; and that he will treat his attendants with his flesh.

এতচ্ছুত্বা সঞ্জীবকঃ পরং বিধাদমগমত্ দমনকঃ পুন
 রাহ অলং বিধাদেন প্রাপ্তকালকার্যমনুষ্ঠীয়তাং । সঞ্জী
 বকঃ ক্షণং বিমৃশ্যাহ নিশ্চিতমিদমবধীরিতং ॥ যতঃ
 দুর্জনগম্যানার্য্যঃ প্রায়েণাপাত্রমৃদ্ধবতি রাজা । কৃপণানু
 সারি চধনং দেবোগিরিজল্লধিবর্ষী চ ॥ স্বগতং কিং বা দুর্জন
 চেচ্ছিতং ন বেদ্য তদ্ব্যবহারং বিনেতুং ন শক্যতে ॥ যতঃ ॥
 কস্বিদাশ্রয়সৌন্দর্য্যাঙ্কুশে শোভামসজ্জনঃ । প্রমদা
 লোচনন্যস্তং মলীমসমিবাঁজনং ॥ তত্র বিচিন্ত্যোক্তং
 কষ্টং কিমিদমাপতিতং ॥ যতঃ ॥ আরাধ্যমানো নৃপতিঃ
 প্রযত্নাৎ ন তোষমায়াতি কিমত্র চিত্রং । অযং ত্বপূর্ব্ব
 প্রতিমাविशेषो यः सेव्यमानो रिपुतामुपैति ॥ *

ইহা শুনিয়া সঞ্জীবক বড় বিষম্ব হইল দমনক পুনশ্চ কহিল
 বিষম্বতা নিরর্থক কালোপযুক্ত কর্ম অনুষ্ঠান কর । সঞ্জীবক
 কিঞ্চিৎকাল বিবেচনা করিয়া কহিল ইহা নিশ্চয় বটেযেহে
 তুক জীলোকেরা পুায় দুষ্টলোককে গমন করে রাজা পুায়
 অপাত্রপোষকহয় আর ধন পুায় কৃপণানুগত হয় আর দেব
 তা পুায় পর্ব্বতেতেও সমুদেতে বৃষ্টি করেন । মনে পুনর্বার
 বিতর্ক করিল এ আশ্রয়গত কিম্বা খল চেষ্টিত জানিতে পারি না
 তাহার ব্যবহার ও নিকৃপণ করিতে সমর্থ হই না যেহেতুক
 কোন অসাধু লোক আশ্রয়ের সৌন্দর্য্যহেতুক শোভাধারণ

করে যেমন মলিন কজল কামিনীর চক্ষুকে প্লাগু হইয়া
শোভাধারণ করে তাহার পর বিবেচনা করিয়া কহিতেছে
হায় একি কষ্ট পড়িল যেহেতুক অত্যন্ত আয়াসেতে সেব্যমান
নরপতি তুষ্টি পান না এ কি আশ্চর্য্য চমৎকৃত পুতিনা ইনি
যে আরাধ্যমান হইলে বৈরী হন ।

The bull, upon hearing this, became very sorrowful; whilst the artful Damanaka cried,—It is in vain to be melancholy; rather let something be pursued suitable to the occasion. Sangjivaka was thoughtful for a moment and then calmly said,—It is true, for

Women repairth unto bad men, sovereigns, for the most part, are cherishers of the undeserving. Riches are attendants of the miser; and the heavens rain plentifully upon the mountains and the sea !

He again reflected within himself, — I do not know whether this conduct proceeds from himself, or he has been actuated to it by some malicious person. How then the truth of this business be ascertained !

The unfortunate man who possesseth splendour from the glory of him on whom he dependeth, will find it as fatal as a foul collyrium put into the eye by the hand of imprudence.

But when I reflect, how hard is the sentence which hath been pronounced against me !

The king hath been courted with unremitting pains; why then is he not pleased? Herein is the wonder ! This too is a circumstance before unparalleled: one whilst he is served is about to be an enemy !

নদ্যমশক্যার্থঃ প্রমেয়ঃ । যতঃ । নিমিত্তমুদ্दिश्य हि यः
 प्रकुप्यति ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति ॥ अकारणद्वेषि
 मनस्तु यस्य कथं जनस्तं परितोषयिष्यति॥किं मयापकृतं
 राज्ञः अथ वा निर्निमित्तापकारिणश्च भवन्ति राजानः ।
 दमनकोब्रूते एवमेतत् शृणु । विज्ञैः स्निग्धैरुपकृतमपि
 द्वेष्यतामेति कश्चित् साक्षादन्यैरुपकृतमपि प्रीतिमेव
 पयाति । चित्रं चित्रं किमथ चरितं नैकभावाश्चयाणां
 सेवाधर्मः परमगहनोयोगिनामप्यगम्यः ॥ अन्यच्च ॥
 सुकृतशतमसत्सु नष्टं सुभाषितशतं च नष्टमवद्वेषु ।
 वचनशतमवचनकरेषु बुद्धिशतमचेतनेषु नष्टं ॥किञ्च॥
 चन्दनतरुषु भुजङ्गा जलेषु कमलानि तत्र च ग्राहाः।
 गुणघातिनश्च खलाभोगेषु अलं सुखान्यविघ्नानि॥❀*

ইহার পুতিকাৰ অশকাই যেহেতুক যে লোক কোন কারণ
 উদ্দেশ্য করিয়া ক্রোধ করে সে কারণ পাইলে সে লোক
 নিশ্চয় পু সন্ন হয় যাহার নম নিমিত্ত ব্যতিরেকে দ্বেষি হয়
 কি ক্রমে লোক তাহাকে সন্তুষ্ট করিবেক । আর कहिन
 রাজার অপকার আনি কি করিয়াছি কিম্বা রাজার সর্বদা
 অপকারক হয় দমনক বলিতেছে এই পুকার বটে শুন বিজ্ঞ
 মিত্রকর্তৃক উপকৃত হইলে ও কোন লোক শত্রুতাচরণ করে
 আর অন্যকর্তৃক সাক্ষাৎ অপকৃত হইলে ও তুষ্ট হয় অন
 বস্থিতচিত্তের এক আশ্চর্য্য চরিত্র সেবাধর্ম্ম অতিশয়

দুর্জয় যোগিরদের ও অবোধ্য । অপর পাপাত্মাতেপুণ্য
শত নষ্ট মুখেতে শত কথিত নষ্ট অবচনকারিতে বচন শত
নষ্ট অচেতনেতে বুদ্ধি শত নষ্ট হয় অপর ভোগ বিষয়েতে
অতিশয় সুখ পাইয়া খল লোকেরা গুণঘাতক হয় দেখ
চন্দন বৃক্ষেতে সর্পেরা থাকে আর জলেতে কমল হয়
তাহাতে নকরাদি জলজন্তুরা থাকে ।

Then, this may be deemed something inexplicable; but,
The man who, having discovered some unfavourable
token, giveth way to his passions, will certainly fail in
pursuit of it. How shall one give satisfaction to him,
whose mind is displeased without a cause?

What offence have I given to the king ; or are princes
apt to become enemies without sufficient cause?

Damanaka replied,—Thus it is ! Hear me:

Some are discontented, even with the assistance of the
whole body of able men, whilst others are pleased when
offences are committed in their sight. The duties of ser-
vitude are exceedingly profound. they are impractica-
ble, even to those who are in the habit of doing penance;
because those who are not servants for one thing alone,
must submit to be directed by the eye at the sovereign's
will.

A hundred good actions are lost upon the unworthy; a
hundred fine speeches are lost upon the ignorant; a
hundred good qualities are lost amongst men who are
destitute of good qualities; a hundred times speaking
is lost upon those who are not inclined to converse; a
hundred understandings are lost upon the insensible.

Serpents are found upon the sanders tree; in the wa-
ters the lotus flowers with alligators; and in the midst
of full enjoyment those who dispute about the quality.

অন্যস্ব ॥ মূলং ভুজঙ্গৈঃ কুমুমানি ধৃঙ্গৈঃ শাখা প্লবনৈ
 শিখরাণি মল্লৈঃ । নাস্ত্যেব তচ্চন্দনপাদপস্য যন্নাশ্রিতং
 দুষ্টতরৈশ্চ হিংস্রৈঃ ॥ দমনকো ব্রূতে অথং তাবত্ স্খামো বাচি
 মধুরো বিষহৃদযো জ্ঞাতঃ । যতঃ । দূরা দুচ্ছিতপাণি
 রাড্রনয়নঃ প্রোত্সারিতাড্রাসনো গাঢ়ালিঙ্গনতত্পরঃ প্রিয়
 কথাপ্রশ্নেষু দত্তাদরঃ । অন্তর্ভূতবিষো বহ্নির্মধুময়শ্চা
 তীব্রমায়াপটুঃ কৌণামাযমপূর্ব্বনাটকবিধির্ঘঃ শিচ্চিতো
 দুর্জনৈঃ ॥ তথাহি । পোতো দুস্তরবারিরাশিতরণে দীপোন্ম
 কারাগমে । নির্ঘাতে ব্যজনং মদাম্বকরিণাং দর্পোপশান্ত্যৈ
 শ্রুণি । ইত্থং তদ্রূপি নাস্তি যস্য বিধিনা নোপায়চিন্তা
 কৃতা । মন্যে দুর্জনচিত্তট্টিহরণে ধাতাপি ভগ্নোদয়মঃ ॥

বৃক্ষের মূলকে মর্প মকল পুষ্পকে ভুজঙ্গ শাখাকে বানর অগ্নি
 ভাগকে ভল্লুক চন্দনবৃক্ষের আর এমনত জ্ঞান নাহি যে দুষ্ট
 হিংস্রক জন্তু কর্তৃক আশ্রিত না হইয়াছে দমনক কহিতেছে
 এই পুতু নিষ্টেভাষী বিষতুল্যান্তঃকরণ ইহা আমি জানিলাম
 যেহেতুক দূরহইতে উদ্ধতহস্ত এবং মজলচক্ষু এবং অক্ষাগ্ন
 দাতা এবং নির্ভর আলিঙ্গনে তৎপর এবং প্রিয় বাক্যের
 জিজ্ঞাসাতে কৃতাদর এবং চিন্তিতে গুপ্ত বিষ এবং বাহ্যেতে
 মধুনয় এবং অতিশয় মায়া পটু একি চনৎকৃত নর্তনবিধি
 মাঝে দুর্জনেরা শিক্ষা করিয়াছে । তাহা কহিয়াছেন নির্বীত
 জ্বলেতে পাখা মন্তুহস্তির গর্ভবিনাশের নিমিত্তে অক্ষুণ্ণ দুস্তর

জলসমুদয়গণের নিমিত্তে নৌকা অস্বকারোপস্থিতিতে
পুদীপ এই পুকারে পৃথিবীতে তাহা নাই যাহার উপায় চিন্তা
বিধাতা না করিয়াছেন আনি এই নানি যে খলান্তঃকরণ
চরিত্র হরণের নিমিত্তে বিধাতা ও ভগ্নোদ্যোগ হইয়াছেন।

The root is infested by serpents, the flowers by bees, the branches by monkeys, and the top by bears, in short; there is not a sander tree which is not surrounded by the vilest impurities.

Our master, observed Damanaka, is one of those who carry honey in their speech, and poison in their hearts; according to this description:

He holdeth out his hands at a distance; he appeareth with a wet eye; he relinquisheth one half of his seat; he is fond of close embracing; his words in conversing are kind and gentle; he bestoweth compliments, his inside is naught but poison, whilst without he is covered with sweets, and he is rich in extreme deceit. What name is there for this before unheard-of mimick art, which is inculcated by wicked men?

It is said,

The boat was invented upon crossing pieces of water which were difficult to pass, the lamp, upon the approach of darkness, the fan, upon a defect of wind; and a hook, in humbling the pride of an intoxicated elephant! In short, there is not any thing in the world, wherein the idea of invention was not suggested by Providence. But, in my opinion, Providence itself would fail in its endeavours to prevent what passeth in the minds of wicked men.

সঞ্জীবকঃ পুনর্নিশ্চয়স্য কষ্টং ভো কথমহং শস্যমলংকঃ
 সিংহেন নিপাতিতথ্যঃ । যতঃ ॥ দ্বয়োরেব সমং বিচিং দ্বয়োরেব
 সমং বলং । তথোবিবাদোমন্তথ্যোনোক্তমাধমযোঃ ক্বচিৎ ॥
 পুনর্বিচিন্ত্য কেনাথং রাজা সমোপরি বিকারিতঃ ন
 জানে ভেদমুপগতাৎ রাজ্ঞঃ সদা ভেতথ্যং । যতঃ । মন্ত্রিণা
 পৃথিবীপালচিন্তং বিঘটিতং ক্বচিৎ । বল্যং স্ফটিক
 স্যেব কোহি সম্ভাতুমীশ্বরঃ ॥ অন্যচ্চ ॥ বজ্রং চ রাজ
 তেজস্ব দ্বয়মেবাতিভীষণং । একমেকত্র পততি পতত্যন্যত্
 সমন্ততঃ ॥ ততঃ সংগ্রামে মৃত্যুরেব বরমিদানীং তদাজ্ঞানু
 বর্তনমযুক্তং । যতঃ । মৃতঃ প্রাপ্নোতি বা স্বর্গং শত্রুং হত্বা
 মুখানি বা । ভাবাপি হি শূরাণাং গুণাবেতৌ সুদুর্লভৌ ॥

সঞ্জীবক পুনর্বার নিশ্চয় ফেলিয়া কহিল ও হে এ কি ব্যা
 মোহআমি শস্যভক্ষক আমাকে কেন সিংহ নষ্ট করিবেযেহে
 তুক উভয়ের তুল্য বল ও ধন থাকিলে বিবাদ হয় দুর্ব্বলের
 সহিত বলবানের যুদ্ধ কোথায় পুনর্বার চিন্তা করিয়া কহিল
 আগার উপরেএই রাজাকোন লোক কতৃক বিঘটিত হইয়া
 ছেন আমি জানি না বিকার পাশু রাজা হইতে স্বর্দা ভয়কর্ত্ত
 বা যেহেতুক স্ফটিকের বলয়কে সন্ধান করিতে যেমন কেহ
 সমর্থ হয় না তেমনি পৃথিবীপতির অন্তঃকরণ মন্ত্রিকতৃক
 বিঘটিতহইলে কেহ সন্ধান করিতে শক্তি হয় না অপর বজ্র
 আর রাজ বিঘটন দুই অত্যন্ত ভয়ানক ইহার মধ্যে বজ্র

এক স্থানেতেই পড়ে অন্য যে রাজবিঘটন সে সর্বত্র
পড়ে সেই হেতুক যুদ্ধেতে নৃত্যুকেই স্বীকার করি এখন
তাহার আজ্ঞা পুতিপানন অনুপযুক্ত যেহেতুক নরিনে
স্বর্গ পাইব কিম্বা শত্রুকে নষ্ট করিনে সুখ পাইব অতএব
বীরেরদের এ দুই গুণ দুর্লভ।

Sangjivaka again heaved a deep sigh, and exclaimed, how hard it is, that this poor feeder upon grass and grain should be an object worthy to be ruined by a lion!

The disputes of two of equal strength and fortune are worthy of attention, but not of two, the one great the other humble.

The bull having again considered a while, continued saying,—I know not by what fault of mine the rājā has been injured, that he should be at variance with me! It is best therefore to be for ever jealous of a prince.




If ever the mind of a king, which is like a bracelet of solid crystal, is injured by his minister, who is the artist that can repair it?

A thunderbolt, and the power of kings, are both dreadful! But the former expendeth its fury at once, whilst the latter is constantly falling upon our heads.

Therefore by battle must protection from death be sought, to supplicate him would now be absurd.

Since,

Or dying, he obtaineth heaven; or having killed his enemy, the enjoyments of life. Both these hard-to-be-acquired blessings are the rights of heroes.

যুদ্ধে কালস্বাথং। যত্রাযুদ্ধে ধ্রুবং মৃত্যুর্যুদ্ধে জীবিতসংশয়ঃ।
 তমেব কালং যুদ্ধস্য প্রবদন্তি মনীষিণঃ ॥ যতঃ ॥
 অযুদ্ধে হি যদা পশ্যেত্ন কিঞ্চিদ্ধিতমাत्मनঃ। যুধ্যমায
 স্তদা প্রাজ্ঞোম্রিয়তে রিপুণা সহ ॥ অযে চ লভতে লক্ষ্মীং
 মৃতেনাপি সুরাঙ্গনাং। চণবিধ্বংসিনঃ কায়াঃ কা
 চিন্তা মরণে রণে ॥ এতচ্চিন্তয়িত্বা সঞ্জীবকং আহ ভো
 মিত্র কথমসৌ মাজ্জিঘাংসুর্জাতব্যঃ। দমনকো ব্রূতে
 যদাসা স্তম্ভকর্ণঃ সমুন্নতলাংগূল উন্নতচরণো বিক
 তাস্বক্সাং পশ্যতি তদা ত্বমেব স্ববিক্রমং দর্শয়িষ্যসি।
 যতঃ। বলবানসি নিস্তেজাঃ কস্য নাভিভবাস্পদং।
 নিঃশঙ্কং दीयতে লোকৈঃ পশ্য ভস্মচয়ে পদং ॥ কিন্তু
 সর্বমেতৎ সুমুগ্ধমনুষ্টাতব্যং নো চেন্ন তং বাদ্ধমিত্যুক্তা।
 দমনকঃ করটকসমীপং গতঃ। ****

সংগ্ৰামের এই সময় যখন যুদ্ধ না করিলে অবশ্য মৃত্যু যুদ্ধে
 তে পুণ্য সংশয় পণ্ডিতেরা সে কালকেই যুদ্ধের কাল বলেন
 যেহেতুক যুদ্ধ না করিলে যদি আপনার মঙ্গল দেখে না তবে
 পণ্ডিত ব্যক্তি যুদ্ধ করিয়া শত্রুর সঙ্গে মরে। আর জয় হইলে
 রাজলক্ষ্মী পায় মরিলে দেবকন্যা পায় কণকালঙ্কার
 শরীর অতএব কি চিন্তা যুদ্ধেতে মরণেতে ইহা চিন্তা করিয়া
 সঞ্জীবক বলিল হে মিত্র কি প্রকারে জানিব যে এ দুর্বুদ্ধি
 আনাকে নষ্ট করিতে ইচ্ছা করিয়াছে ইহা কহ দমনক বলি

তেছেযখন ঐ শুদ্ধকর্ণ উদ্ধলাঙ্গুল হইয়া সঙ্গতপাদ হইয়া
বিস্তারিত মুখ হইয়া তোমাকে দেখিবেক তখন তুমি ও
আপন পরাক্রম দেখাইবা যেহেতুক নিস্তেজ লোক বলবান
হইলে ও কাহার পরাজয়ের স্থান না হয় দেখ লোকেরা শঙ্কা
রহিত হইয়া ভয়রাশিতে পা দেয় কিন্তু গোপনেতে এই
সকল অযুগল কর্তব্য নতুবা তুমি ও থাকিবা না আমি ও
থাকিব না ইহা কহিয়া করটকের নিকটে গেল।

As out of battle death is certain, and in the field life doubtful, the learned call it *the only time of battle*

When out of battle he beholdeth no happiness for himself, the wise man embraceth death fighting the foe

In victory he obtaineth fortune, and in death celestial beauty Seemg that our bodies are so very fragile, why should we hesitate about dying in the battle?

Let me clearly understand, my friend, how I am to discover when he is determined to put me to death When the rājā shall cock his tail, lift up his paws, and look at thee with his mouth open, and with his ears erect, replied Damanaka, then will be the time for thee also to display thy prowess.

Strong even without vigour, who may not experience the situation of being defeated? Observe how fearlessly people put their feet upon a heap of ashes!

But it is necessary that every thing be conducted with the greatest privacy; otherwise neither thou nor I shall remain alive.

Having said this, Damanaka went to join Karataka,

করটকেনোক্তং কিং নিষ্পন্নং । দমনকেনোক্তং নিষ্পন্নোসা-
 ন্যোন্যভেদঃ । করটকো ব্রূতে কোত্র সন্দেহঃ । যতঃ । বন্থুঃ
 কো নাম দুষ্টানাং কুপ্যতে কো ন যাচিতি ॥ কো ন তৃপ্যতি
 বিত্তেন কুত্ব্যে কো ন পণ্ডিতঃ ॥ অন্যত্র ॥ দুর্দত্তঃ ক্রিয়তে
 ধূর্তৈঃ শ্রীমানাত্মবিদ্বদ্বয়ে । কিং নাম খলসংসর্গঃ কুরুতে
 নাশ্রয়াশ্রবতঃ ॥ ততো দমনকঃ পিঙ্গলকসমীপং গত্বা দেব
 সমাগতো সৌ পাশাশয়ঃ ততঃ সজ্জীভূয় স্থায়তামিত্যুক্তা
 পূর্বোক্তাকারং কারয়ামাস । সজ্জীবকোপ্যাগত্য তথা
 বিধি বিকৃতাকারং সিংহং দৃষ্ট্বা স্থানুরূপং বিক্রমং চকার
 ততস্তয়োৰ্যুদ্বৈ সজ্জীবকঃ সিংহেন ব্যাপাদিতঃ । অথ সজ্জী
 বকং সেবকং পিঙ্গলকো ব্যাপাশয় বিশ্রান্তঃ সশোক ইব
 তিষ্ঠতি ব্রূতে চ কিং ময়া দারুণং কৰ্ম কৃতং ॥ *❧❧*

করটক কহিল কি সম্পন্ন হইল দমনক কহিল পরম্পর
 ভেদ নিষ্পন্ন হইল করটক বলিল সন্দেহ কি যেহেতুক
 দুর্জনের বান্ধব কে অধিক যাচিত হইলে কে ক্রুদ্ধ না
 হয় ধনেতে কে তৃপ্ত না হয় নিন্দিত কর্ম্মেতে কে পণ্ডিত
 নয় অপর ধূর্ত লোকেরা আশ্রিতেচ্ছাতে উত্তম লোক
 কে ও দুষ্চরিত্র করে কেননা বহির ন্যায় খলসংসর্গ কি
 না করে । পরে দমনক পিঙ্গলকের সম্মিথানে গিয়া কহিল
 হে মহারাজ ঐ পাশিষ্ট আইল অতএব সজ্জ হইয়া থাক
 ইহা কহিয়া পূর্বোক্ত আকার করাইল অনন্তর সজ্জীবক ও

আইন সেই পুকার বিকারপাশ্চ সিংহকে অবলোকন করি
য়া নিজানুকূপ পরাক্রম করিল তাহার পর তাহারদিগের
বড় যুদ্ধ হইলে পরে সিংহকর্তৃক সঞ্জীবক বিনাশিত হইল
তাহার পর পিঙ্গলক সঞ্জীবককে নষ্ট করিয়া বিশ্রাম করিয়া
সশোকের ন্যায় থাকিয়া কহিল নির্দয় আমাকর্তৃক কি
দাক্ষণ কৰ্ম্মকৃত হইল ।


who asked him what was effected. Why, replied the former, a reciprocal breach hath been effected between the two. What doubt of it? cried Karataka, for they say,

What a name is relation amongst wicked men? *Who will not be angry when over and above solicited? Who groweth satisfied with riches? Who cannot be eminently skilful in an evil art?*

Likewise:

A man is rendered miserable by artful people, and prosperous from the greatness of his soul. What, doth not a troop of villains act like the fire, (whose epithet is destroyer of that which is intrusted to him?)

After this Damanaka went to the lion, and cried out,—
Please your highness, that vessel of iniquity is coming! Prepare thyself, and let him approach! Having said this, he caused the lion to put himself in the attitude before described; and Sangjivaka being arrived, upon seeing the lion with his countenance thus altered, began himself to display a corresponding show of defiance. At length there ensued a furious battle, in which the poor bull having been killed by the lion, the latter overcome with fatigue, and standing, as it were, full of affliction, exclaimed,—Alas! what a cruel action have I been guilty of!

যতঃ ॥ পরৈঃ সমুজ্যতে রাজ্যং স্বয়ং পাপস্য ভাজন ।
 ধর্মানতিক্রমতো রাজা সিংহোহস্তিবধাদিব ॥ অপরঞ্চ ॥
 ভূম্যেকদেশস্য গুণান্নিতস্য ভৃত্যস্য বা বুদ্ধিমতঃ
 প্রণাশঃ । ভৃত্যপ্রণাশো মরণং নৃপাণাং নষ্টাপি ভূমিঃ
 মুক্তমানভৃত্যাঃ ॥ দমনকো ব্রূতে স্বামিন্ কোয়ং নূতনো
 ন্যায়ঃ যদরাতিং হত্বা সন্তাপঃ ক্রিয়তে । তথা চোক্তং ।
 পিতা বা যদি বা ভ্রাতা পুত্রো বা যদি বা সুহৃৎ ।
 প্রাণৈর্জ্বৈদকরা রাজা হন্তব্যো ভূতিমিচ্ছতা ॥ অপিচ ॥
 ধর্মার্থকামতত্ত্বজ্ঞো নৈকান্তকরণো ভবেৎ । ন হি
 হস্তস্যমপ্যন্নং क्षমাवान্ ভক্ষিতুং क्षমঃ ॥ কিঞ্চ ॥ ক্ষমা
 সত্রৌ চ মিত্রে চ যতীনামেব ভূষণং । অপরাধিষু সত্বেষু
 নৃপাণাং সৈব দূষণং ॥ *

যেহেতুক নিঃস্ব যেন হস্তিবধপুষ্পুক্ত পাপভাগা আপনি
 হয় নৃপাদি অন্যকর্তৃক উপভুক্ত হয় এইরূপ রাজা ধর্মের
 অতিক্রমণে আপনি পাপের আশ্রয় হন রাজ্য পর
 কর্তৃক উপভুক্ত হয় । অপর উর্বরাভূমির নাশ আর বুদ্ধি
 মান দাসের নাশ ইহার মধ্যে ভৃত্যের নাশ রাজাদিগের
 মরণতুল্য কেননা ভূমি ভূষ্টা হইলে ও পুনশ্চ মিলে ভৃত্য
 নষ্ট হইলে পাওয়া দুর্লভ দমনক বলিতেছে পুত্র এ কি নূতন
 ন্যায় যে বৈরিকের নষ্ট করিয়া সন্তাপ করিতেছেন বিজ্ঞকর্তৃক

ভাৰা কথিত আছে পিতা কিম্বা ভ্ৰাতা কিম্বা পুত্র কিম্বা বন্ধু
ইহারা ও যদি জীবনবিনাশকারক হয় তবে ঐশ্বর্য্য ইচ্ছা
করেন যে রাজ্য তৎকর্তৃক বধ্য হয় আর ধৰ্ম্ম অর্থ কামের
যথার্থজ্ঞাতা লোক একান্ত দয়ালু হইবেন যেহেতুক ক্ষমা
যুক্ত লোক করস্থিত অনেকে ও ভক্ষণ করিতে শক্তি হয় না
অপর শত্রুতে এবং মিত্রেতে যতিরদিগেরই ক্ষমা ভূষণ
রাজারদিগের অপরাধি লোকেতে সেই ক্ষমাই দোষ।

If the dominion be enjoyed by others, he himself is the vessel which containeth the the fault. Should a prince transgress the law, he is like the lion after the murder of the elephant.

The loss of territory, or of a wise and virtuous servant, is a great loss. The loss of servants is death to sovereigns, and the loss of empire, for servants are not easily to be found.

What novelty is this? cried Damanaka. It is very unusual for one to lament having put a faithless enemy to death, and indeed it is very improper to do so.

Or father, or if a brother; or son, or if a friend, be a conspirator against his life, he should be put to death by a prince who wisheth his own welfare.

One acquainted with the principles of justice and political interest, should neither be hastily severe; nor ever ready to pardon, although money be in the hand. It is proper to swallow mercy.

It is a virtue in hermits to forgive their enemies, as well as their friends; but it is a fault in princes to shew clemency towards those who are guilty.

অপরঞ্চ॥ রাজ্যলোভাদহংকারাদিচ্ছতঃ স্বামিনঃ পদं
 প্রাচক্ষিত্তং তু তস्यৈকং জীবোत्সর্গো ন চাপরং ॥ অন্যच्च
 রাজা घृणी ब्राह्मणः सर्वभक्षः स्त्री चावशा दुष्प्रकृति
 सहायः । प्रेष्यः प्रतीपोधिकृतः प्रमादो त्यज्यादमे सा
 कृत न वेत्ति यः ॥ विशेषतश्च । सत्यानृता च परुष
 प्रियवादिनोच हिंसा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या
 नित्यव्यया प्रचुररत्नधनागमा च वाराङ्गनेव नृपनीति
 रनेकरूपा ॥ इति दमनकेन सन्तोषितः पिङ्गलकः स्वा
 प्रकृतिमापन्नः सिंहासने समुपविष्टः । दमनकः प्रहृष्ट
 मना विजयतां महाराज शुभमस्तु सर्वजगतामित्युक्त्वा
 यथासुखमवास्थितः ॥



অপর রাজ্যলোভ প্রযুক্ত অহংকারেতে স্বামির পদ যে ইচ্ছা
 করে তাহার প্রাণত্যাগই এক প্রায়শ্চিত্ত অন্য নয় অপর ঘৃণা
 যুক্ত রাজা ও সর্বভক্ষক ব্রাহ্মণ ও অবশ্যভূতা ভাষ্যা ও দুষ্ট
 স্বভাব সহায় ও পুতিকূল ভৃত্য ও অনবধানী নিযুক্ত লোক
 ও যে লোক কৃতকর্মকে মানে না এ সাত জন ত্যাজ্য।
 বিশেষত বেশ্যার ন্যায় রাজনীতি অনেকরূপ। হয় সত্য
 ভাষিণী এবং মিথ্যাভাষিণী ও হয় নিষ্ঠুর ভাষিণী এবং
 প্রিয়বাদিনী ও হয় হননশীল এবং দয়ালু ও হয় কৃপণ হয়
 এবং দানশীল ও হয় ও অনবরত ব্যয় শীল হয় এবং পুচ্ছ

মিত্র ও ধনাগম হয় এইরূপ দমনককর্তৃক পিঙ্গলক পরি-
তোষিত হইয়া স্বকীয় স্বভাব প্রাপ্ত হইয়া সিংহাসনে উপ-
বিষ্ট হইলেন। দমন পুরুষচিন্তা হইয়া কহিল মহারাজ জয়
হউক ইহা কহিয়া পরমাত্মদে থাকিল।

There is no other but one expiation for him who, from pride and the lust of power, shall wish for his master's station, and that is death!

A meek-hearted prince, a Brāhman who eateth of all things alike, an unruly wife, a bad-principled companion, an unfaithful servant, and a presumptuous superintendent, and he who acknowledges not a benefit received, should all be put away: they are not worthy to be tried seven times.

But the following lines give a very particular picture of the behaviour of princes:

The conduct of princes, like a fine harlot, is of many colours, true and false; harsh and gentle; cruel and merciful, niggardly and generous, extravagant in expence, and solicitous of the influx of abundant wealth and treasure.

The lion having been thus composed by the arts of Damanaka, at length recovered his natural temper of mind, and seated himself on his throne; and Damanaka, with his heart full of exultation, having wished victory to the mighty king, and happiness to all the world, lived ever after according to his wish.

বিষ্ণুশর্মোবাচ সুহৃদ্বৈদঃ শ্রুতস্তাবদ্ববজ্জিঃ । রাজপুত্রা
 ঋচুঃ ভবত্‌প্রসাদাত্‌ শ্রুতঃ সুখিনো ভূতাবয়ং । বিষ্ণু
 শর্মাব্রবীত্ । অপরমপীদমস্তু । সুহৃদ্বৈদস্তাবদ্ববতু ভব
 তাং শত্রুনিলয়ে ত্বলঃ কালাক্রাণ্ডঃ প্রলয়মুপসর্পত্বহরহঃ ।
 জনো নিত্যং ভূয়াত্‌ সকলসুখসম্পত্তিবসতিঃ কথারম্যে
 রম্যে সততমিহ বালোপি রমতাং ॥ ইতি দ্বিতোপদেশে
 সুহৃদ্বৈদো নাম দ্বিতীয়কথাসংগ্রহঃ সমাপ্তঃ ॥ * ❀ *

বিষ্ণুশর্ম্মা কহিলেন তোমরা সুহৃদ্বৈদ শ্রবণ করিলে । রাজ
 ছত্রারেরা কহিলেন আপনকার অনুগ্রহেতে শুনিলাম আম
 রা আশ্বাদিত ও হইলাম । বিষ্ণুশর্ম্মা বলিলেন আর ও এই
 পুকার হউক আপনকারদিগের অরিগৃহে সুহৃদ্বৈদ হউক
 আর কালকর্তৃক আকৃষ্ট হইয়া থল নোক পুত্ৰাহ পুনর্যকে
 পুাপ্ত হউক আর নোক সকল সুখজনক ঐশ্বর্য্যতে পরিপূর্ণ
 হউক আর এই রমণীয় কথারন্তু সর্বদা বালক ও ক্রীড়া
 করুন । ইতি দ্বিতীয়া সুহৃদ্বৈদকথা সমাপ্তা ।

Vishnu-Sarmā having thus concluded his second head, *The Separation of a Favourite*, gave notice to the young princes; who declaring they were well pleased with it, he gave them his blessing, and repeated the following lines:

May such a breach between friends happen but in the house of your enemies! May traitors, day by day, be led by Time to their destruction! May the people be perpetual possessors of abundance, and all the blessings of life! And may youth for ever find amusement here in this pleasant garden of fable!

THE END OF THE SURIDBHEDA.

॥ अथ विग्रहः ॥

पुनः कथारम्भकाले राजपुत्रा ऊचुः आर्य्य राजपुत्रावच
तद्विग्रहं श्रोतुं नः कुतूहलमस्ति । विष्णुशर्मणोक्तं यदेव
भवद्भोरोचते कथयामि श्रूयतां यस्यायमाद्यः
श्लोकः । हंसैः सह मयूराणां विग्रहे तुल्यविक्रमे ।
विश्वस्य वञ्चिता हंसाः काकैः स्थित्वारिमन्दिरे ॥
पुनर्द्धार कथारम्भकाले राजपुत्रेरा कहिलेन हे णुरो
आमरा राजनन्दन एहैहेतुक विग्रह शुनिवार निमिजे
आमारदिगेर कोतुक आहे । विष्णुशर्मा बलिलेन तोमा
रदिगेर याहाते कचि हय ताहा कहि शुन याहार पुथम
श्लोकार्थ एहै हंसैर सहित युद्धेते नयूरैरदिगेर तुला
पराक्रमेतेउ काककर्तृक शत्रूगृहे थाकिया पुताय्यो
पादन करिया हंस वञ्चित हईल ।

C H A P. III.
OF DISPUTING.

THE time set apart for hearing these stories being arrived, the young princes reminded Vishnu-Sarmā in these words:—Worthy Sir ! As we are the sons of a prince, it will afford us very great amusement to hear what relates to Disputing. And Vishnu-Sarmā replied, if it will give you pleasure I will proceed to recount what is connected with that head, to which the following verse is the introduction:

In a quarrel between the geese and the peacocks, in which is displayed equal valour, the geese, having trusted them, are betrayed by the crows who were in the camp of the enemy.

রাজপুত্রা জ্যু: কথমেতৎ । বিষ্ণুশর্মা কথয়তি অস্তি
 কপূরদ্বীপে পদ্মকোলিনামধেয়ং সর: তত্র হিরণ্যগর্ভো নাম
 রাজহংস: প্রতিবসতি স চ সর্ষ্পৈর্জলচরপশুভির্মিলিত্বা
 পশ্চিরাজ্যেঃশিষিক্ত: ॥ যত: ॥ যদি ন স্যাম্নরপতি:
 সম্যঙ্গেতা তত: প্রজা: । অকর্ণধারা জলধৌ বিপ্লবেতেহ
 নৌরিব ॥ অপরঞ্চ ॥ প্রজাং সংরক্ষতি নৃপ: সা বর্দ্ধয়তি
 পার্থিবং । বর্দ্ধনাভ্রক্ষণং শ্রেয়স্তদभावे सदप्यसत् ॥
 একদাসৌ রাজহংস: সুবিস্তীর্ণকমলপর্যঙ্কে সুখাসীন:
 পরিবারপরিবৃতস্তিষ্ঠতি তত: কুতস্থিদেশাदागत्य दीर्घ
 মুখোनाम वक्र: प्रणम्योपविष्ट: । রাজোবাচ দীর্ঘমুখ
 দেশান্তরাदागतोऽसि वार्त्तां कथय । स ब्रूते देव । अस्ति
 महती वार्त्ता तां वक्तुं सत्वरमागतोऽहं श्रूयतां । ❀

রাজহংসারেরা কহিলেন এ কি পুকার বিষ্ণুশর্মা কহিতে
 ছেন । কপূরদ্বীপেতে পদ্মকোলি নামে সরোবর থাকে তাহা
 তে হিরণ্যগর্ভনামে রাজহংস বাস করে সকল জলচর পক্ষি
 রা মিলিয়া তাহাকে পক্ষিরাজ্যেতে অভিষিক্ত করিল । যে
 হেতুক সন্ধ্যা পুকার নায়ক নৃপতি যদি না থাকে তবে সন্মু
 দ্ধেতে নাবিক রহিত নৌকা যেমন নগ্না হয় এমনি পুজারা
 উপদ্রুত হয় আর রাজা পুজাকে রক্ষা করেন পুজা রাজাকে
 বাড়ায় বর্জনহইতে রক্ষণ মঙ্গলদায়ক কেননা রক্ষণ না করি
 লে বিদ্যমান ও অবিদ্যমান হয় । এক দিন এই রাজহংস

অতিশয় বিস্তারিতকমলপর্যাক্ষেতে পরিবার লোকেতে
বেষ্টিত হইয়া সুখোপবিষ্ট আছেন অনন্তর দীর্ঘমুখ নামে
বক কোন দ্বীপহইতে আসিয়া পুণাম করিয়া বসিল রাজা
বলিলেন হে দীর্ঘমুখ তুমি অন্য দেশহইতে আইলা বৃত্তান্ত
কহ সে বলিল হে মহাজার বড় বার্তা আছে তাহা কহিবার
নিমিত্তেই আমি হ্রাতে আইলাম তাহা শুন ।

How was this? demanded the young princes; and Vish-
nu-Sarmā related as follows:

FABLE I.

IN Karpura-dwipa there is a famous lake which is
distinguished by the name of the Padma-keli where
used to reside a royal goose, whose title was Hiranya-
Garbha, and who had been anointed their king by all the
birds who are wont to frequent the waters.

If there were no king, the people would thence be en-
tirely ruined: they would be here like a boat in the wa-
ter without a pilot.

The king protecteth the people; and they support the
greatness of their sovereign. But protection is better
than greatness; for the one cannot exist without the other.

One day as the royal goose was sitting upon a bed of
lotus flowers finely spread, surrounded by his attendants,
there arrived from some distant country a certain booby,
whose name was Dirgha-mukha, who, having made his
obeisance, drew near. Dirgha-mukha ! said the king,
thou art lately come from foreign countries: pray inform
me what news. Please your highness, replied the booby,
I have some very important news, anxious to relate
which I made haste to come here.

অস্মি জম্বুদ্বীপে বিন্ধ্যানাং গিরিস্তত্র চিত্রবর্ণা নাম
 ময়ূরঃ পশ্চিরাণ্যনিবসতি তস্যানুচরৈশ্চরদ্ভিঃ পশ্চিভিরহং
 দগ্ধারণ্যমধ্যে চরন্নবলোকিতঃ পৃষ্টস্য কল্বং কৃতঃ
 সমাগতোসি । তদা মযোক্তং কর্পূরদ্বীপস্য রাজচক্রবর্ত্তি
 নোহিরণ্যগর্ভস্য রাজহংসস্যানুচরোহং কৌতুকাৎ দেশান্তরং
 দৃষ্টমাগতোস্মি । এতচ্ছুত্বা পশ্চিভিরুক্তং অনযোদে শযোঃ
 কো দেশো ভদ্রতরো রাজাচ । মযোক্তং আঃ কিমেব
 মুচ্যতে মহদন্তরং যতঃ কর্পূরদ্বীপঃ স্বর্গেব রাজহংসস্য
 দ্বিতায়ঃ স্বর্গপতিঃ অত্র মরুস্থলে পতিতায়ূয়ং কিঙ্করুথ
 অস্মদেগং গম্যতাং । ততোস্মদ্বচনমাকার্য্যং সর্বং সক্রোপা
 বভূমুঃ । তথাচোক্তং । পয়ঃ পানং ভুজঙ্গানাং কেবলং বিষ
 বর্জনং । উপদেশাচ্চি মূর্খানাং প্রক্রোপায় ন শান্তয়ে ॥

জম্বুদ্বীপেতে বিদ্যা নামে পর্বত আছে তাহাতে চিত্রবর্ণনামে
 ময়ূর পক্ষিরদের রাজা বাস করে তাহার অনুচর পক্ষি
 কতক দক্ষারণ্যমধ্যেতে চরত আগাকে দেখিয়া তাহার
 জিজ্ঞাসা করিল কে তুমি কোথাহইতে আইলা তখন
 আমি কহিলাম আমি কর্পূর দ্বীপচক্রবর্ত্তী হিরণ্যগর্ভ নামে
 হংসরাজের অনুচর কৌতুকপুষ্পুক্ত দেশান্তর দেখিতে আসি
 য়াছি । তাহা শুনিয়া পক্ষিরা কহিল তবে এই দুই দেশের
 মধ্যে কোন দেশ বড় ভাল কোন রাজা বা বড় ভাল ।
 অন্তর আমি কহিলাম আঃ কি কহিতেছ অনেক অন্তর

যেহেতুক কপূরদ্বীপ স্বর্গই রাজহংস দ্বিতীয় স্বর্গপতি ইন্দ্র
তুল্য^১ এই মঞ্চভূমিতে পড়িয়া তোমরা কি কর আমার
দেশে আইস অনন্তর আমার বাক্য শ্রবণ করিয়া সেই পার্শ্ব
রা সরোষ হইল পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন যে সর্পেরদের
দুগ্ধ পান কেবল বিষবর্জক হয় ও মূঢ়েরদিগের উপদেশ
ক্রোধের নিমিত্তেই হয় শান্তির নিমিত্তে হয় না।

In Jambu-dwipa, there is a mountain called Vindhya, where reigns Chitravarna, a peacock, who is there king of the winged tribes. As I was walking one day over a place where the grass and underwood had been burnt down, I was discovered by some of his attendants who were passing by; and upon their asking who I was, and whence I came, I replied, that I came from Karpura-dwipa, that I was an attendant of the royal goose, king Hiranya-Garbha, and that I came there out of curiosity to see foreign countries. They then asked me which of these two countries I thought the best; and I said,—O what a question is this! There is a vast difference between them: Karpura-dwipa is a heaven of a place! Then what do you do in such a barren country as this? Come away, and accompany me into our country. But upon hearing me talk in this manner, they seemed to be very much displeased. They say,

A draught of milk to serpents doth nothing but increase their poison. Good counsel bestowed upon fools doth rather provoke, than satisfy them.

অন্যত্র ॥ বিদ্বানেবোপদেষ্যো মা বিদ্বাংসু কদাচন ।
 বানরানুপদিষ্যথ স্থানধৃষ্টা যয়ুঃ স্নগাঃ ॥ রাজোবাচ
 কথমেতৎ । দীর্ঘমুখঃ কথয়তি অস্মি নর্মদাতীরে বিশা
 লঃ শালমলীতরূপ্তবনির্মিতনীডকোডে পল্লিনোনিবসন্তি
 সুখেনাথৈকদা বর্ষাসু নীলপটলৈরাবৃতে নভস্থলে ধারা
 সারৈর্মহতী বৃষ্টির্বমূব ততোবানরাংশ্চ তরুতলেঽবস্থিতান্
 শীতাকুলান্ কম্পমানানবলোক্য ক্রপয়া পল্লিধিরুক্তং
 ভো ভো বানরাঃ শৃণুত । অস্ম্যভিনির্মিতানোডাশ্চুমা
 ব্রাহ্মতৈস্তুয়ৈঃ । হস্তপাদাদিসংযুক্তা যূয়ং কিমিতি সীদথ
 ততশ্চুত্বা বানরৈর্জাতমর্ষরালোচিতং অহো নির্বাতনীড
 গর্ভাবস্থিতাঃ সুখিনঃ পল্লিণো স্মান্তিন্দন্তি ভবতু তাব
 দ্বৃষ্টে রূপশমঃ । অনন্তরং একবানরেণোক্তং ॥ ❀❀❀

অগ্নিপশ্চিতেই উপদেশ করণোপযুক্ত মূর্খকে কদাচনয় মূঢ়
 বানরের দিগেকে উপদেশ করিয়া পক্ষিরা স্থান ভুঞ্জে হইয়া
 ছিল । রাজা কহিলেন এক পুকার দীর্ঘ মুখ কহিতেছে ।
 নর্মদাতীরে এক অতিবড় শালমলি বৃক্ষ থাকে সেই তরুতে
 আপন চঞ্চু করণক নির্মিত নীড়মধ্যে পক্ষিরা বর্ষাতে
 ও সুখেতে বাস করে অনন্তর নীলবর্ণ পটের তুল্য মেঘ
 সমূহেতে গগনমণ্ডল আচ্ছন্ন হইলে পরে স্থূল ধারেতে
 অতিবড় বৃষ্টি হইল সেই অকতলেতে বানরেরদিগেকে
 আদ্ভুত শীতার্ভ কম্পিত কলবর দেখিয়া করুণা

পুষ্প পক্ষিরা কহিল ও হে বানরেরা শুন আমাদিগের
চক্ষুনাতে আহত তৃণকরণক নীড় নির্মিত হইয়াছে
পাণি পাদবিশিষ্ট তোমরা কেন এই পুকারে অবসন্ন হইতে
ছ তাহা শুনিয়া জাতক্রোধ বানরেরা আলোচনা করিলবায়ু
রহিত নীড়মধ্যে অবস্থান পুষ্প সুখী হইয়া পক্ষিরা
আমাদিগকে নিন্দা করিতেছে ভাল বৃষ্টির উপশম হউক।

A wise man is worthy to be advised; but an ignorant one never. Certain birds, having given advice to a troop of monkeys, have their nests torn to pieces, and are obliged to fly away.

The royal goose demanded to know how that was; and the booby repeated the following story:

FABLE II.

ON the banks of the river Narmadā, upon a neighbouring mountain, there was a large Sālmah, wherein certain birds were wont to build their nests and reside, even during the season of the rains. One day the sky being overcast with a troop of thick dark clouds, there fell a shower of rain in very large streams. The birds seeing a troop of monkeys at the foot of the tree, all wet, and shivering with cold, called out to them,—Ho, monkeys! why don't you invent something to protect you from the rain?

We build ourselves nests with straws collected with nothing else but our bills. How is this, that you, who are blessed with hands, and feet, yield to such sufferings?

The monkeys hearing this, and understanding it as a kind of reproach, were exceedingly irritated, and said amongst themselves,—These birds there, sitting comfortably out of the wind within their warm nests, are laughing at us! So let them, as long as the shower may last.

॥ অনন্তরং শান্তে শাণ্ডিল্যবর্ষে তৈর্বানরৈর্ঘৃৎসমাবহ্য সর্ব
 নীডা ভগ্নাস্তেষামন্ডানি চাধঃপাতিতানি । অতোহ
 ব্রবীমি বিদ্বানেবোপদেষ্টব্যত্যাदि । রাজোবাচ ততস্তৈঃ
 কিং কৃতং । বকঃ কথয়তি ততস্তৈঃ পল্লিभिः কোपादুক্তং কে
 নাসৌ রাজহঁসো রাজা কৃতঃ । ততোমথোপজাতকোপেনোক্তং
 যুগ্মদীঘমযূরঃ কেন রাজা কৃতঃ । एतच्छ्रुत्वा ते सर्वे मां
 हंतुमद्यतास्ततोमथापि स्वविक्रমो दर्शितः ॥ यतः ॥
 अन्यदाभूषणं पुंसां क्षमा लज्জেव योषितां । पराक्रमः
 परिभवे वैजात्यं सुरतेष्विव ॥ राजा विहस्यাহ । आत्म
 नश्च परेषां च यः समीक्ष्य बलावलं । अन्तरं नैव
 जानाति स तिरस्क्रियते ऽरिभिः ॥ अन्यच्च ॥ सुचिरांह
 चरन्नित्यं क्षেত্রে शस्यमबुद्धिमान् । द्वोपि चर्मपरिक्লेश
 वाग्दোषाद्गर्दভোहतः ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*

তাহার পর জলবর্ষন নিবৃতি হইলে সেই মর্কটেরা বৃক্ষ আরো
 হণ করিয়া সকল বাসা ভাঙিল তাহারদিগের অণ্ড সকল ও
 নীচেতে ফেলাইয়া দিল । অতএব আমি বলি পণ্ডিতেই উপ
 দেশ করণোপযুক্ত ইত্যাদি রাজা কহিলেন তাহার পরে
 কি করিল বক বলিতেছে । অনন্তর পক্ষিরা ক্রোধেতে কহি
 ল তোর রাজ হংসকে কে রাজা করিয়াছে তাহার পর আমি
 ওজাতক্রোধ হইয়া কহিলাম তোমাদের ময়ূরকে কে রাজা
 করিয়াছে ইহা শুনিয়া তাহার সকলে আমাকে নষ্ট করিতে

উদ্যত হইল। তাহার পর আমি ও নিজ পরাক্রম দেখাই
লাম যেহেতুত জীলোকেরদিগের যেমন লজ্জা ভূষণ এমন
অন্যকর্তৃক পরাভব কালব্যতিরিক্ত কালেতে ক্রমাই পুরু
ষেরদিগের ভূষণ এবং রতি কালেতে জীলোকেরদিগের যে
রূপ নির্লজ্জতা ভূষণ এই রূপ অন্য কর্তৃক পরাভব কালে
তে পুরুষের পরাক্রমই ভূষণ। রাজা হাস্য করিয়া কহি
লেন যে জন আপনার ও পরের বলাবল দেখিয়া অন্তর না
জানে সে জন শত্রু কর্তৃক তিরস্কৃত হয় অপর ব্যাঘ্র চম্বাবৃত
নিবুদ্ধি গর্দভ ক্ষেত্রেতে বহুকাল পর্যন্ত পুতাহ শস্য ভক্ষণ
করত বাঁকা দোষেতে নষ্ট হইল।

In short, as soon as the rain subsided, the whole troop of them mounted into the tree, where tearing all the nests to pieces, the eggs fell upon the ground and were broken. I say therefore, *A wise man is worthy to be advised; &c.*




Well, said the royal goose, what did the birds say after they had heard this story? Why, please your highness, they were in a great passion, and asked, who made that same goose a king? In answer to which, I too, in the anger which such a question created, cried,—By whom was this same peacock made a king? and, upon my saying this, they tried to kill me, and in return, I displayed no little valour.

An occasional dress to a man is as forgiveness and modesty to a woman. Courage when surrounded is like being captive amongst men endued with clemency.

The royal goose smiling at this, said,

A man who, having well compared his own strength or weakness with that of others, after all, doth not know the difference, is easily overcome by his enemies.

A fool is always discovered if he stayeth too long, like the ass dressed in a tiger's skin, from his voice.

ବକ: ପୃଚ୍ଛତି କଥମେତତ୍ । ରାଜା କଥୟତି ଅସ୍ତି ହସ୍ତି
 ନାମ୍ନାମ ବିଲାସୋ ନାମ ରଜକସ୍ତସ୍ୟ ଗର୍ଦ୍ଧଭୋତିବାହନାଦୁର୍ବ
 ଲୋ ମୁମୂର୍ଷୁରିବାଭବତ୍ ତତସ୍ତେନ ରଜକେନାସୌ ବ୍ୟାଘ୍ରଚର୍ମଣା
 ପ୍ରଚ୍ଛାଦ୍ୟାରଣ୍ୟସମୀପେ ଶସ୍ୟଚ୍ଚେତ୍ରେ ନିଯୁକ୍ତ: । ତତୋଦୂରାତ୍ତମବ
 ଲୋକ୍ୟ ବ୍ୟାଘ୍ରବୁଦ୍ଧା ଚ୍ଚେତ୍ରପତୟ: ସତ୍ବରଂ ପଳାୟନ୍ତେ ଅଥୈକଦା
 କେନାପି ଶସ୍ୟରକ୍ତକେନ ଧୂଷରକମ୍ବଳକ୍ରତତନୁବାଣେନ ଧନୁ:
 କାଣ୍ଡଂ ସଞ୍ଜୀକ୍ଷତ୍ୟାନତକାୟେନୈକାନ୍ତସ୍ଥିତଂ ତଂ ଚ ଦୂରା
 ଦୃଷ୍ଟ୍ବା ଗର୍ଦ୍ଧଭ: ପୁଷ୍ଟାଞ୍ଜୋ ଯଥେଷ୍ଟଶସ୍ୟଭକ୍ତଜାତବଳ:
 ଗର୍ଦ୍ଧଭୀୟମିତି ମତ୍ବା ଓଷ୍ଧୈ: ଶବ୍ଦଂ କୁର୍ବାଣସ୍ତମଭିମୁଖଂ
 ସ ଧାବିତ: ଶସ୍ୟରକ୍ତକେନ ଗର୍ଦ୍ଧଭୋ ଚିତ୍‌କାରଶବ୍ଦାନିଷ୍ଠି
 ତ୍ୟାଽୟମିତି ଶୀଘ୍ରଥୈବ ବ୍ୟାପାଦିତ: । ଅତୋଽହଂ ବ୍ରବୀମି
 ସୁଚିରଂ ହି ଚରନ୍ନିତ୍ୟମିତ୍ୟାଦି । ****

ବକ ପ୍ରଶ୍ନ କରିତେଛେ ଏ କି ପ୍ରକାର ରାଜା କହିଅଛନ୍ତି । ହସ୍ତି
 ନାମଗରେ ବିଲାସ ନାମେ ରଜକ ଥାକେ ତାହାର ଏକ ଗର୍ଦ୍ଧଭ
 ଅତିଶୟ ବହନ ପ୍ରସୂକ୍ତ ଦୁର୍ବଳ ମୁମୂର୍ଷୁର ତୁଳ୍ୟ ହେଲ ଅନନ୍ତର ମେହି
 ରଜକ ଏ ଗାଧାକେ ବ୍ୟାଘ୍ରଚର୍ମାଦେ ଆଚ୍ଛାଦନ କରିଲା କାନନସମୀ
 ପେ ଶମ୍ୟା ମଧ୍ୟେ ନିଯୁକ୍ତ କରିଲ ତାହାର ପର ଦୂରହେତେ ତାହାକେ
 ଦେଖିଲା ବ୍ୟାଘ୍ର ବୁଦ୍ଧିତେ କ୍ଳେତ୍ରପାଳକେରା ପଳାୟ । ଅନନ୍ତର
 ଏକ ଦିବସ କୋନ ଶମ୍ୟାପାଳକ ଜିବଂ ପାଞ୍ଚୁବର୍ଗ କହଲେତେ

শরীরান্ধাদন করিয়া তীর ধনুক সজ্জা করিয়া সঙ্কুচিত শরীরেতে নির্জনেতে থাকিল যথাভিন্নবিত শস্যাহারপুষ্কৃত জাতবল পুষ্টকলেবর সেই গর্দভ তাহাকে দূরহইতে দেখিয়া গর্দভী জ্ঞান করিয়া উদ্বেগে শব্দ করত তাহার সম্মুখে ধাবন করিল । তদনন্তর সে শস্যরক্ষক গর্দভ এ ইহা চীৎকার শব্দেতে নিশ্চয় করিয়া অনায়াসেতে নষ্ট করিল অতএব আমি বলি সুন্দররূপে পুতাহচরত ইত্যাদি ।

How was this? said the booby; and the royal goose related the following tale:

FABLE III.

AT Hastināpura there lived a certain fuller, whose name was Vilāsa. He had a jack ass who was grown exceedingly weak by carrying burdens too great for his strength, and, as it were, almost at the point of death. In this condition the fuller dressed him up in a tiger's skin, and let him loose in a field of corn; so that the people belonging to the field having observed him at a distance, ran away with the idea of its being a real tiger. After a while, however, a man whose business was to watch the field, having dressed himself in a kind of armour made of an ass's skin, and furnished himself with a bow and arrows, ventured to approach him; and the supposed tiger, who was now grown plump and fat, spying him at a little distance, and thinking it was a female of his own species, began to welcome her by setting up a loud braying, and immediately trotting up before her. But the man having discovered from his voice what he really was, the poor ass was soon overcome for his love. I say, therefore, *A fool is always discovered &c.*

দীর্ঘমুখো ব্রূতে ততঃপল্লিভিরুক্তং অরে পাপ দুষ্ট বক অস্মা
 কংভূমৌ চরন্নস্মাকং স্বামিনমধিচ্চিপসি তন্ন লন্তব্যমি
 দানোমিত্যুক্তা সর্বে মাং চক্ষুভির্হত্বা সঙ্কোপাজ্জ্বঃ পশ্য
 রে মূৰ্খং স হংসস্তব রাজা সর্বথা মৃদুস্তস্য রাজ্যাধি
 কারোনাस्ति যত একান্তমৃদুঃ করতলস্থমপ্যর্থং রচ্চি
 তুমত্তমঃ স কথং পৃথিবীং শাস্তি রাজ্যং বা তস্য কিং কিন্তু
 ত্বচ্ছ কূপমণ্ডুকস্তেন তদাশ্রয়মুপদিশসি শৃণু।
 সেবিতব্যোমহাটল্লঃ ফলচ্ছায়াসমন্নিতঃ। যদি দৈবাৎ
 ফলং নাस्ति ছায়া কেন নিবার্য্যতে ॥ অন্যচ্ছ ॥ হীন
 সেবা ন কৰ্ত্তব্যা কৰ্ত্তব্যোমহদাশ্রয়ঃ পযোপি শৌণ্ডিকী
 হস্তে বারুণীত্যভিধীয়তে ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀

দীর্ঘমুখ বনিতেছে তাহার গর গন্ধিরা কহিল অরে পাপ
 দুষ্ট বক আগারদিগের স্থানে চরত আগারদিগের স্বামিকে
 নিন্দা করিতেছিস এই হেতুক তোমাকে এখন কমা করা
 নয় ইহা কহিয়া সকলে চক্ষু করণক আগাকে ভাঙনা
 করিয়া কষ্টে ইহিয়া কহিল দেখ রে মূর্থ তোর রাজা সেই হংস
 সর্বপুকারে মৃদু তাহার রাজ্যেতে অধিকার নাই যেহেতুক
 নিতান্ত মৃদু ব্যক্তি হস্ততলস্থিত ও ধনকে রক্ষা করিতে অস
 মর্থ সে কি পুকারে পৃথিবী শাসন করিবেক তাহার রাজ্যই
 থাকি কিন্তু তুমি কূপমণ্ডুক এইহেতুক সে আশুয়কে উপদেশ

করিতেছ শুন ফল এবং ছায়াতে যুক্ত বৃক্ষ সেবাকরণোপযুক্ত
কেমনা দৈবাৎ যদি ফল না থাকে তবে ছায়া কে বারণ করে
অপর ক্ষুদ্রের সেবা কর্তব্য। নয় মহতের আশুয়ই কর্তব্য কে
ননা শৌণ্ডিকহস্তস্থিত দুধকে ও লোকেরা মদিরা বলে।

After that, said the booby, the birds called out to me,
—Rascal! vile booby! Dost thou dare speak thus slight-
ingly of our sovereign? This is not to be suffered by us
presently! And, saying this, they began to attack me
with their bills, and to brave me in this manner.—Ob-
serve, thou stupid animal! thy goose is always a soft
spiritless creature; although he is by no means so very
mild in the government of his dominions; but he is inca-
pable of possessing as much wealth as would lie in the
palm of one's hand; how then shall he command the
universe? As for thyself, thou art like an angry frog;
but he is thy superior. Hear this:

A large tree, which yieldeth both fruit and shade, is
highly to be esteemed; but if Providence, per chance,
may have denied it fruit, by whom is its shade refused?

Court should not be paid to the indigent; but to him on
whom there is great dependance. Even milk in the hand
of a tavern keeper is called an intoxicating liquor.

অন্যত্র ॥ মহানপ্যত্পতাং যাতি নির্গুণে গুণবিস্তরঃ ।
 আধারাধেয়भावेन गजेन्द्रद्वय दर्पणे ॥ विशेषतश्च । व्यप-
 देशेऽपि सिद्धिः स्यादतिशक्ते नराधिपे । शशिनो व्यपदेशেন
 शशकाः सुखमासते । मयोक्तं कथमेतत् । पक्षिणः कथञ्च
 न्ति कदाचिदपि वर्षासु दृष्टेरभावात् त्वषार्त्तो मजयूथো
 व्यथयति माह नाथ कोभ्युपाधेऽस्माकं जीवनाय नास्ति
 क्षुद्रजन्तूनां निमज्जनस्थानं वयञ्च निमज्जनस्थानाभावा
 न्मृताह্নাদিব किं कूर्मः वा यामः ततो हস্তिरাজো नातिদूर
 গতা নির্মালং ক্রদং দর্শিতবান্ ততোদিনেষু গচ্ছতু
 তত্তীরাবস্থিতগজপাদাহতিভিশ্চূর্ণিতাঃ ক্ষুদ্রশশকাঃ
 অনন্তর শিলীসুখো নাম শশকश्चिन्तयामास चनेन
 गजयूथेन पिपासाकुलितेन प्रत्यहमत्रागन्तव्यं । ❀*

অপর আশ্রয়শ্রুতি শব্দকপুযুক্ত হস্তিশ্রেষ্ঠ ও যেকপ
 দর্পণেতে ক্ষুদ্রতাকে পায় এইকপ গুবান মহালোক ও
 ক্ষুদ্রের আশ্রয়েতে তুচ্ছতাকে পায় । বিশেষত অতিমনর্থ
 রাজাতে হ্রলোভিতে ও কার্য সম্পন্ন হয় কেননা শশকেরা
 ক্ষুদ্রশব্দে হ্রলোভিতারা সুখেতে আছে । আমি কহিলাম
 একি পুকার পরিক্রা কহিল । কোন সময় বর্ষাকালে অন্য
 বৃষ্টিহেতুক তৃষ্ণাতুর জগযুথ যুথপাতিকে কহিল হে পুভু
 আমারদিগের জীবনের নিমিত্তে কি উপায় ক্ষুদ্র জন্তুরদি
 গের মজ্জন স্থান নাই আমরা অবগাহনস্থানের অভাব

পুষ্ক মৃতের ন্যায় আছি কি করিব কোথা যাব তাহারপর
গজরাজ গিয়া সমীপে এক ভাল জলাশয় দেখিল । অনন্তর
কিছু দিন গেলে পরে সেই সরোবর সমীপস্থিতক্ষু দুশশকে
রা হস্তিপদাঘাতদ্বারা চূর্ণ হইল শিলীমূখ নামে শশক ভাব
না করিল তৎক্ষণে এই হস্তিঘূথ পুত্ৰ এই স্থানে আসিবেক ।

Even the greatest are reduced to littleness, and those of abundant qualities to insignificance, by the properties of that by which they are opposed; like the royal elephant in the mirror.

Besides,

Great things may be effected by wise counsel, when a sovereign enemy may be too powerful. Certain rabbits were enabled to live in comfort, through the policy of one of their brethren.

I asked them how this was? And the birds related as follows.

FABLE IV.

ONCE upon a time, for want of rain in due season, a troop of elephants being greatly distressed for water, addressed their chief in these words:—What resource have we, except in that hollow sinking ground inhabited by those little animals! but deprived of that too, whither, Sir, blinded as it were, shall we go? What shall we do? Upon hearing their complaints, then chief, after travelling with them a great way, discovered a fountain of clear water. But as many rabbits who happened to be in their burrows were crushed to death under the feet of so many elephants trampling over their warren; at length, one of them, who was called *Sili-Mukha*, reflected in this manner:—This troop of elephants, oppressed with thirst, will be coming here every day to drink,

অতোবিনশ্যত্যস্মৎকুলং । ততো বিজয়ো নাম বৃদ্ধশশকৌ
 ঽবদৎ মা বিধীদত মযাচ প্রতীকারঃ কৰ্ত্তব্যঃ ততোসৌ
 প্রতিজ্ঞায় চলিতঃ গচ্ছতা চ তেনালোচিতং কথং গজযুথ
 সমীপে স্থিত্বা বক্কথ্যং । যতঃ । স্পৃশন্নপি গজো ন্তি জিহ
 ন্নপি ভুজঙ্গমঃ । পলায়ন্নপি ভূপালঃ প্রহসন্নপি দুর্জনঃ ॥
 অতোহং পর্বতশিখরমারুহ্য যুথনাথং স্বেদয়ামি তথা
 নুষ্টিতে যুথনাথউবাচ কল্লং কুতঃ সমায়াতঃ স ব্রূতে
 শশকৌহং ভগবতা চন্দ্রেণ ভবদন্তিক প্রেষিতঃ যুথপতি
 রাহ কার্য্যমুচ্যতাং । বিজয়োব্রূতে । উদ্যতেষ্বপি শস্ত্রেণ
 দূতোবদতি নান্যথা । স দৈবাবধ্যभायेन यथाथैस्य हि
 वाचकः॥तदहं तदाज्ञया ब्रवीमि शृणु यदेते चन्द्रसरो
 रत्तकाः शशकास्त्वया निशारितास्तदनुचितं कृतं ।

অতএব আমাদের জল নষ্টে হইবেক । তদনন্তর বিজয়
 নামে বৃদ্ধ শশক বলিল বিয়গ্ন হইও না ইহাতে আমি
 পুতিকা করিব তাহার পর পুতিজ্ঞা করিয়া চলিল গমন
 করত সে আলোচনা করিল হস্তিযুথ সন্নিধানে থাকিয়া কি
 পুকারে বলিব যেহেতুক হস্তা স্পর্শকরত নষ্ট করে সর্প
 ঘৃণ করত নষ্ট করে রাজ্য পলায়ন করত নষ্ট করে দুর্জন
 হাঙ্গা করত নষ্ট করে অতএব পর্বত শিখরে আরোহণ করি
 য়া যুথপতিকে কহি তাহা করিলে যুথপতি কহিল কে তুমি
 কোথা হইতে আইলা । সে বলিল আমি শশক ভগবান

চন্দ্র আপনকার নিকটে পুরণ করিয়াছেন যখনাথ কহিল
কার্য্য কহ বিজয় বলিতেছে শস্ত্র উত্তীর্ণ হইলে ও দূত অন্য
থা কহে না যেহেতুক দূত অবধ্যভাবেতে সর্বদাই যথার্থের
বক্তা হয় সেইহেতুক আমি তাঁহার আজ্ঞাতে বলি শুন যে
এই চন্দ্র সরোবরের রক্ষক শশকেরা তোমাকর্তৃক দূরীকৃত
হইয়াছে তাহা অনুচিত করিয়াছ।

At length, our whole race will be destroyed ! But
the old buck, whose name was Vijaya, said to him,—
Fooler, don't be uneasy, for I am going to prevent what
you dreadest. Saying which, he set off to try how he
could oppose them, but as he went along, he began to
consider how he should approach so formidable a troop;
for, observed he, they say,

An elephant killeth even by touching, a serpent even
by smelling, a king even by ruling, and a wicked man
by laughing at one

Wherefore, I will mount the summit of a rock to ad-
dress the head of the troop. This being put in execution
accordingly, the chief elephant asked him who he was,
and whence he came. I am, replied he, an ambassador sent
here by the god Chandra. Declare the purport of thy
commission, said the elephant. Sir, replied the rabbit, as

Ambassadors, even when the weapons of war are lifted
up, speak not otherwise than for the benefit of their
state; and although they speak boldly according as it is
their advantage, they are not to be put to death.

Then I will declare what are the commands of the god
Chandra. He bade me say, that in driving away, and
destroying the rabbits who are appointed to that Duty,
you have done ill;

তে শশকাস্থিরমস্মাকং রক্ষিতাঃ অতএব মে শশাঙ্ক ইতি
 প্রসিদ্ধিঃ এবমুক্তবতি দূতে যুথপতির্ভয়াদিদমাহ প্রাণি
 ধেহি ইদমজ্ঞানতঃ কৃতং পুনর্ন কর্তব্যং দূতউবাচ যযেব
 তদত্র সরসি কোপাত্ কম্পমানং ভগবন্তং শশাঙ্কং প্রণম্য
 প্রসাদ্য গচ্ছ ততোরাত্রৌ যুথপতিং নীত্বা জলে চঞ্চলং
 চন্দ্রবিম্বং দর্শয়িত্বা যুথপতিঃ প্রণামং ক্লারিতঃ উক্তম্ভ
 তেন দেব অজ্ঞানা দনেনা পরাধঃ কৃতস্ততঃ স্তম্যতাং নৈব
 বারান্তরং বিধাস্যতে ইত্যুক্তা প্রস্থাপিতঃ অতোऽহং ব্রবী
 মি ব্যপদেশেপি সিদ্ধিঃ স্যাদिति । ততোমথোক্তং স এবাস্ম
 ত্প্রভুরাজহংসঃ মহাপ্রতাপোঽতিসমর্থঃ ত্রৈলোক্যস্যাপি
 প্রমুখং তত্র যুজ্যতে কিং পুনরাজ্যমिति । *❀❀*

সে শশকের। বহুকাল আগাদিগের রক্ষিত অতএব আমার
 নাম শশাঙ্কঃ এই পুসিদ্ধ আছে । এই পুকারে দূত কহিলে
 পরে যুথস্বামী ভয়েতে ইহা কহিল অবধান কর অজ্ঞান
 প্রযুক্ত ইহা করিয়াছি পুনর্বার করিব না দূত বলিল যদি এই
 ক্রপ তবে এই সরোবরে কোপেতে কম্পিত কলেবর ভগ
 বান শশাঙ্ককে পূজাম করিয়া পূজন করিয়া গমন কর । অন
 তর রাজিতে যুথপতিকে লইয়া জলেতে চঞ্চল চন্দ্রমণ্ডল
 দেখাই । যুথস্বামিকে পূজাম করাইল আর সে কহিল হে
 চন্দ্র অজ্ঞান প্রযুক্ত ইনি অপরাধ করিয়াছেন তাহা ক্ষমা কর

দ্বারান্তর একপ করিবেন না ইহা কহিয়া পুস্থান করাইল। অ
তএব আমি বলি অতিসমর্থ রাজাতে ইত্যাদি। তাহার পর
আমিকহিলাম সেইমহাপুতাপাঅতিসমর্থ আমাদেরস্বামী
রাজহংস তাহাতে ত্রিভুবনের কত্ৰ উচিত হয় রাজ্য কি।

for, said he, they are my guards, and it is notorious that the figure of a rabbit is my emblem.

The head elephant, upon hearing this being greatly alarmed, declared that they had offended through ignorance, and would never go to the fountain again. If this be your resolution, said the ambassador, go this once, and make your submissions before the Deity himself, whom you will see in the fountain, quite agitated with anger, and when you have pacified him, you may depart. —Accordingly, as soon as it was night, the ambassador Vijaya having conducted the chief of the elephants to the fountain, there shewed him the image of the moon, trembling, as it were, upon the smooth surface of the water, and when he had made him bow down to it, in token of submission, he said,—Please your divinity! What hath been done having been done through ignorance, I pray thee pardon them! and upon saying this, he caused the elephant to depart. I repeat therefore, *Great things may be effected &c.*

After that, continued the booby, I ventured to say, that our king too was powerful and valiant, and that he was worthy to be the master of the three worlds,

তদাহঁ তৈঃ পশ্চিমির্দৃষ্ট কথমস্মদুগৌ চরসি ইত্যভি
 ভাষ্য রাজ্যস্থিতবর্ণস্য সমীপং নীতঃ ততো রাজ্ঞঃ পুরোমাং
 প্রদর্শ্য তৈঃ প্রণম্য উক্তং দেব অধীয্যতাং । এষ দৃষ্টো বকঃ
 যদস্মদেগ্রে চরণপি দেবপাদানধিচ্ছিতপতি । রাজাহঁ
 কোঽয়ং কৃতঃ সমাচাতঃ । তে ঐচ্ছুর্হিরণ্যগর্ভনাম্নো রাজ
 হঁসস্যানুচরঃ কর্পূরদ্বীপাঙ্গতঃ । অথাহঁ গৃধ্রেণ মন্ত্রি
 ণা পৃষ্ঠঃ কলত্র মুল্যো মন্ত্রীতি মযোক্তং সর্বশাস্তার্থ
 পারগঃ সর্বজ্ঞো নাম চক্রবাকঃ । গৃধ্রো ব্রূতে যুজ্যতে স্বদেশ
 জোঽসৌ ॥ যতঃ ॥ স্বদেশজং কুলাচারং বিশুদ্ধমথ বাশুচি
 নম্রব্রহ্মসম্যসনিনং ব্যভিচারবिवর্জিতং । অধীতব্যব
 হারজ্ঞং মৌলি ল্যাতং বিপশ্বিতং অর্থস্যোত্যাদকশ্চৈব বিদ
 ধ্যান্নম্ব্রিণং নৃপঃ ॥ অন্তরে শুকেনোক্তং দেব কর্পূরদ্বী
 পাং দ্যৌলধুদ্বীপাঙ্গমুদ্বীপান্তর্গতাএব ।


তখন আর দূষ্টে তুই আমারদের স্থানেতে চরিতেছিস ইহা
 কহিয়া পাঁকুরা আনাকে চিত্রবর্ণের সন্নিধান লইয়া গেল
 অনন্তর রাজার অগ্রেতে আনাকে দেখাইয়া তাহার পুণাম
 করিয়া কহিল হে মহারাজ অবধান করুন এই দূষ্টে বক যে
 আমারদের দেশে চরত ও মহারাজের চরণের নিন্দা করে ।
 রাজা কহিল কে এ কোথা ইহাতে আনিয়াছে তাহার কহিল
 দ্বিগণগর্ভ নামে রাজহঁসের অনুচর কর্পূর দ্বীপ ইহাতে
 আনিয়াছে । অনন্তর গৃধ্র ন্যতিকর্তৃক আমি জিজ্ঞাসিত হই

জান সেখানে পুথান মন্ত্রীকে আনি কহিলান সকল শাস্ত্রার্থ
বেত্তা সর্বজ্ঞ নামে চক্রবাক । গৃধ্র বলিতেছে উপযুক্ত বটে
এ ব্যক্তিস্বদেশজাত যেহেতুক নিজদেশ জাত স্নানচারবেত্তা
উৎকোচধনা গ্রাহক পবিত্র মন্ত্রজ্ঞাতা ব্যসনরহিত ব্যভিচার
দোষেতে রহিত ব্যবহারজ্ঞ উত্তম বংশজাত খ্যাত পণ্ডিত
ধনের উৎপাদক এতাদৃশ ব্যক্তিকে রাজা মন্ত্রী করিবেক ।
ইত্যবসরে শুক কহিল হে রাজাধিরাজ কপূরদ্বীপগুপ্ততি
ক্ষুদ্রদ্বীপ জম্বুদ্বীপের মধ্যেই ।

upon which they laid hold of me with their beaks; and, asking me what business I had in their country, they carried me before their chief Chitra-varna; and when they had shewed me to him, bowing to their king, they said,—Please your highness, let this guilty booby be confined, for he dares, even whilst he is travelling in our land, to treat with contempt your royal feet! The king, in anger, demanded to know whence I came; and they informed him, that I was the servant of the goose Ihanya-garbha, and that I came from Karpura-dwipa. —After that, the minister, who was a vulture, asked me who was the prime minister in this country, and I told him, a Chakra-vāka whose name was Know-all You esteem him, replied the vulture, because he is your countryman, they say, indeed,

A king should engage for his minister one who is a native of his own country; pure in all his ways, and cleanly in his dress; not one who is an outcast, addicted to idle pleasures, or too fond of women, but one of good repute, who is well versed in the rules of disputation, is of firm mind, and expert in raising a revenue.

A parrot next spoke, and observed, that as Karpura-dwipa was comprehended in Jambu-dwipa,

তত্রাপি দেবদাদানামেবাধিপত্যং ততো রাজ্ঞাপ্যুক্তং এবমৈব ॥
 যতে: ॥ রাজা মনতঃ শিশুশ্চৈব: প্রমাদো ধনগর্দিত: ।
 অপ্রাপ্যমভিবাঙ্গন্তি কিং পুনর্লভ্যতেপি যত: ॥ ততো মযোক্তং
 যদি বচনমাশ্রিত্বৈবাধিপত্যং সিদ্ধ্যতি তদা জম্বুদ্বীপেষু
 স্নাত্ প্রমোহির্হরণ্যগর্ভস্য স্বাম্যমস্মি । শুকোব্রূতে কথমত্র
 নির্ণয়: মযোক্তং সংগ্রামএব । রাজ্ঞা বিহস্যোক্তং স্বস্বা-
 মিনং গত্বা সজ্জীকুরু । তদা মযোক্তং স্বদূতোপি প্রস্থাপ্য-
 তাং । রাজোবাচ । কঃ প্রয়াস্যতি দৈত্যেন যতএবম্মূতো
 দূত: কার্য্য: । ভক্তোগুণী শুচির্দত্ত: প্রগল্ভোব্যসনী চর্ম্মী ।
 দ্বাচ্ছাণ: পরমর্ম্মজ্ঞো দূত: স্যাৎ প্রতিभाववान् ॥ গৃধ্রো বদ-
 তি সন্ত্যেবদূতাবহব: কিন্তু দ্বাচ্ছাণএবকর্ত্তব্য: ॥ * 

তাহাতে ও মহারাজের চরণের পুভুত তাহার পর রাজ
 কর্ত্তক ও কথিত হইল এই বটে যেহেতুক রাজা ও মদিরা
 পানাদি পুষ্পুক্ত মত্ত ও বালক ও অবিবেচক ও ধনগর্দিত
 ইহারাদুষ্প্রাপ্য বস্তুকে ও অভিনায করে যাহা পুণ্য হয়
 তাহার কথা কি । তদনন্তর আমি কহিলাম যদি বাক্যমা-
 ত্রেতেই আমি ভ্রমিদ্ধি হয় তবে জম্বু দ্বীপেতে ও আমাদের
 আমি হিংগভের পুভুত আছে শুক বলিতেছে ইহাতে
 কি নিশ্চয় আমি কহিলাম যুদ্ধই । রাজা হাস্য করিয়া কহি-
 লেন আপন পুভুকে গিয়া পুষ্পুক্ত কর তখন আমি কহিলাম

আপন দূতকে ও পাঠাও । রাজা বলিলেন দৌত্যকর্মেতে কে যাইবে যেহেতুক এই পুকার দূত কর্তব্য অনুরক্ত ও গুণবান ও পবিত্র ও নিপুণ এবং বক্তা ব্যসনরহিত ও ক্রমাযুক্ত পরমর্থাবোক্তা অনুভবদ্বারা কার্য্যবোদ্ধা এতাদৃশ লোক দূত হয় । গৃধ্র বলিতেছে অনেক দূত আছে কিন্তু ব্রাহ্মণই কর্তব্য যেহেতুক ।

the authority of his Majesty's feet certainly extended over that country also; to which the king of the birds replied,—Thus it is!

Sovereigns, the libidinous, and children, with madmen, and such as are made vain by riches, are over anxious for what is not attainable, and how much more so for what is to be procured!

Upon this, I said,—If dominion were obtained by words only, then might all Jambu-dwipa be subject to my king. Let it be declared how, said the parrot, and where he will give proofs of it! And I replied,—In battle! At this their king laughing, said,—Go to thy master, and tell him to make preparations for it. Send thy own ambassador, said I. Who shall go? asked the king; for an embassy such a person is required as is described in these lines:

An ambassador should be a trusty servant, endued with good qualifications, pure in his principles, clever, agreeable, unaddicted to fruitless pleasures, patient, and, with all, a Brāhman who is well acquainted with the moral and religious customs of strangers, and the nature of opposition.

Although there are many such to be found, here exclaimed the vulture, still a Brāhman is to be preferred; for,

যতঃ॥ প্রসাদং কুরুতে পত্যুঃ সম্যক্তিং নাভিবাঙ্ঘ্রতি। কালি
 মা কালকূটস্য মাপৈতীশ্বরসঙ্গমাৎ ॥ রাজাহততঃ শুক
 এব ব্রজতু শুক ত্বমেবানেন সহ গত্বা অক্ষদমিলিষিতং
 ব্রূহি। শুকো ব্রূতে যথাজ্ঞাপয়তি দেবঃ কিন্ত্বয়ং দুর্জনে
 বকস্তুদনেন সহ ন গচ্ছামি ॥ তথা চোক্তং ॥ ত্বলঃ
 কৰোতি দুর্জন্তি নুনং ফলতি সাধুষু। দশাননোহরেত
 সীতাং বন্ধনং স্যান্মহোদধিঃ ॥ অপরঞ্চ ॥ ন স্যাতব্যং ন
 গন্তব্যং দুর্জনেন সমং ক্বचित্। কাকসঙ্গাদ্বিতোহংসস্তি
 ষ্ঠন্ গচ্ছংস্ব বর্নকঃ ॥ রাজোবাচ। কথমেতৎ। শুকঃ কথ
 যতি অস্ত্যুজ্জয়িনী বর্নপ্রান্তরে প্লবতরুঃ তত্র হংসকাকৌ
 নিবসতঃ কদাচিত্ ত্রীঘ্নসময়ে পরিত্রাণতঃ কশ্মিত্
 পথিকস্তত্র তরুতলে ধনুঃ কাণ্ডং সন্নিধায় সুপ্তঃ।

স্বামির পুণ্যমতাকেই করে ঐশ্বর্যকে অভিলাষ করে না যেম
 ন শিবের কণ্ঠে লগ্নকাল কূটের কৃষ্ণবর্ণ যারনা অর্থাৎ স্বামির
 শুকবর্ণ সৌন্দর্য্য গৃহণ করেন। রাজা বহিলেন সেই হেতুক
 শুকই গমন করুন হে শুক তুমিই ইহার সহিত গমন করিয়া
 আমাদের বাঞ্ছিত বল শুক বলিতেছে মহারাজ যে পুকার
 আজ্ঞা করেন কিন্তু এই বকদুর্জন এই হেতুক ইহার সহিত
 গমন করিব না তাহা পণ্ডিতকর্তৃক উক্ত আছে খল লোক
 দুষ্কর্ম করে সজ্জনেতে অবশ্য ফলে রাবণ সীতাকে হরণ
 করিল সমুদ্র বন্ধন হইল অগর দুষ্ট লোকের সহিত

থাকিবে না গমন ও করিবে না কেননা কাক সমভিব্যাহারে
হংস থাকত এবং বর্ত্তক গমন করত নষ্ট হইল । রাজা
বলিলেন ইহা কি রূপ শুক कहিতেছে । উজ্জয়নির পথের
মধ্যে এক পাকুড বৃক্ষ থাকে তাহাতে হংস আর কাক
বাস করে গ্রীষ্ম কালেতে এক দিন কোন পথিক শ্রান্ত হই
য়া রক্ষতলেতে ধনু ও শর রাখিয়া নিদ্রা গেল ।

He acteth according to the pleasure of his employer;
he seeketh not wealth; even by the company of Shiva,
the black hue of the venom is not to be removed.

This being the case, let the parrot, said the king,
along with this person; and, upon thy arrival, make
known our will It shall be according to your highness's
commands, replied the parrot; but this booby is a vile
animal, and I am not used to go any where with a person
of bad character They say,


A villain is sure to commit some evil action, and he
succeedeth amongst good men. Sitā was seized by Rā-
vana. The ocean may have bonds.

*It is not proper either to stay, or to go any where,
along with an evil-disposed person. A goose suffered for
staying with a crow, and a Varttaka (Quail) for
going with him.*

How was this? demanded the king; and the parrot re-
counted the following story:

FABLE V.

ON a private road in Ujjayini there was a large pip-
pala tree, where lived together a goose and a crow. Once
upon a time in the cold season, a traveller came there,
and having placed his bow and his arrows safe away
under the tree, he went to sleep.

তত্র স্ফলান্তরে তন্মুখাত দৃষ্টচ্ছায়া অপগতা ততঃ
 সূর্য্যতেজসা তন্মুখং ব্যাপ্তমবলোক্য তদ্বৃদ্ধস্থিতেন হংসেন
 ক্রপয়া পক্ষৌ প্রসার্য্য পুনস্তন্মুখে চ্ছায়া দৃষ্টা ততো
 নির্ভরনিদ্রাসুখিনা তেন মুখব্যাধানং কৃতং অথ সুখম
 সহিষ্ণুঃ স্বभावदौर्जन्येन स काकस्तस्य मुखे पुरीषोत्
 सर्गं कृत्वा पलायितः ततो यावदसौ पान्थ उत्थाय ऊर्द्धं
 निरोक्षते तावत्तेनावलोकितो हंसः काण्डेन हतो व्यापा
 दितः । वर्त्तककथामपि कथयामि एकदा भगवतो ग
 रुडस्य यात्राप्रसङ्गेन सर्वे पक्षिणः समुद्रतीरं गताः
 ततः काकेन सह वर्त्तकश्चलितः अथ गोपालस्य गच्छतो
 दधिभाण्डाद्वारं वारं तेन काकेन दधि लायते ततो याव
 दसौ दधिभाण्डं भूमौ निधाय ऊर्द्धमवलोकते ताव
 त্তेन काकवर्त्तकौ दृष्टौ । *





তাহাতে কিঞ্চিৎ কালের পর তাহার মুখহইতে বৃক্ষচ্ছায়া
 গেল । তদনন্তর সূর্য্যাকিরণব্যাগ্ত তাহার মুখ দেখিয়া ঐ
 বৃক্ষস্থিত হংস দয়াহেতুক পক্ষদ্বয় বিস্তার করিয়া পুনর্বার
 তাহার মুখেতে ছায়া করিল তাহার পর সে অতিশয় নিদ্রা
 গেল মুখেতে মুখ ব্যাধান করিল অনন্তর স্বভাব দুর্জনতা
 হেতুক পরমুখামহনশীল ঐ কাক তাহার মুখেতে বিষ্ঠা ত্যাগ
 করিয়া পলাইল তৎপরে যখন ঐ পক্ষিক উঠিয়া উচ্চেতে
 অবলোকন করিল তখন তৎকর্তৃক সে হংস নিরীক্ষিত

हईया बाणकरणक बद्ध हईया विनाशित हईल बर्तकैर कथा
 छ कहि । एकदिवस भगवान् गङ्गदेर यात्रापुसङ्गते सकल
 पाकिरा समुद्र तीरे गेल तदनन्तर काकेर सङ्गते बर्तक
 चलिन । ताहार पर याईतेहिन ये गोप ताहार दधि भाङ्ग
 हईते पुनः२ সেই काक दधि खाईते नागिना अनन्तर यখন
 ऐ गोपाल दधिभाङ्गके भूमিতে রাখिया উদ্বেते निरीक्षण
 करिन तখন ताहाकर्तृक काक ও বর্তক অবলোকিত হইল

A few minutes after, the shade of the tree passed away from his face, and presently it was covered by the scorching rays of the sun; upon seeing which, the goose, who was in the tree, expanded his wings, and again a shadow was formed as before. A little while after, in the enjoyment of a sound nap, the man happening to open his mouth, the crow dropped his excrement into it, and flew out of the way. But the man waking, and seeing the goose upon the tree, concluded that it was he; so, being in a passion, he took his bow, and with an arrow drawn home to his ear, shot him dead upon the spot. I say, therefore, *It is not proper to stay, &c.* I will now relate the history of the Varttaka, continued the parrot.

FABLE VI.

ONCE upon a time all the birds of the air went in a body upon a pilgrimage to the sea side in honour of Garuda; and amongst the rest, the crow went accompanied by a Varttaka. As they flew along, the crow repeatedly stole and ate of some curds out of a pot which a farmer was carrying upon his head; but as soon as the man put the pot upon the ground, and saw the crow and the Varttaka together in the air,

ততস্তেন। খেদিতঃ কাকঃ পলায়িতঃ বর্জনকঃ স্বভাব
 নিরপরাধো মন্দগতিস্তেন প্রাপ্তো ব্যাধিতঃ অতোচ্চং
 ব্রবীমি ন স্খ্যাতব্যং ন গন্তব্যমিত্যাदि। ততো ময়োক্তা
 ভ্রাতঃ শুকঃ কিমেবং ব্রবীষি মাং প্রতি যথা অমদেবস্তথা
 भवानपि। शुकেনोक्तं अस्यैवं॥ किञ्च॥ दूर्जनैरुच्यमा
 नानि सम्मतानि प्रियाण्यपि। अकालकुसुमानीव मयं
 सज्जनयन्ति हि॥ दूर्जनत्वञ्च भवतो वाक्यादेव ज्ञातं
 यदनयोर्भূपालयोर्विग्रहे भवद्वचनमेव निदानं। पश्य।
 प्रत्यक्षेपि कृते दोषे मूर्खः शान्तेन तुष्यति। रथकारো नि
 जां भार्यां सजारां शिरसा करोत्॥ राज्ञোक्तं कथमे
 तत्। शुकः कथयति अस्ति दौवनश्रीनगरे मन्दमति
 र्नाम रथकारः स च स्वभार्यां बन्धकीं जानाति जारेण
 समं स्वच्छक्षुषा नैकस्थाने पश्यति। **

তদনন্তর তাহাকর্তৃক দূষীকৃত হইয়া কাক পলাইল
 নিরপরাধী স্বভাবতো মন্দগতি তাহা কর্তৃক প্রাপ্ত
 হইয়া ব্যাধিত হইল। এই নিমিত্তে আমি বলি
 দৃষ্টলোকের সহিত থাকিবে না ইত্যাদি। তাহার পর
 আমি বলিলাম ভ্রাতা শুক এ কি বলিতেছে আমার
 পুতি শ্রীযুক্ত মহারাজ যে রূপ আপনি ও সে রূপ শুক
 কহিল এই বটে কিন্তু দূর্জনকর্তৃক পুিয় অথচ সম্মতকথিত
 হইলে ও অকাল পুষ্পের ন্যায় ভয় জন্যায় আপনকার

বচনেতেই দুর্জনত্ব অবগত করিয়াছে যে এই দুই রাজার
সংগামেতে আপনকার বাক্যই কারণ দেখ সাক্ষাৎ
অপরাধ করিলে ও মূর্থ সাত্বনাতে তুষ্ট হয় কেননা উপপ
তির সহিত আপন জায়াকে রথকার মস্তকেতে করিয়া
ছিল। রাজা জিজ্ঞাসিলেন এ কি পুরকার শুক বলিতেছে।
যৌবনশুণিগরে মন্দমতি নামে রথকার থাকে সে আপন
পত্নীকে দূষিত করিয়া জানে কিন্তু উপপতির সহিত
একস্থানে নিজচক্ষুতে কখন দেখে না।

the former, being guilty, flew out of the way; but the
latter, being but slow of flight, was caught and instantly
killed. I say, therefore,—*It is not proper either to stay,
or to go &c.*

I then said,—Brother parrot, what is the reason thou
railest thus against me? I esteem thee, nevertheless, as
the feet of his highness! Be it so, replied the parrot, but,

When sincere and beloved friends are counted by those
of bad character, it createth in me as much dread, as
the sight of flowers out of season.

Thy being a rascal is made evident to me from thy
conversation; for if there should be any falling out be-
tween our two masters, thy tongue will be the cause,

Observe:

*A fool will rejoice and be happy, even when offences
are committed before his eyes. A certain wheelwright
put his own wife with her gallant upon his head.*

How was that? said the king and the parrot related
the following story:

FABLE VII.

IN Sri-nagara there lived a wheelwright, whose name
was Dull-wit; who, though he believed his wife was
false to his bed, had never, with his own eyes, seen her
with her gallant.

ততোঽসৌ রথকারোঽহমন্যং গ্রামং গচ্ছামীত্যুক্ত্বা
 চলিতঃ কিঞ্চিদূরং গত্বা পুনরাগত্য পর্য্যঙ্কে স্বমৃদে
 নিমৃতং স্থিতঃ অথ রথকারোগ্রামান্তরং গত্বত্যুপজাত
 বিশ্বাসঃ স জারঃ সম্বন্ধাকালং বাগতঃ পশ্চাত্তেন
 সমং তस्याং পর্য্যঙ্কে ক্রীডন্তী পর্য্যঙ্কতলস্থিতস্য মর্চুঃ
 কিञ্চিদঙ্গস্পর্শাৎ স্বামিনং মায়াবিনমিতি বিজ্ঞায
 বিপক্ষাভবৎ ততোজারেণোক্তং কিমিতি ত্বমद्य ময়া সঙ্ঘ
 নির্ভরং ন রমসে বিস্মিতেব প্রতিभासि মে ত্বং । তথোক্তা
 অনभिज्ञোঁসা মম প্রাণেশ্বরোযেন সমাকৌমারং সখ্যং
 সোঽয়গ্রামান্তরং গতঃ তেন বিনা সকলজনপূর্ণে ঽপি গ্রামে
 মাং প্রতি অরণ্যবৎ भाति কিং भावि তच्च পরস্থানে কিং
 খাদিতবান্ কথং বা প্রসুপ্তঃ ইত্যস্মদ্বৃদয়ং বিদীৰ্য্যতে ।

তার পর ঐ রথকার আমি অন্য গ্রামে গমন করি ইহা কহি
 য়া চলিল কিছু দূর গিয়া পুনশ্চ আসিয়া পর্যাঙ্কতলে নিজগৃহে
 পুচ্ছন্ন হইয়া থাকিল । অনন্তর রথকার গ্রামান্তরে গিয়াছে
 ইহাতে সেই জার জাত পুতায় হইয়া সায়ং কালেতেই আইল
 অনন্তর তাহার সহিত সেই খড়্গাতে ক্রীড়া করত পর্যাঙ্ক
 তলস্থিত আমিহ কিঞ্চিৎ অঙ্গস্পর্শেতে আমিকে কণটী
 জালিয়া বিষণ্ণা হইল তাহার পর উপগতি কহিল কেন
 তুমি অদ্য আমার সহিত গাঢ়রমণ করিতেছ না তুমি
 আমার মস্তকে বিম্বিতার নায়^১ পুতিভা পাইতেছ ।

নে কহিল ও ছে মূৰ্খ সে আমার পুণ্যনাথ ঠাহার সহিত
আমার বাল্যাবধি বন্ধুতা তিনি আজি গ্রামান্তরে গিয়া
ছেন তাঁহার ব্যতিরেকে সমস্ত ননুষ্যেতে গ্রাম পূর্ণ থাকিলে
ও আমার পুতি কাননতুল্য পুকাশ পাইতেছে কি হইবে
তিনি পরস্থানে কি ভ্রমণ করিয়াছেন কি পুকারে বা শয়ন
করিতেছেন এই নিমিত্তে আমার হৃদয় বিদীর্ণ হইতেছে।

So he pretended that he was going out of town, but after he had gone a little way, he returned home, and privately hid himself under the bed. In the mean time, the gallant, supposing the wheelwright was actually gone out of town, made his appearance, and, soon after, the wife retired with her lover to the same bed; where they began to converse without restraint. But just now, from the feel of something touching the under part of the bed, she concluded that her husband was beneath, and so was a little disconcerted; upon which her gallant said,—What is the reason thou dost not enjoy the present moment free from care? Thou appearest as if thou wert alarmed at something! Alas! replied the artful woman, he who is the lord of my life is gone abroad to-day; wherefore the city, though ever so full of inhabitants, to me appeareth a mere desert! What is to be done! What has he eaten in a foreign place, and how is he now sleeping! Oh! How my heart throbs for these things!

જારોન્નૂતે તવ કિમેવં સ્નેહભૂસીરથકારઃ વન્ધક્યવદતરે
 વર્ધર કિન્નદસિ। ષ્ઠણુ । પરુષાણપિ ચા પ્રેક્તા દૃષ્ટાયા
 ક્રોધચક્ષુષા। સુપ્રસન્નમુલો ભર્તુઃ સા નારી ધર્મભાગિની॥
 અપરશ્ચ ॥ નગરસ્થો વનસ્થો વા પાપો વા યદિ વા શુદ્ધિઃ ।
 યાસાં સ્ત્રીણાં પ્રિયો ભર્ત્તા તાસાં લોકામહોદયાઃ ॥
 અન્યચ્ચાભર્ત્તા હિ પરમં માર્યાભૂષણં ભૂષણૈર્વિના। યથા
 વિરહિતા તેન શોભનાપિ ન શોભના। ત્વં જારઃ પાપમતિ
 મનોલૌલ્યાત્ પુષ્પતામ્બૂલસદૃશઃ કદાચિત્ સેવ્યસે કદા
 ચિન્ન સેવ્યસે ચ સચ સ્વામી માં વિક્રેતું દેવેભ્યો બ્રાહ્મણે
 ભ્યોપિ દાતુમોશ્ચરઃ કિં વક્ત્રના તસ્મિન્ જીવતિ જીવામિ
 તન્મરણં ચાનુમરણં કરિષ્યામિ ઇતિ પ્રતિજ્ઞા વર્ત્તતે ॥

જાર કહિતેહે તોમાર કિ એપુકાર સુહજ્ઞાન રથકાર ।
 વન્ધકી વનિલ અરે વર્ધર કિ વનિતેહિસ શુન શ્રામિકત્ક
 યે સ્ત્રી નિઠૂરવાકા ઓ કથિત હય ઓ કોપચક્ષુતે દૃષ્ટ હય
 ને સુપ્રસન્નમુલો સ્ત્રી ડર્ઠાર ધર્મભાગિની હય । અપર નગરસ્થ
 વા હડક વનસ્થ વા હડક અપવિદ્ધ વા હડક પવિદ્ધ વા
 હડક શ્રામિયે સ્ત્રીલોકેરદિગેર પ્રિય હય નેઈ સ્ત્રીલોકેર
 દિગેર ઉત્તમ સર્ગ હય । અપર નારી જનનેર અનકારવાતિરે
 કે ઓ શ્રામી ઉત્તમ અનકાર ડર્કત્કત્ક વિરહિતાયે નારી

সে শোভিতা হইয়া ও শোভিতা নয় । তুমি উপপতিপাপ
নতিঅন্তঃ করণের চাঞ্চল্য পুযুক্ত পুণ্যতাম্বুলের ন্যায় কদা
চিৎ সেবা হওকদাচিৎ সেবা না হওতিনি ভক্তা আমার
বিক্রয় করিতেও দেবতাকে ও ব্রাহ্মণকে দিতে পুভু হন কি
বিস্তার কহিব তিনি বাঁচিলে বাঁচি তাঁহার মরণ হইলে
অনুমরণ করিব এই পুতিজ্ঞা আছে ॥

Then is thy wheelwright, said the gallant, a subject
worthy of all this tenderness? he who calls thee whore,
and strumpet? Villain! exclaimed she, what is this thou
sayest? Hear me!

She is a virtuous woman, who, when spoken harshly
to, and viewed with angry eyes, appeareth before her
husband with a mild and placid countenance.

The regions of eternal happiness are provided for those
women, who love their husbands the same in a wilder-
ness, as in a city; be he a saint, or be he a sinner.

A husband is a woman's first ornament, although him-
self be unadorned; but when she is without one, be she
ornamented, she is not adorned.

Thou art very fine, to be sure, and hast the appearance
of a figure made up of garlands and flowers, Pray do
people ever worship thee? My husband, if he chooses,
can sell me to the gods, or give me to the Brāhmans;
but what of that?

I live in him living, and in him, my beloved, will I
live when dead; for upon his death, to die after him is
my firm resolve.

যতঃ ॥ তিস্রঃ কোট্যর্ধকোটি চ যানি লোমানি
 জানিষে । তাবৎ কালং বসেৎ স্বর্গে ভর্ত্তারং যাঃনগচ্ছতি ॥
 অন্তঃ ॥ অ্যালগ্রাহী যথা অ্যালং বলাদুদ্বরতে বিলাত্ ।
 তদ্বভর্ত্তারমাধায় স্বর্গলোকে মহীয়তে ॥ অপরঃ ॥
 চিতো পরিষ্বজ্য বিচেতনে পতিং । প্রিয়া হি যা মুञ্চতি
 দেহমাত্মনঃ ॥ কৃত্বাপি প্রাপং শতসংখ্যমপ্যধৌ পতিং মৃদ্বীত্বা
 সুরলোকমাশ্রুয়াৎ ॥ এতৎ সৰ্বং শুভা স রথকারোঃ বদত্
 ধন্যোঃ হং যস্যে দৃশৌ প্রিয়বাदिनी স্বামিবত্ সলা ভাৰ্য্যেতি
 মনসি নিধায় তাং খট্वा स्त्रीपुरुषसहितौ মূর্খৌ কৃত্বা
 শানন্দং ননর্ত্তন্ত্যতোঃ হং ব্রবামি প্রত্যক্ষোপি কৃতে দোষত্
 ত্যাदि । ততোহং তেন রাজ্ঞা যথা ব্যবহারং সম্পূজ্য প্রস্থা
 পিতঃ শুকোপি মম পশ্চাদাগচ্ছন্নাস্তে এতৎ সৰ্বং পরি
 জ্ঞায় যথা কৰ্ত্তব্যমনুসম্ভীয়তাং । *❀*❀*❀*

যেহেতুক মনুষ্যশরীরে সাক্ষাৎ তিন কোটি লোম আছে
 যে স্ত্রী স্বামির সহিত সহবরণ করে সে স্ত্রী তাবৎকাল
 স্বর্গেতে বাস করে । এরং সাধুভিত্তি যেনন গর্ভ হইতে
 সপক্ষে উদ্ধার করে সেইরূপ পতিকে উদ্ধার করিয়া লইয়া
 স্বর্গেতে যায় । অপর যে পুত্রস্ত্রী চিত্তে মৃত পতিকে আলি
 জ্ঞ করিয়া আপনার শরীরকে ত্যাগ করে শতসংখ্য ও পাপ
 করিয়া এই স্ত্রী স্বামিকে গৃহণ করিয়া দেবলোকে গমন করে ।
 এই সকল শুনিয়া রথকার বলিল আনি ধন্য যাহার এত

কুশী পুরভাষিণী আমি বৎসলা পত্নী ইহা অন্তঃকরণে ক
 রিয়া জী পুরুষ সহিত সেই খট্টাকে মস্তকে করিয়া আত্ম
 দেতে নৃত্য করিল । এই নিমিত্তে আমি বলি সাক্ষাৎ ও
 অপরাধ করিলে ইত্যাদি । তাহার পর সেই রাজা ব্যব
 হারানুসারে আমাকে সন্মান করিয়া বিদায় করিলেন শুক
 ও আমার পশ্চাৎ আসিতেছে এই সকল জানিয়া যাহা
 কর্তব্য তাহা অনুসন্ধান কর ।

For,

The woman who followeth her husband may remain in
 heaven for a million and a half of years, or for as many
 as there are hairs upon the body.

As the snake-catcher by force draweth up the serpent
 from its hole; so, having taken her husband, she is to
 be raised into heaven.

Him should she attend whilst living, and him should
 she sleep with when dead, to whom her father may have
 given her, or her brother according to her father's will.

The foolish wheelwright, upon hearing all these fine
 speeches, said to himself,—O what a lucky fellow I am,
 to possess a wife who can speak of me with such tender
 love and affection! and, saying this, he rose with the
 bed and its contents, and began to dance for joy. I re-
 peat therefore,—*A fool &c.*

After this, continued the booby, as soon as the king
 had paid me the usual compliments, I was dismissed,
 and the parrot is coming behind. And now that I have
 apprized your highness of all this, let that which is most
 proper be pursued.

অকস্মিকোবিহস্ত্যাহ দেব বকেন তাবদেয়ান্তরমপি
 নান্যে অথশক্তি রাজকার্য্যমনুষ্ঠিতং কিন্তু দেবস্বभाव
 'যমূর্খাণাং ॥ যতঃ ॥ যতং দৃষ্টান্ন বিবদেদিতি বিজ্ঞস্য
 সম্মতং । বিনা হেতুনপি ইদমেতন্মূখস্য লক্ষণং ॥ রাজাহ
 কিমতীতোপাস্তম্ভনেন প্রস্তুতমনুসম্বীযতাং । চক্ৰোব্রূতে
 দেব বিজনে ব্রवीমি ॥ যতঃ ॥ বর্ণাকারপ্রতিধ্বানৈর্নববক্ত
 বিকারতঃ । অযুহন্তি মনোধীরাস্তস্মাদ্রহসি মস্রযেতং ॥
 অন্যচ্চ ॥ আকারৈরিঙ্গিতৈর্গত্যা চেष्टয়া ভাষণেন চ। নেত্র
 বক্তাবিকারাভ্যাং জ্ঞায়তেऽন্তর্গতং মনঃ ॥ রাজা মস্বী চ তত্র
 স্থিতঃ অন্যে অন্যত্র গতাঃ চক্ৰোব্রূতে দেবাহমেবং জানামি
 কস্যাপ্যস্মান্নিয়োগিনঃ প্রেরণায় বকেনেদমনুষ্ঠিতং ॥

চক্রবাক হাম্য করিয়া কহিলেন হে মহারাজ বক দেশান্তর
 গিয়া জানর্থানুসারে রাজকার্য্য অনুষ্ঠান করিয়াছে কিন্তু হে
 ভূপালমূর্খেরদের এইস্বভাব যেহেতুক শতও দিবেক তথাপি
 বিবাদ করিবেক না ইহা পণ্ডিতের সম্মত কারণ ব্যতিরেকে
 ও যুক্ত ইহা মূর্খের লক্ষণ । রাজা কহিলেন অতীতের অ
 নুভবেতে কি পুয়োজন উপস্থিত অনুসন্ধান কর । চক্র
 বাক বলিতেছে হে মহারাজ নির্জনে বলিব যেহেতুক বর্ণ
 দ্বারা আকার দ্বারা পুতিধ্বনিদ্বারা চক্রসিকারদ্বারামুখবিকার
 দ্বারা পণ্ডিতেরা মানস তর্ক করে সেইহেতুক নির্জনে মন্ত্রণা

করিবেক অপরআকারদ্বারা ইজিতদ্বারা গমনদ্বারা চেটা দ্বারা
বাক্যদ্বারা চক্ষুর বিকারদ্বারা মুখের বিকারদ্বারা অন্তরস্থিত
মন জ্ঞাত হয় । রাজা ও মন্ত্রী সে স্থানে থাকিলে ন অন্য
লোকেরা স্থানান্তরে গেল চক্রবাক বলিতেছে হে মাহরাজ
আমি এইরূপ বুঝিতেছি আমাদের কোন নিয়োগি লো
কের পুরণের নিমিত্তে বক এই অনুষ্ঠান করিয়াছে ॥

What! exclaimed the minister Chakra-vāka, the king's affairs have been forwarded, to the utmost of his abilities, by a booby, who happened to travel into a foreign country! But, please your highness, he has acted according to his nature.

One may give him a hundred instances from holy writ, that he should not dispute; still, it is the character of a fool to make a disturbance without a cause.

Have done with these reproachful sayings! said the royal goose, and attend to what has been reported. Please your highness, replied the minister, I speak to you in private; for,

Those who are aware of it can interpret the mind from the changes of the eyes and other members; and even by the report of shape and complexion.

And upon this, the rest withdrawing, the king and his minister were left by themselves, I think, said the minister, that this has been brought about by a spy sent by some officer of our government. They say,

যতঃ ॥ বৈদ্যানামাতুরঃ শ্রেয়ান্ স্বসর্গীণীনি
 যোগিণীং । বিদুষাং জীবনং মূল্যঃ সদ্বর্ণোজীবনংসতাং ॥
 রাজাব্রবীত্ । ভবতু কারণমত্র পঞ্চান্নিরূপণীয়ং
 সম্প্রতি যত্ কৰ্ত্তব্যং তন্নিরূপ্যতাং । চকবা কোব্রূতে দেব
 প্রাণিভিস্তাবত্ প্রহীযতাং । ততস্তদনুষ্ঠানং বলাবলজ্ঞ
 জানীমঃ ॥ তথা হি ॥ ভবেত্ স্বপরাধ্রাণাং কার্য্যা
 কার্য্যাবলোকনে । চারচতুর্মহোভর্ত্তুর্যস্য নাস্তগম্যএব
 সঃ ॥ সচ দ্বিতীয়ং বিশ্বাসপাत्रं গৃহীত্বা যাতু তেমাশৌ
 স্বয়ং তত্রাবস্থায দ্বিতীয়ং তত্বেত্ সম্বকার্য্যং সুনিশ্চতং
 নিশ্চিত্য নিগদ্য প্রস্থাপয়তি ॥ তথা চোক্তাং ॥ তীর্থায়নে
 সুরস্থানং শাস্ত্রবিজ্ঞানহেতুনা । তপস্বিব্যজ্ঞনোপেতৈঃ স্বচ
 রৈঃসহ সম্বদেত্ ॥ গূঢ়চারস্ব যোজলে স্যলৌ চরতি ততো
 সাবয বকোনিযুজ্যতাং । *❀*❀*❀*❀*❀

যেহেতুর্ক চিকিৎসকেরদিগের রোগাই মঙ্গল অধিকারি
 রাজারদের বাসনি ব্যক্তিই মঙ্গল পণ্ডিতেরদের মূর্থই জীবন
 জ্ঞান্নাকেরদিগের উত্তম জাতিই জীবনরাজ্য বলিগেন হউক
 ইহা পঞ্চাৎ নির্ণয় করা যাইবে ইমানী যাহা কৰ্ত্তব্য তাহা
 নিরূপণ কর । চকবাক বলিতেছে হে মহারাজ দূত পুস্থান
 ককক তবে অনুষ্ঠান এবং বলাবল জানিব নিজদেশের
 ও পরদেশের কার্য্যাকার্য্যের দর্শনেতে পৃথিবী পতির দূতই

চক্ষুহীন যাহার চর নাই সে অন্ধই। সে দ্বিতীয় বিশ্বস্ত লোককে
নইয়া যাউক তাহার সহিত ও দূত আপনি সেস্থানে অবস্থান
করিয়া দ্বিতীয় মনুষ্যকে সে স্থানের মজ্জগা ও নির্জনস্থান
নিরূপণ করিয়া কহিয়া পাঠাউক বিজ্ঞেরা কহিয়াছেন তীর্থ
স্থানেতে এবং দেবস্থানেতে শাস্ত্রজ্ঞানহেতুক তপস্বিচিহ্নেতে
চিহ্নিত স্বকীয় দূতদ্বারা সমস্ত জ্ঞাত হইবে যে জলে ও স্থলে
চরে সেই গুঢ় চার সেই হেতুক এই বককেই নিয়োগ কর।

A sick man is the best subject for a physician, and an active emissary for the officers of government, fools are the support of the learned, and a man of secrecy suits a king.

Let the cause alone, said the king; at present it should be determined what ought to be done; then say! First, please your highness, replied the minister, let a spy be sent, and then we shall learn the situation of the country, with its strength and weakness; for they say,

A prince should have a spy to observe what is necessary, and what is unnecessary, to be done in his own, as well as in his enemy's country. He is the king's eye; and he who hath him not is blind.

And let him take a second person with him, in whom he can confide; whom he shall send back, well disguised, charged with such secrets as are worthy to be communicated; whilst he himself remains upon the spot.

He should command his emissaries to go disguised in company with those penitents, who travel with beards under pretence of studying in the courts of temples, and places of holy visitation.

The emissary we send should be one who will go about privately, and who will pass through land and water,

স্বতঃসিদ্ধিঃ এব কস্বিদ্ধকো দ্বিতীয়ত্বেন প্রযাতু তদ্বৎ
 সৌক্যম্ রাজদ্বারে তিষ্ঠন্তু কিন্তু দেব এতদপি সুগুপ্ত
 মনুষ্যাতব্যং ॥ যতঃ ॥ ষট্ কর্ণোভিযতে মদ্বস্তথা
 প্রাপ্তম্ বার্তনয়া । ইত্যাत्मনা দ্বিতীয়েন মদ্বঃ কার্যী
 মহৌধৃতা ॥ পশ্য । মদ্বভেদেপি যে দোষাভবন্তি
 পৃথিবীপতে । ন শক্যাস্তে সমাধাতুমিতি নীতিবিদাং
 মতং ॥ রাজা বিমৃষ্যোবাচ প্রাপ্তস্তাবন্মযোত্তমঃ প্রাণি
 ধিঃ । মদ্বী ব্রূতে তদা সংযামবিজয়োঽপি প্রাপ্তঃ অন্তরে
 প্রতীহারঃ প্রবিশ্য প্রাণম্যোবাচ দেব জম্বুদ্বীপাদাগতো
 দ্বারি শুকস্টিষ্ঠতি । রাজা চক্রবাকমালোক্যে ।
 চক্রবাকোক্তং তাবদ্বত্বাবাসে তিষ্ঠতু পশ্চাদানীয দ্রষ্ট
 ব্যঃ প্রতিহারস্তমাवासस्थानं नीत्वा गतः । राजाह

এইকণ দ্বিতীয় কোন বক যাউক তাহার গৃহের লোকেরা
 রাজদ্বারে থাকক কিন্তু হে রাজাধিরাজ ইহা ও অত্যন্ত
 গোপনে কর্ভব্য যে হেতুক মন্ত্রণা ষট্ কর্ণ হইলে ভিন্ন হয়
 আর বার্তা পুাপ্ত হইলে ভিন্ন হয় এই নিমিত্তে রাজা
 আপনি দ্বিতীয় মন্ত্রির সহিত মন্ত্রণা করিবেক দেখে হেনুপ
 তি মন্ত্রভেদ হইলে যে দোষ হয় তাহা সন্নাধান করিতে শক্য
 হয় না নীতিজ্ঞেরদিগের মত এই রাজা বিবেচনা করিয়া
 কহিলেন আমি উত্তম চর পাইয়াছি । মন্ত্রী বলিতেছে
 তবে যুদ্ধেতে জয় ও পাইলা ইত্যবসরে দ্বারী পুবেশ করিয়া

পুণাম করিয়া বসিল হে মহারাজ জম্বুদ্বীপহইতে শুক আসিয়া দ্বারেতে আছে । রাজা চক্রবাককে অবজ্ঞাকন করিলেন চক্রবাক কহিল আবাসেতে গিয়া থাকুন পশ্চাৎ আনিয়া দেখা যাইবেক দ্বাররক্ষক তাহাকে আবাসস্থানে লইয়া গেল রাজা কহিলেন ।

and I know of no one, except the booby, who is endued with these requisites; wherefore, let him be appointed. In the mean time, let all the inhabitants keep within our castle, and, till the messenger return, let profound secrecy be pursued; for

The deliberations of council are discovered if heard by six ears, as well as any private information; wherefore, a king should entrust his counsels only to himself and a second person.

The injury which is done to princes, from their counsel's being discovered, are not to be repaired, say those who are acquainted with the rules of policy.

Well, said the king, now I have found such an excellent emissary, what next?—Your highness, replied the minister, hath but to enter the field of battle, and victory will follow.

They were now interrupted by the entrance of one of the guards, who informed them, that there was a parrot waiting at the gate, just come from Jambū-dwipa. The king looked at the minister, and the minister said, Lead him into a separate apartment, and sometime hence he may be admitted. According to the commands of his highness! said the guard; upon which he went away, taking the parrot with him.

বিগ্রহস্থাপনং সমুপস্থিতশ্চক্ৰব্রূতে দেব প্রাগেব বিগ্রহো
 ন বিধিঃ ॥ যতঃ ॥ স কিং মৃত্যুঃ স কিং মম্বী যচ্ছাদাবেব
 ভূপতিং । যুদ্ধোযোগং স্বভূত্যাগং নির্দিশত্যবিচারিতং ॥
 অপরশ্চ ॥ বিজিতুং প্রযতে চারীন্ন যুদ্ধেন কদাচন ।
 অতীত্যাবিজযোদ্যস্মাদৃশ্যতে যুদ্ধমানযোঃ ॥ অন্যশ্চ ॥
 সাম্রা দানেন ভেদেন সামস্তৈরথবা পৃথক্ । সাধিতুং
 প্রযতে চারীন্ন যুদ্ধেন কদাচন ॥ অপরশ্চ ॥ সর্ব্বেব জনঃ
 শূরোহ্যনাঙ্গাদিতবিগ্রহঃ । অদৃষ্টপরসামর্থ্যঃ সর্দর্পঃ
 কোভবেন্ন হি ॥ কিম্ ॥ ন তথোত্যাপ্যতে গ্রাণা প্রাণিভি
 হীরাণ্যৈ যথা অল্যোপায়ান্মহাসিদ্ধিরেতন্মদ্রফলং মহত্
 কিন্তু বিগ্রহমুপস্থিতং বিলোক্য অবক্রীযতাং ॥ যতঃ ॥

সংগ্রাম উপস্থিত চক্রবাক বলিতেছে যে মহারাজ পুথ
 মেতে যুদ্ধ কর্তব্য নয় যেহেতুক সে কি দাম আর সে কি
 মম্বী যে অগ্নিতেই নৃপতিকেকে বিচার না করিয়া রণের
 উদ্যম করিতে এবং স্বকীয় জ্ঞান ত্যাগ করিতে পরামর্শ
 দেয় । অপর বিপক্ষকে জয় করিবার নিমিত্তে সামাদি দ্বারা
 যত্ন করিবেক সংগ্রাম দ্বারা কদাচ করিবে না যেহেতুক
 যুদ্ধমান দুই জনের মধ্যে কাহার জয় ইহা নিশ্চয় জানা
 যায় না অপর সাম দান ভেদ ইহার পুতাকে কিম্বা সমস্তে
 তে বিপক্ষকে সমাধান করিতে যত্ন করিবেক কদাচ যুদ্ধেতে
 করিবে না । অপর অকৃত যুদ্ধ সকল লোকই বীর কেননা

পরের শক্তি না দেখিয়া কে গর্হিত না হয় আর মনুষ্য
কর্তৃক যেমন কাঠ করণক পাষণ উত্থাপিত হয় তেমন
মনুষ্যকর্তৃক কাঠবাতিরেকে পুস্তর উত্থাপিত হয় না অল্প
উপায়েতে যে মহৎকার্য্য নিষ্পন্ন হয় ইহা মন্ত্রণার বড় ফল
কিন্তু সংগ্রাম উপস্থিত দেখিয়া ব্যবহার কর যেহেতুক ।

So, said the king, discord is arrived, and is in attendance! Yes, please your highness, replied the minister; but discord is not necessity.

Is he a minister, or a counsellor, who, upon the first alarm, and without due consideration, adviseth his sovereign either to commence hostilities, or to quit his ground?

A wise man may strive to conquer, but he should never fight; because victory, it is observed, cannot be constant to both the combatants.

A prince should use each and every of these means, in order to obtain peace from the enemy: viz. submission, presents, or, sowing the seeds of dissension among his confederates; but he should never fight.

A man should never display his bravery who is unprepared for battle; nor bear the marks of defiance, until he hath experienced the abilities of his enemy.

Not more easily is a house supported by mankind with a prop, than great achievements from trifling means. This is the great fruit of councils.

But when we perceive that we are threatened with war, let preparations be made; for

অঘাকালকৃতোদ্যোগাৎ স্রবিঃ ফলবতী ভবেৎ । তদ্রত্না
 তিরিখ্যং দেব চিরাত্ ফলতি রত্নায়াৎ ॥ অপরঞ্চ ॥
 মহতোদূরভীরুত্বমাসন্নৈ শূরতা গুণঃ । বিপক্ষৌ চ মহা
 স্ত্রীকোধীরতামনুগচ্ছতি ॥ অন্যচ্চ ॥ প্রত्यूহঃ সর্বসিদ্ধী
 নামুত্তাপঃপ্রথমঃকিলা অতিশীতলমপ্যম্মঃ কিং ভিনত্তি
 ন ভূমৃতঃ ॥ বিশেষতশ্চ মহাবলোসৌ চিত্রবর্ণেরাজা ॥
 যতঃ ॥ বলিনা সহ যোদ্ধব্যমিতি নাস্তি নিদর্শনং ।
 তদ্যুদ্বং হস্তিনা সার্বং নরাণাং মৃত্যুমাভবেৎ ॥ অন্যচ্চ ॥
 স মূৰ্খঃ কালমপ্রাপ্য যোঃস্পকর্ত্তরি বর্ত্ততে । কলিধ্বল
 বতা সার্বং কোটপল্লোদ্ধমোযথা ॥ কিঞ্চ ॥ কৌৰ্ম্ম
 সঙ্কোচমাখ্যায় প্রহারমপি বর্ষয়েৎ । প্রাপ্তকালে তু
 নোতিস্তুভক্তিষ্ঠেৎ কুরসর্পবৎ ॥ *❀*❀*❀*❀

হে মহারাজ জন্মানুসারে উদ্যোগেতেই যেমন কৃষি ফল
 বতী হয় সেইরূপ রক্ষণ হেতুক এই নীতি চিরকালেতে
 কলে । অপর অনাগম কার্যোতে বড় লোকের ভীকতা
 শুণ কার্য আসন্ন হইলে শৌর্য্যই শুণ আর সন্মো
 কেরা বিপত্তিতে ধৈর্য্যাবলম্বন করে অপর পুথনত উদ্ভা
 প নিশ্চয় সকল কার্যের বিষু কেননা অত্যন্ত শাতন
 জন কি পর্বতকে ভেদ করে না বিশেষে মহাবল এই
 চিত্রবর্ণরাজা যেহেতুক বলবানের সহিত যুদ্ধ করিবেক
 ইহা নিদর্শন নাই কেননা মনুষ্যেরদিগের হস্তি সহিত যে

যুদ্ধে সে মরণকে উপস্থিত করে । অপর সময় না পাইয়া বল
বান অপকারকে যে বর্জ্যে সে মূর্খ কেননা যেমন পিপীলিকা
দের পালকের উৎপত্তি এইরূপ বলির সহিত কলহ । আর
নীতিজ্ঞ ব্যক্তি কখন শরীরের ন্যায় সঙ্কোচ পাইয়া পুহার
কেও সহ্য করিবে সময়ানুসারে খল সপের ন্যায় উঠিবেক

The field is fruitful from having been cultivated in due season. It is the same with political measures; but these too advance slowly, not instantly, to maturity.

When the quality of bravery is near, a great man's terrors are at a distance. In the hour of misfortune such a great man overcometh bravery.

Great warmth, at first, is the certain ruin of every great achievement. Doth not water, although ever so cool, moisten the earth?

Besides, an' please your highness, king Chitra-varna is very strong; and,

There is no ordinance obliging us to fight those who are stronger than ourselves.—Such fighting, as it were, with an elephant, is the same as men's fighting against rocks.

He is a fool who turneth upon his opponent, before he hath found a proper opportunity. The efforts of him, who contendeth with one stronger than himself, are as feeble as the exertions of an insect's wings.

A prudent soldier, keeping within his tortoise-like shelter, may, indeed, sustain the force of arms; and when occasion may suit, he may sally forth like an enraged serpent.

মহত্যল্লেখ্যপাণ্ডুঃ সমমেব ভবেত্ ক্রমঃ । সমুন্মূল্যি
 তুং হৃদ্যান্ তৃণানীব নদীরয়ঃ ॥ অতস্তদুতাপ্যাস্থ্য
 তাবদ্বিত্যং যাবদুর্গঃ সজ্জীকৃত্যতে ॥ যতঃ ॥ একঃ শতং
 যোধয়তি প্রাকারস্থো ধনুর্ধরঃ । শতং শতসহস্রাণি তস্মা
 দুর্গং বিশিষ্যতে ॥ কিঞ্চ ॥ অদুর্গো বিধায়ঃ কস্য নারেঃ পরি
 ভবাস্পদং । অদুর্গো নাশ্রয়ো রাজা পোতচ্যুতমनुধ্যবত্ ॥
 দুর্গং কুর্য্যান্মহাখাতমুচ্চপ্রাকারসংযুতং । সযদ্বং সজলং
 শৈলসরিম্নরুবনাশ্রয়ং ॥ বিস্তীর্ণং চাতিবিধমং ধনধান্য
 রসান্বিতং । অপ্রবেশপ্রসারস্ব সন্নৈতা দুগসম্পদঃ ॥ স্বাম্য
 মাত্যসুহৃৎকোপোরাষ্ট্রদুর্গবলানি চ । পরসরোপকারী চ
 রাজ্যং সমাক্রমুচ্যতে ॥ দুর্গাধ্যক্ষো বলাধ্যক্ষো ধনাধ্যক্ষ
 ভূপতিঃ । দূতঃ পুরোধাদৈবজ্ঞো ভিষজো মন্ত্রিণো মতাঃ ॥ *

উপায়জ্ঞ ব্যক্তি বড় বিষয়েতে কিঞ্চিৎ অল্প বিষয়েতে সমানই
 ক্রম হয় যেমন নদীবৈগ তৃণ সকলকে উন্মূলন করে এই
 কাণ বৃক্ষ সকলকে ও উন্মূলন করে অতএব তাহার দূতকে
 ও আশ্বাস করিয়া তাবৎ পর্য্যন্ত রাখ যাবৎ পর্য্যন্ত দুর্গ
 সমজ্ঞ না হয় যেহেতুক প্রাকারস্থ ধনুর্ধর এক ব্যক্তি শত
 লোকের সহিত যুদ্ধ করে শতলোক লক্ষলোকের সহিত
 যুদ্ধ করে সেই হেতুক দুর্গ প্রশস্ত হয় । আর অদুর্গ দেশ
 কোন বৈরিকর্তৃক পরাভব স্থান না হয় নোকাচ্যুত মনু
 ষ্যের ন্যায় অদুর্গ রাজা আশ্রয় কর্তব্য নয় পর্বতনদী, লক্ষ

ভূমি অরণ্য আশ্রয়েতে উচ্চপাকারযুক্ত অতিশয় খাত
সযজ্জ সজল দুর্গ করিবেক বিস্তীর্ণ অতিবিবম ও ধন ধান্য
লবণাদিযুক্ত ও পুবেশ নিগমরহিত এই সাত দুর্গ সম্পত্তি
স্বামী অমাত্য সূক্ত কোষ রাষ্ট্র দুর্গ বন ইহারা পরস্পর
উপকারক সপ্তাঙ্গ রাজ্য হয় দুর্গাধ্যক্ষ বনাধ্যক্ষ ধনাধ্যক্ষ
রাজাদূত পুরোহিত দৈবজ্ঞ বৈদ্য ইহারা সজ্জকারক হয় ।

Please your highness, attend to this:

One who is master of ever so little art may be able, on a great occasion, to root up trees with as much ease, as the current of a river the reeds and grass.

Then let this ambassador, the parrot, be detained and amused, until we shall put our fortifications in good condition.

A single bowman standing upon the battlements fighteth a hundred, and a hundred ten thousand: wherefore, a castle is to be preferred.

What sovereign, whose country is furnished with strong holds, is subject to defeat? The prince of a country, without strong holds, is as a man who is fallen from his ship.

He should build a castle with a large ditch and lofty battlements, and furnish it with machines for raising water; and its situation should be in a wood upon a hill, and where there are springs of fresh water.

It should be spacious, but very uneven; and supplied with large store of liquor, grain, and money; and with gates and sallyports; for these are the seven treasures of a castle.

রাজাহ দুর্গানুসন্ধানেন কৌনিযুজ্যতাং । চকৌব্রুতে । যৌযজ
 কুশলঃ কার্য্যে তন্তত্র বিনিযোজযেত্ । কর্ম্মস্বদৃষ্টকর্ম্মা
 য় শাস্ত্রশোপি বিমুহ্যতি ॥ তদাহুযতাং সারসঃ তথা
 নুষ্ঠিতে সতি আগতং সারসমালোক্য রাজৌবাচ ভো
 সারস ত্বং সত্বরং দুর্গমনুসন্ধ্যেহি । সারসঃ প্রণম্যোবাচ
 দেব দুর্গং তাবদিদমেব চিরাত্ সুনিরূপিতমাস্তে মহত্
 সরঃ কিন্তত্র মধ্যবর্ত্তিহীপে দ্রব্যসংগৃহঃ কার্য্যতাং ॥ অতঃ ॥
 ধান্যানাং সংগৃহো রাজনুত্তমঃ সর্ব্ব সংগৃহাত্ । নিলিঙ্গং হি
 মুখে রত্নং ন কুর্থাৎ প্রাণধারণং ॥ কিञ্চ ॥ ত্ব্যাতঃ সর্ব্বর
 সানাং হি লবণ্যারসউত্তমঃ ॥ গৃহীতञ্চ বিনা তেন ব্যভ্রনং
 গোমযাযতে ॥ রাজাহ সত্বরং গত্বা সর্ব্বমনুতিষ্ঠ যুনঃ প্রবি
 শ্য প্রতীহারোব্রুতে দেব সিংহলদ্বীপাদাগতো মেঘবর্ণো নাম
 বায়সঃ সপরিবারোদ্বারি তিষ্ঠতি দেবপাদং দ্রষ্টুমিচ্ছতি ॥

রাজা বলিলেন দুর্গের অনুসন্ধানেন্তে কে নিযুক্ত হইবে চক্র
 বাক বলিতেছে যে কর্ম্মেতে যে দক্ষ সেই কর্ম্মেতে তাহাকে
 নিয়োগ করিবেক অদৃষ্টকর্ম্মা যে লোক সে শাস্ত্রজ্ঞ হইলে ও
 কর্ম্মবুধ হয় সেহেতুক সারসকে আহ্বান কর তাহা করিলে
 পর সারসকে আগত দেখিয়া রাজা বলিলেন ও হে সারস
 তুমি শাস্ত্র দুর্গের অনুসন্ধান কর সারস পুণ্যম করিয়া বলিল
 হে মহারাজ এই বৃহৎ সরোবরে অনেক কালদুর্গ নিরূপিত
 আছে কিন্তু এই মধ্যবর্ত্তি হীপে দ্রব্য সংগৃহ করুন যেহেতুক

হে মহারাজ সকল সংগৃহীত ধান্যের সংগৃহ উত্তম কেন
না মুখেতে নিষ্কিঞ্চ রত্নযে জনসে ব্যক্তি জীবন ধারণ করিতে
পারে না এবং সকল রসের মধ্যে লবণরস উত্তমরূপে খ্যাত
তাহা ব্যতিরেকে ব্যঞ্জন গোময়ের ন্যায় হয় ॥ রাজা কহিলেন
দ্বারাতে গিয়া সমস্ত অনুষ্ঠান কর । পুনর্বার পুবেশ করিয়া
দ্বারা বলিতেছে হে রাজাধিরাজ সিংহলদ্বীপহীতে মেঘবর্ণ
নামেকাক সপরিবারে আসিয়া দ্বারেতে আছে মহারাজার
চরণ দেখিবার নিমিত্তে বাঞ্ছা করিতেছে ।

Who, demanded the king, should be appointed to pre-
pare our castle? The minister replied,

Every one should be employed in that business he is
best acquainted with. One who hath had no experience
in civil affairs, although he may be a good soldier,
would be at a loss in business of that kind.

Then let the Sārāsa be called, concluded the minister.
This being done accordingly, and the Sārāsa arrived,
the king gave him encouragement, and told him to put
the castle in good order. The Sārāsa, bowing, replied,
please your highness, the castle has lately been well
examined. There is a large reservoir in it, in the centre
there is an island, in which it is proper that there
should be a store of grain laid up.

A store of grain, O king! is the best of stores. A gem
cast into the mouth will not support life.

Of all sapid things, salt being esteemed the first, some
should be laid in; for without it the beard is bedaubed.

Go then, said the king, and attend to what is neces-
sary to be done. Just now a door-keeper came in, and
said,—Please your highness, one cloud-colour, a crow,
is just arrived from Singhala-dwipa, who, with his at-
tendants, desires to behold the foot of your highness.

রাজাঃ কাকাঃ পুনঃ সর্বজ্ঞাবজ্ঞদৃষ্টারম্ । তদ্ববতি
 সংযাহ্যত্যনুবর্ততে । অকোব্রূতে দেব অস্ত্যেব কিল
 কাকঃ স্থলচরঃ তেনাস্তদ্বিপক্ষে নিযুক্তঃ কথং সংযাহ্যঃ
 তথা চোক্তং ॥ আত্মপক্ষং পরিত্যজ্য পরপক্ষেণ চোরতঃ
 স পরৈর্হন্যতে মূঢ়ো নীলবর্ণশৃগালবৎ ॥ রাজোবাচ কথ
 মেতৎ । মন্ত্রী কথয়তি অস্ত্যরণ্যে কক্ষিত শৃগালঃ
 স্তেচ্ছ্যা নগরোপান্তে শ্রাম্যন্ নীলীমাণ্ডে পতিতঃ পশ্চাত
 ততত্যাগমসমর্থঃ প্রাতরাত্মানং মৃতবৎ সন্দর্শ্য স্থিতঃ
 অব নীলীমাণ্ডস্থামিনা মৃত ইতি জ্ঞাত্বা তস্মাত্ সমু
 ত্যায় দূরে গীত্বা অপসারিতস্তস্মাত্ পলায়িতঃ ততোঽসৌ
 যনং গত্বা স্বকীয়মাত্মানং নীলবর্ণমবলোক্য চিন্তয়ত।

রাজা বলিলেন কাকেরা নরঘাতক হয় এবং বহুদশী হয় অতএব
 সংগৃহ কর্তব্য ইহা বুঝিতেছি চক্রবাক বলিতেছে হে মহা
 রাজ এই বটে কিন্তু কাক স্থলচর সেই জন্যে আশ্রয়দিগের
 বিপক্ষেতে নিযুক্ত কি পুকারে সংগৃহ করা যায় । পিণ্ডেত্রা
 তাহা কহিয়াছেন যে লোক স্বপক্ষকে পরিত্যাগ করিয়া
 পরপক্ষেতে আসক্ত হয় সে মূর্খ নীলবর্ণশৃগালের ন্যায় পর
 কর্তৃক হত হয় রাজা কহিলেন এ কি পুকার মন্ত্রী কহিতেছে
 কোননেতে কোন শৃগাল থাকে সে আপন ইচ্ছাতে নগরোপা
 ন্তে ভ্রমণ করত নীলীমাণ্ডে পড়িল অনন্তর তাহাই হইতে উঠি

তে পারিল না পুভাত কালে আপনাকে মৃতের ন্যায় দেখা
ইয়া থাকিল । তাহার পর নীলী ভাণ্ডের স্বামী মৃত ইহা
জানিয়া তাহাহইতে উঠাইয়া দূরে লইয়া ফেলিল সে স্থান
হইতে জম্বুক পলাইল অনন্তর ঐ শৃগাল অরণ্যে গিয়া নিজ
শরীরকে নীলবর্ণ দেখিয়া চিন্তা করিল ।

A crow, said the king, is a wise bird, and a great ob-
server of things, and that being the case, let him be re-
ceived. He is so, replied the minister; but a crow is
a land bird, and consequently of a different party to us;
how then can he be received in contempt of our own
party? It is said,

*The fool who forsaketh his own party, and delighteth
to dwell with the opposite side, may be killed by them;
as was the case with the blue jackal.*

How was this? demanded the king; and the minister
related as follows:

FABLE VIII.

A certain jackal, as he was roaming about the borders
of a town, just as his inclinations led him, fell into a
vat of indigo; but being unable to get out, in the morn-
ing he feigned himself dead. The master of the vat
thinking that he was really dead, took him and out,
threw him at a distance. The sly animal instantly got up,
and ran into the woods; when, observing that his coat
was turned blue, he meditated in this manner:—

অহমিদানীমুত্তমবর্ণসদা হং স্বকীযোত্কর্ষং কিং ন স
 ধয়ামি ইত্যালোচ্য শৃগালানাহুয তেনোক্তং । অহং ভগ
 বত্যা বনদেবতয়া স্বহস্তেনারণ্যরাজ্যে সর্বৈষধিরসেনাভি
 বিকৃতঃ তদ্যারম্ভ্যারণ্যেঽসাদান্নয়া ব্যবহারঃ কার্য্যঃ ।
 শৃগালাস্তু তং বিশিষ্টবর্ণমবলোক্য সাষ্টাঙ্গপাতং প্রণ
 ম্যোচুঃ যথাজ্ঞাপয়সে দেব ইত্যনেনৈব ক্রমেণ সর্বৈষ্যরণ্য
 ধাসিচ্ছাধিপত্যং তস্য বমূব ততস্তেন স্বজ্ঞাতিভিরাবৃতেনা
 ধিক্যং সাধিতং ততস্তেন ব্যাঘ্রসিংহাদীনুত্তমপরিজনান্
 প্রাপ্য সদসি শৃগালানবলোক্য লজ্জমানেনাবজ্ঞয়া স্ব
 জ্ঞাতয়ঃ সর্বৈদুরীকৃতাঃ ততোবিষম্যান্ শৃগালানবলোক্য
 কেচনচিত্ পৃঙ্খশৃগালে নৈতৎ প্রতিজ্ঞাতং মা বিষীদত ।

আমি উত্তমবর্ণ হইয়াছি তবে আমি আপনাদি উৎকৃষ্ট
 তাকে কেন সাধন না করি এই আনোচনা করিয়া শৃগালে
 দিগকে আস্থান করিয়া সে কহিল । ভগবতী বনদেবতা
 কর্তৃক স্বহস্তদ্বারা সর্বোষধি করণক বন রাজ্যেতে আমি
 অভিষিক্ত হইয়াছি এই হেতুক আজি অবধি কাননেতে
 আমার আজ্ঞাতে কর্ম করিবে । শৃগালেরা তাহাকে উত্তম
 বর্ণ দেখিয়া অষ্টাঙ্গ পূজা করিয়া কহিল হে মহারাজ
 আপনি যেকণ আজ্ঞা করেন এই পুকারে সমস্ত বনবাসি

পাশ্চাতে তাহার পুত্ৰ হইল অনন্তর সে স্বকীয় জাতিতে পরি-
বৃত্ত হইয়া মহত্ত্ব সাধন করিল তাহার পর সে ব্যাঘ্র সিংহাদি
উৎকৃষ্ট পরিজনকে পাইয়া সভাতে শৃগালেরদিগকে দেখিয়া
লজ্জিত হইয়া সক্ষম জ্ঞাতিকে অগমান করিয়া দূর করিল
তদনন্তর শৃগালেরদিগকে বিমনা দেখিয়া কোন বৃক্ষ জম্বুক
এই পুতিজ্ঞা করিল তোমরা বিষয় হইও না।

I am now of the finest colour ! what great exaltation may I not bring about for myself? Saying this, he called a number of jackals together, and addressed them in the following words:—Know that I have lately been sprinkled king of the forest, by the hands of the goddess herself who presides over these woods, with a water drawn from a variety of choice herbs. Observe my colour, and hence forward let every business be transacted according to my orders. The rest of the jackals, seeing him of such a fine complexion, prostrated themselves before him, and said,—According as your highness commands! By this step he made himself honoured by his own relations, and so gained the supreme power over those of his own species, as well as all the other inhabitants of the forest. But after a while, finding himself surrounded by a levee of the first quality, such as the tiger and the like, he began to look down upon his relations; and, at length, he kept them at a distance. A certain old jackal perceiving that his brethren were very much cast down at this behaviour, cried,—Do not despair!

অদনেনানভিজ্ঞেন নীতিবিদোমৰ্ম্মজ্ঞা বচং স্বসমীপাত্
 ষরিভূতাঃ তদ্যথাঃ তং মৰ্য্যতি তথা বিধেয়ং ততোঃ সমী ব্যাঘ্রা
 দযোবর্ণমাচবিপ্রলম্বাঃ শৃগালমজ্ঞাত্বা রাজানমিম
 মন্যন্তে । তদ্যথাঃ পরিচিতো ভবতি তথা কুরুত তত্র
 চৈবমনুষ্টেয়ং যতঃ সৰ্ব্বং সন্ধ্যাসময়ে সন্নিধানৈ মছারা ব
 মে কদৈব করিষ্যত ততস্তং শব্দমাकर्ण্য জাতিস্বভাবা তে
 নাপি শব্দঃ কৰ্ত্তব্যঃ ততস্তথানুষ্ঠিতে সতি তদ্বৃत्तং যতঃ যঃ
 স্বভাবোহি তস্যাস্তে স নিত্যং দুৰ্ভিক্রমঃ । অথ যদি কি
 যতে রাজা তত্ কি নাশ্বত্বপানহং ॥ ততঃ শব্দাদভিজ্ঞায়
 স ব্যাঘ্রেণ হতঃ । তথা চোক্তা । ছিদ্ৰং মৰ্ম্ম চ বীৰ্য্যঞ্চ
 সৰ্ব্বং বেত্তি নিজোরিপুঃ । দহত্যন্তর্মহতশ্চৈব শুষ্কং বৃদ্ধমিবা
 মল্লঃ ॥ অতোঃ হং ব্রবীমি আত্মপদ্যং পরিত্যাগাদিত্যাदि ।

নীতিক্রম মৰ্ম্মবিৎ আগরা এই অনভিজ্ঞকর্তৃক যে পরাভূত
 হইয়াছি সেইহেতুক যে কাণে এনষ্ট হয় তাহা কৰ্ত্তব্য এই
 ব্যাঘ্রপুভ্ভিতরা বর্ণ মাত্র দেখিয়া শৃগাল না জানিয়া ইহাকে
 রাজা করিয়া মানে । তবে এ যে কাণে পরিচিত হয় সেইকাণে
 কর তাহাতে এইপুকার কৰ্ত্তব্য সকলে সায় কালে সমীপে
 তে এক কালে অতিশয় শব্দ করিবা তাহার পর সেই শব্দ
 শ্রবণ করিয়া জাতি স্বভাব হেতুক সেও রব করিবেক । অন
 ত্তর সেই পুকার করিলে তাহা হইল যেহেতুক যাহার যে
 স্বভাব আছে সে সর্বদাই অপরিহার্য্য কেননা যদি অক্ষর রাজা

হয় তবে সে কি চর্মপাদুকা ভোজন করে না তাহার পর
শব্দেতে জ্ঞান করিয়া ব্যাঘ্র সে শৃগালকে নষ্ট করিল ।
বিজ্ঞরা তাহা কহিয়াছেন ছিদ্র ও মর্জ ও বল সমস্তই নিজ
বিপক্ষলোক জানে আর অগ্নি যেমন শুষ্ক বৃক্ষকে দাহ
করে এই রূপ অন্তঃকরণস্থ ব্যাপারকে দাহ করে অতএব
আনি বলি যে লোক স্বপক্ষকে ত্যাগ করিয়া ইত্যাদি ।

If it continue thus, this imprudent friend of ours will force us to be revenged. Let me alone to contrive his downfall. The lion, and the rest who pay him court, are taken by his outward appearance; and they obey him as their king, because they are not aware that he is nothing but a jackal. do something then by which he may be found out. Let this plan be pursued: assemble all of you in a body about the close of the evening, and set up one general howl in his hearing, and I'll warrant ye, the natural disposition of his species will incline him to join in the cry; for,

Whatever may be the natural propensity of any one, is very hard to be overcome. If a dog were made king, would he not gnaw his shoe starps?

And thus, the tiger discovering that he is nothing but a jackal, will presently put him to death. In short, concluded the minister, the plan was executed, and the event was just as it had been foretold. They say,

An intimate enemy is acquainted with every thing which relateth to one: our blemishes, our hearts, and our degree of courage. *

I repeat therefore, *The fool &c.*

দেবাজ্ঞাপয় হুন্নি দুষ্টং শুকং সর্বজ্ঞো রাজানং কাকঞ্চ
 শান্তিযন্ ব্রূতে শৃণু তাবৎ । ন সা সমাধিত্ব ন সন্তি
 বৃদ্ধাবৃদ্ধান তে যে ন বদন্তি ধর্মী । ধর্মঃ সনো যত্র ন সত্য
 সন্তি সত্যং ন তথচ্ছলমভ্যুপেতি ॥ যতো ধর্মশ্চৈব : ।
 দূতো ম্লেচ্ছো প্যবধ্যঃ স্যাদ্রাজা দূতমুলোচনঃ । উচ্যতে
 অপি শস্ত্রেণ দূতো বদতি নান্যথা ॥ কিঞ্চ ॥ স্বাপকর্ষং
 পরোক্তকর্ষং দূতো ক্তৈর্মন্যতে তু কঃ । রুদৈবাবধ্যভাবেন দূতঃ
 সর্বং হি জল্পতি ॥ ততো রাজা কাকঞ্চ স্বাং প্রকৃতিমা পন্ন
 শুকো প্যুত্থা য চলিতঃ পশ্চাচ্ছকবা কীনানীয প্রবোধ্য
 কনকালঙ্কারাদিকং দত্ত্বা সপ্রেষিতো যথৈ শুকোপি
 বিণ্ধ্যা চল রাজানং প্রণতবান্ রাজো বাচ শুক কাং বার্তা

হে নারাজ আজ্ঞা করণ দুষ্ট শুককে নষ্ট করি সর্বজ্ঞ
 রাজাকে এবং কাককে সন্তুষ্ট না করত বলিতেছে শুন যে
 সভাতে বৃদ্ধ নাই সে সভাই নয় যে বৃদ্ধেরা ধর্ম বলে
 না তাহার বৃদ্ধই নয় যে ধর্মোতে সত্য নাই সে ধর্ম নয়
 যে সভাতে ছল আছে সে সভা নয় যেহেতুক এই ধর্ম
 ম্লেচ্ছদূত ও অবধ্য হয় যেহেতুক রাজা দূতমুখ অতএব
 শস্ত্র উশ্বিত হইলে ও দূত অন্য পুকার বলে না আর কোন
 ব্যক্তি দূতের বাক্যেতে আপনাকে অবদন করিয়া ও পরকে
 উত্তন করিয়া গানে দূত সর্বদাই অবধ্যভাবেতে সমস্তই
 বলে । তাহার পর রাজা এবং কাক আপন স্বভাবকে গাইল

শুক ও উঠিয়া চলিল পশ্চাৎ চক্রবাককর্তৃক আনয়ন
করিয়া পুৰোধ করিয়া স্বর্গানঙ্করাদি দিয়া পুরিত হইয়া
গেল । শুক ও বিষ্ণাচলের রাজাকে পুণাম করিল ।
রাজা কহিলেন শুক বৃত্তান্ত কি ।

Give but the word, and I will kill this infamous parrot!
In the mean time, the minister, who was engaged in pa-
cifying the king, repeated these lines.

That is not council, wherein there are no sages; they are
not sages, who do not declare men's duty; that is not a
duty, in which there is not virtue; and that is not virtue
from which fear approacheth us.

The law speaks thus: but, moreover, this parrot is a
Brāhman, and they say also,

An ambassador, although he be a barbarian, is not to
be put to death; for he is only the mouth of his master:
no, not even when the weapons of war are lifted up; and
how much less, if he be a Brāhman !

An ambassador never payeth any regard either to his
own inferiority, or other's superiority; but under the
decree of fate, that he is not punishable, he speaketh
without reserve.

Upon hearing these maxims, both the king and the crow
were pacified; both the king and the parrot got up and
went away. But upon a motion of the minister's, things
having been explained to him, he was brought back, and
dismissed with presents of golden ornaments, rich dress-
es, and the like.

The parrot returned to the Vindhya mountains, where
paying his respects to Chitra varna his own sovereign,
the king no sooner perceived him, than he called out,—
Well, parrot, what intelligence hast thou brought me?

কৌটুম্বোত্তমো দেশঃ । শুক্লোম্মূলে দেব সন্তোষাদিয়ং বার্তা ।
 সম্প্রতি যুদ্ধোদ্যোগঃ ক্রিয়তাং দেশায়াসৌ কপূরদ্বীপঃ স্বর্গে ক
 দেশঃ রাজা চ দ্বিতীয়ঃ স্বর্গপতিঃ কথং বর্ণয়িতুং শক্যতে
 ততঃ সর্বান্ শ্রিষ্টানাং হুয় রাজা মন্বয়িতুমুপবিষ্টঃ আ
 চ সম্প্রতি কৰ্ত্তব্যবিগ্রহে যথা কৰ্ত্তব্যং উপদেশং ব্রূতে বিগ্র
 হঃ পুনরবশ্যং কৰ্ত্তব্যঃ ॥ তথা চোক্তাং ॥ অসন্তুষ্টা দ্বিজা
 নষ্টাঃ সন্তুষ্টা ইব পার্থিবাঃ । সলজ্জা গণিকা নষ্টা
 নির্লজ্জাশ্চ কুলস্থিয়ঃ । দূরদর্শী নাম মৃধো ব্রূতে দেব
 ব্যসনিতয়া বিগ্রহো ন বিধিঃ ॥ যতঃ ॥ মিত্রামাত্যসু
 হৃদগায়দাস্যুর্দ্বিধমক্লয়ঃ । শত্রুণাং বিপরীতাশ্চ কৰ্ত্তব্যো
 বিগ্রহস্তদা ॥ অন্যচ্চ ॥ ভূমির্মিত্রং হিরণ্যশ্চ বিগ্রহস্য
 ফলং ত্রয়ং । যদৈতন্নিশ্চিতং ভাবি কৰ্ত্তব্যো বিগ্রহস্তদা ॥

এ দেশ কি কণ শুক বলিতেছেহে মহারাজ সপক্ষেতে
 এই বার্তা হৈদানী সপ্তাঙ্গের উদ্যোগ করুন এ কপূরদ্বীপ
 স্বর্গের এক দেশ রাজা ও দ্বিতীয় স্বর্গপতি কি পুকার
 বুঝনা করিতে সমর্থ হই । অনন্তর সকল শিষ্টেরদিগকে
 আহ্বান করিয়া সজ্জা করিবার নিমিত্তে বসিনেন আর কহি
 লেন সপ্তাঙ্গ কৰ্ত্তব্য যুদ্ধেতে যে পুকার কৰ্ত্তব্য তাহা উপ
 দেশ কর কিন্তু যুদ্ধ অবশ্য কৰ্ত্তব্য । তাহা পণ্ডিতের কহি
 শাছেন সন্তুষ্ট রাজারা যেনন নষ্ট হয় এমনি অসন্তুষ্ট ব্রাহ্ম

যেৱা নষ্ট হয় এব° লজ্জিতা বেশ্যাৱা নষ্ট হয় এব° নিৰাজ্জ
অলম্ভীৱা নষ্ট হয় । দুৰদশা নামে গুণু বলিতেছে হে মহা
ৰাজব্যসনিহু হেতুক যুদ্ধ বিহিত নয় যেহেতুক মিত্র নষ্টী
সুহৃদ সকল যখন অনুগত হয় আৰ বিপক্ষেরদিগের ইহাৰ
বিপৰীত হয় তখন ৰণ কৰ্তব্য অপর ভূমি মিত্র স্বৰ্গএই তিন
সংগ্ৰামের ফল ইহা যখন নিশ্চিত হয় তখন বিগ্ৰহ কৰ্তব্য ।

What sort of a country is it? Please your highness, replied the parrot, the sum of my intelligence is this,—
Let preparations be made for war! As to the country, it is a portion of the heavenly regions, and its king is a second Indra; then how is it possible to describe it? The peacock king, upon hearing this, sent for his chiefs, and sat down to consult with them. On the subject of the war, said the king, which is presently to be entered into, advise what is proper to be done; for, again I say, war is absolutely resolved upon. They say,

Brāhmanṣ are ruined when discontented, like sovereigns when contented. Modesty is ruin to a harlot, and immodesty to women of good repute.

Amongst the rest, there was a vulture whose name was Far-see, who arose and said,—Please your highness,—Fate would not be idle in fighting with thee; for When sons, with friends and attendants, are firmly attached, and in opposition to the enemy, then war may be commenced.

Territory, friends, and gold, are the three fruits of war. When these are certain, it is proper to commence hostilities against the enemy.

রাজাছ মদ্বলং তাবদবলোকযতুমস্মী তদেতেষামুপযোগো
 জ্ঞাতামেবমাচ্ছয়তাং মৌহুর্নিকঃ নির্ণীয শুমলম
 দদাতু । মস্মীব্রূতে তথাপি সহসা যাত্রাকরণমনুচিত
 ॥ যতঃ ॥ বিশন্তি সহসা মূঢ়াযে বিচার্য্য দ্বিষদ্বলং ।
 খলু পারাপরিষ্বকং লভন্তে তে সুনিশ্চিতং ॥ রাজাছ মদ্বিন্
 সমোত্সাহমকং সর্ধথা মা দ্বযাঃ বিজিনোপুযয়া পরমু
 নিমাক্রামতি তথা কথয় । মস্মীব্রূতে তত্ কথয়ানি
 কিন্তু তদনুষ্ঠিতমেব ফলপ্রদং ॥ তথাচোক্তং ॥ কিমম্বেণ
 ননুষ্ঠানাচ্ছাস্তবিতৃথিবীপতেঃ । নহৌষধপরিজ্ঞানা
 দ্বাধেঃ শান্তিঃ ক্বচিৎপদেৎ ॥ রাজা দেশস্থানতিক্রমণীয়ঃ
 যথা শ্রুতং তন্নিবেদয়ামি শৃণু । নদ্যদ্রিবনদুর্গেষু যত্র যত্র
 ভয়ং নৃপ । তত্র তত্র চ সেনানী যাযাদ্ব্যহী কতে বর্লৈঃ ।

রাজা বলিলেন হে মন্ত্রী আমার মৈন্য নিরীক্ষণ কর আর
 উহারদের উপযোগিতা জ্ঞান এবং দৈবজ্ঞকে আহ্বান কর
 শুভ লগ্ন নির্ণয় করিয়া দেন । মন্ত্রী বলিতেছে তথাপি
 অকস্মাৎ যাত্রা উপযুক্ত নহ্নে যেহেতুক যে মূঢ়লোকেরা
 শত্রুর বল বিচারনা করিয়া মহামৈন্য মধ্যে প্রবেশ করে
 তাহার নিশ্চয় শত্রুধারালিঙ্ঘন পায় । রাজা কহিলেন হে
 মন্ত্রী আমার উৎসাহ ভঙ্গ সর্দথা করিও না জন্মেছু ব্যক্তি
 যে প্রকারে পরস্থানাক্রমণ করে তাহা কর । গৃধ্র বলি
 তেছে তাহা কহি কিন্তু তাহার অনুষ্ঠানই কলদ হয় ইহা পণ্ডি

তেরা কহিয়াছেন শীঘ্রই নৃপতির অনুষ্ঠান না করিলে মন্ত্র
গাতে কি পুয়োজন যেহেতুক ঔষধ জ্ঞানেতে রোগের শমতা
কোথাও হয় না রাজা আর দেশ অতিক্রমণীয় নয় যে রূপ
শুনিয়াছি তাহা নিবেদন করি শুনুন ! হে নরপতি যে
স্থানে নদী গিরি কানন দুর্গেতে তন্ন আছে সেই স্থানে ব্যুহী
কৃত সৈন্যের সহিত সেনাপতি যাউক ।

Let my minister observe what I am about to order, said the king; let the services of these my officers be engaged by an advance of a part of their pay; and then let the soothsayer be called, and let him fix upon a lucky moment for us to begin our march Yet, please your highness, observed the minister, it is not proper to march rashly; for they say,

Those fools who rashly, and without investigation, rush upon the forces of the enemy, will doubtlessly be embraced with the edges of their swords.

Minister, replied the king, thou shouldest not endeavour to break the force of my ardour. Tell me rather how one who wishes for conquest advanceth into the country of the enemy. Please your highness, said the minister, this subject too if pursued may yield fruit; for they say,

What is the use of advice given to a sovereign according to the authority of books, if it be not followed? A patient will never recover his health merely from the description of a medicine.

But as the commands of majesty are not to be neglected, I will proceed to repeat what I have heard upon the subject of war. Please to attend, your highness:

Troops, with every thing which can make them formidable, should be stationed upon the rivers, upon the mountains, in the woods, in the strong holds, and wher ever else there is danger.

বলাধ্যক্ষঃ পুরোযাযাত প্রবীরপুরুষান্বিতঃ । মধ্যে কলত্র
 স্বামী চ কোষঃ বলা চ যদ্বল ॥ পার্শ্বয়োঃ মধ্যোর
 আচক্ষ্যানাং পার্শ্বতো রথাঃ । রথানাং পার্শ্বাধানাং নাগা
 নাশ্চ পদাতয়ঃ ॥ পশ্চাত্ সেনাপতির্থাযাত লিঙ্গানাশ্চ
 সযন্ শনৈঃ । মদ্রিभिः সুভট্টৈর্যুক্তঃ প্রতিঘৃহ্য বলং চূড় ॥
 সমেযা দ্বিষমং নাগৈর্জলাঘ্যং স মর্দয়ত ॥ সমমশ্বৈর্জলং
 নৈभिঃ সর্বত্রৈব পদাতিभिঃ ॥ হস্তিনাং গমনং প্রোক্তং প্রশস্তং
 জলদাগমে । তদন্যত্র তুরঙ্গানাং পলীনাং সর্ঘদৈব হি ॥
 শৈশ্লেষ দুর্গমাগেষু বিধেয়ং নৃপরাক্ষণং স্বযোধৈরক্ষিতস্যাপি
 শয়নং যোগিনিদ্রয়া ॥ নাশয়েত্ কর্ণযেচ্ছত্রান্ দুর্গকণ্ঠে
 কমর্দকৈঃ । পরদেশপ্রবেশে চ কুর্য্যাদাটবিকান্ পুরঃ ॥ *

উৎকৃষ্টে বীর পুরুষের সহিত সেনাধ্যক্ষ অগ্রেতে যাউক
 মধ্যেতে জীলোক পুতু ভাণ্ডার আর উত্তম যে বন ইহার
 যাউক দুই পার্শ্বেতে ঘোটকেরা ঘোটকের পার্শ্বেতে রথ
 রথের পার্শ্বেতে হস্তি হস্তিসকলের পার্শ্বেতে পদাতির
 যাউক পশ্চাৎ সেনাপতি থিহমান সেনাকে আশ্বাস করত
 অগ্নে যাউক মদ্রিএব উত্তম যোদ্ধার সহিত রাজা সৈন্য
 লইয়া জলযুক্ত পর্বতবিশিষ্ট উচ্চনীচ দেশ হস্তিতে সম ভূমি
 দেশ আশ্বেতে জলে নৌকাতে সর্বত্রই পদাতির সহিত যাই
 বেক । বর্ষাকালে হস্তির গমন প্রশস্ত করিয়াছেন অন্য কালে
 ঘোড়ার সর্ঘদাই পদাতির গমন প্রশস্ত পর্বতেতে আর দুর্গম

পথেতে রাজার রক্ষা কর্তব্য । যোদ্ধা কতক রাজা রক্ষিত হইলে ও যোগির ন্যায় নিদ্রাতে শয়ন করিবেন অর্থাৎ অতন্ন কাল শয়ন করিবেন । দুর্গ ও ক্ষুদ্র শত্রু ও উপনন্দকদ্বারা বৈরিকে নষ্ট করিবেক এবং আকর্ষণ করিবেক পরদেশ পুবে শেতে বনজ লোকের দিগকে অগ্নে করিবেক ।

The Adhyaksha should march before accompanied by the bravest men; in the centre the seraglio, the swāmi, the treasure chest, the magazines of provisions, and every thing else which may be valuable.

On each flank the horse, on the two flanks of the horse the chariots, on the two flanks of the chariots the elephants, and on the two flanks of the elephants the foot.

In the rear should march the Sēnā-pati (general) occasionally encouraging such as seem to be melancholy. And the king should take the field accompanied by his counsellors and choicest heroes.

The uneven ground, swampy places, and hills, should be cleared by the elephants, the plains by the horse, the rivers by boats, and the foot should be employed every where.

Upon the arrival of the rains it is best to march with elephants only, they say; but at other times, with all the four distinction of troops.

Amongst hills, and in narrow passes, it is proper that the chief should be guarded by some of his best troops; and the same when he is asleep, with watchful care.

The army should strive to destroy, and distress the enemy by rolling stones down from the tops of steep places; and as soon as they enter the enemies' country, the Attavika should be formed before.

যত্র রাজা ততঃ কোষাবিনা কোষান্ন রাজতাম্ । সৃষ্টৌষ্য
 স্তৌদঘাত্ কোহি দাতুর্ন যুধ্যতে ॥ যতঃ ॥ ন নরস্য
 নরো দাসো দাসস্বার্থস্য ভূপতে । নৈরবং স্নাঘবং বাপি ধনা
 ধননিবন্ধনং ॥ অমেদেন চ যুধ্যত রক্তে চৈব পরস্পরং ।
 বল্লভসৈন্যে যত্ কিঞ্চিন্মধ্যে যুদস্য কার্যেত্ ॥ পদা
 তিস্থ মহীপাল পুরোঃনীকস্য যোজয়েত্ । উপরুং ধ্যারিত্ব
 সীচ রাষ্ট্রং চাস্যোপপীডয়েত্ ॥ স্যন্দনাস্তৈঃ সমে যুধ্যেদ
 নূপে নৈর্দ্বিপৈস্তথা । বৃহত্তগুলমাটতে চাপৈরসিচর্ম্মাযুধৈঃ
 স্থলে ॥ দূষয়েচ্চাস্য সততং যবসান্নোদকেন্দ্রনং । ভিন্ধ্য
 চৈব তড়াগানি প্রাকারান্ পরিখান্তথা ॥ বলেধু প্রমুক্তো
 হস্তী ন তথান্যো মহীপতেঃ । নিজৈরবযবৈরেবমাংসজ্ঞো
 ঽষ্টাযুধঃ স্মৃতঃ ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*❀*

যে স্থানে রাজা থাকেন সেই স্থানে কোষ রাখিবেক
 কেন না ধনাগার বাতিরেকে রাজত্ব হয় না তাহা হইতে
 নিজ দাসেরদিগকে দিবেক কেননা দাতার হইয়া কোন
 লোক যুদ্ধ না করে যেহেতুক হে নৃপতি অনুযোয় ভৃত্য
 অনুধ্য নয় কেবল ধনের দাস কেননা ধন ও অধন নিমিত্তেই
 মহত্ত্ব ক্ষুদ্রত্ব হয় । সেনার পরস্পর একা হইয়া যুদ্ধ করিবেক
 এবং রক্ষা ও করিবেক আর যে কিছু উত্তম সৈন্য তাহা
 ব্যূহের মধ্যেতে করিবেক । হে রাজাধিরাজ সেনার অগ্রে
 তে পদাতিকে নিয়োগ করিবেক বৈরিকে রোধ করিয়া

যাকিবেক আর ইহার দেশকে ও ব্যানোহ দিবেক । সমভূমিতে রথ ও অশ্বেতে যুদ্ধ করিবেক জনপ্লাবিত দেশেতে নৌকা ও হস্তিতে যুদ্ধ করিবেক বৃক্ষলতাকীর্ণ দেশেতে ধনুর্বাণ দ্বারা যুদ্ধ করিবেক স্থানেতে খড়্গ চর্ম অস্ত্রদ্বারা যুদ্ধ করিবেক তড়াগ ও পুষ্কার ও পরিখা এই সকলকে নষ্ট করত বিপক্ষের ঘাসি অন্ন জন কাঠকে সর্বদা নষ্ট করিবেক । রাজার সৈন্যের মধ্যে গজই প্রধান অন্য কেহ তাদৃশ নয় কেননা আপন অবয়বেতেই হস্তী অষ্টআয়ুধে কর্মকরে ।

Wherever the chief is, there should the treasure chest be; for without treasure there is no superiority. And some of it should be distributed amongst the principal officers; for who will not fight for one who giveth freely?

Man is not a servant for the man, but for the thing. A chief's consequence, or insignificance, dependeth upon his having wealth, or no wealth.

The troops should fight without breaking; and they should defend one another. Whatever military stores there may be should be put in the centre of the ranks.

And when the chief hath given check to the enemy, he should endeavour to distress the country. Upon level ground he should fight with chariots and his horse; and in places overflowed with water, either with boats or elephants.

Amongst trees and bushes he should fight with bows and arrows; and upon open ground, with sword and shield: and he should, always endeavour to destroy, or render useless, the enemy's straw, corn, water, and fire wood.

He should destroy likewise their reservoirs, their ramparts, and their ditches and trenches. The chief's elephants should be the first in the army; and not disordered.

বলসম্রাট সৈন্যানাং প্রাকারোজঙ্গমো যতঃ । তস্মাদস্বাধি
 ধীরাজা বিজয়ী স্যস্তু বিদ্যহে ॥ তথা চৈব ॥
 যুদ্ধমানাহযারুণাং দেবানামপি দুর্জয়াঃ । অপিদূর
 স্থিতাস্তেষাং বৈরিণোহস্তবর্জিনঃ ॥ প্রথমং যুদ্ধকারিত্ব
 সমস্তবলপালনং । দিগ্ভ্যর্থযোগেশোধিত্ব পশ্চাদ্ধর্ম
 প্রচক্ষতে ॥ স্বभावशूरमस्तत्रमविरक्तं जितयमं ।
 प्रसिद्धं त्रियप्रायं बलं श्रेष्ठतमं विदुः ॥ यथा प्रभुक्रता
 न्मानाद्युध्यन्ते भुवि मानवाः । न तथा बद्धभिर्दৈर्द्रविणै
 रपि भूपतेः ॥ तथाप्यसारसारः क्रियतां ॥ यतः ॥ वरम
 ल्पबलं सारं न कुर्यान्मुण्डमण्डलीं । कुर्यादसारभङ्गोहि
 सारभङ्गमपि द्रुपदं ॥ अप्रसादोऽनधिष्ठानं देयांश्च हरणञ्च
 यत् । कालथापोऽप्रतीकारस्तद्वैराग्यस्य कारणं ॥

যেহেতুক সেনার মধ্যে অশ্ব সেনা সজীব প্রাকার হয় সেই
 হেতুক ঘোঁটকাধিক যাহার সে রাজা স্থলযুদ্ধেতে জয়ী হয় ।
 তাহা কথিত আছে অশ্বাক্ষ যোদ্ধার দেবতারদিগেরও অ
 জেয় কেননা দূরস্থ বিপকেরাও তাহার হস্তগত হয় । সকল
 সৈন্যের রক্ষা করা প্রথম যুদ্ধকরা দিগ্‌নির্গম করা পথশোধ
 ন করা যোদ্ধারদিগের রক্ষা করা পদাতিকের কার্য কহেন
 স্বভাবত শূর অস্ত্রবিৎ অবিরক্ত অশ্রান্ত পুসিক ক্রিয় তুল্য
 এইসকল সৈন্যকে বিজয়ী উত্তম করিয়া জানেন । পৃথিবীতে
 অসীমকৃত সম্মানেতে অনুযোরা যাদৃশ যুদ্ধ করে রাজা অনেক

ধন দিলে ও তাদৃশ যুদ্ধ করে না। তথাপি অসার সার বিবেচনা করুন যেহেতুক উত্তম অল্প সৈন্য ও ভাল মন্তকশ্রেণ্য করিবেন। যে নিমিত্তে অধম সৈন্যের ভয় উত্তম সৈন্যের ভয় করে। আর অপুস্পন্নতা যুদ্ধস্থলে অনাগমন দাতব্য বেতনাদি না দেওয়া কাল যাপন করা পুতিকাৱনা করা এই সকল যুদ্ধোত্তে ও দাস্যের চিহ্ন।

They say, he who fighteth with elephants and camels, fighteth, as it were, with his own arms. The horse is the strength of the army. The horse is as a moving bulwark.

Wherefore, the chief who hath most horse in a land fight is victorious. Those who fight mounted on horses are hard to be defeated, even by the hosts of heaven; for let the enemy be at ever so great a distance, they are, as it were, in their hands.

The chief employment for the foot is fighting, guarding the whole army, and clearing the roads about.

The best kind of troops are declared to be those who are naturally brave, skilled in the exercise of arms, attached, inured to fatigue, renowned, and soldier-like.

Men, O prince, do not fight so well in this world, even for very large pecuniary rewards, as for honours bestowed by their commander.

A small army consisting of chosen troops is far better than a vast body chiefly composed of rabble; for when the bad give way, the good are inevitably broken in consequence.

Not to protect, not to be present, to be sparing of gifts, to procrastinate, to have no wardour who may introduce suppliants; these are the causes of disaffection.

আপিডযন বলং যত্রোজ্জিগীষুরতিপোষয়েৎ । সুখসা
 অদ্বিষাং সৈন্যং দীর্ঘপ্রাচাণপিডিতং ॥ দায়াদাদপরো
 মন্ত্রোনাস্তি ভেদকরোদ্বিষাং । তস্মাদুত্থাপয়েৎকাদাচাদ
 তস্য বিদ্বিষঃ ॥ সম্ভায যুবরাজ্যেন যদি বা মুখ্য
 মদ্বিষা ॥ অন্তঃ প্রকোপনং কার্য্যমভিযোক্তুঃ স্থিরাत्मनঃ ॥
 ক্লুরং মিত্রং রणे চাপি ভক্তং দত্ত্বা বিঘাতয়েৎ । অথবা
 গোয়হাক্ষষ্টান্নলক্ষ্যায়িতবন্ধনাৎ ॥ স্বরাষ্ট্রং বাস
 যেন্নাজা পরদেশাবগাহনাৎ । অথ বা দানমাননাভ্যাং
 বাসিতং ধনদং হি তত্ ॥ রাজাহ আঃ কিং বজ্রনোদিতেন ।
 আত্মোদয়পরয়ানির্দ্বয় নীতিরিতীয়তৌ । তদূরীকৃত্য
 ক্রতিমির্বাচস্পত্যং প্রতীয়তে ॥ মদ্বিষা বিহস্যোচ্যতে
 সর্বমেতৎ বিশেষতস্তু উচ্যতে ॥ *❀*❀*❀*❀

জয়েচ্ছু রাজা দুঃসাধ্য শত্রুর সেনাকে ব্যামোহ দেওত
 অনায়াসসাধ্য বিপক্ষের দূরদেশ গমন শান্ত সেনাকে
 অতিশয় পোষণ করিবেক । আর শত্রুর ভেদ কারক দায়াদ
 ব্যতিরেকে অন্য মন্ত্রনাহি অতএব সে বিপক্ষের দায়াদকে
 যত্ন করিয়া উঠাইবেক যুব রাজের সহিত কিম্বা পুধান মন্ত্রির
 সহিত সন্ধি করিয়া স্থিরচিত্ত অভিযোক্তার অন্তঃকরণে ক্রোধ
 করাইবেক । খল মিত্রকে যুদ্ধেতে ভঙ্গ দিয়াও নষ্ট করিবেক
 কিম্বা গোগৃহের আরহণ পুযুক্ত ও তাহার পুধান আশ্রিতের
 দের বন্ধন হেতুক । রাজা পরদেশাক্রমণ করিয়া স্বদেশ রক্ষা

করিবেক কিম্বা দান ও সম্মানদ্বারা রক্ষা করিবেক যেহেতুক
সে রক্ষণই ধনদ হয়। রাজা কহিলেন আঃ অনেক কথাতে
কি পুরোজন আপনার বুদ্ধি পরের হানি এই নীতি তাহা
কে স্বীকার করিয়া বিজ্ঞরা বাচস্পত্য জ্ঞানকে পায়। মন্ত্রী
হাস্য করিয়া কহিতেছে এই সকল বিশেষ করিয়া কহেন।

He who wisheth for victory should endeavour to harass the enemy without distressing his own troops. An enemy's army which has been harassed for a long time, may be easily defeated.

There is not a better counsellor than a competitor for the overthrow of an enemy; wherefore great pains should be taken to raise such a claimant.

Having entered into a confederacy with some one amongst the chief's sons, or with one of his principal counsellors, at length, it will be proper, with a firm resolution, to provoke him to fight.

And when a chief shall have given him an overthrow by means of his nearest friends, he may put his enemy to death.

Let a prince make his own regions popular, for the sake of possessing that of another: or by bestowing gifts, and conferring honours, with like popularity, let him acquire the odour of fame for generosity.

What is the use of saying so much upon the subject? said the king, interrupting him:

One's own exaltation is another's tribulation, and both, they say, is policy. Having granted this, our fine language is contradicted by our actions.

The minister smiling at this, replied,—It is entirely so, but,

কিন্তু অন্যদৃষ্টিভুলং সত্বমন্যচ্ছাস্তমিযচ্ছিত ।
 সামানাধিকরণ্যং হি তেজস্তিমিরয়োঃ কৃতঃ ॥
 ততস্ত্যায় রাজা মৌহুর্তিকাবেদিতলয়ে প্রাস্থ্যতঃ অথ
 প্রহিতপ্রাণিধির্হিরণ্যগর্ভায়াগত্য উবাচ দেব সমাগত
 প্রাথো রাজা চিববর্ণঃ সমুপ্ৰতি মলয়পর্বতাধিত্যকায়াং
 সমাবাসিতকটকোঃ অনুবর্ন্ততে দুর্গশোধনং প্রতিস্থলমনু
 সম্ভ্রাতব্যং যতোসৌ মৃধোমহামম্বী কিঞ্চ কেনচিত্ সছ
 তস্য বিশ্বাসকথাপ্রসঙ্গেনৈব তদিজ্জিতমবগতং ময়া
 যদনেন কোপ্যস্বদুর্গে প্রাগেব নিযুক্তঃ । চকোব্রুতে দেব
 কা কএবাসৌ সম্ভবতি । রাজাহ ন কদাচিদেতৎ যদ্যেব
 তদা কথং তেন শুকস্যাভিমবোদ্যোগঃ কৃতঃ ॥ অপরঞ্চ ॥
 শুকস্যাগমনাত্ তস্য বিগ্রহোহাসাহঃ সচিরাদব্রাস্তে ।

কিন্তু এক প্রাণী উচ্ছৃঙ্খল অপর প্রাণী শাস্ত্রনিয়ন্ত্রিত
 যেহেতুক আলোক ও অন্ধকারের সামানাধিকরণ্য কোথায়
 অর্থাৎ যেমন এক অধিকরণে আলোক ও অন্ধকার দুই
 থাকে না এমনি একাধারে উচ্ছৃঙ্খলত্ব ও শাস্ত্রনিয়ন্ত্রিত্ব দুই
 থাকে না । তাহার পর রাজা উঠিয়া দৈবজ্ঞকর্তৃক জ্ঞাপিত
 লগ্নেতে যাত্রা করিলেন । অনন্তর পুরিত চর হিরণ্যগর্ভ
 জমীপে আসিয়া কহিল হে মহারাজ চিববর্ণ রাজা আগত
 প্রায় সম্প্রতি মলয়পর্বত সন্নিধানে বাস করিতেছে অনু
 জ্ঞান দুগানুজ্ঞান কর্তব্য যেহেতুক এ গুপ্তমহামম্বী আর

কোন ব্যক্তির সহিত তাহার পুত্রের কথানাগাতে
 তাহার ইঙ্গিত আনি দ্বিতীয় হইয়াছি যে ঐ রাজা কোন
 লোককে আনারদিগের দুর্গেতে পূর্বেতেই প্রেরণ করি
 য়াছে। চক্রবাক বলিতেছে হে মহারাজ কাকই এ সম্ভব হয়।
 রাজা বলিলেন ইহা কদাচ নয় যদি এমন রটে তবে কেন
 সে শুকের পরাভবে উদ্যম করিল এবং শুকের আগমনেতে
 তাহার যুদ্ধোৎসাহ সে অনেক কাল এ স্থানে আছে।

One is lofty, powerful, and a villain, whilst another
 is guided and restrained by moral laws. When shall we
 find the same superiority in light and darkness?

At length the king got up and resolved to march at
 the time appointed by his astrologer; but just then
 the spy who was sent to observe motions of the enemy
 returned, and informed Hiranya-garbha that king Chitra-
 varna was almost arrived, and that at present he was
 near the Malaya mountains, that the construction of a
 castle was instantly to be resolved, for the vulture was
 a very wise minister; and that from the tenour of his
 conversation there was reason to believe, that he had a
 spy even then within the castle To all this the minister
 replied, that if there was a spy, it could be no one but
 the crow, whom they had entertained. That can never
 be, replied the king; for if he had been so, how came it
 to pass that he shewed such readiness to punish the
 parrot? And besides, war was not resolved till very
 lately upon the return of their ambassador the parrot.

ସବ୍ବୀ ବ୍ରୂତେ ତଥାପ୍ୟାଗନ୍ତୁ: ଶକ୍ତନୀୟ: ॥ ରାଜାହ ଆଗନ୍ତୁକା
 ହି କିଦାଚିଦୁପକାରକାଢ଼ଶ୍ୟର୍ତ୍ତେ । ଶୃଣୁ । ପରୋପି ହିତବାନ
 ବନ୍ଧୁର୍ବନ୍ଧୁରପ୍ୟହିତ: ପର: । ଅହିତୋଦେହଜଂଘାଧିର୍ହିତମାର
 ଣ୍ୟମୌଷଧଂ ॥ ଅପରଞ୍ଚ ॥ ଆସୀଦ୍‌ବୀରବରୋନାମ ଶୁଦ୍ରକସ୍ୟ
 ମହୋଦୃତ: । ସେବକ: ଶତ୍ସ୍ୟକାଳେନ ସ ଦଦୌ ସୁତମାତ୍ମନ: ॥
 ଚକ୍ର: ପୃଚ୍ଛତି କଥମେତତ୍ । ରାଜା କଥୟତି ଅହଂ ପୁରା
 ଶୁଦ୍ରକସ୍ୟ ରାଜ୍ଞ: କ୍ରୀଡ଼ାସରସି କର୍ପୂରକେଲିନାମ୍ନୋରାଜହଂସ
 ସ୍ୟ ପୁତ୍ରପ୍ତା କର୍ପୂରମଞ୍ଜୁର୍ଯ୍ୟା ମହାନୁରାଗବାନଭବଂ ତବ ବୀର
 ବରୋନାମ ମହାରାଜପୁତ୍ର: କୃତସ୍ଥିଦେଶାଦାଗତ୍ୟ ରାଜଦ୍ବାର
 ଲୁପଗମ୍ୟ ପ୍ରତୀହାରମୁବାଚ ଅହଂ ତଦ୍‌ଦେତନାର୍ଥୀ ରାଜପୁତ୍ରୋରାଜ
 ଦର୍ଶନଂ କାରୟ ତତ୍‌ସ୍ତେନାସୌ ରାଜଦର୍ଶନଂ କାରିତୋବ୍ରୂତେ ଦେବ
 ଯଦି ମୟାସେବକେନ ପ୍ରଯୋଜନମସ୍ତି ତଦାସ୍ମଦ୍‌ଦତ୍ତେନଂ କ୍ରିୟତାଂ

ମନ୍ତ୍ରୀ ବଳିତେଛେ ତଥାପି ଆଗନ୍ତୁକ ଶକ୍ତନୀୟ । ରାଜା କହିଲେନ
 ଆଗନ୍ତୁକ ବାଞ୍ଛି ଓ କଦାଚିଂ ଉପକାରକ ହୁଏ ଶୁନ ପର ଓ ହିତ
 କାରୀ ବନ୍ଧୁ ହୁଏ ବନ୍ଧୁ ଓ ଅହିତକାରୀ ପର ହୁଏ ଶରୀରଜାତ
 ରୋଗ ଅହିତ ହୁଏ ବନ୍ଧା ଓ ବଧ ହିତ ହୁଏ । ଅପର ଶୁଦ୍ରକ ରାଜାର
 ବୀରବର ନାମେ ଡ଼ତା ଥିଲ ସେ ଅତୀତ କାଳେତେ ନିଜ ପୁତ୍ରକେ
 ବାଳି ଦିଆ ଥିଲ । ଚକ୍ରବାକ୍ କହିତେଛେ ଏ କି ପ୍ରକାର । ରାଜା
 କହିତେଛେନ । ଆମି ପୂର୍ବେତେ ଶୁଦ୍ରକ ରାଜାର କ୍ରୀଡ଼ା ମରୋବରେ
 କର୍ପୂରକେଲିନାମା ରାଜହଂସେର କନ୍ୟା କର୍ପୂରମଞ୍ଜୁରୀର ସହିତ
 ଅତିଶୟ ଅନୁରାଗା ହୁଏ ଯାହିଲାନ ତାହାତେ ମହାରାଜପୁତ୍ର ବୀର

বর নামে কোনদেশহইতে আসিয়া রাজদ্বারে গিয়া দ্বারিকে বলিল আমি বেতনাধী রাজপুত্র রাজদর্শন করাও। তার পর তাহাকর্তৃক ও রাজদর্শন কারিত হইয়া বলিতেছে হে মহারাজ যদিপি অশ্রদ্ধতোতে মহারাজের পুয়োজন থাকে তবে আমার বেতন কর।

Nevertheless, answered the minister, it is proper to suspect one who came to us as he did. True, replied the king, provided he be guilty of any improper action; but,

A stranger, if well disposed, is a friend; but a friend, if ill-disposed towards one, is a stranger. A distemper although generated in the body, is malignant; whilst a drug produced in the woods proveth salutary.

King Sudraka had a servant, by name Vira-vara who in a very short time offered up his own son.

How was that? said the minister; and the king related the following tale.

FABLE IX.

IN former days I used to amuse myself with a certain female of my own species, whose name was Karpura-manjari, and who was the daughter of the royal gander Karpura-keli, in a pleasure lake belonging to king Sudraka. One day a young man, whose name was Vira-vara, and who proved to be a Raja-putra come from some distant country, presented himself before the porter who stood at the king's gate, and addressed him in the following words:—I am a soldier in search of employment; pray procure me a sight of the king. The porter conducted the stranger in to the presence of his master; to whom, he addressed himself as follows:—Sir, if thou hast any occasion for my service, let my pay be fixed.

শূদ্রকউবাচ । কিন্তি বর্জনং । বীরবরোব্রূতে প্রত্যহং সুবর্ণ
 পঞ্চ শতানি দেহি । রাজাহ কা তে সামগ্ৰী । বীরবরো
 ব্রূতে দ্বৌ বাহু তৃতীয়শ্চ লব্ধঃ । রাজাহ নৈতচ্ছব্য
 তচ্ছ্রুত্বা বীরবরস্থলিতঃ অথ মস্ত্রিভিরুক্তং দেব দিনচতু
 ষ্ঠ্যস্য বর্জনং দত্ত্বা জ্ঞায়তামস্য স্বরূপং কিমুপযুক্তোঽয়ং
 এতাবদ্বর্জনং গৃহ্ণাত্যনুপযুক্তোবেতি ততোমস্ত্রিবচনাদা
 হুয় বীরবরায তাম্বূলং দত্ত্বা পঞ্চশতানি সুবর্ণানি
 দত্তানি তদ্বচনং তদ্বিনিয়োগশ্চ রাজা সুনিশ্চিতং নিরু
 পিতঃ তদর্দ্রং বীরবরেণ দেবেभ্যোব্রাহ্মণেभ্যোদত্তং স্থিতত্স্যা
 ঈদৃঃখিতেभ্যঃ তদবশিষ্টং ভোজ্যযথবিলাসব্যয়েন এতত্
 সৰ্বং নিত্যকৃত্যং কৃত্বা রাজদ্বারমহর্নিশং লব্ধপাণিঃ শেত্বে
 যদা চ রাজা স্বয়ং সমাদিশতি তদা স্বগৃহমপি য়াতি

শূদ্রক বলিল তোমার বেতন কি বীরবর বলিতেছে
 প্রত্যহ পাঁচ শত সুবর্ণ দেও রাজা । বলিলেন তোমার
 সামগ্ৰী কি বীরবর বলিতেছে বাহু দুই খণ্ড তৃতীয় রাজা
 বলিলেন তসামগ্ৰী নয় তাহা শুনিয়া বীরবর চলিল ।
 অনন্তর অমাত্যেরা কহিল হেমহারাজ চারি দিবসের বেতন
 দিয়া ইহার স্বরূপ জান এ লোক কেমন উপযুক্ত এত বেতন
 লয় অনুপযুক্তই বা । তৎপরে মস্ত্রিরবাক্যেতে আহ্বান করিয়া
 বীরবরকে পান দিয়া পঞ্চশত সুবর্ণ দিলেন তাহার বাক্য

আর তাহার বিনিয়োগ রাজানির্জনে নিকপণ করিলেন বীর
বর তাহার অর্ধেক দেবতারদিগকে ও ব্রাহ্মণেরদিগকে
দিল অবশিষ্টের অর্ধেক দুঃখিরদিগকে তদবশিষ্ট খাদ্য দ্রব্য
দিতে ব্যয় এই সকল নিত্য কর্ম করিয়া রাজদ্বারেতে দিবা
রাত্রি থল্লহস্তেতে শয়ন করে যখন রাজা আপনি আজ্ঞা
করেন তখন নিজগৃহে যায় ।

The king asked him, how much? and he replied. five hundred suvarnas a day. What weapons hast thou' demanded the king My two arms, replied the soldier, and my sword, which makes a third. This will not do, concluded the king; upon which the soldier bowed, and took his leave. The minister happening to be present, said,—Please your highness, give him four days' pay, and learn what sort of a man he is, and what assistance he can be of. According to the minister's advice, the man being called back, they gave him Tāmbula, and four days' pay in advance; to the expenditure of which the king very privately attended, and found that he gave one moiety to the gods and the Brāhmans, one-fourth to the poor, and spent the remainder in food and amusements; and that after performing these several praiseworthy actions, he attended sword in hand at the king's gate day and night, and never went to his lodgings without his master's express permission.

অথৈকদা কৃষ্ণচতুর্দশ্যাং রাজৌ রাজা স কৃষ্ণং কন্দন
 ধ্বনিং শ্রুত্বা ব শূদ্রকউবাচ কঃ কোঽব হারি তেনোক্ত
 দেবাহ বীরবরঃ । রাজোবাচ কন্দনানুসরণং ক্রিয়তা
 বীরবরোযথা জ্ঞাপয়তি দেব ইত্যুক্তা চলিতঃ রাজা চ
 চিন্তিতং ন তদুচিতং অথং একাকী রাজপুত্রোমযা সূচী
 ভেদে তমসি প্রেরিতঃ তদনুগত্বা ক্রমেতদিতি নিরূপয়ামি
 ততো রাজাপি খড়্গমাধায় তদনুসরণক্রমেণ নগরাদ্ব
 হির্নির্জগাম গত্বা চ বীর্বেণ সা রুদতী রূপযৌনসম্প
 ন্না সর্বাঙ্গলঙ্কারভূষিতা কাচিত্ স্ত্রী দৃষ্টা পৃষ্টা চ কা
 ত্বং কিমর্থং রোদিষি স্ত্রিয়োক্তা অহমেতস্য শূদ্রকস্য
 রাজলক্ষ্মীস্থিরাদেতস্য ভুজচ্ছায়ায়াং মহতা সুখে
 বিশ্রান্তা ইদানীমন্যত্র গমিষ্যামি । *❀*❀*❀

অনন্তর এক দিবস কৃষ্ণ পক্ষীয় চতুর্দশী রাত্রিতে রাজা
 কৃষ্ণগার সহিত রোদন শব্দ শুনিলেন শূদ্রক কহিলেন
 কে কে এই দ্বারে সে কহিল হে মহারাজ আমি বীরবর
 রাজা বলিলেন ক্রন্দনের অনুসরণ কর বীরবর কহিলেন
 হে মহারাজ যেপুকার আজ্ঞা করেন ইহা কহিয়া চলিল ।
 রাজা ভাবনা করিলেন ইহা উপযুক্ত নয় ঘোর অন্ধকারে
 একাকী এই রাজপুত্র পেরিত হইল সেই হেতুক পশ্চাৎ
 গমন করিয়া কি এ ইহা নিরূপণ করি তাহার পর রাজা
 ও আমি লইয়া তাহার অনুসরণ ক্রমেতে নগরের বাহিরে

गेलेंन गिन्ना बीरवरकतूक सेई रोदिनकारिणी रूपयो
वनसम्पन्ना सर्वानङ्कार भूषिता कोन स्त्री निरीक्षिता हईल
आर जिज्ञासिता हईल के तूमि कि निमिष्ठे रोदन कर
स्त्री कहिन आनि এই शूदुकेर राजलक्ष्मी चिरकाल ईश्वर
बाह्छायाते बड़ सुखे विश्राम करियाहिलाम संपुति
अन्य त्र गमन करिब।

On the fourteenth night of what is called the dark side of the moon, the king heard a noise like one bitterly crying, upon which he called out to know who was waiting at the door, and his faithful Vira-vara answering that he was there; he ordered him to pursue the crying which they heard; so, saying, I obey your highness's commands, away he ran. In the mean time, the king reflected in this manner:—I have done wrong to send this soldier away by himself in such a dark cloudy night. I will even go too and see what is the matter. So saying, he took his sword, and thus followed till he got without the city; and presently after he saw the soldier with a female endued with perfect youth and beauty, and richly attired, who was weeping. Who art thou, and why dost thou weep? demanded Vira-vara. I am, said the female, the goddess Sri, the fortune of king Sudraka's dominions, who hath long dwelt happily under the shadow of his wings, but, alas! I am now about to flee to some other place of refuge.

বীরবরোব্রূতে যত্রাপায়ঃ সম্ভবতি তত্রোপায়োঽস্মি তত্
 কথং স্যাৎ পুনরিহাবলম্বনং ভবত্যাঃ লক্ষ্মীরবাচ যদি
 ত্বমাत्मनঃ পুত্রং শক্তিধরং দ্বাत्रिंशत्सप्तলোপেতং ভগবত্যাঃ
 সর্বমঙ্গলাযা উপহারী করোষি তদাহ পুনরত্র সুচিরং
 নিবসামীত্যুক্তাঃ দৃশ্যা ভবত ততো বীরবরেণ স্মৃৎসংগত্যা
 নিদ্রায়মানা স্ববধূঃ প্রবোধিতা পুত্রস্বতৌ নিদ্রাং পরিত্য
 জ্য উত্থায্য উপবিষ্টৌ বীরবরস্তত্ সর্বং লক্ষ্মীবচনমু
 ক্তবান্ । তচ্ছ্রুত্বা সানন্দঃ শক্তিধরোব্রূতে ধন্যোহমেবম্
 তঃ স্বামিরাজ্যরক্ষার্থং যন্মমৈঃ পয়োগঃ শ্লাঘ্যস্তত্ কো
 ধুনা বিলম্বস্য হেতুঃ এবম্বিধে কর্ম্মণি দেহস্য বিনিয়োগঃ
 শ্লাঘ্যঃ ॥ যতঃ ॥ ধনানি জীবিতম্ভৈব পরার্থে প্রাজ্ঞভট্ট
 জেত্ । সন্নিহিতং বরং ত্যাগো বিনাশে নিঘতে সতি ॥

বীরবর বলিতেছে যেখানে অপায় হয় সেখানে উপায় ও
 আছে তবে কি পুকারে এখানে পুনর্বার আপনকার অব
 স্থান হয় লক্ষ্মী কহিলেন যদ্যপি বত্রিশলক্ষণতে যুক্ত
 আপন পুত্র শক্তিধরকে তুমি ভবগতী সর্বমঙ্গলাকে বলিদে
 ও তবে আমি পুনশ্চ এখানে বহুকাল বাস করি ইহা কহিয়া
 অদৃশ্য হইলেন । তাহার পর বীর বর আপন গৃহে গিয়া
 নিদ্রিত আপন পত্নীকে আর পুত্রকে জাগাই লেন তাহারা
 দুই জন নিদ্রা ত্যাগ করিয়া উঠিয়া বলিল । বীরবর সেই
 সকল লক্ষ্মীর বাক্য বলিলেন তাহা শুনিয়া আহাদিত

ইহঁরা শক্তিধর বলিতেছে ধন্য আমি আমার রাজারকার
নিমিত্তে যে আমার এতদংশ উপযোগিতা সে শ্লাঘ্য তবে
এখন গৌণের কারণ কি এতদংশ কার্যেতে শরীরের নিয়োগ
শ্লাঘ্য। যেহেতুক পণ্ডিত ব্যক্তি ধন আর পুণ্য পরের নিমিত্তে
ত্যাগ করিবেক কে নন। শরীরনাশ অবশ্য হবেই ইহাতে
সাধুর নিমিত্তে ত্যাগই ভাল।

What, O goddess, said the soldier, will induce thee to tarry still longer here? If, replied the goddess, thou wilt offer up thy own son Sakti-dhara, who is distinguished by two and thirty marks, to the goddess who resideth over the welfare of all nature, then will I remain here for a much longer period of time, and saying this, she vanished from his sight.

Vira-vara now went home, and called up his son and his wife, who were both asleep; who having risen accordingly he related to them every thing which had passed with the goddess. His son, the moment he had concluded, exclaimed in a transport of joy,—O how fortunate I am, who can thus be the means of preserving my sovereign and his dominions! Then, O father, what occasion is there for any further hesitation or delay; since the assistance of this body is at all times ready upon such an occasion as this? For they say,

A good man should forsake wealth, and even life itself, for another. It is good to sacrifice one's self for a holy person upon the approach of his destruction.

শক্তিধরমাতোবাচ যদ্যেতন্ন কৰ্ত্তব্যং তত্ কেনাপ্যন্যেন
 কৰ্ম্মণা মুখ্যস্য মহাবৰ্চনস্বৰ্ণনিঃকৰ্যো ভবিষ্যতি ইত্যা
 লোচ্য সৰ্ব সৰ্বমঙ্গলায়াঃ স্থানং গতাঃ তত্র সৰ্বমঙ্গলা
 সম্পজ্য বীরবরোব্রুতে দেবি প্রসীদ বিজয়তাং বিজয়তাং
 শূদ্রকোমহারাজঃ গৃহ্যতামুপহারদ্যুক্তা পুত্রস্য শির
 শ্চিচ্ছেদঃ ততোবীরবরশ্চিন্তয়ামাস গৃহীতরাজবৰ্চনস্য
 নিস্তারঃ কৃতঃ অধুনা নিযুতস্য জীবনমলমিত্যা লো
 চ্যা ত্মনঃ শিরশ্ছেদঃ কৃতঃ ততঃ স্ত্রিযাপি স্বামিপুত্রশো
 কাকৰ্চন্য তদনুষ্ঠিতং তত্সৰ্বং দৃষ্ট্বা রাজা সাঙ্গম্য
 চিন্তয়ামাস । জীবন্তি চ ম্রিয়ন্তে চ মদ্বিধাঃ শুদ্র
 অন্তবঃ । অনেন সংদৃশোলোকে ন ভূতান ভবিষ্যতি ॥ তদৈ
 তেন পরিত্যক্তেন সম রাজ্যেনাপি অপ্রয়োজনং ততঃ শূদ্রকে
 নাপি স্বশিরশ্ছেতুং খঙঃ সমুত্থাপিতঃ ॥ ❀❀❀❀*

শক্তিধরের মাতা কহিল যদ্যপি ইহা না কর তবে অন্য
 কোন কৰ্ম্মেতে অতিবড় বেতনের নিস্তার হইবে ইহা
 আনোচনা করিয়া সকলে সৰ্বমঙ্গলার স্থানে গেল সে
 থানে সৰ্বমঙ্গলাকে পূজা করিয়া বীরবর বলিতেছে হে দেবি
 পুত্রনা হও শূদ্রক মহারাজ জয়যুক্ত হউন আগনি বলি গৃহ
 ণ করুন ইহা কহিয়া পুত্রের মস্তক ছেদন করিলেন । তদন
 ন্তর বীরবর ভাবনা করিলেন যে গৃহীত রাজবেতনের নিস্তা
 র হইল সম্প্রতি অপুত্রকের জীবন নিরর্থক ইহা বিবেচনা

করিয়। আপনার শিরশ্ছেদন করিলেন তাহারপর বীরবরের
 স্ত্রী ও স্বামিপুত্র শোকার্ত হইয়া তাহা করিল। রাজা সেই
 সকল দেখিয়া বিষয়াপন্ন হইয়া চিন্তা করিলেন আমার
 তুল্য ক্ষুদ্র জন্তুরা জন্মিতেছে ও মরিতেছে পৃথিবাতে
 ইহার তুল্য লোক হয় নাই ও হবে না সেইহেতুক ইহাতে
 রহিত হইয়া আমার রাজত্ব নিষ্প্রয়োজন তদনন্তর শূদ্রক ও
 নিজ মন্তক ছেদন করিবার নিমিত্তে খড়্গ উঠাইলেন।

This simple saying, added the mother, belongs particularly to our tribe; then if he be not permitted to do so, how else can we give an equivalent for the splendid salary which the king allows us? Having considered this proposal, they all went to the temple of the goddess; and when they had worshipped her image, the father Vira-vara addressed her in these words:—O goddess! let Sudraka our sovereign be prosperous! Saying which, he cut off his son's head. Thus, said he to himself, have I earned the wages which I received from my sovereign, and now let me pay the forfeit of my son's life! and instantly he cut off his own head. His wife too, overpowered with grief for her husband and son, followed their example. The king, filled with astonishment at the scene before him, said to himself:

Such little animals as myself come into life, and die away without end; but there never has been, nor ever will be, in this world one like unto him!

Oh, I can have no further enjoyment of these my dominions! Saying this, he lifted up his sword to cut off his head also;

অথ, ভগবত্যা সর্বমঙ্গলদা রাজহস্তে ধৃতজ্ঞাস্থ পুত্রপ্রস
 ন্নাশ্চি তে এতাবতা সাহসেন অলং জীবনান্তেপি তব
 রাজ্যভঞ্জেনাশ্চি । রাজা চ সাষ্টাঙ্গপাতং প্রণম্যোবাচ
 দৈবিকিং মে রাজ্যেন জীবিতেন বা কিং প্রযোজনং যদ্যহ
 মনুকম্পনীয়স্তদা মমায়ুঃশেষেণ অয়ং সদারপুত্রোবীর
 বরোজীবতু অন্যথাহং যথাপ্রাপ্তিং গতিমচ্ছামি । ভগবত্যু
 বাচ পুত্রানেন তে সত্যোতর্কষণে মৃত্যুবাৎসল্যেন চ তব তুষ্টা
 স্মি গচ্ছ বিজয়ী ভব অয়মপি সপরিবারো রাজপুত্রোজী
 বতু ইত্যুক্তা দেব্যদৃশ্যাভবত্ । ততোবীরবরঃ সপুত্রদারো
 মৃহং গতঃ রাজাপি তৈরললিতঃ সত্বরমন্তঃপুরং প্রবিষ্টঃ
 অথ প্রभाতে বীরবরোদ্বারস্থঃ পুনর্মূপালেন পৃষ্টঃ সন্
 আহ দেব সা রুদতী স্ত্রী মামবলোক্যাদৃশ্যাভবত্ ॥

অনন্তর ভগবতী সর্বমঙ্গলা রাজার হস্ত ধরিলেন আর
 কহিলেন পুত্র আমি তোমাকে পুসন। হইলান এত সাহস
 নিরর্থক পুণ্যান্তে ও তোমার রাজ্যভঙ্গ নাই রাজা অষ্টাঙ্গ
 পুণ্য করিয়া কহিলেন হে দেবি আমার রাজ্যে পুণ্যই
 বাকি পুণ্যোজন যদ্যপি আমি অনুগ্রহীত হই তব আমার
 অয়ুর শেষেতে সদারপুত্র এই বীরবর বাঁচুক নতুবা ইহার
 যেগতি পাইয়াছে সেই গতি আমি পাই ভগবতী কহিলেন
 হে পুত্র তোমার এই সত্য সন্ধানতাতে আর ভৃত্যবাৎ
 সল্যেতে তোমাকে তুষ্ট হইলান যাও জয়মুক্ত হও এই

সপরিবার রাজকুমার ও বাঁচুক ইহা কহিয়া দেবী অন্তর্হিতা
হইলেন । তদনন্তর বীরবর সদারপুত্র গৃহে গেলেন রাজা
ও তাহার দিগের অনক্ষিত হইয়া শাঘু অন্তঃপুরে পুবেশ
করিলেন । অনন্তর প্রাতঃ কালে দ্বারস্থ বীরবর পুনশ্চ
জিজ্ঞাসিত হইয়া কহিলেন হে মহারাজ রোদনকারিণী সে
স্ত্রী আমাকে নিরীক্ষণ করিয়া অদৃশ্যা হইল ।

but on the instant, she on whom dependeth the happiness of all, making herself evident under human form, seized him by the hand, and said,—My son, forbear this rashness! At present thy kingdom is not subdued! The king prostrated himself before her, and said,—O goddess! of what use to me is dominion, or even life? If thou hast any compassion for me, O let Virava, with his family, be restored to life; or if it be not thy will, permit me to pursue the path wherein I was found by thee! The goddess replied,—I am well pleased with this thy noble generosity and tenderness; then go thy ways, and prosper; and let this man, his wife, and son, all rise up and live! The king rendered thanks, and returned unobserved to an apartment of his palace to sleep. Virava too being restored to life, together with his wife and son, he conducted them home.

Virava being again on guard at the king's door, and being questioned by him respecting the person who was heard crying, replied, that upon her being seen she became invisible,

ম কাপ্যন্যা বার্তা বিদ্যতে তদ্বচনমাকর্ণ্য রাজাচিন্ত
 যত্ কথময়ং শ্লাঘ্যোমহাসত্বঃ ॥ যতঃ ॥ প্রিয়ং কুর্য্যাদ
 ঋপণঃ শূরঃ স্যাদবিকত্যনঃ । দাতা নাপাত্রবর্ধী চ প্রণ
 ল্মঃ স্যাৎনিষ্ঠুরঃ ॥ এতন্মহাপুরুষলक्षणং এতস্মিন্ সর্ধ
 মস্মি ততঃ স রাজা প্রাতঃ শিষ্টসভাং কৃत्वा সর্ধষ্টত্নান্ত
 প্রস্তুত্ব প্রসাদান্তস্মৈ কর্ণাটরাজ্যং দদৌ তত্ কিমাগন্তু
 কোজাতিমাভ্রাদৃষ্টঃ তত্রাপি উত্তমাধমমধ্যমাঃ সন্তি ।
 চক্রবাকোব্রূতে । যোঽকার্য্যং কার্য্যবত্ শাস্তি স কিং মম্বী
 নৃপেচ্ছয়া । বরং স্বামিমনোদুঃখং তন্ন শাসেদকার্য্যতঃ ॥
 বৈয়োগুরুশ্চ মম্বী চ यस्य রাজ্ঞঃ প্রিয়ঃ সদা । শরীরধর্ম্ম
 কোষেभ्यঃ চিপ্রং স পরিহীযতে ॥ ষ্ট্রণু দেব ॥ ❀

আর কোনবৃত্তান্ত নাই। তাহার কথা শুনিয়া রাজা চিন্তা
 করিলেন এই ব্যক্তি শ্লাঘ্য মহানর যেহেতুক কার্ণারহিত
 হইয়া পুত্র করিবেক শূর আত্মশ্লাঘারহিত হইবেক দাতা
 অপাত্র দায়ী হবেনা বাবদুক ব্যক্তি নিষ্ঠুর ভাষী হবেনা
 এই মহাপুরুষ লক্ষণ ইহাতে সমস্তই আছে। তাহার পর
 সেই রাজা পূর্বাঙ্কে শিষ্ট সভা করিয়া সকল বৃত্তান্ত পুস্তাব
 করিয়া অনুগৃহ পুষ্কৃত তাহাকে কর্ণাট রাজ্য দিলেন। তবে
 জাতিমাত্রেতেই কি আগন্তুক দুষ্ট তাহাতে ও উত্তম মধ্যম
 অধম আছে। চক্রবাক বলিতেছে রাজার ইচ্ছাতে যে
 অকার্য্যকে কার্য্য তুল্য করিয়া শাসন করে সে কি মম্বী

পুত্র মনের দুঃখ ও ভাল তথাপি অকার্য্যকে কার্য্য করি
য়া শাসন করিবেন। যে রাজার বৈদ্য ও গুরু ও মন্ত্রী
পুিয়দ হয় সে রাজা শরীর এবং ধর্ম্ম এবং ভাণ্ডারহইতে
পরিত্যক্ত হয় হে মহারাজ শ্রবণ করহ ।

and that there were no further tidings of her. The king was exceedingly well pleased at this, and said within himself,—What a praiseworthy man he was, repeating these lines:

He should speak kindly, without meanness; he should be valiant, without boasting; he should be generous, shedding his bounty into the dish of the worthy; he should be resolute, but not harsh.

This is the character of a great man! In this there is all!

In the morning early the king assembled a special council, and when he had publickly proclaimed the proceedings of the night, he bestowed the government of Karnāṭta upon his generous deliverer. After this, concluded the royal goose, must every one who cometh unasked be a villain? The truth is, there are three sorts amongst such too good, bad, and indifferent.

The minister replied,

Is he a minister who, in obedience to his sovereign's pleasure, payeth attention to what should not be done, as if it were proper to be done? It is better that the heart of the master should suffer pain, than that he should be ruined by doing that which ought not to be done.

If the physician, the spiritual guide, and the minister, become the flatterers of their prince, he is sure to lose his health, virtue, and treasury.

Hear this, please your highness:

पुण्याल्लभ्यं यदेकेन तन्ममापि भविष्यति । इत्वा भिक्षुं
महालोभान्निध्यधीं नापितोयथा ॥ राजा पृच्छति कथ
मेतत् । मन्त्री कथयति अस्त्रयोध्यायां चूडामणिर्नाम
क्षत्रियः तेन धनार्थिना सहता क्लेशेन भगवांश्चन्द्रार्द्ध
चूडामणिश्चिरमाराधितः ततः क्षीणपापोऽसौ स्वप्ने दर्श
नं दत्वा भगवदादेशाद्यक्षेत्रेणादिष्ठः यत् त्वमद्य प्रातः
क्षौरं कृत्वा लगुडं हस्ते कृत्वा गृहे निभृतं स्यास्यसि
ततोऽस्मिन्नेवाङ्गने समागतं भिक्षुं पश्यसि तन्निर्द्वयं लगुड
प्रहारेण हनिष्यसि ततः सुवर्णकलसो भविष्यति तेन
त्वया यावज्जीवं सुखिना भवितव्यं ततस्तथानुष्ठिते तद्दृ
त्तं तत्र क्षौरकरणाधानीतेन नापितेनालोक्य चिन्तितं
अये निधिप्राप्तेरयमुपायः अहमप्येवं किं न करोमि ।

পুণ্যপুযুক্ত কোন এক ব্যক্তি যাহা পাইয়াছে তাহা আমার
ও হইবে ইহা জ্ঞান করিয়া যে লোক কৰ্ম করে সে নষ্ট
হয় ইহাতে দৃষ্টান্ত অতিশয় লোভপুযুক্ত ভিক্ষুককে তা
ড়না করিয়া নিধাতী নাপিত যেমন নষ্ট হইয়াছিল ।
রাজা জিজ্ঞাসিতেছেন এ কি পুকার । মন্ত্রী কহিতেছে ।
আষাধ্যাতে চুড়ামণি নামে ক্ষত্রিয় ছিলেন তিনি ধনের
নিমিত্তে ভগবান্ চন্দ্রচূড়কে বহুকাল আরাধনা করিলেন ।
তাহার পর নিম্পাপ ঐ ক্ষত্রিয়কে স্বপ্নেতে দর্শন দিয়া
নরেশ্বরের আজ্ঞাতে ঈশ্বরের আদেশ করিলেন যে তুমি

অদ্য পূর্বাঙ্কে কোর করিয়া হস্তেতে লগুড় করিয়া গৃহেতে
লুক্কায়িত হইয়া থাকিবা অনন্তর ঐ অন্ধনেতে এক ভিক্ষু
ককে আসিতে দেখিবা তাহাকে নির্দয় লগুড় পুহারে নষ্ট
করিবা তাহার পর সুবর্ণ কলস হইবে তাহাতেই তুমি জী
বন পর্যান্ত সুখী হইয়া থাকিবা তদনন্তর তাহা করিলে
তাহা হইল । তাহাতে কোরকরণের নিমিত্তে আসিয়াছিল
যে নাপিত সৈ তাহা দেখিয়া চিন্তা করিল যে নিধি পাইবার
উপায় এই আমি ও এই পুকার কেন না করি ॥

The good which hath been gained by one will also be gained by me But the barber who wished for wealth, having through his infatuation killed a beggar, is put to death himself.

How came that about ? said the king; and the minister related the following story:

FABLE X.

IN the country of Ayōdhyā there was a Kshatriya, by name Churā-manī, who, being exceedingly anxious for the acquisition of wealth, offered up his prayers, with great fervour, to him in whose diadem is a crescent, and at length, one night, when he had been purified of his sins, that deity appeared to him in his sleep, and addressed him in these words: in the morning early, having shaved thyself, stand out of sight with a stick in thy hand, and when thou shalt see a beggar coming into the yard, thou wilt beat him to death with thy stick without mercy; for his dead body shall be changed into a pot of gold, which may serve to make thee as happy as thou canst wish for the rest of thy life —The instructions of the god were followed, and success attended; but the whole transaction having been observed by the barber, who came to shave the man, said to himself,—Ho, ho! this is the way to get money is it? Why then may not I do the same?

ততঃ প্রমুখি নাপিতঃ প্রত্যহং তথাবিধোচ্চগুডহস্তঃ সুমি
 শ্রুতং মিত্তোরাগমনং প্রতীক্ষতে একদা তেন প্রাপ্তোমিসুর্ল
 গুডেন ব্যাপাদিতঃ তস্মাদপরাধাত্ সোপি নাপিতঃ রাজ
 পুরুষৈর্ব্যাপাদিতঃ অতোঃহং ব্রবীমি পুण्याস্তম্বং যদেকেনে
 ত্যাদি । রাজাহ । পুরাষ্টককথোদ্ধারৈঃ কথং মির্ণীযতে
 পরঃ । স্যান্নিষ্কারণবম্বুর্বা কিং বা বিশ্বাসঘাতকঃ ॥
 যাতে প্রস্তুতমনুসম্বীযতাং মলয়াধিত্যকায়াং চেত্ চিব
 বর্ণস্তদধুনা কিং বিধেয়ং মম্বী বদতি দেব আগতপ্রাণি
 ধিমুখান্ময়া শ্রুতং তন্মহামম্বিণোম্ভ্রস্য উপদেশে যস্মিন্
 বর্ণেনানাৱরঃ কৃতঃ ততোঃসৌ মূঢ়োজ্যেতুং শক্যঃ ॥ তথা
 চোক্তং ॥ লুম্বঃ কুরোঃলসোঃসত্যঃ প্রমাদিভিরবস্থিতঃ ।
 মূঢ়োযোধাবমন্তা চ সুখচ্ছ্যেদোরিপুঃ স্মৃতঃ ॥

সেই অবধি ঐ নাপিত পুত্রিদিন সেইরূপ লগুড় হস্ত হইয়া
 নির্জনেতে ভিক্ষুকের আগমন পুত্রীক্স করে। এক দিবস সেই
 নাপিতভিক্ষুককে পাইয়া নষ্ট করিল সেই নিমিত্তে রাজপুত্র
 যেরা তাহাকে নষ্ট করিল । অতএব আমি বলি পুণ্যপুয়ুস্ত
 কোন ব্যক্তি ইত্যাদি । রাজা কহিলেন পূর্বকালের বৃত্তান্ত
 কথনদ্বারা কি পুকারেপন নির্ণীত হইবে কি কারণ বা
 তিরেকে বন্ধু হইবে কিম্বা বিশ্বাস ঘাতকই হইবে যাউক
 উপস্থিত অনুসন্ধান কর মনয় পর্বত মণীপে যদি চিত্রবর্ণ
 আশিয়াছে তবে এখন কি কর্তব্য মন্ত্রী বলিতেছে হে মহা

রাজ আগত দূতের মুখেতে আনি শুনিয়াছি এই মহা মন্ত্রী
গুপ্তের উপদেশেতে যে চিত্রবর্ণ অমাদর করিয়াছে সেই নি
মিত্তে এই চিত্রবর্ণ মূঢ়তাহাকে জয় করিতে শকা বটে বিজেরা
তাহা কহিয়াছেন লোভী ও খল ও অনস ও মিথ্যাবাদী ও
অনবধানস্থ ও মূঢ় আর যোদ্ধারদিগের অবজ্ঞাকারী এই
সকল বিপক্ষ অনায়াসেহ্‌দ্য হয় ॥

From that moment the barber used every day to con-
ceal himself with a large stick in his hand, waiting for
the coming of a beggar; and at length, when one came,
he beat him so unmercifully, that he died; and the con-
sequence was, that the barber was put to death by the
officers of justice for the crime.—I say, therefore, *The
good &c.*

The king replied,

How is a stranger to be found out by the repetition of a
parcel of old stories, whether he be one who hath no
motive, or a friend, or one who would betray one's
confidence?

Let the crow alone, and let us pursue what we have
to do. Chitra-varna is now in the neighbourhood of
Malaya. What is to be done? The minister replied,—
'Tis true he is come; but I have heard from the mouth
of a trusty spy, that Chitra-varna hath treated the wise
counsels of that great minister the vulture with contempt;
and therefore the fool may be defeated; for they say,

The enemy who is either avaricious, subject to passi-
on, unruly, treacherous, violent, fearful, unsteady, or
a fool, is easily to be defeated, we are told.

ততোঽসৌ যাবদস্মদুর্গদ্বাররোধনং কৰোতি তাবন্নয়দ্রিঘন
 বৰ্মসু তদ্বলানি হন্তুং সারসাদয়ঃ সেনাপত্যোন্যুজ্য
 ন্তাং ॥ তথা চ ॥ দীর্ঘবৰ্মপরিশ্রান্তং নয়দ্রিঘনসঙ্কুলং
 ঘোরাগ্নিভয়সংবৃত্তং স্তম্ভপিপাসাদ্বিতং তথা ॥ প্রমত্তং ভো
 জনব্যগ্রং ব্যাধির্দুর্ভিক্ষপীড়িতং । অসংস্থিতমভূযিষ্ঠং বৃষ্টি
 বাতসমাকুলং ॥ পঙ্কপাংশুজলাচ্ছন্নং সুযত্নং দস্যুবিদ্রুতং
 যৎভূতং মহীপালঃ পরস্যৈন্যং বিঘাতয়েত ॥ অন্যত্র ॥
 অবস্কন্দভয়াদ্রাজা প্রজাগরকৃতশ্রমং । দিবাসুপ্তং
 সমাহন্যান্নিদ্ৰাব্যাকুলসৈনিকং ॥ অতস্তস্য প্রমাদিনো
 বলং গত্বা যথাবকাশং দিবানিশং ব্রহ্মসেনাপত্যঃ
 তথানুষ্ঠিতে চিত্রবৰ্ণস্য সৈনিকাঃ সেনাপত্যস্ব বহবো
 নিহতাঃ ততশ্চিত্রবর্ণোবিষম্ভঃ স্বমন্ত্রিণং দূরদর্শিনমাহ।

সেই হেতুক ঐ চিত্রবর্ণ যাবৎপর্যন্ত আগারদিগের দুর্গদ্বার
 রোধ না করে তাবৎপর্যন্ত নদী ও পর্বত ও বন ও পথেতে
 তাহার সেনাকে হানিবার নিমিত্তে সারসপুভূতি সেনাপতি
 রা নিযুক্ত হউন বিজ্ঞেরা তাহা কহিয়াছেন দূরপথশ্রান্ত ও
 নদী গিরি অরণ্যেতে আচ্ছন্ন ও ঘোরাগ্নি ভয়েতে ভীত ও ক্ষু
 ধা এবং পিপাসাতে পীড়িত ও মত্ত ও ভোজনব্যস্ত ও রোগী
 এবং দুর্ভিক্ষেতে পীড়িত ও অনাস্থায়ী ও অগ্ন ও বৃষ্টি এবং
 বায়ুতে ব্যাচ্ছন্ন ও গন্ধ এবং ধূলি এবং জলেতে আচ্ছন্ন
 ও অতিশয় ব্যগ্র ও দস্যু পীড়িত এবং ভুত শত্রুসেনাকে

রাজ্য নষ্ট করিবেক । অপর আক্রমণভয়েতে সেই রাজ্য
জাগরণশূন্য দিবাসুপ্ত নিদ্রাব্যাকুল সেনাকে নষ্ট করিবেক
এই নিমিত্তে গিয়া পুনস্তের বল অবকাশক্রমেতে আনা
রদিগের সেনাপতিরা নষ্ট করুক তাহা করিলে পরে চিত্র
বর্গের সেনা ও সেনাপতি অনেক নষ্ট হইল । তৎপরে
চিত্রবর্গ উদ্বিগ্ন হইয়া আপন মন্ত্রী দূরদর্শিকে বলিল ॥

Then, before he shall have given orders to invest our castle, let the Sārasā and other generals be sent out upon the rivers, into the woods, upon the mountains, and through the passes, to destroy his forces They say,

If an enemy's army be fatigued by a long march, confined by rivers, hills, or forests; terrified by the apprehension of dreadful fires, distressed by hunger, thirst, and the like;

With their best provisions spoilt, afflicted with pestilence and famine, not steady, not numerous, embarrassed by rains and winds;

Incommoded by dirt, dust, or water, or destitute of good quarters; a prince may defeat it, and under any circumstances like these.

Or if an enemy be found sleeping in the day, from the great fatigue of watching for fear of a surprize, thus overpowered for want of rest, one may at all times easily defeat him.

Wherefore, let these generals march against the forces of that impetuous peacock, and fight them, either by day or night, as they may find it most expedient:

This advice being executed accordingly, the army of Chitra-varna was overthrown, and a great many of its principal leaders fell in the battle. Chitra-varna was exceedingly cast down at this event, and said to his minister the vulture,—

গাত কিমিত্যস্বাদুপেতা ক্রিয়তে কিং জ্ঞাপি অবিনয়োম
 নাস্তি ॥ তথা চোক্তং । ন রাজ্যং প্রাপ্তমিত্যেব বর্ণিতম
 মসাম্প্রতং । শ্রিয়ং হ্যবিনয়োহনুজরারূপমিবোক্তমং ॥
 অপি চ ॥ দত্তঃ শ্রিয়মধিগচ্ছতি পথ্যাশৌ কল্যতা সুখ
 মরোগো চ । উদ্যুক্তোবিদ্যান্তং ধর্ম্মার্থযশাসি বিনীতঃ ॥
 মৃগোঽবদত্ দেব ঋণু । অবিদ্বানপি ভূপালো বিদ্যাবৃদ্ধোপ
 সেবযা । পরাং জ্ঞায়ামবাপ্নোতি জলাসন্নতর্যযা ॥ অন্যস্ব
 ॥ পানং স্ত্রী সৃগযা দ্যুতমর্থদূষণমেব চ বাগ্‌দণ্ডোচস্ব
 পারুষ্যং ব্যসনানি মহীভূজাং ॥ কিঞ্চ । ন সাহসে কান্ত
 রসানুবর্ত্তিনা ন চাপ্যুপাযোপহৃতান্তরাत्मনা । বিভূতযঃ
 শক্যমবাপ্নু সূর্জিতানযে চ শ্রীর্থ্যে চ বসন্তি সম্পদঃ ॥

হে পিতঃ কেন আমাকে উপেক্ষা করিতেছে কোথাও কি আ
 নার অবিনয় আছে । পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন রাজত্ব
 পাইয়াছি ইহা জ্ঞান করিয়া অবিনয় করিবে না যেহেতুক
 বান্ধক্যাবস্থা যেকপউত্তম সৌন্দর্য্য নষ্ট করে এই রূপ অবি
 নয় সম্পত্তি নষ্ট করে । আর কন্মনিপুণ লোক সম্পত্তি পায়
 পথ্যাশা লোক মঙ্গল ও সুখ ও আরোগ্য পায় উদোগো
 লোক বিদ্যার সীমা পায় ও বিনয়েতে ধর্ম্ম ও অর্থ ও যশ
 পায় । গৃধ বলিতেছে হে মহারাজ শুন জলসমীপস্থ বৃক্ষ
 যেকপ বৃদ্ধি পায় এইরূপ অজ্ঞ রাজা ও গুণবানকে নিকটে

রাখিয়া বৃদ্ধি পায় অপর মাদক দ্রব্যের পান জী মৃগয়া দ্যুত
ক্রীড়া পরদ্রব্যের অপহরণ অবশ্য দেয়ের অদান নিষ্ঠুর বাক্য
নিরপরাধীকে দণ্ড করা এই সকল রাজারদিগের ব্যসন
আর কেবল সাহস মাত্রাবলম্বি লোক এবং উপায় রহিত
লোক ঐশ্বর্য্য পাইতে পারে না কিন্তু ন্যায়েতে ও শৌর্য্যেতে
সম্পত্তি পায়।

O, my father! why do you neglect me? How have I been
wanting in conduct?

Never before now was empire gained, thus to be lost!
The want of prudence destroyeth fortune, even as sick-
ness the greatest beauty

One who is expert gaineth fortune; he who eateth but
what is wholesome, health, and the healthy, ease, the
diligent, the end of knowledge, and he who is well
disciplined, virtue, profit, and reputation.

The vulture replied,—Please your highness,

A king, although he be not himself experienced, may,
if he has one old in wisdom about him, prosper, like a
tree which groweth by the water's side.

Drinking, women, hunting, gaming, borrowing of mo-
ney, harshness of speech, and severity, are great blem-
ishes in a prince.

Riches and prosperity are not possible to be acquired
by such as pursue power with sudden violence, nor by
those whose minds are at a loss for the means, for for-
tune dwelleth in good conduct and noble resolution.

ত্বয়া স্ববলোত্তমাহমবলোক্য সাহসৈকবাসিনা মথোপন্য
 স্তেষ্বপি মন্ত্রেষ্বনবধানং বাক্পারুষ্যস্ব কৃতং অতোদুর্নীতে:
 ফলমিদমনুভূয়তে ॥ তথা চোক্তং ॥ দুৰ্ম্মম্বিণং কমপথ্যা
 ন্তি ন নীতিদোষা সন্তাপয়ন্তি কমপথ্যভুজং ন রোগাঃ ।
 কং শ্রীর্ন দর্পয়তি কং ন নিহন্তি মৃত্যুঃ কং স্বীকৃতান
 বিষয়াঃ পরিতাপয়ন্তি ॥ অপরস্ব ॥ মৃদং বিধাদঃ শরদং
 হিমাগমস্তমোবিল্বান্ সুকৃতকৃতঘ্নতা । ত্রিযোপয
 ত্তিঃ শুচমাপদং নয়ঃ শ্রিয়ঃ সমৃদ্ধাঅপি হন্তি দুর্নয়ঃ ॥
 ইত্যুক্তা তেন মম্বিণালোচিত প্রজ্ঞাহোনাঃ যং রাজা নো
 চেৎ কথং নীতিশাস্ত্রকথাকৌমুদীং বাগুল্কাভিস্তিমির
 যতি ॥ যতঃ ॥ यस্য নাস্তি স্বয়ং প্রজ্ঞা শাস্ত্রং তস্য করো
 তি কিং । লোচনাভ্যাং বিহীনস্য দর্পণঃ কিং করিষ্যতি ॥

তুমি নিজ সেনার উৎসাহ দেখিয়া সাহসিক আশা
 কর্তৃক উপদিষ্ট মন্ত্রগাতে অনবধান করিয়াছ আর নিধুর
 বাক্য কহিয়াছ অতএব এই দুর্নীতের ফল এই অনুভূত
 হইতেছে । পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন নীতি দোষ কোন
 দুষ্ট মন্ত্রকারকে না পায় ও রোগ কোন কুপথ্যাসিকে তাপ
 না দেয় সম্পত্তি কোন লোককে গরিব না করে যম কাহা
 কে নষ্ট না করে জীকৃত বিষয় কাহাকে তাপিত না করে
 বিষয়তা হর্ষকে শান্ত কাল শরৎকে সূর্য অন্ধকারকে কৃত
 যুতা পুণ্যকে নিত্রদর্শন শোককে ন্যায় বিগতিক দূর্নীতি

অতিরিক্ত ঐশ্বর্যকে ও নষ্ট করে ইহা কহিয়া সে মন্ত্রী আ
লোচনা করিল এই রাজানিবুদ্ধি নতুবা কেন নীতি শাস্ত্রের
কথারূপ জ্যোৎস্নাকে বাক্যরূপ উদ্ধাতে করিয়া অন্ধকার
করিতেছে যেহেতুক যাহার বুদ্ধি নাই শাস্ত্র তাহার কি
করিবেক দুই চক্ষুতে রহিত ব্যক্তির দর্পণ কি করিবে।

But, continued the vulture, your highness, perceiving
the ardour of the forces, and from mere rashness, paid
no attention to the counsels I laid before you, and treat-
ed me with harshness of speech, this fruit, therefore, of
thy bad conduct, is now actually gathered.

Upon what minister do not the errors of conduct fall?
What man, who takes not proper regimen, do not
disorders torment? Whom doth not fortune make
proud? Whom doth not death destroy? To whom do not
the things which women do, give cause of great uneasi-
ness?

Melancholy overcometh cheerfulness, the winter au-
tumn, the sun darkness, ingratitude virtue, the ap-
pearance of friends grief, justice misfortune, and im-
prudence great prosperity

But, at that time, I said within myself,—This my mas-
ter is certainly destitute of wisdom, how he dimi-
nishes the lustre of good instructions by the meteor of
his own words!

For,

What will the wise precept. of books do for him who
is destitute of natural wisdom? What will a mirror do
for him who hath no eyes?

ইত্যালোচ্য তূর্ণাংস্থিতঃ অথ রাজা বহ্নাজ্জলিরাহ তাং
 অস্বয়ং মমাপরাধঃ ইদানীং যথাবশিষ্ঠবলসহিতং
 প্রত্যাঘ্র্য বিম্ব্যাচলং গচ্ছামি তত্রোপদিগ্ন গৃধ্রঃ স্বগতং
 চিন্তয়তি ক্রিয়তামত্র প্রতীকারঃ ॥ যতঃ ॥ দেবতাসু
 গুরৌ গোষু রাজসু ব্রাহ্মণেষু চ । নিযন্তব্যঃ সदा
 কোপোবালঘটনাতুরেষু চ ॥ মন্ত্রী প্রহস্য ব্রূতে দেব মা
 ভৈষীঃ সমাশ্বসি হি শৃণু দেব । মন্ত্রিণাং ভিন্নসম্মানে
 ভিষজাং সন্নিপাতকে । কর্ম্মসি প্রেচ্ছ্যতে প্রজ্ঞাসুস্থে কোবা
 ন পাণ্ডিতঃ ॥ অপরঞ্চ ॥ আরম্ভন্তেঃস্বমেবাজ্ঞাঃ কামং
 ব্যগ্রাভবন্তি চ । মহারম্মাঃ কৃতধিযস্টিষ্ঠন্তি চ নিরা
 কুলাঃ ॥ তদস্ব ভবত্প্রতাপাদেব দুর্গং ভঙ্ক্ত্বা কোর্নিপ্রতা
 পসহিতং ত্বামচিরেণ কালেন বিম্ব্যাচলং নেষ্যামি ॥

ইহা আলোচনা করিয়া চুপ করিয়া থাকিল । অনন্তর রাজা
 কৃতাজ্ঞানি ইহীয়া কহিলেন হে পিতঃ আমার এই অপরাধ
 আছে সম্প্রতি অবশিষ্টে মৈনোর সহিত করিয়া বিদ্যা
 পক্ষেতে যে ক্রমে যাই তাহাতে উপদেশ কর । গৃধ্র অন্তঃ
 করণে চিন্তা করিতে লাগিল ইহাতে পুতীকার কর যে
 ধৈর্য্যক দেবতাতে গুরুতে গুরুতে রাজাতে ব্রাহ্মণেতে বাল
 কেতে আতুরেতে কদাচ ভ্রোধ কর্তব্য নয় । মন্ত্রী হাঁসিয়া
 কহিতেছে হে মহারাজ ভয় করিও না আশ্বাসিত ইহীয়া শুন
 মন্ত্রিরদিগের ভিন্ন সম্মানেতে বৈদ্যেরদিগের সন্নিপাতেতে

বুদ্ধি জানা যায় সুস্থিতে কে বা পণ্ডিত নয় । অপর নিবুদ্ধি
লোকেরা অল্প কৰ্ম করে আর ব্যস্ত হয় সুবুদ্ধি লোকেরা
বড় কৰ্ম করে অথচ ব্যাকুল হয় না । সেইহেতুক আপন
কার অনুগৃহেতে দুর্গকে ভাঙ্গিয়া কীর্তি ও পুতাপের সহিত
তোমাকে অল্প কালেতেই বিদ্ব্যপদ্বতে লইয়া যাইব ।

And, for these reasons, I remained silent —The king, upon hearing this, joining his hands, said,—I agree that the fault was all my own ! But, in our present distress, thou shouldst instruct me how I shall be able to retreat, with the few troops I have left, to the Vindhya mountains ! The minister now resolved, within his own mind, that he ought to be reconciled to his master, re-collecting this saying :

Anger should always be restrained in the presence of the gods, before one's master, sovereign, or a Brāhman, in a cow-house, and not less where there are children, and aged or sick people.

Do not be alarmed ! said he to the king, smiling as he spoke, be comforted ! They say,

The wisdom of ministers shineth most upon the breach of concord, and of physicians in acute distempers. In peace, who is not wise ?

If fools undertake ever so little, they willingly become independent, whilst those who perform great actions, and are men of wisdom and experience, remain attached. This being the case, when by thy valour thou shalt have penetrated the castle of the enemy, I will, without delay, conduct thee, together with honour, glory, and thy army, safe back to the Vindhya mountains.

রাজাহ কথমধুনা স্বল্পবলেণ তৎ সম্বদ্যতে ॥ মৃধ্বা
 বদতি দেব সৰ্ব্বং ভবিষ্যতি যতঃ বিজিগীষোর্দীর্ঘসূত্রতা
 বিজয়সিদ্ধিরবশ্যং ভাবি লক্ষণং । তৎ সহসৈব দুর্গাবরোধঃ
 ক্রিয়তাং প্রহিতপ্রাণিধিনা বকেনাংত্য হিরণ্যগৰ্ভস্য
 তৎ কথিতং দেব স্বল্পবলং বাচ্যং রাজা চিত্রবৰ্ণঃ মৃধ্বস্য
 সন্ধেঃ পশ্চম্ভেন দুর্গাবরোধং করিষ্যতি ॥ রাজাহ সৰ্বজ্ঞ
 কিমধুনা বিধেয়ং ॥ চক্রাব্রূতে স্ববলে সারাসারবিচারঃ
 ক্রিয়তাং তজ্জ্ঞাত্বা সুবর্ণং স্তাদিকং যথার্থং প্রসাদপ্রদা
 নং ক্রিয়তাং ॥ যতঃ ॥ যঃ কাকিনীমধ্যপথপ্রপন্নাং সমুদ্বরে
 ন্নিষ্কসহস্রতুল্যাং । কালেষু কোটিষ্বাপি মুক্তহস্তস্তং রাজ
 সিংহং ন জহাতি লক্ষ্মী । ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀

রাজা কহিলেন কি পুকারে সম্প্রতি অতুল
 সেনাতে তাহা সম্পন্ন হইবে । গৃধ্র বলিতেছে হে মহা
 রাজ সমস্ত হইবে যেহেতুক জয়েচ্ছু রাজার দীর্ঘসূত্রতা জয়
 সিদ্ধির চিহ্ন সেই হেতুক অকস্মাৎ দুর্গবোধ কর । হির
 ণ্যগৰ্ভের পুরিত চর বক আসিয়া তাহা কহিল হে মহা
 রাজ অবশিষ্টে অতুল সেনার সহিত ঐ রাজা চিত্রবর্ণ গৃধ্রের
 পরামর্শে দুর্গ রোধ করিবেক । রাজা কহিলেন হে সৰ্বজ্ঞ
 এখন কি কর্তব্য । চক্রবাক বলিতেছে নিজ সেনাতে না
 রাসার বিবেচনা কর তাহা জানিয়া উপযুক্ত মতে পারি

তোষিক সুবর্ণ বস্ত্রাদি দেও যেহেতুক যে অস্থানস্থিত কাকি
নীকে ও সহস্র নিক্ততুল্য জ্ঞান করিয়া সংগ্রহ করে আর
সময় বিশেষে কোটি ধনেতে ও মুক্তহস্ত হয় সেই রাজ
সিংহকে লক্ষ্মী ত্যাগ করেন না ।

How shall this be accomplished, said the peacock king, with so small a force? Please your highness, replied the vulture, the whole shall come to pass. But as the opposite of dilatoriness is a quality absolutely necessary for a conqueror to insure success, let instant orders be given for the blockade of the enemies castle.

Soon after this resolution, a spy came to the royal goose Hiranya-garbha, and told him that the peacock king, by the advice of the vulture his minister, small as his army was, had resolved to march and block up the castle gates. The king said, O Far-see, what is to be done now? Let our army, replied the minister, be divided into good and bad, and let presents be made to the whole, according to their deserts, of money, cloth, and the like, for it is said,

Fortune never forsaketh that lion, prince-who sometimes collects even twenty shells, which is found by chance in the road, and esteems them as thousand Niskas, but at other times bestows millions of weights of gold with a liberal hand.

॥ অন্যত্র ॥ ক্রতৌ বিবাহে ব্যসনে রিপুত্বে যশস্করে কস্ম
 ণি মিত্রসংগ্রহে । প্রিয়াসু নারীষু নরেষু বান্ধবেষ্বতিথ্যযো
 নাস্তি নরাধিপাশ্চসু ॥ যতঃ ॥ মূৰ্খঃ স্বল্পব্যয়চাৰ্য্যসাৎ
 সৰ্বনাশং কৰোতি হি । কঃ সুধীঃ সন্ত্যজদ্বাণ্ডং শুল্কস্যে
 বাতিসাদ্ভসাৎ ॥ রাজাহ কথমিহ সময়ে অতিথ্যযো
 যুজ্যতে উক্তঞ্চ আপদর্থং ধনং রত্নেদতি ॥ মন্ত্রী ব্রূতে
 শ্রীমতঃ কথমাপদঃ ॥ রাজাহ কদাচিচ্চলতে লঙ্কাঃ ।
 মন্ত্রী ব্রূতে সঙ্ঘিতার্থো বিনশ্যতি তদেব কাৰ্পণ্যং বিমুচ্য
 দানমানাভ্যাং স্বমট্যঃ পুরস্কিয়ন্তাং ॥ তথা চোক্তং ॥
 পরস্পরজ্ঞাঃ সংহৃষ্টাস্বক্ৰান্তং প্রাণান্ সুনিশ্চিতাঃ । কুলী
 নাঃ পূজিতা সম্যগিব জয়ন্তে দ্বিষদ্বলং ॥

অপর যজ্ঞেতে ও বিবাহেতে বিপৎ কালেতে শত্রু ক্ষয়েতে
 বীর্ত্তিকর বর্শ্মেতে মিত্র করণেতে পুয় স্ত্রীতে বন্ধু লোকেতে
 হে মহারাজ এই আটেতে ব্যয় অতিশয় নাই যেহেতুক নিবু
 দ্বিলোক অতাল্প ব্যয়ের ভয়েতে সর্বনাশ করে কোন সুবুদ্ধি
 লোক শুদ্ধদানের ভয়েতে গোট ত্যাগ করোঁ রাজা কহিলেন
 কি পুকারে এ সময়ে অতিরিক্ত ব্যয় উপযুক্ত হয় পণ্ডিতেরা
 কহিয়াছেন বিপত্তির নিমিত্তে ধন রক্ষা করিবেক । মন্ত্রী
 বলিতেছে ধনবানের কি আপদ । রাজা কহিলেন লঙ্কা
 ও কথন যান । মন্ত্রী কহিতেছে সঞ্চিত ধন ও নষ্ট হয়


হে মহারাজ সেইহেতুক কৃপণতা ত্যাগ করিয়া দান ও সম্মানদ্বারা স্বকীয় যোদ্ধারদিগের পুরস্কার কর পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন পরম্পর জ্ঞাত ও হর্ষিত ও প্রাণত্যাগ করিতে উদ্যত ও অলীন ও সম্মানিত ইহারা বিপক্ষের সেনাকে জয় করে ।

A prince cannot be at an extraordinary expence on eight occasions. at a sacrifice, at a wedding, in times of distress, for the destruction of an enemy, in any meritorious work, in entertaining friends, upon women who are dear to him, and in relieving relations who are in want.

A fool, from the dread of ever so trifling expence, runneth every thing he undertaketh What wise man would, from extreme scrupulousness, entirely forsake a clean pot?

How, demanded the king, is it proper to be extravagant on any occasion, when they say,—*A man should keep his riches against accidents, &c?* How can one who is fortunate, said the minister, meet with accidents? Because fortune sometimes leaves one, replied the king. Hoarded treasure, observed the minister, is often lost; then away with parsimony, and let thy brave soldiers be distinguished by gifts and honours.

Those who have been preferred, and are well contented; such as are regardless of life, and have been proved; with those of noble birth, who have been treated with marks of distinction; will, all of them, be victorious over the forces of the enemy.

অপরঞ্চ ॥ স্বভট্টাঃ শীলসম্পন্নাঃ সৎহতাঃ কৃতনিশ্চয়াঃ
 অপি পঞ্চশতং শূরানিঘ্নন্তি রিপুবাहिनीং ॥ কিञ্চ ॥
 শিষ্টৈরপ্যবিশেষজ্ঞভূতশ্চ কৃতনাথকঃ । ত্যজ্যতে কিং পুন
 নান্যৈর্যশ্চাপ্যাत्मমরিনরঃ ॥ যতঃ॥সত্যং শৈথ্যং দয়া ত্যা
 গো নৃপস্যৈতে মহাগুণাঃ এभिর্মুক্তোমহীপালঃ প্রাপ্নোতি
 খলু বাচ্যতাং ॥ ইদৃশিপ্রস্তাবঅমাत्याস্তাবদেব পুর
 স্কর্তব্যঃ ॥ তথা চোক্তং ॥ যোযেন প্রতিবুদ্ধঃ স্যাৎ সহ
 তেনোদযৌ ব্যথৌ । সুবিশ্বস্তোনিয়োক্তব্যঃ প্রাণেষু চ ধনেষু
 চ॥যতঃ ॥ধূর্তঃ স্ত্রী বা শিশুর্যস্য মন্ত্রিণঃ স্যুর্মহীপতেঃ
 অনীতিপবনচ্চিত্তমঃ কার্য্য্য্য্যৈ সনিমজ্জতি ॥ শৃণু দেব
 হর্ষক্রোধৌ সমৌ यस্য শাস্ত্রার্থে প্রত্যয়স্তথা । নিত্যং মৃত্যা
 নৃপেচ্চা চ यस্য স্যাচ্ছনদা ধরা ॥ *

অপর শীলসম্পন্ন মিলিত প্রাণ ভাগ করিতে
 উদ্যুক্ত শূর স্বকীয় পাঁচ শত যোদ্ধা ও শত্রু পক্ষীয়
 অনেক সেনাকে নষ্ট করে .। অপর শিষ্ট লোকেরা
 ও বিশেষ জ্ঞানরহিত ক্রোধী কৃতঘ্ন আত্মস্তরি লোককে
 ভাগ করে অন্যেরা কি ভাগ না করে যেহেতুক সত্য ও
 শৌর্য্য ও দয়া ও দান এই সকল রাজার বড় গুণ এই
 সকল গুণেতে রহিত রাজা নিতান্ত নিন্দ্যাতা পায় এতাদৃশ
 বিষয়েতে মন্ত্রিরদিগের তাবৎপর্য্যন্ত পুরস্কার কর্তব্য বিজ্ঞে
 রা তাহা কহিয়াছেন যে রাজা যে মন্ত্রিহইতে বাড়ে সে

রাজা সে মন্ত্রিকে বাড়াইবেক আর ধন দিবেক এবং জীব
বিষয়েতে আর ধন বিষয়েতে অত্যন্ত বিশ্বস্ত পাত্রকে নি
য়োগ করিবেক যেহেতুক ধূর্ত ও স্ত্রী ও বালক ইহারা যে
রাজার মন্ত্রী সে রাজা অন্যায়রূপ বাযুতে বিক্ষিপ্ত হইয়া
কার্য্যরূপ সমুদ্রেতে মগ্ন হয় । শুন হে মহারাজ যাহার হর্ষ
ও ক্রোধ সমান আর শাস্ত্র পুতিপাদ্যেতে দৃঢ়জ্ঞান আর
সর্বদা ভৃত্যের অনপেক্ষা পৃথিবী তাহার ধনদা হন ।

A trifling force, consisting of only five hundred heroes, who are good soldiers, well experienced in the art of war, and resolute, when formed into a compact body, will beat a whole army of their enemies.

He who is devoid common of sense, furious, ungrateful, and voracious, is deserted by all honest men, how much, more by others?

The greatest qualities for the prince are, veracity, courage, generosity, and liberality. If a sovereign be destitute of these, he will certainly acquire the state of being talked of with contempt.

Ministers, likewise, should be distinguished and promoted, for,

The prince who is exalted by his minister, should in return prompt, and confer riches on him, and he should employ confidential men in affairs of life and fortune.

For,

The prince who hath for his advisers, knaves, women, children, or fools, is tossed by the winds of vice, and drowned in a sea of trouble!

Observe, your highness, that

The earth is bountiful unto him, who hath neither extreme joy nor anger in his breast, who hath a treasure with but little expence, and who hath servants who are always vigilant.

যেণাং রাজ্ঞা সহ স্যাতামুপচয়াপচয়ৌ ধ্রুবং । অমাত্যা
 ইতি তাদ্রাজা নাবমন্যেত্ কদাচন ॥ যতঃ ॥ মহোভূজো
 মদান্ধস্য সঙ্কীর্ণস্যেবদন্তিনঃ । স্বললতোহি করালম্বঃ
 সসুচ্ছত্ চিরচেষ্টিতং ॥ অথাগত্য প্রণম্য মেঘবর্ণোব্রূতে
 দেব দৃষ্টিপ্রসাদং কুরু ইদানীং বিপত্তৌদুর্গদ্বারি বর্ন্ততে
 তদেবপাদাদেশাদ্বহির্নিঃসৃত্য স্ববিক্রমং দর্শয়ামি তেন
 দেবপাদানামানৃণ্যমুপগচ্ছামি । চকৌব্রূতে মৈব যদি
 বহির্নিঃসৃত্য চোদ্রব্যং তদা দুর্গাশ্রয়ণমেব নিষ্প্রয়োজনং ॥
 অপরঞ্চ ॥ বিধমোহি যথা নক্সঃ সলিলাগ্নিনির্গতোঽবশঃ
 বনাগ্নিনির্গতঃ শূরঃ সিংহোপি স্যাৎ শৃগালবৎ । দেব স্বয়ং
 গত্বা দৃশ্যতাং যুত্বং ॥ যতঃ ॥ পুরস্কৃত্য বলং রাজা যোধযেদ
 বলোকয়ন্ । স্বামিনাধিষ্ঠিতঃ শ্বাপি কিং নসিংহায়তে ধ্রুবং

রাজার সহিত যাহারদিগেরে বৃদ্ধি ও হ্রাস হয় তাহারদিগকে
 আশ্রিত্য বলিয়া রাজা কদাচ অবজ্ঞা করিবে না যেহেতুক
 ইতিমুহু মধ্যস্থ স্তননবিশিষ্টে মদাক্ষ ইন্দির যেমন ইন্দিগত
 সুহৃদ লোকের বহুকাল চেষ্ঠাতে হয় এমনি কার্যেতে স্তনন
 বিশিষ্টে মদাক্ষ রাজার মন্ত্রিরদিগের বহুকাল চেষ্ঠাতে করের
 গৃহণ হয় । অনন্তর মেঘ বর্ণ আসিয়া পুণাম করিয়া বলিতে
 ছে হে মহারাজ অনুগৃহ পূর্বক অবলোকন করুন সম্প্রতি
 দুর্গদ্বারেতে বিপক্ষ আছে সেই হেতুক মহারাজার চরণের
 আজ্ঞা হইলে বাহিরে গিয়া নিজ পরাক্রম দেখাইতাহা কার

রাজা মহারাজের পায়েৰ অশ্রুণী হই। চক্রবাক বলিতেছে ইহা করিও না। যদিপি বাহির হইয়া যুদ্ধ করা যায় তবে দুর্গাশ্রয় নিস্প্রয়োজন। অপর যেমন ভয়ানক দ্রুতীর জলহইতে নিৰ্গত হইলে অবশ্য হয় বলবান সিংহ ও বনহইতে নিৰ্গত হইলে শৃগালের ন্যায় হয়। হে মহারাজ আপনি গিয়া যুদ্ধ দেখুন যেহেতুক রাজা দেখত সেনাকে অগ্নিতে করিয়া যুদ্ধ করাইবেক স্বান্যধিষ্ঠিত দ্রুতর ও কি সিংহের ন্যায় আচরণ করে না।

Such ministers as resolve to prosper, or perish, with their sovereign, ought never to be disgraced by him.

For,

When a king, blinded by his rashness, is about to be overwhelmed in the ocean of his affairs, a friendly minister stretcheth out his hand from the dry land to assist him.

Just now the crow Cloud-colour came in, and, bowing, cried,—Please your highness, look yonder! The enemy is at the gate anxious for battle. But issue your commands, and I will sally forth and display my prowess, by which action I shall pay the debt I owe your highness! Not so, not so! replied Know-all, it is by no means proper to go forth to fight, if it were, there would have been no occasion for our taking shelter in the castle!

The alligator, matchless as he is, when he quitteth the water, is without power. Were even the lion to forsake the forests, he would doubtless be upon a level with the jackal.

Please your highness, said the crow, go yourself, and see the battle.

A king having advanced his forces, should fight, overlooking them, for who will not truly act the lion, when his master standeth over him?

অথ তেসর্বে দুর্গদ্বারং গত্বা মহাছবং কৃতবন্তঃ অপরেদুষ্টিত্র
 বর্ণো রাজা মধুমুবাচ তাত স্বপ্রতিজ্ঞাতমধুনা নির্ঘা
 ছয়মধোব্রূতে। দেব শৃণু তাবত্। অকালসহমত্যল্পমূর্খ
 ব্যসনিনাযকং। সুগুপ্তং ভীরুযোধস্ব দুর্গব্যসনমুচ্যতে ॥
 তত্তাবদত্র নাস্তি। উপজাপচ্ছিরাবোধে। ঽবস্কন্দস্তোত্র
 পুরুষঃ। দুর্গস্য লঙ্ঘনোপায়াস্বত্বারঃ কথিতাঃ স্মে ॥ অত্র
 যথাশক্তি ক্রিয়তে যত্নঃ কৰ্ণে কথয়তি এবমেব ততে। ঽনু
 দিতএব ভাস্করে চতুর্ঘ্যপি দুর্গদ্বারেণ দৃশ্যে যুদ্ধে দুর্গাভ্য
 ন্তরমৃদে ল্ষে কদা কা কৈরগ্নিনির্লিপ্তস্ততোমৃদীতং মৃদীতং
 দুর্গমিতি কোলাহলং শ্রুত্বা সর্বতঃ প্রদীপ্তাগ্নিমবলোক্য
 রাজহংসসৈনিকা দুর্গবাসিনস্ব সত্বরং ঋদং প্রবিষ্টাঃ ॥

অনন্তর তাহার। সকলে দুর্গদ্বারে যাইয়া অতিবড় যুদ্ধ
 করিল। পরদিবস চিত্রবর্ণ রাজা গৃধ্রকে বলিল হে তাত
 এখন আপন পুতিজ্ঞা পুতিপালন কর। গৃধ্র বলিতেছে
 হে মহারাজ শুনুন বহুকালস্থায়ী ও অনেক সৈন্য পণ্ডিত
 বাসন রহিতের আশ্রয় ও সুখ্যাত ও শরযোধ এই সকল
 দুর্গ গুণ। আর অল্পকালস্থায়ী ও অতল্প সৈন্য মূর্খ বাসনির
 আশ্রয় ও সুগুপ্ত ভীকযোধ এই সকল দুর্গ বাসন এখানে
 নাই কিন্তু ভেদ আর বহুকাল না বুঝা আর আক্রমণ
 আর উগ্ৰ পুরুষ এই চারি দুর্গলঙ্ঘনের উপায় কর্ণে কহি
 তেছে ইহাতে শঙ্কানুসারে এইরূপ যত্ন কর। তদনন্তর

সূর্যোদয়ের পূর্বেই দুর্গের চারি দ্বারেতেই যুদ্ধ হইলে পরে এক দিবস দুর্গ মধ্যবর্তি গৃহেতে কাকেরা অগ্নি ক্লেপণ করিল তাহার পর দুর্গ লইয়াছি এ কোলাহল শুনিয়া সর্দার জলিতাগ্নি দেখিয়া রাজহংসের সেনারা আর দুর্গবাসি লোকেরা ত্বরিতে হুদে পুবেশ করিল ।

After this, they all marched to the castle gate, and fought a great battle In the mean time Chitia-varna, the peacock king, addressed his minister to fulfil his promise immediately, who replied,— Attend, please your highness.

A fortification is declared to be weak, when it is unable to hold out a long time, is extremely small, and very much exposed, or when commanded by a weak and unfortunate officer

But seeing that is not the case here,

There are four ways to take a fort, which are these: creating divisions, long blockading, surprise, and storming.

At present, only let the battle be maintained to the utmost of our power, concluded the vulture.

Early in the morning, even before the sun was up, when the battle had commenced at all the four gates of the castle, the crow, who was in the inside, contrived to set fire to every house. There was now a confused rumour, that the enemy had got possession, hearing which, and, at the same time, seeing a vast number of houses in flames, the troops of the royal goose, with all the private inhabitants, fled to the waters for security; according to this saying:

যতঃ ॥ সুমদ্বিতং সুবিক্রান্তং সুযুৎসং সুপ্রলাভিতং । কার্য্য-
কালে যথাশক্তি কুর্য্যান্ন তু বিচারয়েৎ ॥ রাজহংসঃ
স্বভাবান্মন্দগতিঃ সারসদ্বিতীয়শ্চ চিত্রবর্ণস্য সেনাপ-
তিনা কুক্কুটেনাগত্য বেষ্টিতঃ । হিরণ্যগর্ভঃ সারসমাচ্ছ
সারসসেনাপতে সমানুরোধাদাত্মানং কথং ব্যাপাদয়িষ্য-
সি ত্বমধুনা গন্তুং শক্তঃ তত্ কৃৎবা জলং প্রविशात्मानं
परिरक्ष अस्सत्पुत्रं चूडामणिनाমানং सर्वज्ञसम्मत্যা
রাজানং করিষ্যসি । সারসোব্রূতে দেব ন বক্তব্যমেवं দুঃসহং
বচঃ যাবৎ চন্দ্রাকৌ । দিবি तिष्ठतः तावत् विजयतां
দেব अहं देव दुर्गाधिकारी मन्मांसासृग्विलिप्तेन द्वार-
वर्त्मना प्रविशतु शत्रुः ॥ अपरश्च ॥ दाता क्षमी गुण-
ग्राही स्वामी दुःखेन लभ्यते । राजाह सत्यमेवैतत्

যেহেতুক কার্য্য উপস্থিত হইলে তাহা মন্ত্রণা করিয়া থাকে
শত্ৰুানুজারে তাহা করিবেক কিম্বা যুদ্ধ করিবেক কিম্বা
পালায়ন করিবেক বিচার করিবে না । রাজহংসস্বভাবতো
মন্দগতি আর দ্বিতীয় সারস এই দুইকে চিত্রবর্ণের সেনা-
পতি কুক্কুট আসিয়া বেড়িল । হিরণ্যগর্ভ সারসকে বলিল
হে সেনাপতে আমার অনুরোধে আপনাকে কেন নষ্ট কর
তুমি এখন য ইতে পার তাহা করিয়া জলে পুবেশ কর
আপনাকে রক্ষা কর চূড়ামণি নাম আমার পুত্রকে সর্ব
জ্ঞের সম্মতিতে রাজা করিবা । সারস বলিতেছে হে মহা


রাজ্য এতাদৃশ দুঃসহ বাক্য বক্তব্য নয় যাবৎ পর্য্যন্ত চন্দ্র
সূর্য্য গগনে আছেন তাবৎপর্য্যন্ত মহারাজ আপনি জয়ী
হউন আমি দুর্গাধিকারী আমার মাংস রক্ত লিপ্ত দ্বারপথে
তে শত্রু পুবেশ করুক। অপর দাতা ক্ষমাবান গুণগ্রাহক
পুভু কষ্টেতে মিলে। রাজা কহিতেছেন ইহা যথার্থই বটে।

Whatever hath been well consulted and well resolved, whether it be to fight well, or to run away well, should be carried into execution in due season, without any further examination.

The king having been thus abandoned by all but the Sārasa, and being by nature a slow walker, was made prisoner by the cock, who was the peacock's general; upon which he addressed the Sārasa in these words: general Sārasa! thou must not destroy thyself through my fault, but as thou hast it still in thy power to make thy escape, then go upon the waters, and, with the advice of Know-all, place Chura-karna my son upon the throne. O my royal master, replied the Sārasa, do not talk thus, for it is more, than I can bear. May the king still triumph over his enemies as long as the sun and moon shall last! I will again assume the command of the castle, and then let the foe enter besmeared with my blood!

A master is hard to be found, who is patient, generous, and a judge of merit.

True, said the king;

কিন্তু ॥ শুচির্দত্তোঽনুরক্তস্য জানে মৃত্যোপি দুর্লভঃ ।
 সারসোব্রূতে ষ্টণু দেব ॥ যদি সমরমণস্য নাস্তি মৃত্যো
 র্ভয়মিতি যুক্তমিতোঽন্যতঃ প্রযাতুং । অথ মরণমবশ্যমেব
 জন্তোঃ কিমিতি মুধা মলিনং যশঃ ক্রিয়তে ॥ অন্যচ্ছ ॥
 ভবেচ্ছিন্ পবনোদ্ধান্নবীচিবিধমভঙ্গুরে । জায়তে পুণ্য
 যোগেন পরার্থে জীবিতব্যয়ঃ ॥ স্বাম্যমাত্যস্য রাষ্ট্রঞ্চ দুর্গ
 কোষাবলং সুহৃতা রাজ্যাঙ্গানি প্রকৃতয়ঃ পৌরাণাং শ্রেণ্যো
 ঽপি চ ॥ দেব ত্বচ্ছ স্বামী সর্ব্বায়া রক্ষণীয়ঃ ॥ যতঃ ॥
 প্রকৃতিঃ স্বামিনং ত্যক্তা সমৃদ্ধাষি ন জীবতি । অপি
 ধন্যন্তরির্বেদ্যঃ কিং কৰোতি গতাযুধি ॥ অপরচ্ছ ॥ নরেশে
 জীবলোকেঽয়ং নিমীলতি নিমীলতি । উদৈত্যদীযমানৈ
 চ রবাবিব সরোরুহং ॥ অথ কুক্কুটে নাগত্য রাজহংসস
 শরীরে খরতুরনখাঘাতঃ কৃতঃ । *

কিন্তু পবিত্র কর্ম্মনিপুণ অনুরক্ত এতদ্রূপ ভৃত্য ও দুর্লভ
 সারস বলিতেছে শুন হে মহারাজ যদ্যপি সংগ্রাম ত্যাগ
 করিলে যমের ভয় না থাকে তবে অন্যত্র যাওয়া উপযুক্ত
 যদি পুণির মরণ অবশ্যই তবে কেন বৃথা অপয়শ করি
 অপর বায়ুর গমনেতে হয় যে চেউতাহার গমনের ন্যায় অ
 কালস্থায়ী যে এই সংসার ইহাতে পরের নিমিত্তে পুণ ত্যাগ
 পুণ্যপুযুক্ত হয় । আর স্বামী অমাত্য রাষ্ট্র দুর্গ কোষ সৈন্য
 সুহৃৎ নগরস্থ লোক এই আট পরম্পর উপকারক হেতু

রাজ্য হইল। হে মহারাজ তুমি স্বামী সর্ব পুকারে রক্ষণীয়
যেহেতুক অমাত্য লোক বড় হইলে ও স্বামিকে পরিত্যাগ
করিয়া বাঁচে না গতায়ুতে ধন্যস্তরি বৈদ্যও কি করে। অপর
সূর্য্য অপুকাশ হইলে যেমন পান্ন অপুকাশ হয় এইরূপ
রাজ্য অপুকাশ হইলে এই প্রাণি সকল অপুকাশ হয় রবি
পুকাশ হইলে যেৰূপ কমল পুকাশ হয় সেইরূপ রাজ্য
পুকাশ হইলে এই প্রাণি সকল পুকাশ হয়। অনন্তর অকুট
আসিয়া রাজহংসের শরীরে তীক্ষ্ণ নখাঘাত করিল

But a servant, who is honest, clever, and attached, is hard to be found.

Attend to this, please your highness: if after having quitted the field of battle there were no fear of death, it would be proper to go hence, but is not death inevitable to all things? Besides, it would tarnish my reputation to quit thee now

In this world, which is as transient as the waves caused by the motion of an, life should be virtuously sacrificed for the benefit of others.

The sovereign, the minister, territory, strongholds, treasure, forces, and friends, are the members of government; also the nobles, and the order of citizens. Besides, thou art the sovereign and master, who is always to be guarded and protected

When Prakriti (nature) is forsaken by her lord, great as she is, she doth not survive it. When life hath taken its departure, though Dhanwantari be the physician, what can he do?

In the sovereign the whole world openeth and shutteth its eyes. Thus the lotus of the waters, upon the rising of the sun, reviveth upon his revival.

The cock then flew upon the royal goose, and began to wound him with his bill and claws,

সত্বরমুপসৃত্য সারসেন স্বদেহান্তরিতো রাজাজলে দ্বিতমঃ
 অথ কুক্কুটৈর্নল প্রহারজর্জরোক্তেন সারসেন কুক্কুট
 সেনাবজ্রশোচনাঃ পশ্চাত্ সারসোপি চক্ষুপ্রহারেণ বিবিধ্য
 ব্যাপাদিতঃ অথ চিত্র বণে । দুর্গং প্রবিশ্য দুর্গাবস্থিতং ব্রহ্ম
 ব্যাহতিয়া বন্দিभिর্জয়শব্দৈ রানন্দিতঃ স্বক্লাম্বাবার
 জগাম অথ রাজপুত্রৈরুক্তং তস্মিন্নাজবলে সপুণ্যবান্ সার
 সএব যেন স্বদেহত্যাগেন স্বামী রচিতঃ । উক্তম্ভৈতৎ । জন
 যন্তিসুতান্ গাবঃ সর্ব্বে এব গবাচ্ছতীন বিঘাণো স্মিহি
 তক্লাম্বকাচিদেবগবাং পতিঃ । বিঘ্ণুশর্ম্মো বাচ সত্যবদ্বিষধ
 রোপরিজনঃ স্বর্গমুত্তমমুভবতু মহাসত্বঃ ॥ তথা চোক্তং ॥
 আহবেষু চ যেশূরাঃ স্বাম্যর্থ্যে ত্যক্তজীবিতাঃ । মর্ত্তমক্তাঃ
 কৃতজ্ঞাশ্চ তে নরাঃ স্বর্গগামিনঃ ॥

সারস শীঘ্র সমীপে আসিয়া রাজাকে আপন শরীরের
 মধ্যে করিয়া জলে পড়িল। তদনন্তর কুক্কুটেরদের নথ
 মুখ পুহারেতে কৃত বিক্রত হইয়া সারস অনেক কুক্কুট সে
 নাকে নষ্ট করিল। পশ্চাৎ সারস ও চক্ষু পুহারেতে কৃত
 বিক্রত হইয়া পুণ্যত্যাগ করিল। তাহার পর চিত্রবর্গদুর্গতে
 প্রবেশ করিয়া দুর্গস্থ দুব্য নকল লুটাইয়া বন্দিকত্বক জয়
 শব্দেতে আহ্বাদিত হইয়া স্বস্থানে গেলেন। অনন্তর রাজপু
 ত্রেরা কহিলেন সেই রাজসৈন্যেতে সারসই অতিবড় পুণ্য

যান যে নিজ দেহ ত্যাগ করিয়া স্বামিকে রক্ষা করিল ইহা
পাণ্ডিতকর্তৃক কথিত আছে গরুসকল গবাক্তি সমস্ত পুত্র
কেই জন্মায় শূঙ্কতে শোভিত অনেক গোর স্বামি এতাদৃশ
পুত্রকে কদাচিৎ কেহ জন্মায় । বিষ্ণুশৰ্ম্মা কহিলেন সে মহা
সত্ত্ব বিদ্যা ধরী পরিবৃত্ত হইয়া স্বর্গসুখ অনুভব করুক ।
বিজ্ঞেরা তাহা কহিয়াছেন। পুভুভক্ত কৃতজ্ঞযে বীরবরসকল
সংগ্রামেতে পুতুর নিমিত্তেপুণত্যাগ করে সে সব লোক
স্বর্গে গমন করে ।

but the Sārāsa screened his master under his own body; and although he himself was torn almost to pieces by the cock's beak and spurs, he still covered him till he got him safe into the water. Immediately after, the Sārāsa pecked the cock to death; but, at last, being attacked by a large party of birds, he lost his own life. Chitra-varna, the peacock king, now enters the castle, and having plundered it of every thing that had been left in it, he marched out again, saluted by his followers with shouts of victory!

The young princes now said to Vishnu-Sarmā,—In our opinions, the Sārāsa, in having thus preserved his master, at the expence of his own life, was the most virtuous bird in the army.

Cows bring forth young, all of the same shape of their parents; but few produce a king of the herd whose horns stroke his shoulders.

May the exalted being, replied Vishnu-Sarmā, who, of his own accord, purchaseth the regions of happiness with his own body, enjoy them, and be attended by Vi-dhyā-dharies! They say,

Such brave men as shed their blood in battle in their sovereign's cause; and such men as are faithful and grateful to their masters, are those who go to heaven.

ଯଦ୍ବ ତଦ୍ବ ହତ: ଶୂର: ଶତ୍ରୁଭି:ପରିବେଷ୍ଟିତ: ଅକ୍ଷୟାନ୍ ଲଭତେ
 ଶ୍ଳୋକାନ ଯଦି ଶୈବ୍ୟଂ ନ ଗଚ୍ଛତି ॥ ଅପରମପ୍ତେବମସ୍ତୁ ॥ ବି
 ଗ୍ରହ: କରିତୁରକ୍ଳମନ୍ତିଭିର୍ନେ କଦାପି ଭବତାଂ ମହୀଭୂଜାଂ ।
 ନୀତିମନ୍ତ୍ରପବନୈ: ସମାହତା: ସଂସ୍ରୟନ୍ତୁ ଗିରିଗଢ଼ରଂ ଦ୍ବିଷ: ॥
 ଇତି ହିତୋପଦେଶେ ନୀତିଶାସ୍ତ୍ରେ ବିଗ୍ରହୋନାମ ତୃତୀୟ:
 ପରିଚ୍ଛେଦ: ॥

ଶତ୍ରୁକର୍ତ୍ତବେଷ୍ଟିତ ହୁଏଁ ଶୂର ଲୋକ ଯେଥାନେ ସେଥାନେ ନରେ
 ସେ ଅକ୍ଳୟ ସ୍ବର୍ଗ ପାୟ ଯଦାପି କାତରତା ନା ପାୟ ଆର ଓ ଏହି
 ପୁକାର ହୁଏକ ଆଗନକାଦେର ହସ୍ତି ଘୋଡ଼ା ପଦାତିରଦ୍ବାରା
 ସଂଗ୍ରାମ କଦାଚିଂ ଓ ନା ହୁଏକ ନୀତି ମନ୍ତ୍ରଣା ରୂପ ବାୟୁରଦ୍ବାରା
 ଆହତ ହୁଏଁ ଶତ୍ରୁ ସକଳ ଗିରିଗଢ଼ରକେ ଆଶ୍ରୟ କରକ ।
 ଇତି ବିଗ୍ରହ କଥା ସମାପ୍ତ ।

Whenever a hero is killed, surrounded by the enemy,
 he obtaineth for himself those regions which are without
 decay; provided he doth not shew cowardice.

May no possessor of the earth ever have occasion to
 dispute with elephants, horses, and foot soldiers? May
 his enemies, defeated by the cleansing counsels of poli-
 cy, take shelter in the caverns of the mountains!

॥ अथ सन्धिः ॥

धुनः कथारम्भकाले राजपुत्रैरुक्तं आर्यं विग्रहः श्रुतोऽ
स्माभिः सन्धिरधुनाभिधीयतां । विष्णुशर्मणोक्तं श्रूयतां
सन्धिमपि कथयामि यस्यायमाद्यः श्लोकः ॥ वृत्तं मह
ति संग्रामे राज्ञोर्णिहतसेनयोः । स्थेयाभ्यां मध्वचक्राभ्यां
वाचा सन्धिः कृतः क्षणात् ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀

पूनश्च कथारम्भसमये राजपुत्रगारेरा कहिलेन हे गुरो
आमरा विग्रह शुनिलान सम्पुति मक्ति बन । विष्णुशर्मा
कहिलेन शुन मक्ति ओ कहि याहार पुथम श्लोकार्थ एही ।
अतिशय युद्ध इहिले परे दुई राजार अनेक सैन्य नष्ट
इहिले थाकिन ये गधु ओ चक्रवाक ताहारा अन्न कालेतेही
वाक्याद्वारा मक्ति करिन ।

C H A P. IV.

OF MAKING PEACE.

NOW, said the young princes, please to inform us
of what relates to *making peace*. Attend then,
replied Vishnu-Sarmā: this is the introduction to it.

*At the conclusion of a great battle, in which the troops
of both kings have suffered, a treaty is presently
brought about by the two ministers, the vulture and
the Chakra-vāka.*

রাজপুত্রাজ্জ্বঃ কথমেতৎ । বিষ্ণুশর্মা কথয়তি ততস্তেন
 রাজহংসসেনোক্তং কেনাঙ্গদুর্গে নিচ্ছিতোঃস্মিঃ কিং পারক্যেন
 কিম্বাঙ্গদুর্গবাসিনা কেনাপি বিপদপ্রযুক্তেন । চকোব্রূতে
 দেব ভবতোনিষ্কারণবন্ধুরসৌ মেঘবর্ণঃ সপরিবারেন
 দৃশ্যতে তন্মন্যে তস্যৈব বিচেष्टিতমিদং । রাজা চ্চণং বিচি
 ন্ত্যাহ অস্মি তাবদেব মম দুর্দৈবমেতৎ ॥ তথা চোক্তং ॥
 অপরাধঃ স দেবস্য ন পুনর্মন্নিণাময়ং । কার্য্যং সুচরিত
 ক্বাপি দৈবযোগাদ্ভিনশ্যতি ॥ মন্ত্রী ব্রূতে উক্তমেবৈতৎ । বিধ
 মাং হি দশাং প্রাপ্য দৈবং গর্হয়তে নরঃ আত্মনঃ কর্ম্মদো
 ষাংশ্চ নৈব জানাত্যপণ্ডিতঃ ॥ অপরঞ্চ ॥ সুহৃদাং হিত
 কামানাং যোবাकं নাভিনন্দতি । সকূর্ম্মদেব দুর্বুদ্ধিঃ
 কাষ্টাঙ্কশ্চোবিনশ্যতি ॥

রাজনন্দনেরা কহিলেন ইহা কিপুকার বিষ্ণুশর্মা কহিতে
 ছেন । তাহার পর সেই রাজহংস কহিল আমার দুর্গে কে
 বহি পুদান করিল কি পরকীয় লোক কিম্বা বৈরিপুত্রিত
 আমার দুর্গ বাসী কেহ । চকবাক বলিতেছে হে ভূপাল
 আপনকার নিষ্পয়োজন মিত্র ঐ মেঘবর্ণ সপরিবার দৃষ্ট হয়
 না সেই নিমিত্তে বুঝি তাহারি অনুষ্ঠিত এই । রাজা কিঞ্চিৎ
 কাল ভাবনা করিয়া কহিলেন সেই বটে আমার দুর্দৈব এ
 পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন সে দোষ রাজার মন্ত্রির এ
 দোষ নয় কেননা সূচ্যটিত কার্য্য ও কোথা ও দৈবযোগেতে

নষ্ট হয়। মন্ত্রী বলিতেছে ইহা কহাই আছে দুরবস্থা পাইয়া
লোক দৈবকে নিন্দা করে মুর্থ লোক আপনার কৰ্ম
দোষ জানে না অপর যে লোক হিতাভিলাষি বন্ধুরদগের
বচন শুনে নাসে কাষ্টদ্যুত নিরুজ্জ্বল কঙ্কণের ন্যায় নষ্ট হয়।

How was this? demanded the young princes; and Vishnu-Sarma related as follows:

FABLE I.

The royal goose, after his escape, asked who it was that set fire to the castle; whether one of the enemy, or some of their own party inhabiting our fort? and his minister, Chakra-vāka, replied,—Please your highness, that unnecessary connexion of your's, the crow Cloud-colour, together with his attendants, is no longer to be seen; wherefore, I conclude that it was contrived by him. The king, after a few moments consideration, exclaimed,—It is even so! It is my own evil seeking!

The fault shall be for ever his, and no more the minister's, by whom I believe our affairs, so well designed for our own advantage, were ruined.

They say, replied the the minister, that

When a man falls into misfortune, he accuses destiny; but unwisely perceiveth not his own faults.

He who doth not pay due regard to the advice of such friends as have his welfare at heart, may suffer for it, like the foolish tortoise, who fell from a piece of wood and was killed.

অন্যত্র ॥ রক্ষিতব্যং সদা বাক্যং বাক্যাদ্ভবতি নাশনং ।
 হংসাভ্যাং নীযমানাভ্যাং কূর্ম্মস্য পতনং যথা ॥ রাজাহ
 কথমেতৎ । মন্ত্রী কথয়তি অস্তি মগধদেশে ফুল্লোতপলা
 মিধানং সরস্বত্ৰ চিরং সঙ্কটবিকটনামানৌ হংসৌ নিব
 সতঃ তয়োর্মিত্রং কক্ষুগ্ৰীবনামা কূর্ম্মশ্চ প্রতিবসতি অথ
 একদা ধীবরৈরাগত্য তত্রোক্তং যদত্র অস্মাভিরযোষিত্বা
 প্রাতর্মতস্যকূর্ম্মাদযোব্যাপাদযিতব্যঃ তদাকর্ষ্য কূ
 র্ম্মাহংসাবাহ সুহৃদৌ শ্রুতোঃ ধীবরাল্লাপঃ অধুনা
 কিং ময়া কর্তব্যং । হংসাবাহতুজ্ঞায়তাং ধুনস্তাবৎ প্রাত
 র্যদুচিতং তৎ কর্তব্যং । কূর্ম্মাব্রূতে মৈবং যতোদৃষ্টব্যতি
 কারোহমত্র ॥ তথা চোক্তং ॥

সর্বদা বচনকেই রক্ষা করিবেক কেননা বাক্যেতে নষ্ট হয়
 হংসদ্বয়কর্তৃক নীয়মান কমঠের পতন যেমন । রাজা
 কহিলেন এ কি পুকার মন্ত্রী কহিতেছে । মগধদেশে
 ফুল্লোৎপল নামে সরোবর আছে তাহাতে অনেক কাল
 সঙ্কট বিকট নামে দুই হংস বসতি করে তাহারদিগের
 সখা কক্ষুগ্ৰীব নামে কচ্ছপ বাস করে । অনন্তর এক দিবস
 কৈবর্তেরা আসিয়া সে স্থানে কহিল যে এ স্থানে আমরা
 আজি বাস করিয়া কল্যাপ্রাতঃকালে মৎস্য কচ্ছপাদি
 নষ্ট করিব । তাহা শুনিয়া কমঠ দুই হংসকে কহিল হে








मित्रेरा कैवर्त्तेरदिगेर कथोपकथन शुनिला ईदानी
आमार कर्तव्य कि । हंसैरा बलिल पुनर्बार ताहा जान
प्रातःकाले याहा उपयुक्त हय ताहा करा याईवे । कछप
बलितेछे एमन नय येहेतुक এই स्थाने आमि ব্যतिक्रम
देखियाहि बिज्जेरा ताहा कहियाहेन ।

*One should always guard his speech; for from speak-
ing ruin often ensueth; as in the downfall of the tor-
toise, who was carrying along by two geese*

How was this? demanded the king; and the minister
related the following story:

FABLE II.

IN Magadha-dūsa, there is a large piece of water, which
is distinguished by the appellation Phullōtpala, or lotus
blossom; where lived together for a long time two geese,
named San-kata, and Bikata, and they had a tortoise cal-
led Kambu-griva, for their friend, who dwelt with them.
It happened once, that some fishermen coming that way,
said to themselves,—Let us stay here to-day; early in
the morning, we must contrive to catch some turtle,
and other fish. This having been overheard by the tor-
toise, he said,—My friends, you have heard the conver-
sation of these fishermen, then what do you think I had
best do? The two geese replied,—We shall know by
and by what is fit to be done. Not so! what is conceiv-
ed proper, that should be done immediately.

ଅନାଗତବିଧାତା ଚ ପ୍ରତ୍ୟୁତ୍ପନ୍ନମତିସ୍ତଥା । ହାବେତୌ ସୁଖମେ
 ଧୈତେ ଯଦ୍ଭବିଷ୍ଣୋଽବିନଶ୍ୟତି ॥ ତାବାହତୁ: କଥମେତତ୍ କୂର୍ମ:
 କଥୟତି ପୁରାସ୍ମିନ୍ନେବ ସରସି ଏବଂ ବିଧେଷୁ ଧୋବରେଷୁ ଉପସ୍ଥି
 ତେଷୁ ମତ୍ସ୍ୟବୟେଣାଲୋଚିତଂ ତଦାନାଗତବିଧାତା ନାମୈକୋ
 ମତ୍ସ୍ୟସ୍ତେନାଲୋଚିତଂ ଯଦ୍ଭବନ୍ତାବତ୍ ଜଳାଶୟାନ୍ତରଂ ଗଚ୍ଛାମୀ
 ତ୍ୟୁକ୍ତା ଛଦାନ୍ତରଂ ଗତ: ଅପରେଽପ୍ରତ୍ୟୁତ୍ପନ୍ନମତିନାସ୍ତା ମତ୍ସ୍ୟେ
 ନାଭିହିତଂ ଭବିଷ୍ୟଦର୍ଥେ ପ୍ରମାଣାଭାବାତ୍ କୁଚ୍ଚ ମଧ୍ୟା ଗନ୍ତର୍ଥ
 ତଦୂତ୍ୟନ୍ନେ ଯଥାକାର୍ଯ୍ୟନ୍ତଦନୁଷ୍ଠେୟଂ ॥ ତଥା ଚୋକ୍ତଂ ॥ ଉତ୍ପନ୍ନାମା
 ପଦଂ ଯସ୍ତୁ ସମାଧତ୍ତେ ସ ବୁଦ୍ଧିମାନ୍ । ବନିଜୋଭାର୍ଯ୍ୟସ୍ୟା^{୫୫୦} ଯାର:
 ପ୍ରତ୍ୟକ୍ତେ ଗୋପନଂ କୃତ: ॥ ଯଦ୍ଭବିଷ୍ଣୁ: ପୃଚ୍ଛତି କଥମେତତ୍ ।
 ପ୍ରତ୍ୟୁତ୍ପନ୍ନମତି: କଥୟତି ପୁରାବିକ୍ରମପୁରେ ସମୁଦ୍ରଦତ୍ତୋନାମ
 ବାଣିଗସ୍ତି ତସ୍ୟ ରତ୍ନପ୍ରଭା ନାମ ଗୃହିଣୀ ଶ୍ଵସେବକେନ
 ସହ ସଦା ରମତେ ॥ ********

ଅନାଗତ ବିଧାତା ଆଉ ମୁତୁଂପଲ୍ଲଗତି ଏହି ଦୁଇ ଜନ ମୁଖୀ
 ହସ୍ତ ଆଉ ଯନ୍ତ୍ରବିଷୟ ନଷ୍ଟ ହସ୍ତୀ ହଂସେମ୍ବା କହିଲ ଏ କି ମୁକାର
 କର୍ମ କହିତେଛେ । ମୂର୍ଦ୍ଧ ଏହି ମରୋବରେ ଜାଲିଲା ଏହି କାମେ ଉପ
 ହିତ ହଇଲେ ମରେ ତିନମଂସା ମରାମର୍ଶ କରିତେ ଜାଗିଲ
 ତାହାରମଧ୍ୟେ ଅନାଗତ ବିଧାତା ନାମେ ଏକ ମଂସା କହିଲଆମି
 ଅନ୍ୟ ମୁକ୍ତରିଗିତେ ଯାହି ଈହା ବଲିଲା ଜନାଶୟାନ୍ତରେ ଗେଲ ।
 ମୁତୁଂପଲ୍ଲଗତି ନାମେ ମଂସା କହିଲ ତାବି ବିଷୟେତେ ନିଷ୍ଠର
 ନାହି ଆମି କୋଥା ଯାହିବ ତାହାଉପହିତ ହଇଲେ ଯାହା ହସ୍ତତାହା

করিব বিজেরা তাহা কহিয়াছেন যে লোক উপস্থিত বিপৎ
কে সমাধান করে সেই বুদ্ধিমান ইহাতে নিদর্শন বণিকের
পত্নী উপপাতিকে পুতাক্কতো গোপন করিল। যন্তবিষা পুশ
করিতেছে এ কি পুকার পুতুৎ পন্নমতি কহিতেছে। পূর্বে
বিক্রম পুরেতে সমুদুদত্ত নামে এক বণিক থাকে রত্নপুভা
নান্নী তাহার গৃহিণী এক নিজ ভৃত্যের সহিত ক্রীড়া করে।

These two, Fate-not-come, and Wit-against- it-when-come, both of them happily flourish; whilst What-will-be loseth his life.

How was that demanded the two geese; and the tortoise related the following story:

FABLE III.

Formerly, in this very piece of water, when the same danger threatened them, as now threatens us, it was foreseen by three fish. One of them, whose name was *Fate-not-come*, said,—Let us go to some other piece of water, saying so, he removed himself to a different pool. The second, who was called *Wit-against-it-when-come*, said,—In an affair which is about to come to pass, one should not proceed without an authority; now it is said,

He is a wise man who can conquer an accident when it happeneth. A merchant's wife charged her gallant with theft, before her husband's face.

The third fish, who was called *What-will-be*, asked him how that was; and the second fish related as follows:

FABLE IV.

AT Vikrama-pura there lived a merchant, whose name was Samudra-datta, and his wife, who was called Ratna-prabha, was always amusing herself with one or other of the servants.

অথৈকংদা সা রত্নপ্রভা সমুদ্রদত্তেনাবলোকিতা ততঃ
 সা বম্বকী সত্বরং ভর্তৃঃ সমীপং গত্বাহ নাথ এতস্য সেব
 কস্য মহতী নির্বৃতি যতো ঽয়ং চৌরিকী কৃৎবা কর্পূরং
 খাদতীতি ময়াস্য সুখমাশ্রায় জ্ঞাতং ॥ তথা চোক্তং ॥
 আহারোদ্বিগুণঃ স্ত্রীণামিত্যাदि। তচ্ছুত্বা সেবকেন প্রকু
 প্তোক্তং নাথ यस্য স্বামিনো মৃচে এতাৎদৃশী भार्या তত্র
 সেবকেন কথং স্थातव्यं যত্র প্রতিक्षणং মৃহিণী সেবকস্য
 মুখং জিঘ্রতি ততোসাবৃত্যায় চলিতঃ সাধুনা যত্নাৎ
 প্রবাহ্য ধৃতঃ অতোহং ব্রবীমি উত্পন্নামাপদমিত্যাदि। *

অনন্তর এক দিবস সেই রত্নপুভাছিল তাহা সমুদ্রদত্ত
 দেখিল। তাহার পর সে জনটা ব্যটিতি স্বামির সন্নিধানে
 গিয়া কহিল হে নাথ এই সেবকের অতিশয় নির্বাহ যেহে
 তুক চৌর্য্য ক্রিয়া করিয়া কর্পূর খায় ইহা আমি ইহার মুখ
 আঘ্রাণ করিয়া জানিলাম। তাহা কথিত আছে স্ত্রীলোকের
 দের আহারদ্বিগুণ তাহারদের বুদ্ধি চতুগুণ ইত্যাদি। তাহা
 শুনিয়া ভূত্য ক্রোধ করিয়া কহিল হে

পুভো যে স্বামির গৃহেতে এতাদৃশী গৃহিণী সে স্থানে ভৃত্য
কি পুকারে থাকে যেখানে নিরন্তর পত্নী দাসের মুখের ঘৃণ
লয় তদনন্তর সে উঠিয়া চলিল তাহাকে মহাজন বহুতে
প্ৰবোধ করিয়া ধরিল। এই নিমিত্তে আমি বলি যে লোক
উপস্থিত বিপৎকে সমাধান করে ইত্যাদি।

One day it so fell out, that being seen by her husband
in that state, she ran instantly towards him and
cried,—My dear, this servant must be exceedingly dis-
tressed for food, for he has been eating some camphire
which I had brought home for thy use, and even now I
have smelt to him, and find his breath scented with it!
It is truly said,

What women eat is two-fold, their cunning four-fold, &c.
The servant, upon hearing the woman accuse him thus,
appeared to be offended, and exclaimed,—What man
can stay in a place with such a mistress as this, who is
every minute smelling the servants' mouths' saying
which he went away; but his master sent for him back,
and, with some difficulty, pacified him, and induced
him to stay. I say therefore, —*He is a wise man &c.*

ତତୋଽୟମ୍ଭବିଷ୍ଣୋକ୍ତଂ । ଯଦଭାବି ନ ତଦ୍ଭାବି ଭାବି ଚେନ୍ନ
 ତଦନ୍ୟଥା । ଇତି ଚିନ୍ତାବିଷୟୋଽସମଗଦଃ କିଂ ନ ଯୋଚ୍ୟତେ ॥
 ତତଃ ପ୍ରାତର୍ଜାଲେନ ବହୁଃ ପ୍ରତ୍ୟୁତ୍ପନ୍ନମତିର୍ମୃତବଦାତ୍ମାନଂ ସ
 ନ୍ଦର୍ଶ୍ୟ ସ୍ଥିତଃ ତତୋଽଜାଲାଦପସାରିତୋ ଯଥାସତ୍ତ୍ୱତୁଷ୍ଣତ୍ୱ
 ଗଭୀରଂ ନୀରଂ ପ୍ରବିଷ୍ଟଃ ଯଦ୍ଭବିଷ୍ଣୁସ୍ତ୍ର ଧୋବରୈଃ ପ୍ରାମ୍ନୋଽପ୍ୟାପାଦିତଃ
 ଅତୋଽହଂବ୍ରବୋମି ଅନାଗତବିଧାତେତ୍ୟାଦି ତଦ୍ୟଥାହମନ୍ୟଋଦଂ
 ପ୍ରାମ୍ନୋମି ତଥାକ୍ରିୟତାଂ ହଂସାବାହତୁଃ ଜଳାଶୟାନ୍ତରେ ପ୍ରାମ୍ନେ
 ତବ କୁଶଳଂ ସ୍ଥାଳେ ଗଚ୍ଛତସ୍ତେ କୌବିଧିଃ କୂର୍ମଃ ଆହ ଯଥାହଂ
 ଭବଜ୍ଞାଂ ସହ ଆକାଶବର୍ତ୍ତନା ଯାମି ତଥା ବିଧୌୟତାଂ ହଂସୌ
 ବ୍ରୁତଃ କଥମୁପାୟଃ ସମ୍ଭବତି କଚ୍ଛପୋଽବଦତି ଯୁବାଭ୍ୟାଂ
 ଚକ୍ଷୁର୍ଧୃତଂ କାଷ୍ଠଋଣ୍ଡମେକଂ ମୟା ମୁଖେନାବଲମ୍ବ୍ୟ ଗନ୍ତବ୍ୟଂ
 ଯୁବୟୋଃ ପଲ୍ଲବଲେନ ମୟାପି ମୁଖେନ ଗନ୍ତବ୍ୟଂ । *❀*❀*

ତାହାରପର ଯନ୍ତ୍ରବିଦ୍ୟା କହିଲ ଯେ ବିଷୟ ହେବାର ଉପଯୁକ୍ତ ନୟ
 ଜେ ହେବେ ନା ଯେ ବିଷୟ ହେବାର ଉପଯୁକ୍ତ ତାହାର ଅନ୍ୟଥା ହବେ
 ନା । ତଦନନ୍ତର ପ୍ରତ୍ୟୁତ୍ପନ୍ନମତି ପ୍ରାତଃ କାଳେ ଜାଳେତେ ବନ୍ଧୁ
 ହେୟା ଆପନାକେ ମୃତ ତୁଲ୍ୟ ଦେଖାହିୟା ଥାକିଲ । ତାହାର
 ପର ଜାଳହେତେ ନିଃସାରିତ ହେୟା ଜାମାଥାମାନୁଜାରେ
 ଲଙ୍କାଦିୟ । ଅଗାଧଜଳେ ପ୍ରବିଷ୍ଠେ ହେଲ ଯନ୍ତ୍ରବିଦ୍ୟା କୈବର୍ତ୍ତ
 କର୍ତ୍ତୃକ ଧୃତ ହେୟା ବ୍ୟାପାଦିତ ହେଲ । ଏହି ନିମିତ୍ତେ ଆମି
 ବଲି ଅନାଗତ ବିଧାତା ହେତାଦି । ସେହି ହେତୁକ ଯେ ପ୍ରକାର
 ଆମି ଅନ୍ୟ ଜନାଶୟେ ଯାହି ତାହା କର । ଇଂରେଜ ବନିଲ

হুঁদান্তরে গেলে পরে তোমার কল্যাণ কিন্তু স্থলে গমন
করিবার তোমার কি উপায় । কমঠ কহিল যেক্ষণে আমি
তোমাদের সহিত আকাশ পথেতে যাই তাহা কর হংসেরা
বলিল কি পুকারে উপায় সম্ভব হয় কুম্ভ বলিতেছে
তোমারদের দুই জনকর্তৃক চঞ্চুধৃত এক কাষ্ঠখণ্ডকে
আমি মুখেতে অবলম্বন করিয়া তোমাদের দুই জনের
পক্ষ বলেতে সুখে যাইব ।

To this *What-will-be* replied,—*That is not to be which is not to be &c.*

Early in the morning *Wit-against-it-when-come*, being caught in a net, feigned himself dead, and remained quiet; but he was no sooner thrown out of the net, than he sprang into deep water, and thus made his escape; whilst *What-will-be* was taken by the fishermen, and so lost his life. I repeat therefore, *These two*, Fate-not-come, &c.

Then, concluded the tortoise, let it be contrived how I am to get to another lake Where, demanded the two geese, will be the advantage of thy going to another place? Pray, replied the tortoise, only contrive the means, and I will go through the air along with you How, said the geese, are we to contrive the means? Why observed the tortoise, you must get a piece of wood, and take each of you one end of it in your beak, from which I can suspend myself by mouth, whilst you carry me along by the force of your wings.

হঁসৈ ব্রূতঃ সম্ভবত্যেষ উপায়ঃ কিন্তু । উপায়ং চিন্তয়ন্
 প্রাজ্ঞোহ্যপায়মপি চিন্তয়েত্ । পশ্যতোবকমূৰ্খস্য নকুলৈ
 র্ভক্ষিতাঃ প্রজাঃ ॥ কূৰ্ম্মঃ পৃচ্ছতি । কথমেতত্ তৌ কথয়তঃ
 অস্ত্যুত্তরপথে মধুকূটনাম্নি পর্বতে মহান্ পিপ্পলত
 তত্রানেকবকানিবসন্তি তস্য বৃক্ষাধস্তদ্বিধে সর্পোবালা
 পত্যানি খাদতি অথ শোকার্তানাম্ বকানাং বিলাপং শ্রুত্বা
 কেচিৎকেচিৎনাভিহিতং এবং ন কুরুত যুযং মত্স্যানুপাदाय
 নকুলবिवরাদারম্ভ্য সর্পবिवরং যাবত্ পংক্তিক্রমেণ বিকি
 রত ততস্তদা দ্বারলুপ্তৈ নকুলৈরাগত্য সর্পোদ্রষ্টব্যঃ স্বभाव
 হ ব্যাধ্যা দ্বাपादयितव्यस्तथानुष्ठिते तद्वृत्तं ततस्तत्र वृक्षे
 नकुलैर्वकशवकरावः श्रुतः पश्चात्तैर्धृत्तमारुह्य वकशा
 वकान् खादन्ति अतश्चावां ब्रूवः उपायं चिन्तयन्नित्यादि ।

দুই হংস বলিল এতাদৃশ উপায় সস্তব বটে কিন্তু সুবোধ
 লোক উপায় চিন্তা করত অপায়ও চিন্তা করিবেক কেননা
 দেখিতেছিল যে মূৰ্খ বক তাহার সন্তাননষ্টকর্তৃক ভক্ষিত
 হইল । কল্প পুশ্প করিতেছে এ কি পুকার তাহার। কহি
 তেছে । উত্তরপথে গৃধুকূট নামে গিরিতে এক বৃহৎ অশ্ব
 খবৃক আছে তাহাতে অনেক বক বাস করে তাহারদের
 শিশু সন্তানেরদিগকে বৃক্ষতলস্থ গর্ভেতে মর্পে থান্ন অনন্তর
 শোকাভূত বকেরদিগের রোদন শুনিয়া কোন বক কহিল
 একপ বিলাপ করিও না তোমরা মৎস্য আনিয়া নদনের

গর্ভকে আরম্ভ করিয়া সর্পের বিবরণ্যাস্ত পঙ্ক্তিক্রমেতে স্থাপন কর। তাহার পর সেই খাদ্য দুব্যালোভি নকুল আসিয়া সর্পকে দেখিবেক স্বাভাবিক শত্রুতাহেতুক তাহাকে নষ্ট করিবেক তাহা করিলে পরে তাহা হইল। তদনন্তর সেই তরুতে নকুলেরা বকবালকধ্বনি শুনিল পশ্চাৎ তাহারা বৃক্ষে আরোহণ করিয়া বকশিশুরদিগকে খাইল। এই জন্মে আনি বলি সুবোধ লোক উপায় চিন্তা করত ইত্যাদি।

This contrivance will thus do, replied the geese; but,

One who is wise, in contriving the means, should consider the consequence. Some foolish boobies' young ones were devoured by a weasel before their faces.

How did that happen? demanded the tortoise; and one of the geese related as follows:

FABLE V.

IN the north, upon the mountain called Gridhra-kuta, there was a large Pippala tree, wherein many boobies were wont to reside, and at the foot of the same tree a serpent lived in his hole, who used to devour the young boobies. An old bird, hearing the lamentations of the afflicted boobies for the loss of their little ones, addressed them in these words: you should do thus.—Get some fish, and draw them along upon the ground from the hole of a weasel, as far as the serpent's hole, where you will leave them. Presently, the weasel, attracted by the scent of food, will go to the serpent's hole, and thus he is certainly to be discovered, and, from there being a natural enmity between them, thus to be destroyed. The plan was accordingly executed, and the serpent was discovered and eaten by the weasels, but soon after, the cries of the young boobies being heard by them, they mounted the tree and devoured them also. We repeat therefore, said the two geese, *One who is wise, in contriving the means, &c.*

আবাভ্যাং নীয়মানং ত্বামবলোক্য লোকৈঃ কিস্বিদ্ধকৃত্য
 মেব । তদাকর্ণ্য যদি ত্বমুত্তরং দাস্যসি তদা ত্বন্মরণং
 তত্ সৰ্ব্বথা নৈব স্থীয়তাং কূৰ্ম্মোবদতি কিমহমপ্রাজ্ঞঃ
 নাহমুত্তরং দাস্যামি কিমপি ন বক্তব্যং তথানুষ্ঠিতে
 তথাবিধং কূৰ্ম্মমালোক্য সৰ্ব্বং গোরক্ষকাঃ পশ্বাদ্ভাবন্তি
 বদন্তিচ কিস্বিদ্ধদতি যদ্যযং কূৰ্ম্মঃ পততি তদানৈব পত্না
 খাদিতব্যঃ কিস্বিদ্ধদতি অত্রৈব দগ্ধ্বা খাদিতব্যোঽয়ং
 কিস্বিদ্ধদতি গৃহং নীত্বা ভক্ষণীয়দতি তদ্বচনং শ্রুত্বা
 স কূৰ্ম্মঃ কোপাবিষ্টো বিস্মৃতপূৰ্ব্বসংস্কারঃ প্রাহ যুগ্মাভি
 র্ভক্ষ্যমভক্ষিতব্যমিতি বদন্তেব পতিতস্তুৈর্য্যাপাদিতস্বঅতোঽহং
 ব্রবীমি সুহৃদাং হিতকামানামিত্যাदि । অথ প্রাণিধি
 র্বেকস্তত্রাগত্য উবাচ দেব প্রাগেব ময়া নিগদিতং ॥ *

আনারদের কতৃক নীয়মান তোমাকে নিরীক্ষণ করিয়া
 লোক অবশ্য কিছু বলিবেই তাহা শুনিয়া যদ্যপি তুমি
 উত্তর দিবা তবে তোমার মৃত্যু সেই নিমিত্তে সৰ্ব্বথা এই
 থানে থাক । করুণ বলিতেছে আমি কি অজ্ঞান আমি পুতু
 ত্তর দিব না কিছুই বলিবনা সেইরূপ করিলে পরে তজ্জপ
 কনঠকে অবলোকন করিয়া সকল গোরক্ষকেরা পশ্চাৎ
 ধাবমান হইল আর বলিল কেহ বলিতেছে যদি এই কূৰ্ম্ম
 পড়ে তবে এ স্থানেতেই থাক করিয়া থাই কেহ কহিতেছে
 এই স্থানেতেই দগ্ধ করিয়া থাই কেহ বলিতেছে গৃহে

হইয়া ভক্ষণ করি সেই কথা শুনিয়া ঐ কচ্ছপ ক্রোধাবিষ্ট হইয়া পূর্ববাক্য বিস্মৃত হইয়া কহিল তোরা ছাই খাবি ইহা বলিবা না ত্রে পড়িল আর তাহারদিগের কতৃক ব্যাপা দিত হইল । এই নিমিত্তে আমি বলি হিতাভিলাষি বন্ধুর দিগের ইত্যাদি । অনন্তর দূত বক সেখানে আসিয়া বলিল হে মহারাজ পূর্বেতেই আমি কহিয়াছি ।

The people seeing us carrying thee along will cry out, —What a curious sight! upon hearing which, if thou makest any reply, thou wilt certainly lose thy life; wherefore, upon all accounts, it is best to stay where we are I will not speak a word, said the tortoise, what, do you take me for a fool?

In the manner described, at length, the geese took up the tortoise, and flew away with him, hanging to the piece of wood, and presently, being discovered in that situation by some cow-keepers in the fields, they pursued them, crying out,—When he falls down, we will dress him and eat him upon the spot, no, said one of them, let us carry him home! upon hearing which, the tortoise fell into a passion, to think how they intended to dispose of him, and whilst he opened his mouth to say,—You shall eat dust first! down he dropped, and was presently put an end to by those herdsmen. I therefore repeat,—*He who doth not pay a due regard to the advice of* concluded the minister.

The booby, who had been sent as a spy, having returned, addressed the royal goose in these words:—Please your highness, at the very beginning I represented,

ଦୁର୍ଗଶୋଧନଂ ହି ପ୍ରତୀକ୍ଷଣ କର୍ତ୍ତବ୍ୟମିତି ତଚ୍ଚ ଯୁକ୍ତାଭିର୍ନିକ୍ତାତଂ
 ତଦନବଧାନସ୍ୟ ଫଳମନୁଭୂତମିତି ଦୁର୍ଗଦାହୋମେଷବର୍ଣ୍ଣେନ
 ଗୃହପ୍ରୟୁକ୍ତେନ ବାସିନେନ କୃତଃ । ରାଜା ନିଶ୍ଚୟାହ । ପ୍ରଣୟା
 ଦୁପକାରାହା ଯୋବିଶ୍ଵସିତି ଶତ୍ରୁଷୁ । ସମୁଦ୍ରବ ଦୃଷ୍ଟାୟାତ୍
 ପତିତଃ ପ୍ରତିବୁଦ୍ଧ୍ୟତେ ॥ ପ୍ରାଣିଧିରୁବାଚ ଇତୋଦୁର୍ଗଦାହମ୍ବିଧାୟ
 ଯଦାଗତୋମେଷବର୍ଣ୍ଣସ୍ତଦା ଚିତ୍ରବର୍ଣ୍ଣେନ ପ୍ରସାଦିତେନୋକ୍ତଂ ଅୟଂ
 ମେଷବର୍ଣ୍ଣେଽବ କର୍ପୂରହୃଦ୍ୟୋପରାଜ୍ୟେଽଭିଷିଚ୍ଛ୍ୟତାଂ ॥ତଥାଚୋକ୍ତଂ॥
 କୃତକୃତ୍ୟସ୍ୟ ଧୃତ୍ୟସ୍ୟ କୃତଂ ନୈବ ପ୍ରଣାଶୟେତ୍ । ଫଳେନ ମନସା
 ବାଚା ଦୃଢ୍ଵା ଚୈନଂ ପ୍ରହର୍ଷୟେତ୍ ॥ ଚକ୍ରବାକୋବ୍ରୁତେ ତତସ୍ତତଃ
 ପ୍ରାଣିଧିରୁବାଚ । ତତଃ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରିଣା ଗୃହ୍ୟେଣାଭିହିତଂ
 ଦେବ ନେଦମୁଚିତଂ ପ୍ରସାଦାନ୍ତରଂ କିମପି କ୍ରିୟତାଂ ॥ *❀*

ନିରନ୍ତର ଦୁର୍ଗଶୋଧନ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ତାହା ତୋମରା କର ନାହିଁ ମେ
 ଅନବଧାନେର ଏହି କଳ ଅନୁଭୂତ ହେଉଅଛି । ଗୁପ୍ତ ପୁରୀତ
 ମେଷବର୍ଣ୍ଣକାକ ଦୁର୍ଗଦାହ କରିଅଛନ୍ତି ରାଜା ନିଶ୍ଚୟ ଯାଗ କରିଅ
 କାହିଲେନ ବୃକ୍ଷାଗ୍ନିରେ ମୁଖ୍ୟ ଲୋକ ବୃକ୍ଷାଗ୍ନିରେ ପତିତ ହେଉଅ
 ଯେମନ ଜାଗୁଁ ହୁଏ ଏହି କାମ ପ୍ରୀତିପୁରୁଷ କିନ୍ତୁ ଉପକାରପୁରୁ
 ଶୁ ଯେଜନ ବିପାକ୍ଷେତେ ପ୍ରତ୍ୟାୟ କରେ ମେ ବିପାଦଗୁରୁ ହେଉଅ
 ଜ୍ଞାତ ହୁଏ ପ୍ରାଣିଧି ବାଲିନ ଏ ଜ୍ଞାନହେତେ ଦୁର୍ଗଦାହ କରିଅ
 ଯଥେନ ମେଷବର୍ଣ୍ଣ ଗେଲ ତଥେନ ପ୍ରମୁଖ ହେଉଅ ଚିତ୍ରବର୍ଣ୍ଣକାହିନ ଏହି
 ମେଷବର୍ଣ୍ଣକେ ଏହି କର୍ପୂରହୃଦ୍ୟୋପରାଜ୍ୟେ ଉପାସିତ କର

বিজেরা তাহা কহিয়াছেন কৃতকৃত্য হাঙ্গের কৃতকে কনের দ্বারা ও মনের দ্বারা ও বাক্যের দ্বারা নষ্ট করিবে না আর ঐ ভৃত্যকে দেখিয়া হর্ষ জন্মাইবেক। চক্রবাক বলিতেছে তাহার পরে দূত কহিল তাহারপর মুখ্য মন্ত্রী গুণ্ডু কহিল হে মহারাজ ইহা উপযুক্ত নয় পুনাদাস্তুর কিছু ককন।

that it was necessary instantly to clear the castle; but that not having been done, this is the fruit of your neglect; and I have learnt, that the burning of the castle was effected by the crow Cloud-colour, who had been employed for that purpose by the enemy's minister the vulture. The king, sighing, said,

He who placeth confidence in an enemy, either from inclination or necessity, awaketh from his delusion, like one who hath fallen from the top of a tree in his sleep! And when Cloud-colour, continued the spy, had effected

the burning of the castle, he went to king Chitra-varna; who being well satisfied with what he had done, said,—Let this Cloud-colour be appointed governor of Kar-pura-dwipa; for, it is said,

One should not forget the labours of a servant who hath performed his duty; but should encourage him with rewards, with our hearts, with our speech, and with our eyes.

Then the vulture, who is the prime-minister, continued the spy, said,—Please your highness, let some station be given to him inferior to that of the principal one. for,

॥ যতঃ ॥ অবিচারযতোযুক্তিকথনং তুষল্লেড়নং । নীচৈষু
 পদ্ধতং রাজন্ বালুকামিব মূত্রিতং ॥ মহতামাস্পদে
 নোচঃ কদাপি ন কৰ্ত্তব্যঃ ॥ তথা চোক্তং ॥ নীচঃ শ্লাঘ্যপদং
 প্রাপ্য স্বামিনং হন্তুমিচ্ছতি । মূষিকোব্যাঘ্রতাং প্রাপ্য
 মুনিং হন্তুং গতোযথা ॥ চিত্রবর্ণঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ ।
 মন্ত্রী কথয়তি অস্তি গোতমস্য মহর্ষেস্তপোবনে মহাত
 পানাম মুনিস্তত্র তেন মুনিना काकेन नीयमानौमूषि
 कशावकोदृष्टस्ततः स्वभावदयात्मना तेन मुनिना
 नोवारकणैः संवर्द्धितस्ततोविडालस्तं मूषिकं खादि
 तुमनुधावति तमवलोक्य मूषिकस्तस्य मुनेः क्रोড়ে प्रवि
 वेश ततोमुनिनोक्तं मूषिकत्वं माज्झारोभव ततः स वि
 डालः कुक्कुरं दृष्ट्वा पलायते ततोमुनिनोक्तं । *❀*

যেহেতুক বিচার না করিয়া পরামর্শ কহা তুষল্লেড়ন
 ন্যায় হে মহা রাজ নীচেতে উপকার করা বালুকাতে
 পুস্ত্রাব করার ন্যায় মহতের স্থানেতে নীচকে কদাচ করিবে
 না । পণ্ডিতেরা তাহা কহিয়াছেন নীচ লোক পুশংসিত
 পদ পাইয়া পুভুকে নষ্ট করিতে আকাঙ্ক্ষা করে উন্মূর
 ব্যাঘ্র পাইয়া যেমন মুনিকে নষ্ট করিতে গিয়াছিল
 চিত্রবর্ণ জিজ্ঞাসিতেছে একি পুকার । মন্ত্রী কহিতেছে ।
 গোতম মহর্ষির তপোবনে মহাতপানামা মুনি থাকেন
 সেখানে কাককর্তৃক নীয়মান এক মূষিক শিশু সেই

মুনিকর্তৃক পুণ্ড্র হইল। তদন্তর স্বভাবদয়ালু সেই মুনিকর্তৃক উড়ি ধান্যের কণার ভক্ষণদ্বারা বর্জিত ও হইল তাহার পর সেই মুষিককে খাইবার নিমিত্তে এক বিড়ান পশ্চাৎ ধাবন করে উন্দুর তাহা নিরীক্ষণ করিয়া সেই মূনির কোলেতে পুবেশ করিল। তাহার পর মুনী কহিলেন হে মুষিক তুমি মার্জার হও তদন্তর সে বিড়ান দ্রকুরকে দেখিয়া গলায় তৎপরে মুনী কহিলেন ।

How is it possible to punish one who hath been raised to a superior station? The assistance, O king, which is rendered to those of low degree, is like making water on sand.

A low person should never be placed in the station of the great.

One of low degree having obtained a worthy station seeketh to destroy his master. like the mouse, who, having been raised to the state of a tiger, went to kill the hermit

How was that? said the peacock king, and the minister related the following story:

FABLE VI.

IN the forest of the prophet Goutama, which is dedicated to acts of penitential mortifications, there was a hermit, whose name was Mahā-tapā. One day seeing a young mouse fall from the mouth of a crow near his hermitage, out of compassion he took it up, and reared it with broken particles of rice. One day, a cat pursued the mouse, which fled into the bosom of the hermit, who observing this, metamorphosed his mouse into a cat; but his cat being afraid of his dog, he changed her

কুক্কুরাদিভেপি ত্বমেব কুক্কুরোভব ॥ সচ কুক্কুরোব্যাঘ্রা
 দ্বিভেতি ততস্তেন মুনিনা কুক্কুরোব্যাঘ্রঃ ঠতঃ অথ তং ব্যাঘ্রং
 মুনির্মূষিকোঽযমিতি পশ্যতি অথ তং মুনিং দৃষ্ট্বা ব্যাঘ্রঞ্চ
 সর্ঘে বদন্তি অনেন মুনিনা মূষিকোব্যাঘ্রতাং নোতঃ । এত
 শ্চুত্বা স ব্যাঘ্রোঽচিন্তয়ত্ যাবদনেন মুনিনা স্খাতব্যং
 তাবদিদং মে স্বরূপাখ্যানমকীৰ্ত্তিকরং ন পলায়িষ্যতে
 মূষি রুদ্রত্যাভ্যুচ্য তং মুনিং হন্তুং গতস্ততোমুনিনা তজ্জ্ঞা
 ত্বা পুনর্মূষিকোভব ইত্যুক্ত্বা মূষিকএব ঠতঃ অতোঽহং
 ব্রবীমি নীচঃ শ্লাঘ্যপদমিত্যাদি । অপরঞ্চ সুকরমিদ
 মिति ন মন্তব্যং । শৃণু ভক্ত্যিত্বা বহুন্ মতস্যানুত্তমা
 ধমমধ্যমান্ । অতিলোভাদ্বকঃ পশ্চান্মৃতঃ কৰ্কটকয়
 হাত্ ॥ চিত্রবৰ্ণঃ পৃচ্ছতি কথমেতৎ মন্ত্রী কথয়তি ॥

জক্কুর হইতে ভয় পাও অতএব তুমিও জক্কুর হও সে
 জক্কুর ব্যাঘ্রহইতে ভয় পায় এই হেতুক সেই মুনি জক্কুরকে
 ব্যাঘ্র করিলেন তদনন্তর মুনি সে ব্যাঘ্রকে মূষিক এ এই
 পুকার দেখেন তাহার পর সকল লোক সে মুনিকে ও
 ব্যাঘ্রকে দেখিয়া বলে এই মুনি মূষিককে ব্যাঘ্র করিয়া
 ছেন । ইহা শুনিয়া সে ব্যাঘ্র ভাবনা করিল যাবৎ
 কাল এই মুনি থাকিবে তাবৎ আগার অপযশস্কর স্বক
 পাখ্যান যাইবে না মূষিক ইহা আলোচনা করিয়া সেই
 মুনিকে নষ্ট করিবার নিগিঙে গেল তাহার পর সেই মুনি

তাহা জানিয়া পুনর্বার মূষিক হও ইহা কহিয়া মূষিক করি
লেন । অতএব আমি বলি নীচ লোক পুশ্যনিত পদ
পাইয়া ইত্যাদি । অপরও ইহা অনায়াসসাধ্য ইহা জানিও
না শুন উত্তম মধ্যম অধম অনেক মৎস্য ভক্ষণ করিয়া বক
অতিশয় লোভহেতুক পশ্চাৎ কৰ্কটের গৃহগুপ্ত মরিল
চিহ্নবর্ণ পুশ্য করিতেছে এ কি পুকার । মন্ত্রী কহিতেছে ।

into a dog; and the dog being terrified at the tiger, at length he was transformed into a tiger. The holy man now regarded the tiger as no ways superior to his mouse. But the people who came to visit the hermit, used to tell one another, that the tiger which they saw there had been made so, by the power of the saint, from a mouse, and this being overheard by the tiger, he was very uneasy, and said to himself,—as long as this hermit is alive, the disgraceful story of my former state will be brought to my ears; saying which he went to kill his protector; but as the holy man penetrated his design with his supernatural eye, he reduced him to his former state of mouse. I repeat therefore, *One of low degree &c.* Please to attend to this also, said the minister:

A certain booby after having devoured fish of every size and quality, at length is killed from his attempting a crab out of mere gluttony.

How was that? demanded Chitra-varna; and his minister related the following story:

অস্মি মালবদেশে পদ্মগর্ভনামধেয়ং সরঃ তত্রৈকোদ্বৈবকঃ
সামর্থ্যহীনউদ্বিগ্নমিবাत्মানং দর্শয়িত্বা স্থিতঃ স চকোন
চিত্ কুলীরেণ দৃষ্টঃ পৃষ্টশ্চ কিমিতি ভবানবাহারত্যা
গেন তিষ্ঠতি বকেনোক্তং মত্স্যামম জীবনহেতবঃ তে কৈবর্ত্তৈ
রাগত্য ব্যাপাদিতব্যাঃ ইতি বার্চানগরোপান্তে ময়া শ্রুত্বা
অতোবর্ত্তনাভাবাদেবাস্তন্মরণমুপস্থিতমিতি জ্ঞাত্বা
আহারেপ্যনাদরঃ কৃতঃ ততোমত্স্যৈরালোচিতং ব্রহ্ম সময়ে
তাবদুপকারকএবায়ং লক্ষ্যতে তদয়মেব যথা কৰ্ত্তব্যং
পৃচ্ছতাং ॥ তথা চোক্তং ॥ উপকৰ্ণারিণা সম্বিন্ন মিত্রে
ণাপকারিণা । উপকারাপকারৌ হি লক্ষ্যং লক্ষণ
মেতयोः ॥ মত্স্যাজ্জুঃ । মোবক কোঽব রক্তণোপায়ঃ বকো
ব্রূতে অস্মি রক্তণোপায়ঃ জলাশয়ান্তরাশ্রয়ণং তবাঙ্কমে
কৈকশেয়ুস্মান্নয়ামি ॥ *❀*❀*❀*❀*❀

মালব দেশেতে পদ্মগর্ভ নামে সরোবর আছে তাহাতে
শক্তিরহিত এক বৃদ্ধবক আপনাকে উদ্বিগ্নেরন্যায় দেখাইয়া
থাকে । তাহাকে কোন কৰ্কট দেখিল আর জিজ্ঞাসিল তুমি
কেন এখানে আহার ত্যাগ করিয়া রহিয়াছ বক কহিল আ
মার পুণ ধারণের কারণ মত্স্যেরা তাহারদিগেকে কৈব
র্ত্তেরা আশিয়া নষ্ট করিবেক এই বৃত্তান্ত আমি নগর সমীপে
শুনিয়াছি অতএব বর্ত্তনের অভাব পুযুক্তই আমার মরণ উপ
স্থিত ইহাজানিয়া আহারেতে অনাদর করিয়াছি । তদনন্তর
মত্স্যেরা আলোচনা করিল এই কালেতে এই ব্যক্তি উপ

কারকই বুঝিতেছি সেইহেতুক যাহা কর্তব্য তাহা ইহাকেই জিজ্ঞাসা করা উচিত । বিজ্ঞেরা তাহা কহিয়াছেন উপকার কারি শত্রুর সহিত সন্ধি কর্তব্য অপকার কারি মিত্রের সহিত কর্তব্য নয় যেহেতুক উপকার আর অপকার এ উভয়ের লক্ষণ জানিবে । মৎস্যেরা কহিল ওহে বক ইহাতে রক্ষার কি উপায় । বকবলিতেছে রক্ষার উপায় আছে অন্য হৃদ আশ্রয় করা সেখানে আমি এক জন করিয়া লইব ।

FABLE VII.

IN the country of Mālava there is a lake distinguished by the name of Padma-garbha, where lived an old booby, who, being deprived of his former strength, stood and feigned to appear like one who was troubled in mind, in which situation being observed by a crab at a distance, the latter asked him why he stood there, and did not look for food. You know, replied the booby, that fish is what I live upon; and I know for certain that fishermen are coming to catch them all, for, I heard this resolution from some watermen on one side of the town, so this being the case, I have lost my appetite with reflecting, that when our food is gone, death will soon follow. This being overheard by all the fish, they observed to one another, that it was proper to look out for assistance whilst they had time, and, said they, let us ask the booby himself what is best to be done; for,

One may better form a connexion with an enemy who will render one assistance, than with a friend who would do one an injury: there two should rather be distinguished according to the good or injury they do to one.

Accordingly, the fish accosted the booby, and said, Pray, master booby, tell us what means can be devised for our safety upon this occasion? There is one way to be safe, replied the artful booby, and that is, going to another pond, whither I am willing to transport you.

ମତ୍ସ୍ୟାଞ୍ଜରେବମସ୍ତୁ ତତୋଽସୌ ବକସ୍ତାନ୍ମତ୍ସ୍ୟାନେକୈକଶୋ
 ଗୀତ୍ବା ଶାଦତି ଅନନ୍ତରଂ କୁଳୀରସ୍ତମବାଚ ଭୋବକ ମାମପି
 ମତ୍ର ନୟ ତତୋବକୋପ୍ୟର୍ପୂର୍ବକୁଳୀରମାଂସାର୍ଥୀ ଶାଦରଂ ତଂ
 ଗୀତ୍ବା ସ୍ଥଳେ ଧୃତବାନ୍ କୁଳୀରୋପି ମତ୍ସ୍ୟକଣ୍ଠକାକୀର୍ଣ୍ଣିଂ ତତ୍
 ସ୍ଥଳମାଲୋକ୍ୟାଚିନ୍ତୟତ୍ ହାହତୋଽସ୍ମି ମନ୍ଦଭାଗ୍ୟଃ ଭବତୁ
 ଇଦାନୀଂ ସମଯୋଚିତଂ ବ୍ୟବହରିଷ୍ୟାମି ॥ ଯତଃ ॥ ତାବଦ୍ଭୟା
 ଦ୍ଵିଭେତବ୍ୟଂ ଯାବଦ୍ଭୟମନାଗତଂ । ଆଗତନ୍ତୁ ଭୟଂ ବୀଚ୍ଛ୍ୟ ପ୍ରହ
 ଂର୍ତ୍ତବ୍ୟମଭୀତବତ୍ ॥ ଅପରଞ୍ଚ ॥ ଅଭିଯୁକ୍ତୋଽପି ପଶ୍ୟେନ୍ନ
 କିଞ୍ଚିଦ୍ଵିତମାତ୍ମନଃ । ଯୁଦ୍ଧମାନସ୍ତଦା ପ୍ରାଞ୍ଞୋଽସ୍ମି ଯତେ ରିପୁ
 ଣା ସହ ॥ ଅନ୍ୟଞ୍ଚ ॥ ଯତ୍ରାୟୁର୍ଦ୍ଧ୍ଵୋଽମୃତ୍ୟୁର୍ଯୁଦ୍ଧେ ଜୀବିତସଂ
 ଶୟଃ । ତଂ କାଳମେକଂ ଯୁଦ୍ଧସ୍ୟ ପ୍ରବଦନ୍ତି ମନୋଷିଣଃ ॥ ଇତ୍ୟା
 ଲୋଚ୍ୟ କୁଳୀରସ୍ତସ୍ୟ ଗ୍ରାବାଂ ଚିଚ୍ଛେଦ । ❀❀❀❀

ମତ୍ସ୍ୟେରା କହିଲ ଏହି ପୁକାର ହଉକ ତଦନନ୍ତର ଏ ବକ ସେହି
 ମତ୍ସ୍ୟେରାଦିଗେକେ ଏକେଂ ନହିଁଲା ଥାଏ ତଦନନ୍ତର କର୍କଟତାହାକେ
 କହିଲ ଓହେ ଆଗାକେ ଓ ସେଥାନେ ନଓ ତତ୍ପର ଉତ୍ତମ ଝଲୀର
 ମାଂସାର୍ଥୀ ବକ ଓ ଆଦର କରିଲା ତାହାକେ ନହିଁଲା ଝଲେତେ
 ରାଖିଲ ଝଲୀର ସେହି ସ୍ଥାନ ମତ୍ସ୍ୟା କଣ୍ଠକ ବାସ୍ତୁ ଦେଖିଲା
 ଭାବନା କରିଲ ହାଏ ମନ୍ଦଭାଗ୍ୟ ଆମି ନଷ୍ଟ ହେଲାମ ରେ ହଉକ
 ଜମ୍ପୁତି ବଳୋପଯୁକ୍ତ ବ୍ୟବହାର କରିବ ସେହେତୁକ ତସ୍ମିନ୍ ହେତେ
 ସେହି ପର୍ଯ୍ୟାନ୍ତତସ୍ମିନ୍ ପାହିବେକ ସେ ପର୍ଯ୍ୟାନ୍ତ ତସ୍ମିନ୍ ଉପସ୍ଥିତ ନା ହସ୍ତ
 ତସ୍ମିନ୍ ଉପସ୍ଥିତ ଦେଖିଲା ନିର୍ଭୟେର ନାୟ ପୁହାର କରିବେକ ।

অপর অভিযুক্ত ব্যক্তিযদ্যপি আপনার যৎকিঞ্চিৎ হিত না দেখে তবে সুবুদ্ধি লোক বিপদের সহিত যুদ্ধ করত নরে এবং সেখানে যদি যুদ্ধব্যতিরেকে ও অবশ্যমৃত্যু হয় আর সংগ্রামেতে পুণ সংশয় বুঝা যায় তবে পণ্ডিতেরা সেই কালকে যুদ্ধের এক কাল করিয়া বলেন ইহা বিবেচনা করিয়া ককট তাহার গুণাকে ছেদন করিল ।

The fish, in the greatness of their fears, consented to this proposal, and their treacherous deliverer devoured them all one by one, as he took them out of the water. At length, the crab asked him to take him also, and the booby, eager to taste his delicate flesh, took him up with great marks of respect, and carried him ashore; when the crab seeing the ground covered with the bones of the fish which the booby had destroyed, cried to himself,—Alas, how unfortunate! I shall certainly be killed too, unless I can contrive some means of escaping. Let me try immediately what the occasion requires. They say,

In times of danger it is proper to be alarmed until danger be near at hand, but when we perceive that danger is near, one should oppose it as if one were not afraid.

When one attacked beholdeth no safety for himself, if he be a wise man, he will die fighting with his foe.

As out of battle death is certain, and in the field life doubtful, the learned call it *the only time of battle*.

The crab having come to this resolution, so tore the booby's throat with the pincers of his claws. that

স বকঃ পঞ্চত্বং গতঃ অতোহং ব্রবীমি ভক্ত্যযিত্বা বহুত্ব-
 ত্স্যানিত্যাदि । শৃণু ততশ্চিবর্ণেণৈবদত্তমখিন্তাবত-
 মযৈতদালোচিতমস্তি অত্রাবস্থিতেন মেঘবর্ণেন রাজা ।
 যাবন্তি বস্তুনি কর্পূরদ্বীপস্যোত্তমানি তাবন্ত্যস্মাকমুপ-
 নেতথ্যানি তেনাস্মাভির্মহাসুখেণ বিন্ধ্যাচলৈ স্প্রাতব্যং
 দূরদর্শী বিহস্যাহ দেব ॥ অনাগতবতীং চিন্তাং কৃत्वा
 যন্তু প্রচ্ছদ্যতি । স তিরস্কারমাশ্নোতি ভগ্নভাণ্ডোহি
 জায়থা ॥ রাজাহ কথমেতৎ । মন্ত্রী কথয়তি অস্তু
 দেবো কোটরনাম্নি নগরে দেবশর্ম্ম নাম ব্রাহ্মণস্বেন মহা
 বিধুবসংক্রান্ত্যাং শক্তপূর্ণশরাবৈকঃ প্রাপ্তস্তমাदायासौ
 कुम्भकारस्य भाण्डपूर्णमण्डपैकदेशे रौद्रेणाकुलितः
 सुप्तः ततः शक्तरक्षार्थं हस्ते दण्डैकमादायाचिन्तयत्
 यद्यहं शक्तुशरावं विक्रीय दशकपर्दकान् प्राप्तयामि ।

সে বক পঞ্চত্ব পাইল । এই জনো আমি বলি উত্তম অধম
 মধ্যম অনেক মনে ভঞ্জন করিয়া ইত্যাদি । শুনতাহার
 পর চিবর্ণ বলিল ও হে মন্ত্রী আমাকর্তৃক এই আলোচিত
 আছে কর্পূরদ্বীপের যত উত্তম দ্রব্য মেঘবর্ণ রাজাকর্তৃক
 লব্ধ হইয়াছে সে সকল আমারদিগের লওয়া কর্তব্য সেই
 বস্তুতে বিজ্ঞাগিরিতে অতিশয় সুখেতে আমারদিগের
 থাকা হইবে । দূরদর্শী হাঁসিয়া বলিল হে ভূপাল অনুগ-
 হিত চিন্তা করিয়া যে লোক হর্ষিত হয় সে অসম্মানকে

পায় যেমন ভগ্নভাণ্ড বুদ্ধাণ্ড ভূপতি কহিলেন এ কি কপ মন্ত্রী
কহিতেছে। দেবীকোটরসংস্কৃত নগরেতে দেবশর্মানামে বিপু
থাকেন তিনি মহাবিশুব সঙ্কান্তিতে শঙ্কুপূরিত এক শরাব
পাইলেন তাহা লইয়া তিনি রৌদ্রেতে ব্যাঘনহইয়া অস্বকারের
ভাণ্ডপূর্ণগৃহের এক পুদেশেতে শয়ন করিলেন তাহার শঙ্কুর
রক্ষার নিমিত্তে হস্তেতে এক দণ্ড লইয়া চিস্তা করিলেন। যদি
আমি এই শঙ্কু শরাবকে বিক্রয় করিয়া দশ কডাকডি পাইব।

he was killed. Wherefore I repeat, *A certain booby &c.*

Attend, said the peacock king, to what I have been thinking of:—That if Cloud-colour be left governor here, all the choice things which Karpura-dwipa produces may be sent to us to enjoy in great luxury, when we shall be returned to the Vindhya mountains. The minister, laughing at these proposals, replied,—O king!

He who rejoiceth over an unaccomplished design, may meet with disgrace; like the Brahman who brake the pots and pans.

How did that happen? demanded the king; and the minister related the following story:

FABLE VIII.

IN the city of Dēvi-kōtara, there was a Brāhman, whose name was Dēva-Sarmā. At the time of the vernal equinox, he found a dish full of barley meal, which he took with him into a potter's warehouse full of earthen-ware. Being fatigued to walk in the sunshine, he threw himself upon a bed which happened to be there, and taking hold of a stick in his hands to protect his dish, he began to express his thoughts upon the occasion in this manner: If I dispose of this dish, I shall get ten Kapardakas for it;






তদাচৈব তৈঃ কপর্দকৈর্ঘটশরাবাদিকমুপক্ৰীয্য অনেকধা
 বৃদ্ধৈস্তদ্বনৈঃ পুনঃপুনঃ পূমবস্ত্রাদিকমুপক্ৰীয্য বিক্রীযলভ্য
 সংখ্যানি ধনানি কৃत्वा বিবাহচতুষ্টয়ং করিष্যামি অন
 ন্তরং তাসু সপত্নীষু রূপযৌবনবতী য়া তস্যামধিকানু
 রাগং করিष্যামি সপত্ন্যোযদা ইন্দ্রং করিष्यन्তি তদা
 কোপাকুলোऽহং তা লগুডেন তাডযিष্যামীত্যभिধাযলগুডঃ
 স্তিমঃ তেন শক্তুশরাবশ্চূর্ণিতোমাণ্ডানি বহুনি ভগ্নানি
 ততস্তেন শব্দেনাগতেন কুম্ভকারেণ তথাবিধানি মা
 ণ্ডান্যবলোক্য ব্রাহ্মণস্তিরস্থতোমাণ্ডপাদ্বহিষ্কৃতস্তাতো
 ঽহং ব্রবীমি অনাগতবতীং চিন্তামিত্যাদিততারাঙ্গা রহ
 সি মধ্রমুবাচ তাত যথাকর্তব্যং তথোপদিশ মধ্রোব্রূতে ।

তবে এই স্থানেতেই সেই কড়িতে ঘট শরাব পুত্তি
 কিনিয়া অনেক বারেতে বৃদ্ধিপাপ্ত সেই ধনদ্বারা বারম্বার
 গুবাক বস্ত্রাদি ক্রয় করিয়া লক্ষসংখ্যক দুবিশ করিয়া
 চারি বিবাহ করিব তদনন্তর সেই সপত্নীর দিগের মধ্যে যে
 রূপযৌবনবিশিষ্ট। তাহাতে অধিকানুরাগ প্রকাশ করিব
 সপত্নীর। যখন বিবাদ করিবেক তখন ক্রোধাবিষ্ট হইয়া
 আমি তাহারদিগকে লগুড়েতে করিয়া তাড়ন করিব ইহা
 কহিয়া দণ্ডক্ষেপণ করিলেন তাহাতে শক্তু শরাব চূর্ণ

হইল অনেক ঘাট ও ভাঙ্গিল। তৎপরে সেই শব্দেতে দ্রুতকা
র আসিয়া ভাঁড় সকল সেই রূপ দেখিয়া বুদ্ধকে তিরস্কার
করিল বাহির করিয়া ও দিন এতদৰ্থে আমি বলি অনুপস্থিত
চিন্তা করিয়া ইত্যাদি। তদনন্তর রাজা গৃধ্ৰকে বলিলেন
হে তাত যাহা কর্তব্য তাহা উপদেশ কর। গৃধ্ৰ বলিতেছে।

and with that sum I may purchase many pots and pans, the sale of which will increase my capital so much, that I shall be able to lay a large stock of cloth and the like; which having disposed of at a great advance, I shall have accumulated a fortune of a *lack* of money. With this I will marry four wives; and of these I will amuse myself with her who may prove the handsomest. This will create jealousy; so when the rival wives shall be quarrelling, then will I, overwhelmed with anger, hurl my stick at them, thus! Saying which, he flung his stick out of his hand with such force, that he not only brake his curious dish, but destroyed many of the pots and pans in the shop; the master of which hearing the noise, came in, and discovering the cause, disgraced the Brāhman, and turned him out of doors. I have said, therefore, concluded the minister,—*He who rejoiceth &c.*

At the conclusion of this story the king took the vulture aside, and desired him to point out what he ought to do, and the minister replied,

মদোদ্রতস্য নৃপতে: সঙ্কীর্ণস্যেব দন্তিন: । গচ্ছন্ত্যুন্মার্গ
 যাতস্য নেতার: খলু বাচ্যতাং ॥ শৃণু দেব কিমস্মাভির্ব
 স্বদেপ্যদুর্গং ভয়ং ন কিন্তু তব প্রতাপাধিষ্ঠিতেন উপায়েন ।
 রাজাহ্ ভবতামুপায়েন । মৃধোব্রূতে যদ্যস্মদ্বচনং ক্রিয়তে
 তদা স্বদেশোগম্যতাং অন্যথা বর্ষাকালে প্রাপ্তে পুনর্বিগ্রহে
 সত্যস্মাকং পরভূমিষ্ঠানাং স্বদেশগমনমপি দুর্লভং ভবি
 শ্যতি সুখশোভায' সম্ভায গম্যতাং দুর্গং ভয়ং কীর্তিঞ্চ
 লক্ষ্যৈব মম সম্মতং তাবদেতৎ ॥ যত: ॥ যোহি ধর্ম'
 পুরস্কৃত্য দিত্বা ভর্ত্তু: প্রিয়াপ্রিয়ে । অপ্রিয়াণ্যাহ তথ্যানি
 তেন রাজা সহায়বান ॥ অন্যচ্চ ॥ সুহৃদ্বলং তথা রাজ্য
 মাত্মানং কীর্ত্তিমেব চ । যুধি সন্দেহদোলাস্থ্য কোহি
 কুত্যাৎবালিশ: ॥ ******

বিপথগামী নতু সৎকীর্ত্তির নেতা যেমন নিম্নাতা পায়
 এমনি উন্মার্গগামী মদোদ্র রাজার নেতারা গর্হণীয়তা পায়
 শুন হে মহারাজ আমারদিগের যুক্তিতে কি দুর্গ ভয় ইহঁয়া
 ছে তাহা নয় কিন্তু তোমার পুতাপ ও উপায়েতে । রাজা
 কহিলেন তোমারদিগের উপায়েতে অর্থাৎ তাহা নিষ্পন্ন
 ইহঁয়াছে গৃধ্র বলিতেছে যদি আমার পরামর্শ করেন তবে
 নিজদেশে গমন করুন নতুবা বর্ষাকাল উপস্থিত হইলে
 পুনশ্চ সৎগুণ ইহঁলে বিদেশবাসি আমারদিগের নিজদেশে
 গমন ও দুর্লভ ইহঁবে সুখ ও শোভার নিমিত্তে সন্ধি করিয়া

গমন করুন দুর্গভাঙ্গ হইল যশঃ প্ৰাপ্ত হইলেন আবার এই
মত যেহেতুক যে ব্যক্তি ধর্ম্মকে পুরস্কার করিয়া পুত্র পুত্র
ও অপুত্রকে ত্যাগ করিয়া অপুত্র অথচ পথ্যকে বলে তা
হার সহিত রাজা সহায়ী হন । আর সুহৃৎ ও সৈন্য ও
রাজ্য ও আত্মা ও কীর্ত্তি এই সকলকে কোন নুর্থ সংগ্রামে
তে সশয়রূপে দোলাহিত করে ।

The conductors of princes intoxicated with power, as well as of wounded or restiff elephants. get nothing but disgrace!

Please your highness, continued he, the castle hath been destroyed by us in the pride of strength; or rather, was it not by a stratagem dictated by your own glory? No, replied the king it was thy own scheme. If my advice were to be followed, said the minister, we should now return to our own country; for upon the return of the rainy season, should we have to fight the enemy again, with an equal force, in their own country, we shall find it extremely difficult to retreat home if we should have occasion. Then, for the sake of peace and glory, treat with the enemy, and let us depart! We have taken their castle, and gained renown. This is the extent of my opinion.

He is the companion of a prince, who, placing his duty before him, payeth no regard to his master's likings or dislikings, and tells him unwelcome truths.

Who, except a child, would place his friends, his army, his kingdom, himself, and his reputation, in the doubtful balance of a battle?

Besides;

ଅପରଞ୍ଚ ॥ ସନ୍ଧିମିଚ୍ଛେତ୍ସମେନାପି ସନ୍ଧିଗ୍ଧୋ ବିଜୟୋ ଯୁଧି ।
 ସୁନ୍ଦୋଽପସୁନ୍ଦାବନ୍ୟୋନ୍ୟଂ ନୈଷ୍ଠା ତୁଲ୍ୟବଳୌ ନ କିଂ ॥ ରାଜୋବାଚ
 କଥମେତତ୍ । ମୟୀ କଥୟାମି ପୁରା ଦୈତ୍ୟାଃ ମହୋଦାରୌ ସୁନ୍ଦୋ
 ପସୁନ୍ଦନାମାନୌ ମହତା କ୍ଳେଶେନ ଶ୍ଚେଲୋକ୍ୟକାମନୟା ଚିରା
 ଞ୍ଚନ୍ଦ୍ରଶେଖରମାରାଧିତବନ୍ତୌ ତତସ୍ତସ୍ୟୋର୍ଭଗବାନ୍ ପରିତୁଷ୍ଟୋଽବରଂ
 ଦ୍ରୱ୍ୟେଥାମିତ୍ୟୁବାଚ ଅନନ୍ତରଂ ତयोଃ ସମାଧିଷ୍ଠିତୟାଃ ସରସ୍ବ
 ଯା ଶୌବନ୍ୟଦ୍ବକ୍ତାକାମାବନ୍ୟଦଭିହିତୌ ଯଦ୍ୟାବୟୋର୍ଭଗବାନ୍
 ପରିତୁଷ୍ଟସ୍ତଦା ସ୍ବପ୍ରିୟାଂ ପାର୍ବତୀଂ ପରମେଶ୍ଵରୋଦଦାତୁ ଅଥ
 ଭଗବତା କ୍ରୁଦ୍ଧେନ ବରଦାନସ୍ୟାବଶ୍ୟକତୟା ବିଚାରମୁଦ୍ୟୋଃ
 ପାର୍ବତ୍ୟାଽବ ନିର୍ମାୟାନ୍ୟା ଶ୍ଚୌ ପ୍ରଦାୟି ତତସ୍ତସ୍ୟାଽନୁରୂପ
 ଶ୍ଚାବନ୍ୟଲୁଭାଭ୍ୟାଂ ଜଗଦ୍ବାତିଭ୍ୟାଂ ମନସୋତ୍ସୁକାଭ୍ୟାଂ ପାପ
 ତିମିରାଭ୍ୟାଂ ମମେତ୍ୟନ୍ୟୋନ୍ୟକଲହାଭ୍ୟାଂ ପ୍ରମାଣପୁରୁଷଃ କ
 ସ୍ଥିତଃ ପଞ୍ଚ୍ଚତାମିତି ମତୌ ଛତାୟାଂ । *❀*❀*❀

ଅପର ତୁଳା ଲୋକେର ଓ ମହିତ ମନ୍ତ୍ରି କରିବେକ ସେହେତୁକ ମଂ
 ଗ୍ରାମେତେ ଜୟ ମନ୍ତ୍ରିକାହି ତୁଳା ମରାଜ୍ଜମ ମୁନ୍ନ ଓପମୁନ୍ନ କି ମର
 ମ୍ମର ନଷ୍ଟେ ହସ୍ତ ନାହିଁ । ନୂପାତି କହିଲେନ ଏ କି ପୁକାର । ମଠିସ
 କହିତେଛେ । ମୂର୍ତ୍ତିତେ ମୁନ୍ନୋମମୁନ୍ନ ନାମା ଅତି ବଡ଼ ଦେତା ଦୁହିଁ
 ଶ୍ଚନ ଛିଭୁବନାଭିଳାସେତେ ଅତ୍ୟନ୍ତ କୈଶେତେ ବହୁତର କାଳ
 ବହାଦେବେର ଆରାଧନା କରିଲ ଅନନ୍ତରାତିନି ମୁମଗ୍ନ ହୁଏନା କହି
 ଲେନତୋମରା ବର ମୁାର୍ଥନା କର ଅନନ୍ତର ମେହି ଦୁହିଁ ଜନେର ଅନ୍ତଃ
 କରଣେ ଅଧିଷ୍ଠାଞ୍ଜୀ ଅବରସ୍ବତୀ ଅନ୍ୟ ମୁକାର ବରେଛୁ ମେହି ଦୁହିଁ ଜମ
 କେ ଅନ୍ୟ କଥା ବନାହିଲେନ ସେ ଯଦାପି ଆମାରାଦିଗକେ ଆମାନି

মস্তুষ্ট হইয়াছেন তবে পরমেশ্বর নিজ পত্নী গৌরীকে দেন ।
অনন্তর ভগবান ক্রুদ্ধ হইয়া বরদক্ষন আবশ্যকত্বহেতুক বি
চার মূৰ্ত্ত সুন্দোপসুন্দকে উমার ন্যায় এক স্ত্রী নির্মাণ করি
য়া দিলেন তাহারপর সংসারনাশকও অজ্ঞানাস্ত্র সুন্দোপসুন্দ
অন্তঃকরণের উৎসাহেতে পার্বতী তুল্য সৌন্দর্য্যোতে লুক্ক
হইয়া আমার এআমারএ এই পরস্পর বিবাদ করিয়া কোন
মধ্যস্থ ব্যক্তিকে জিজ্ঞাসা করি এই বুদ্ধি করিলে পর ।

One should be inclined to treat even with an enemy of equal force, when victory is doubtful, for were not Sunda and Upasunda, two giants of equal strength, killed by one another?

How was that? said the king, and the vulture relateth the following story:

FABLE IX.

IN former times there were two giants, the one called Sunda, and the other Upasunda, who wishing to conquer the three regions of the universe by the great exertions of their bodies, for a long time petitioned the deity with the crescent on his head to be propitious to their design. The god, pleased with their prayers, told them to ask a boon; but as the goddess Saraswati had the controul of these two of dreadful forms, both their original wish and design were changed, and at length they said,—If the disposer of fortune be pleased with our prayers, give us, O Supreme Being, Pārvati thy own consort! The deity, although displeased at the request, yet from the absolute necessity of granting boons, gave to the giants, who were deprived their of judgment, a woman like Pārvati. Sunda and Upasunda, eager for the ruin of the universe. blinded with ignorance, and involved in the darkness of sin, were inflamed by the beauty of her person, but as they were jealous of one another, they resolved to call upon some man of authority to determine which she should belong to;

সএব ভট্টারকোবৃদ্ধদ্বিজরূপঃ সমাগত্য তত্রোপস্থিতঃ
 অনন্তরমাভ্যাশ্রিত্য ॥ স্ববললব্ধাকস্যেযমাবধোভ
 বতি ব্রাহ্মণমপৃচ্ছতাং ব্রাহ্মণোব্রূতে । বর্ণশ্রেণোদ্বিজঃ
 পূজ্যঃ স্তবিত্যবলবানপি । ধনধান্যাধিকৌবৈশ্যঃ শূদ্রস্ত
 দ্বিজসেবয়া ॥ তৎযুবাभ्यां স্তবধর্মানুগোযুদ্বএব যুব
 যোনির্যমঃ ইত্যभिहितে সতি সাধুক্ষমনেনেতি কৃत्वा অ
 ন্যান্যতুল্যবীৰ্য্যৈ । সমকালমন্যে ন্যঘাতেন বিনাশমুপ
 গতো ॥ অতোऽহং ব্রবীমি সম্মিচ্ছৈতসমেনাপীত্যাদি
 রাজাহ প্রাগেব কিং নোক্তং ভবদ্বিঃ । মদ্বী ব্রূতে মদ্বচনং
 কিসবসানপর্য্যন্তং শ্রুতং ভবদ্বিঃ তথাপি মমসম্মত্যা
 মাযং বিগ্রহাঃ সমঃ সাধুগুণযুক্তোऽয়ং হিরণ্যগর্ভঃ ন বিগ্রা
 হ্যঃ ॥ তথা চোক্তং ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*

সেই ভগবান বৃদ্ধ ব্রাহ্মণ কণ হইয়া আসিয়া সেই স্থানে উপ
 নীত হইলেন । অনন্তর তাহার ব্রাহ্মণকে জিজ্ঞাসিল আন
 রা ইহাকে আপন বনেতে পাইয়াছি আগারদের দুই জনের
 মধ্যে কাহার এ হইবে । ব্রাহ্মণ বলিতেছেন জ্ঞানশ্রেষ্ঠ ব্রাহ্মণ
 পূজনীয় বলবান কত্রিয় পূজ্য ধনধান্যা ধিকবৈশ্য পূজ্য
 ব্রাহ্মণ সেবাতে শূদ্র মান্য সেই নিমিত্তে তোমরা কত্রিয়
 ধর্মশাল তোমারদের যুদ্ধই নিয়ম ইহা কথিত হইলে
 পরে ইনি বিলক্ষন কহিয়াছেন ইহা কহিয়া দুই জনেতেই
 এক কালেতেই পরস্পর মারণদ্বারা বিনাশ প্রাপ্ত হইল ।

অতঃপর আমি বলি তুমি লোকের সহিত সন্ধি করিবেক ইত্যাদি রাজা কহিলেন পূর্বেতেই কেন তোমরা বলিলে না মন্ত্রী বলিতেছে আপনি কি আমার বাক্যের শেষপর্যন্ত গুনিয়াছেন তথাপি আমার সম্মতিতে এই যুদ্ধারম্ভ নয় উত্তমগুণশালী ঐ হিরণ্যগর্ভ অর্থাৎ ইহার সহিত সংগ্রাম করণোপযুক্ত নয় তাহা কথিত আছে।

and instantly the deity, stood before them under the disguise of a venerable Brāhman We have obtained this female, said they, as a boon, and wish thee to determine which of us she should belong to. The Brāhman replied.

A Brāhman is respectable for wisdom, a Kshatriya for strength, a Vaishya if he be possessed of wealth and grain, and a Shudra for his services to the Brāhmans.

Now, seeing you two are of the second, or military order, your duty is fighting. These words made a due impression upon their minds; they fell upon each other, but as they were equal in strength and courage, they died at the same instant from the blows they received from each other. I say, therefore, *One should be inclined to treat even with one of equal force, &c.*

Hast thou not told me this before? said the king. What, said the minister, did your highness then comprehend the full extent of what I said? According to my opinion, this is not a proper time for the renewal of hostilities. King Hiranya-garbha is endued with those qualities which render him a proper person to treat with, and not to quarrel with. They say,

ସତ୍ୟାର୍ଥେ ଧାର୍ମିକୀନାର୍ଥୋଽତ୍ତସଂଘାତବାନ୍ବଳୀ । ଅନେକ
 ଯଦୁଦ୍ଧବିଜୟୀ ସନ୍ଧ୍ୟାଃସମ କୀର୍ତ୍ତିତାଃ ॥ ସତ୍ତ୍ବୋନ୍ମୁପାଳୟେତ୍ ସତ୍ୟ
 ସନ୍ଧିତାନୈତି ଶିକ୍ଷିତାଂ । ପ୍ରାଣବାଧେପି ସୁବ୍ୟକ୍ତମାର୍ଥ୍ୟାନାୟା
 ଧ୍ୟନାର୍ଥ୍ୟତାଂ ॥ ଧାର୍ମିକକ୍ଷ୍ୟାଭିମୁକ୍ତସ୍ୟ ସର୍ବେଷ୍ବ ହି ପୂଜ୍ୟତେ ।
 ପ୍ରଜାନୁରାଗାହର୍ମାସ୍ତୁ ଦୁଃଖୋଚ୍ଛେଦୋଽସି ଧାର୍ମିକଃ ॥ ସନ୍ଧିଃ
 କାର୍ଯ୍ୟାପ୍ୟନାର୍ଥ୍ୟେଣ ବିନାଶେ ସମୁପସ୍ଥିତେ । ବିନା-ତସ୍ୟାଶ୍ରୟେ
 ଶାନ୍ତ୍ୟଃ କୁର୍ଯ୍ୟାନ୍ନ କାଳଯାପନଂ ॥ ସଂହତ୍ବା ତଥାପି ବେଣୁର୍ନିବିଢ଼ଃ
 କଣ୍ଠକର୍ତ୍ତବ୍ୟଃ । ନ ସକ୍ୟତେ ତମୁଚ୍ଛେତ୍ତୁଂ ଶ୍ରୀତ୍ତସଂଘାତବାଂସ୍ତଥା ॥
 ବାଲିନା ସହ ଯୋଦ୍ଧବ୍ୟମିତି ନାସ୍ତି ନିର୍ଦ୍ଦର୍ଶନଂ ପ୍ରତିବାତଂ ନହି
 ଘନଃ କଦାଚିଦୁପସର୍ପତି ॥ ଧମଦଗ୍ଧେ ସୁତସ୍ୟେବ ସର୍ବଃ ସର୍ବେବ
 ସର୍ବଦା । ଅନେକଯଦୁଜୟିନଃ ପ୍ରତାପାଦେବ ଭୁଜ୍ୟତେ ॥ ❀

ମତ୍ୟାବାଦୀ ଓ ପୂଜା ଓ ଧର୍ମିଷ୍ଠ ଓ କ୍ଳୁଦ୍‌ଲୋକ ଓ ଭ୍ରାତୃମଣ୍ଡଳ
 ବିଶିଷ୍ଟ ଓ ବନବାନ ଓ ଅନେକ ଯୁଦ୍ଧକ୍ଷେତ୍ର ଏହି ମାତ୍ର ବାକ୍ତି ମଞ୍ଜୁ
 ସ୍ତ୍ର ମତ୍ୟାବାଦୀ ମତ୍ୟାକେ ମାଳିନ କରେ ଅତଏବ ସେ ମେଳିହୁତେ
 ବିକାର ମାୟ ନା ପୂଜା ଲୋକ ମୁଖାନ୍ତେତେ ଓ ଅପୂଜା
 ତା ମାୟ ନା । ଧର୍ମିଷ୍ଠ ଲୋକେର ମକଳେହି ମାୟ ହସ୍ତ ମୁଖାନୁ
 ମାଗହେତୁକ ଆମ୍ଭ ଧର୍ମାହେତୁକ ଧାର୍ମିକ ଲୋକ ମୁଖାନ୍ତେତେ
 ହସ୍ତ । ମରଣ ଉପାନ୍ତ ହେଲେ ନୀଚେର ମହିତ ଓ ମେଳ କରି
 ବେକ ତାହାର ଆନୁଗତ୍ୟବ୍ୟତିରେକେ ଅନ୍ୟ ମୁଖାନ୍ତେ କାଳ
 କ୍ଷେମ ମାରିବେନା କଣ୍ଠକେତେ ଆସ୍ତ୍ର ଯେ ନିବିଡ଼ ବାଂଶ ତାହାର
 କାଟି ମୁର ନା କରିଥା ସେ ବଂଶକେ ଯେମନ ହେମନ କରିତେ

সমর্থ হয় না এইজন্য যে ভ্রাতৃসমূহবিশিষ্টলোক তাহার ভাই
সকলকে নষ্ট না করিয়া ঐ ব্যক্তিকে মারিতে পারে না ।
বলবানের সহিত যুদ্ধ করিলেই ইহা নিদর্শন নাই যেহেতুক
মেঘ কদাচ বিলোম বায়ুতে যায় না যমদগ্নি মূনির বহু
সংগ্ৰামজয়ি পুত্র যে পরশুরাম তাঁহার ন্যায় পুতাপহেতুক
অনেক যুদ্ধজৈতা সর্বত্র নিরস্তর সমস্তই ভোগ করে ।

There are seven descriptions with which it is deemed proper to form an alliance: men of veracity, men of honour, men of virtue, men of low degree, sometimes: such as are heads of a great fraternity, such as are powerful, and those who have been successful in many battles.

He who formeth a connexion with an honest man, from his love of truth, will not suffer thereby. And the man of family, it is very certain, will not be guilty of an unworthy action, even in the defence of life.

To the strictly just and virtuous person, every thing is annexed. The virtuous man, from his justice and the affection he hath for mankind, is the dispeller of sorrow and pain.

It is expedient to form connexions even with one of low degree, upon the approach of our own destruction, and when, without his protection, a worthy person might be ruined.

He who is the head of a confederacy of brothers, from their compactness, is as difficult to be rooted out as a bamboo surrounded by impenetrable thorns.

There is no ordinance for our contending with the strong: the clouds never pass against the wind.

From the glory of him who hath been victorious in many battles, as from the glory of the son of Jamadagni, all, at all times and every where, is enjoyed.

অনেক যুদ্ধবিজয়ী সম্ভার্ন যস্য মচ্ছতি । তত্ প্রতাপেন
 তস্যাম্ বসমাযান্তি শত্রবঃ ॥ তত্র তাবদ্বজ্রনির্গুণৈরু
 পৈনঃ সম্ভেয়োঽয়ং রাজা । চক্রবাকৌবদন্ত প্রাণিধে সর্ব
 বাবব্রজ গত্বা পুনরাগমিষ্যসি ॥ রাজা চক্রবাকং পৃষ্ট
 বান্ মম্বিন্ অসম্ভেয়াঃ কতি তান্ শ্রোতুমিচ্ছামি ।
 মম্বী ব্রূতে দেব কথয়ামি শৃণু বালোহিত্যদীর্ঘরো
 গী তথা জ্ঞাতিবহিষ্কৃতঃ । মীলকো মীলজনকোলুম্বো
 লুম্বজনস্তথা ॥ বিরক্তপ্রকৃতিশ্চৈব বিষয়েষ্বতি শক্তি
 মান্ । অনেকচিত্তমম্বস্তু দেবব্রাহ্মণনিন্দকঃ ॥
 দৈবোপহৃতকশ্চৈব তথা দৈবপরাধয়ঃ । দুৰ্ভিক্ষথ্যসনোপেতা
 বজ্রথ্যসনসঙ্কুলঃ ॥ অদেশস্থো বজ্ররিপুর্য়ুক্তঃ কালেন
 যশ্ব ন । সত্যধর্ম্যথ্যপেতশ্চ বিংশতিঃ পুরুষাশ্বমী ॥ ❀

অনেক যুদ্ধজৈতা যাহার সঙ্গে মেল করে তাহার পুত্র
 গেতেই তাহার বিপদের। অরিতে বশতাপন্ন হয়। তাহা
 তে শুণেতে যুক্ত ঐ রাজা সজ্জয়। চক্রবাক বলিতেছে
 ওহে হুত সর্বত্র যাও গিয়া পুনর্বার আসি ও। রাজা চক্রবাক
 কে জিজ্ঞাসিলেন ও হ মন্ত্রী অসজ্জয় কত লোক তাহারদি
 গকে শুনিতে ইচ্ছা করি। অচিব বলিতেছে হে মহারাজ কহি
 শুন বালক ও বৃদ্ধ ও চিররোগী ও জ্ঞাতি বহিষ্কৃত ও ভীক ও
 ভীকর্দৈন্যাবিশিষ্ট ও লুপ্ত ও লোভি সমভিব্যাহত পুরুষ ও

বিরক্তমতঃ ও বিষয়েতে অত্যন্তাসক্ত ও অনবহিত চিত্ত
ও দেবদ্বিজনিম্বক ও দৈবোপহত ও দৈবপরায়ণ ও দুৰ্ভিক্ষকণ
বিপত্তিতে ব্যাঙ্গল ও ব্যসনিসৈন্যযুক্ত ও বিদেশস্থ ও বহু
শত্রু ও অসময়োদ্যোগী ও সত্যধৰ্মচ্যুত এই বিংশতি লোকা

Seeing he who hath been victorious in many battles meet-
eth not death, his enemies are captivated by his glory.

Then I repeat, that the royal goose, being endued with
many of these qualities, is worthy to be treated with.
The minister now orders the booby to go to the enemy's
camp, and to return with what further intelligence he
could pick up.

I now wish thee, said the peacock king, to inform me
how many there are with whom it may be improper to
enter into an alliance; and the vulture minister replied,
—I am about to tell your highness, repeating the fol-
lowing verses:

The young, the old, the long afflicted, and such as have
been excommunicated by their tribe; the fearful, and
those whose followers are timid, the covetous, and those
whose followers are covetous;

Those whose principal officers are void of attachment,
he who possesseth too much power in affairs, one who
in his counsels is of many opinions, and he who speak-
eth disrespectfully of the Gods or the Brāhmanas;

He who is naturally unfortunate, and he who is always
consulting fate; one afflicted with famine and pestilence,
and he who possesseth a disorderly army;

One who doth not stay in his own country, one who is
beset with many enemies, he who hath an army out of
time, and one who hath departed from the true religion:
these make twenty descriptions of persons,

ଯତେ: ସନ୍ଧିଂ ନ କୁର୍ହୀତ ବିମ୍ବଜ୍ଞୀୟେତ୍ତୁ କେବଳଂ । ଯତେ ବିମ୍ବତ୍ତ୍ୱ
 ଜ୍ଞାଣାଦି ଲିପିଂ ସ୍ଥାନ୍ତି ସିଂଧିଂ ॥ ବାଳସ୍ୟାତ୍ୟଗ୍ରଭାବତ୍ବାନ୍ନ
 ଶ୍ଳୋକୋଽପି ହୁନିଚ୍ଛତି । ଯୁଦ୍ଧାସୁଦ୍ଧଫଳଂ ଯସ୍ମାନ୍ ଜ୍ଞାତୁଂ ଶକ୍ତୋ
 ନ ବାଳିଶଃ ॥ ଓତ୍ସାହଶକ୍ତିହୀନତ୍ୱାଦ୍ୱିହୋଦୀର୍ଘମୟଶ୍ଚକା ।
 ଶ୍ୱେରେବ ପରିଭୂୟେତ୍ତାବସ୍ୟେତାବସଂଶୟଂ ॥ ସୁଖୋଽକ୍ଷୋଽପି ଭବତି
 ସର୍ବଜ୍ଞାତିବଦ୍ଧିଞ୍ଜ୍ଞତଃ । ତେ ଜ୍ଞାତଘୋବିନିଗ୍ରନ୍ତି ଜ୍ଞାତଘଶ୍ଚା
 ଶ୍ଚାସାତ୍ କ୍ରତାଃ ॥ ଭୀରୂର୍ଯୁଦ୍ଧପରିତ୍ୟାଗାତ୍ ସ୍ୱପ୍ନମେବ ପ୍ରଞ୍ଞୟତି ।
 ଭୀରୁକ୍ରୋଭୀରୁପୁରୁଷୈଃ ସଂଗ୍ରାମେ ତୈର୍ବିମୁଚ୍ୟତେ ॥ ଲୁଭସ୍ୟାସନ୍ନ
 ଭାଗିତ୍ୱାନ୍ନ ଧୂଧ୍ୟନ୍ତେନୁସାଧିନଃ ଲୁଭ୍ବାନୁଜୀବକୈରେବ ଦାନଭିନ୍ନୈ
 ନିହନ୍ୟତେ । ସନ୍ତ୍ୟାଜ୍ୟତେ ପ୍ରହତିଭିର୍ବିରକ୍ତପ୍ରହତିର୍ଯୁଧିଃ ॥
 ସୁଖାଭିଯୋଜ୍ୟୋଭବତି ଯିଷଧେଷ୍ୱତିଶକ୍ତିମାନ୍ । ❀❀❀

ଈହାରଦେର ମହିତ ଭେଳ କରିବେନା କେବଳ ମଂଗ୍ରାମ କରିବେକ
 ଈହାରା ଯୁଧାମାନ ହଇଲେ ଶୀଘ୍ର ଶତ୍ରୁର ବଶତାପନ୍ନ ହୟ ।
 ବାଳକେର ଅଗ୍ନ ବଳବ୍ରହେତୁକ ଲୋକ ମଂଗ୍ରାମ କରିତେ ଈଚ୍ଛା
 କରେ ନା । ସେହେତୁକ ଯୁଦ୍ଧାୟୁକ୍ତେର ଫଳ ଜାମିତେ ଶିଶୁ ମର୍ତ୍ତ୍ୟ
 ହୟ ନା । ଓତ୍ସାହରହିତବ୍ର ହେତୁକ ବୃଦ୍ଧ ଏବଂ ଚିରରୋଗୀ ଏହି
 ଦୁହି ଜନ ଅବଶ୍ୟ ଆପନିହି ପରିତ୍ରୁତ ହୟ । ମର୍ଦ୍ଦଜ୍ଞାତି ବାହି
 କ୍ରୁତ ଲୋକ ସୁଖଛେଦ୍ୟ ହୟ କେନନା ଜ୍ଞାତିରା ମହାୟ ହଇୟା
 ତାହାକେ ନଷ୍ଟ କରେ । ଭୀକ ବାଞ୍ଛି ରଣେତେ କ୍ଳାନ୍ତ ହଇୟା ଆପନି
 ନଷ୍ଟ ହୟ । ଭୀକପୁରୁଷ ସାହାର ମର୍ତ୍ତ୍ୟବ୍ୟାହାରେ ସେ ଭୀକପୁରୁଷ
 କର୍ତ୍ତକ ପରିତାନ୍ତ ହୟ । ନିକଟେତେ ସେ ଓପସ୍ଥିତ ହୟ ଲୁକ୍ତ

জন আপনাই তাহা নয় এই নিমিত্তে তাহার অনুচরেরা
বুঝ করে না । যে স্বামির সমতিব্যাহারে লোভী লোক
থাকে তাহার শত্রু হইতে স্বর্গাদি পাইলে সে স্বামিকে নষ্ট
করে যুদ্ধস্থানেতে স্বভাবস্থলোক বিরক্ত স্বভাব লোককে
পরিত্যাগ করে । বিষয়েতে অত্যন্তাসক্ত ব্যক্তি অন্যায়
সেতে নিগূহ্য হয় ।

With whom it is not proper to enter into alliance, and
whom one should do nothing but check, for if such as
these go to war, they presently fall into the power of
their enemies.

If he be a child, his people are not ready to fight, be-
cause of the insignificance of his nature, and the imabi-
lity of an infant to pay the reward, or punish, for fight-
ing or not fighting.

Be he one oppressed with age, or with some tedious
infirmity, deprived of the power of exertion, he is in-
evitably overcome of himself.

He who hath been expelled by all his kindred is easily
to be defeated. for his relations too, out of respect for
themselves, are ready to destroy him

Be he a coward, he himself will flee to avoid the battle;
and if his troops are dastards, they will forsake him in
the field.

The followers of the covetous refuse to fight, because
there is no distribution of the spoils; and where the at-
endants are so, they mutiny for pay, and murder their
leaders.

If the principal officers are not attached, their chief is
forsaken by them in the midst of the battle; and if he
be one who hath too much power in affairs, he expect-
eth superior attention.

অনেকচিন্তনমন্ত্রস্তু ভেদোন্নবতি সসিদ্ধা । অনবস্থিতপি
 তত্ত্বাৎ কার্য্যতঃ স উপেচ্ছতে ॥ সম্যক্তে স্ববিপত্তেষু দৈবমেব
 হি কারণ । ইতিদৈবপরাধ্যায়ব্রাহ্মানমপি চেষ্টতে ॥ দুর্ভি
 চ্ছব্যসনো চৈব স্বয়মেব বিসীদতি । বলব্যসনযুক্তস্য যদ্বি
 শক্তির্ন জায়তে ॥ সদাধর্ম্মবলীয়স্বাদেবব্রাহ্মণনিন্দ
 কঃ বিশীর্ষ্যতে স্বয়ং হ্যেব দৈবোপহতকস্তথা অদেশস্যোহি
 রিপুণা স্বল্যকেনাপিহন্যতে । গ্রাহোত্পীথানপি জলে গজে
 ন্দ্রমপি কর্ষতি ॥ বজ্রশব্দস্তু সঞ্চলতঃ শ্যেনমধ্যে কপোত
 বত্ । ঘেনৈব গচ্ছতি পথা তেনৈবাশু বিপদ্যতে ॥ অকাল
 সৈন্যযুক্তস্তু হন্যতে কালয়োধিনা । কৌশিকেন হতজ্যো
 তির্নিশাথদ্রব বায়সঃ ॥ *❖*❖*❖*❖*❖

অনবস্থিত ব্যক্তি সচিবকর্তৃক ভেদ্য হয় কেননা অনব
 স্থিতত্ব হেতুক তাহাকে মন্ত্রিরা কার্য্য হইতে ত্যাগ করে ।
 সম্পত্তির এবং বিপত্তির দৈবই কারণ । ইহা চিন্তা করত
 দৈবপরায়ণ লোক আপনাকে ও চেষ্টা করেনা দুর্ভিক্ষরূপ
 বিপত্তিতে ব্যাকুল লোক আপনিই অবসন্ন হয় । বাসনি
 সৈন্য সমভিব্যাহারি লোকের ব্যাহরণাদি সম্পন্ন হইতে
 পারেনা দেবদ্বিজনিন্দক ও দৈবোপহত ইহারা অধর্ম্মপুঙ্ক্ত
 আপনিই ব্যাকুল হয় । অরিকর্তৃক অত্যাগ্ন সৈন্যদ্বারাও
 বিদেশস্থ ব্যক্তি নষ্ট হয় । জলমধ্যেতে বৃহৎস্তিকে ও

ক্ষুদ্র জস্তীর ধরে বহুশত্রু ব্যক্তি শোন পক্ষির মধ্যস্থিত ক
পোতের ন্যায় ভীত হইয়া যে পথেতে যায় সেই পথেতে নষ্ট
হয় যেনন নষ্ট দৃষ্ট কাক অর্দ্ধরাত্রে গেচক কর্তৃক নষ্ট হয়।

He who in his counsels is of many minds, is hateful to his ministers; and because of the unsteadiness of his mind, he is neglected by them in his necessary affairs.

Those who first study fate, and say, — Fate is the only cause of fortune and misfortune, terrify themselves.

He who is surrounded by famine and pestilence, of himself yieldeth, and he who hath a disorderly army, hath no power to fight.

As religion is always most powerful, so he who despiseth the Gods or a Brāhman, of himself goeth to nought; and so doth he who is smitten by fate.

One who is out of his own country is defeated by a very trifling enemy the smallest alligator in his own element gripeth the largest elephant.

He who hath many enemies is like a pigeon amongst kites: whatever way he turneth, he is encountered by misfortune.

If he be one who marcheth his army out of season, he is destroyed by fighting against the weather. He will suffer like the crow, who, venturing out at midnight, had his eyes picked out by an owl.

সত্যধর্মব্যপেতেন সন্দধ্যান্ন কদাচন । সসম্বিতোষ্যসাধু
 ত্বাদ্ধিরায়াতি বিক্রিয়াং ॥ অপরমপি কথয়ামি সম্বি
 বিগ্রহয়ানাसनसंश्रयात् द्वैधीभावाः षाङ्गुण्यं कर्मणा
 मारम्भोपायः पुरुषत्वे द्रव्यसम्पदेशकालविभागोऽरि
 निपातः प्रतीकारः कार्यसिद्धिश्च पञ्चाङ्गोमन्त्रः सामदा
 नभेददण्डाश्चत्वारउपायाः उत्साहशक्तिमन्त्रशक्तिप्रभु श
 क्तिश्च इति शक्तित्रयं एतत् सर्वमालोच्य नित्याविजिगी
 षवोभवन्ति महान्तः । या हि प्राणपरित्यागमूल्येनापि
 न लभ्यते । साश्रीर्নীतिविदां पश्य चञ्चलापि प्रधावति ।

সত্য ধর্মচ্যুত লোকের সহিত কদাচ মেল করিবে না কেন
 না সে লোক অসঙ্গরিদ্ধতাহেতুক অল্প কালেতেই মেলনহই
 তে অন্যথা পায় । আরও কহি সক্তি অর্থাৎ মেলন বিগ্রহ অ
 র্থাৎ পরদেশদাহলুণ্ঠনাদি যান অর্থাৎ বিপক্ষের পুতি যাত্রা
 আসন অর্থাৎ বিগ্রহাদির নিবৃত্তি । সম্প্রয় অর্থাৎ দুই বলবা
 নের মধ্যস্থিতব্যক্তির এক ব্যক্তিকে বাক্যদ্বারাধন দারাতির
 সমর্পণ । দ্বৈধীভাব অর্থাৎ একের সহিত মেলন অপরের
 সহিত কলহ এই ছয় গুণ কর্ম্মারম্ভের উপায় হয় আর পুরু
 ষার্থ সম্প্রতিদেশ কালের বিবেচনা আর বৈরিগারণের পুতি

କାର ଆର କର୍ମ ନିଜି ଏହି ମାତ୍ର ପୁକାର ମନ୍ତ୍ରଣା ହୁଏ । ନାମ ଓ
 ଦାନ ଓ ଭେଦ ଓ ଦଣ୍ଡ ଏହି ଚାରି ଉପାୟ ହୁଏ ଓଽନାହିଶକ୍ତି ମନ୍ତ୍ର
 ଶାକ୍ତି ଓ ପ୍ରଭାବଶକ୍ତି ଏହି ତିନି ଶକ୍ତି ହୁଏ ଏହି ସକଳ ଆଲୋ
 ଚନା କରିয়া ବଡ଼ ଲୋକେରା ସର୍ବଦା ଅବିଜିଗୀଷୁ ହୁଏ । ଜୀବନ
 ଦାନ କ୍ଷମ ମୂଲ୍ୟେତେ ଯେ ସମ୍ପାଦି ଲଭା ହୁଏ ନା ସେ ସମ୍ପାଦି ନୀ
 ଶିକ୍ଷାସାଧନ ନିକଟେ ନିଶ୍ଚଳା ହୁଏ ଆପଣି ଧାବନ କରେ ।

One should, on no account, enter into any connexion with one who hath departed from the faith, for although he be bound by treaty, he will, because of his own unrighteousness, break his engagement.

In addition to all this, continued the minister, I shall remind your highness of the following particulars: *Uniting, disputing, marching, halting, surrendering, separating*, are denominated the *six modes*. For the commencement of an expedition the necessities are, *men, stores, treasure, place, and time*; the possession of which is proper, as a protection against misfortune, as well as for the accomplishment of a design: they are called *the secret of five members*. *Pacifying, giving, dividing, punishing*, are distinguished by the appellation of *the four means*. *Resolution, authority, good counsel*, are denoted *the three powers*. Those sovereigns who attend to all these things, are always victorious; for, they say,

The success which is to be acquired by those who are acquainted with the rules of policy and prudence, is not to be gained by the price of abandoning life; for such knowledge causeth irresolution to fly from the body.

॥ তথা চোক্তং ॥ বিত্তং যদা यस্য সমং বিভক্তং । গৃহস্বরঃ
 সনিভৃতশ্চ মদ্রঃ । ন চাপ্রিয়ং প্রাণিষু যোব্রवीতি স সাগ-
 রান্তাং পৃথিবীং প্রয়াস্ति ॥ কিন্তু যদ্যপি মহামন্त्रিণা
 মৃগ্রেণ সম্ভানমুপন্যস্ত তথাপি ভূতজয়দর্পান্নাবমন্ত্যং
 দেব তদেবং ক্রিয়তাং সিংহলদ্রোপস্য মহাবলো নাম সার-
 সো রাজাস্থান্মিত্রজম্বুদ্বীপে পশ্চাত্ কৌপং জনয়তু ॥ যতঃ ॥
 সুগুপ্তমাধায় সুসংহতেন বলেন বীরো বিচরন্নরান্তি ।
 সন্তাপয়েদেন সমং সুতপ্তস্তপ্তেন সম্ভানমুপৈতি তপ্তঃ ॥
 রাজা এবমস্তু ইতি নিগদ্য বিচিত্রনামবকঃ সুগুপ্তলেখং
 দত্ত্বা সিংহলদ্রোপং প্রহিতঃ অথ প্রাণিধিরান্য উবাচ
 দেব শ্রুয়তাং তত্ত্ব্য প্রস্তাবঃ এবম্ তত্র মৃগ্রেণোক্তং । ❀

বিজ্ঞেরা তাহা কহিয়াছেন যাহার অস্তঃকরণ সর্বদা এক
 পুকার আর গুঢ় দূত আর গুপ্ত মন্ত্রণা আর যে লোক মনু-
 ষোরদিগকে নিষ্ঠুর বাক্য কহে না সে লোক সমুদ্র পর্য্যন্ত
 পৃথিবী শাসন করে । কিন্তু যদ্যপি তাহার মহামন্ত্রী গৃধু-
 মেজ করিবার পুসঙ্গ করিয়াছে তথাপি জয় হইয়াছে এই
 অহঙ্কার পুষ্কৃত সে রাজা অবজ্ঞা করিবে না হে ভূপাতে সেই
 হেতুক এই পুকার রুকন সিংহলদ্রোপের মহাবল নামে
 সারসরাজ আশ্বারদের সখা জম্বুদ্বীপেতে গিয়া চিত্র বর্ণের
 পাশাভাগে ক্রোধ জন্মান যেহেতুক শূর লোক সুসজ্জ

সৈন্যের দ্বারা সাবধান হইয়া সুরক্ষিত শত্রুকে ব্যামোহ দি-
বক যেহেতুক ব্যাঘ্রল ব্যক্তি অত্যন্ত ব্যাঘ্রল হইয়া ব্যাঘ্রলের
সহিত মিলন করে। রাজা বলিলেন এইরূপ হউক ইহা কহি-
য়া বিচিত্র নামে বককে অত্যন্ত গুপ্ত লিপি দিয়া সিংহলদ্বী-
পে পাঠাইলেন। অনন্তর চর আসিয়া বলিল হে ভূপাল
সে স্থানের পুস্তাব শুনুন সেখানে গৃধ্র এই পুকার বলিল।

He is always possessed of riches, whose followers are well attached, whose spies are concealed, and whose counsels are kept private, and he who doth not speak with unkindness to his fellow-creatures, may govern the whole world to the extremities of the ocean.

But please your highness, continued the minister, although peace has been proposed by that great statesman the vulture, still his master will not consent to it, because of his recent success. Then let this be done. the king of Singhala-dwipa, the Sārāsa Mahābala, is our friend; let him raise a disturbance in Jambu-dwipa, the enemy's country.,

A wise man having practised great secrecy, marching with a well-composed army, may alarm an opponent; and he who is alarmed will make peace with him with whom he hath been at variance.

The royal goose having consented to this proposal, one Vichitra a booby was dispatched to Singhala-dwipa with a very private letter.

In the mean time, the spy returning from the peacock's camp, said,—Please your highness, attend to what I have to inform you of. The vulture minister said to the peacock king,—

যদেবমেঘবর্ণঃ স্তত্রাচিরমুখিতঃ স বেত্তিকি সন্মেষগুণযুক্তো
 হিরণ্যগর্ভো ন বেতি ততোঽসৌ রাজা সমাহ্বয় পৃষ্টঃ বাচ
 স কীদৃশো সৌ হিরণ্যগর্ভঃ স কবাকোমদ্রী বা কীদৃশঃ ।
 বাচসত্বাচ দেব হিরণ্যগর্ভো রাজা যুধিষ্ঠিরসমো ম
 হাশয়ঃ চক্রবাকসমো মদ্রী ন ক্বাপ্যবলোক্যতে ॥ রাজাহ
 যদেবং তদা কথমসৌ ত্বয়া বস্বিতঃ । বিহস্য মেঘবর্ণঃ
 প্রাহ দেব ॥ বিশ্বাসপ্রতিপন্নানাং বস্বনে কা বিদগ্ধতা ।
 অঙ্কমারুহ্য সুম্নং হি হুত্বা কিন্নাম পৌরুষং ॥ শৃণু দেব
 তেন মদ্বিণাচং প্রথমদর্শনএব জ্ঞাতঃ কিন্তু মহাশয়ো
 সৌ রাজা তেন মযা বিপ্রলব্ধঃ ॥ তথা চোক্তং ॥ আত্মৌ
 পম্যেন যো বেত্তি দুর্জনং সত্যবাদিনং । স তথা বস্বন্তে
 ধুতৈ ব্রাহ্মণশ্চাগলোযথা ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀

যে হে নৃপতে মেঘ বর্ণ সে স্থানে বহুকাল বসতি করিয়াছে
 সে জানে হিরণ্যগর্ভ সন্মেষ গুণ শালী বটে কি না । তখন
 স্তত্র রাজা আস্থান করিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন ও হে কাক এই
 হিরণ্যগর্ভ রাজা কিরূপ আর চক্রবাক মদ্রীই বা কীদৃশঃ কাক
 বলিল হে মহারাজ রাজা হিরণ্যগর্ভ যুধিষ্ঠির তুল্য মহাশয়
 ও চক্রবাকের ন্যায় অমাত্য ত্রতাপি দৃষ্ট নয় রাজা কহিলেন
 যদিও এতাদৃশ তবে কি পুকারে ইনি বঞ্চিত হইলেন মেঘ
 বর্ণ হান্য করিয়া কহিল হে নৃপতে বিশ্বাস প্রাপ্ত লোকের
 বঞ্চনাতে পুরুষার্থ কি ক্রোড়েতে আরোহণ করিয়া থাকে

যে নিশ্চিত ব্যক্তি তাহাকে নষ্ট করিয়া কি পুরুষার্থ হে মহা
রাজ শুনুন সে সচিব পুথম দর্শনেতে জানিয়াছিল কিন্তু ঐ
রাজা মহাশয় সেই হেতুক আমি বধনা করিয়াছি। পুঞ্জেরা
তাহা কহিয়াছেন আশ্রতুল্যেতে যে লোক খনকে সত্যবাদী
করিয়া জানে সেই জন সেই পুকার বধিত হয় যেমন ছাগ
লের নিমিত্তে তিন জন ধূর্তকত্ব একবুদ্ধি বধিত হইল।

Although Cloud-colour the crow was so long in the enemy's castle, what if he doth, or doth not know whether the royal goose, Hiranya-garbha, be possessed of those qualities which are necessary towards our treating with him? After this, continued the spy, the peacock king having called Cloud-colour before him, asked him what sort of a character that same royal goose, Hiranya-garbha, was, and what sort of minister he had.



To this the crow replied,—Please your highness, Hiranya-garbha is as noble as king Yudhi-shtira, and a person of great sincerity; and as to his minister, his likeness is no where to be discovered. If he be as thou hast described him, observed the king, how was it that he was deceived by thee?

The crow replied,

What great ingenuity is there in deceiving him whose confidence one hath gained? Is the term manhood his who mounteth upon the bed, and destroyeth those that are asleep?

Attend, please your highness,—I was discovered by the minister from the beginning, but the king his master, being himself one in whom the greatest confidence may be placed, was easily imposed upon by me; according to the following saying:

He who, judging by what passeth in his own breast, beleveth a knave to be a person of veracity, is deceived; as the Brahman was concerning his goat.

ରାଜୋବାଚ କଥମେତତ୍ । ମେଘବର୍ଣ୍ଣଃ କଥୟତି । ଅସ୍ତି ନୌ
 ତମସ୍ୟାରଣ୍ୟେ ପ୍ରସ୍ତୁତଯଜ୍ଞଃ କସ୍ଥିତ୍ ବ୍ରାହ୍ମଣଃ ସବ ଯଜ୍ଞାର୍ଥ
 ଯାମାନ୍ତରାଚ୍ଛାଗମୁପକ୍ରୀୟ ଶ୍ଲଥ୍ମେ ନୌତା ଗଚ୍ଛନ୍ ଧୂର୍ତ୍ତଃ
 ଯେଣାବଲୋକିତଃ । ତତଶ୍ଚେ ଧୂର୍ତ୍ତାଃ ଯଦ୍ୟେଷଞ୍ଚାଗଃ କେନାପ୍ୟୁପା
 ଯେନ ଲଭ୍ୟତେ ତଦା ମତିପ୍ରକର୍ଷେ । ଭବତି ସମାଲୋଚ୍ୟ ଟ୍ବଚ୍ଚତ୍ର
 ଯତଶ୍ଚେ କ୍ରୋଶାନ୍ତରେଣ ତସ୍ୟ ବ୍ରାହ୍ମଣସ୍ୟାଗମନଂ ପ୍ରତୀଚ୍ଛ୍ୟ
 ପାଠ୍ୟ ସ୍ଥିତାଶ୍ଚତ୍ରୈକେନ ଧୂର୍ତ୍ତେନ ଗଚ୍ଛନ୍ ସ ବ୍ରାହ୍ମଣୋଽଭି
 ହିତଃ ଯୋ ବ୍ରାହ୍ମଣ କିମିତି କୁକୂରଃ ଶ୍ଲଥ୍ମେନ ଉଚ୍ଛାତେ ।
 ବିପ୍ରେଣୋକ୍ତଂ ନାୟଂ ଆ କିନ୍ତୁ ଯଜ୍ଞଚ୍ଛାଗଃ ଅଥାନନ୍ତର
 ସ୍ଥିତେ ନାନ୍ୟେନ ଧୂର୍ତ୍ତେନ ତଥୈବୋକ୍ତଂ ତଦାକର୍ଣ୍ୟ ବ୍ରାହ୍ମଣ
 ଶ୍ଚଞ୍ଚାଗଂ ଭୂମୌ ନିଧାୟ ମୁଞ୍ଚନ୍ନିରୀଚ୍ଛ୍ୟ ପୁନଃ ଶ୍ଲଥ୍ମେ ଛୁତ୍ବା
 ଦୋଳାୟମାନମତିଶ୍ଚ୍ଛଳିତଃ ॥ ଯତଃ ॥ ***

ରାଜା କହିଲେନ ଏ କି ପୁକାର ମେଘବର୍ଣ୍ଣ କହିତେଛ । ଗୌ
 ଶ୍ରମ ଧୂନିର କାନନେତେ ଏକ ଆରକ୍ତ ଯଜ୍ଞ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଥାକେନ
 ତିନି ଯଜ୍ଞେର ନିଗିତେ ଗୁଣାନ୍ତରହୈତେ ଛାଗନ କ୍ରୟ କରିয়া
 ଶ୍ଲଥ୍ମେ ନୌତା ଯାହିତେଛିଲେନ ହୈହୀ ତିନଜନ ଧୂର୍ତ୍ତେତେ ଦେଖିଲ ।
 ତାହାର ପର ସେହି ଖଟେରା ଯଦି ଏହି ଛାଗନ କୋନ ଉପାୟେର
 ଦ୍ବାରା ନୌତେ ପାରି ତବେ ବୁଦ୍ଧିର ଓଂକର୍ଯ୍ୟ ହୁଏ ହୈହୀ ପରାମର୍ଶ
 କରିয়া ତିନବୃକ୍ଷେର ତଳେତେ ଏକ କ୍ରୋଶ ଅନ୍ତରେତେ ସେହି
 ଦ୍ବିଜେର ଆଗମନ ପ୍ରତୀକ୍ଷା କରିয়া ପାଥେର ଗର୍ଦ୍ଧେ ଥାକିଲ ।
 ସେଥାନେ ଯାହିତେଛିଲ ସେ ବ୍ରାହ୍ମଣ ତାହାକେ ଏକ ବଞ୍ଚକ କହିଲ

হে ব্রাহ্মণ কেন জকুরকে স্বেচ্ছতে করিয়া বহিতেছ ভূদেব
কহিলেন এ জকুর নয় কিন্তু যজ্ঞীয় ছাগ অনন্তর তাহার
পর ছিল যে অপর শঠ সেও ঐ পুকার কহিল । তাহা শুনিয়া
দ্বিজ ছাগলকে ভূমিতে নামাইয়া ভূয়ো২ অবলোকন
করিয়া পুনর্বার স্বেচ্ছ করিয়া চঞ্চলচিত্ত হইয়া চলিল ।

Pray how was that? demanded the king; and the spy
told the following story:

FABLE X.

IN the forest of the prophet Goutama a certain Brāhman, having determined to make an offering, went to a neighbouring village and purchased a goat, which having thrown across his shoulder, he turned towards home. As he was travelling along, he was perceived by three thieves. If, said they, we could by some artifice get the goat from that man, it would be a great proof of our address. Saying this, they agreed upon their stratagem, and executed it in this manner. they stationed themselves before the Brāhman, and sat down under the trees in the road which led to his habitation, till he should come up to them. Soon after, he was accosted by one of them in this manner:—Is not that a dog? Brāhman, what is the reason thou carriest it upon thy shoulder? The Brāhman replied,—No, it is not a dog—it is a goat, which I have purchased to make an offering of. About a mile further on he met another of them, who repeating the same question, he took the goat from his shoulder, and putting it upon the ground, examined it again and again; and at length, replacing it upon his shoulder, he went on, quite staggered as it were.

মতির্দোলায়তে সত্যং সতামপি ললোক্তিभिः। ত্রিभिर्वিশ্বা
সিতস্ত্যাসৌ স্মিয়তে চিত্রকর্ণবৎ ॥ রাজাহ কথমেতৎ ।
স কথয়তি । অস্মি কস্মিঁশ্চিদনোদেশে মদোক্তটো নাম
সিংহস্তস্য সেবকাংস্বয়ঃ কাকোব্যাঘ্রো জম্বুকশ্চ । অথ তৈ
র্ভ্রমদ্বিঃ কস্মিদুঘ্রোদৃষ্টঃ পৃষ্টশ্চ কুতো ভবানাগতঃ সা
র্থাঙ্কুশ্চঃ । সচাত্মব্রতান্তমকথয়ত ততস্তেীর্নিত্বা সিংহো
ঽসৌ সমর্পিতঃ তেনাভয়বাচং দত্বাচিত্রকর্ণ ইতি নাম ক্র
ত্বাস্থাপিতঃ অথকদাচিত্ সিংহস্যশরীরবৈকুল্যাৎ ভূরি
দৃষ্টিকারणाच्चाहारमलभमानास्ते व्यগ্রাবম্ভবুঃ ততস্তেী
রালোচিতং চিত্রকর্ণমেব যথা স্বামী ব্যাপাৎদয়তি তথা
নুষ্ঠীয়তাং কিমনেন কলঙ্ককমুজা । ব্যাঘ্রউবাচ স্বামি
নাভয়বাচং দত্বা অনুগৃহীতস্তত্ কথমেবং সম্ভবতি ।

যেহেতুক শঠ বাক্যেতে সুবোধ নোকের ও বুদ্ধি চঞ্চল। হয়
যেমন চিত্রকর্ণ তিন জনকর্তৃক পুণ্ড্রবিশ্বাস হইয়া
বরিল। রাজা কহিলেন ইহা কি কথা । সে কহিতেছে ।
এক অরণ্যেতে মদোক্তট নামে সিংহ থাকে তাহার দাস
তিন জন কাক ও বাঘু ও শূগাল অনন্তর তাহার। ভ্রমণ
করিতে২ এক উষ্ট্রকে দেখিল আর জিজ্ঞাসিল তুমি কেন
সাধি ত্যাগ করিয়া আইলা । সে নিজ বৃত্তান্ত কহিল তদ
নন্তর উহাকে লইয়া সিংহকে সমর্পণ করিল সে অভয়
বাক্য দিয়া চিত্রকর্ণ এই নাম করিয়া তাহাকে রাখিল ।

তাহার পর কোন দিন শরীরাপাটবপুষ্প আৰ অত্যন্ত
বৃষ্টি পুষ্প তাহারা সিংহের আহাৰ না পাইয়া ব্যাধন
হইল । তাহার পর তাহারা আলোচনা করিল যেথাকারে
চিত্রকৰ্ণকেই রাজা মারেন তাহা কর এ কণ্টকভোক্তাতে কি
পুয়োজন ব্যাঘ্র বলিল রাজা অভয় বচন দিয়া অনুগৃহ করি
য়াছেন সেই হেতুক কি মতে এমন সম্ভব হয় ।

The minds even of good men are staggered by the arguments of the wicked, but those who place confidence in them may suffer by it, like the camel Chitra-karna.

The king asked how that was, and the spy tells him the following story.

FABLE XI.

IN a certain forest there was a lion whose name was Madōtkata, and he had three attendants, a crow, a tiger, and a jackal. One day, as these three were roaming about, they met with a camel. They asked him whence he came, and whither he was travelling, and after he had given an account of himself, they introduced him to the lion, who, having given him assurances of protection, and determined that he should be called Chitra-karna, retained him in his service. Sometimes after, when the lion was out of order, his attendants were exceedingly at a loss for provisions, because for some time it had rained violently. So the crow, the tiger, and the jackal, agreed amongst themselves to contrive some way for the lion to kill the camel; for, said they, what is that thorn-eater to us? Our master, observed the tiger, having given him assurances of safety, and taken him under his protection, then how can this be brought about?

কাকোব্রূতে ইহ সময়ে পরিচ্ছোণঃ স্বামী পাপমপিকরিষ্যতি
 ॥ যতঃ ॥ ত্যজেত্ শুধার্ত্তা মহিলাং স্বপুত্রং খাদেত্ শুধার্ত্তা
 ভূজগী স্বমণ্ডং । বুমুচ্ছিতঃ কিং ন কৰোতি পাপং চীর্ণা
 নরানিচ্ছকরণাভবন্তি ॥ অন্যচ্চ ॥ মত্তঃ প্রমত্তস্তো
 ন্মত্তঃ শ্রান্তঃ ক্রোধোবুমুচ্ছিতঃ । লুব্ধো ভীরুর্স্বরাযুক্তঃ
 কামুকশ্চ ন ধর্মাবিত্ ॥ ইতি সञ्চিন্ত্য সৰ্বে সিংহান্তিকং
 জরমুঃ সিংহেনোক্তং আহারার্থং কিञ্চিত্ প্রাপ্তং তৈরুক্তং
 যত্নাদপি ন প্রাপ্তং কিञ্চিত্ । সিংহেনোক্তং কোঽধুনা জীৱনো
 পায়ঃ কাকো বদতি দেব স্বাধীনাহারপরিত্যাগাৎ সৰ্ধ
 নাশোঽয়মুপস্থিতঃ ॥ সিংহেনোক্তং অত্রাহারঃ কঃ স্বাধী
 নঃ । কাকঃ কণে কথয়তি চিত্রকর্ণে ইতি ॥ সিংহো ভূমি
 স্পৃষ্ট্বা কণে স্পৃশতি অভয়বাচং দত্ত্বা ধৃতোঽয়মস্মাভিঃ ।

কাক বলিতেছে এ সময়েতে অনাহারেতে ক্লিষ্টে পুত্রে পাপ ও
 করিবেন । যেহেতুক ক্ষুধাতুর লোক আপন স্ত্রী ও পুত্রকে ও
 ত্যাগ করে বৃত্তিহীন মগা নিজ অণ্ডকে ভক্ষণ করে ক্ষুধার্ত
 ব্যক্তি কোন পাপ না করে কেননা আহারপুযুক্ত ক্লিষ্ট লোক
 নির্দয় হয় অপর যদিরা পানাদি দ্বারা মত্ত ও অকৃতাবধান
 ও বাতুল ও ভ্রমযুক্ত ও কষ্ট ও ক্ষুধাতুর ও লোভী ও ভীক ও
 নব্বর ও কামাতুর ইহারা ধর্মহীন হয় ইহা ভাবনা করিয়া
 মরুতে সিংহের নিকটে গেল । সিংহ বলিল ভক্ষণের নিমিত্তে
 কিছু পাইয়াছ । তাহারা বলিল পুষ্যামেতে ও কিঞ্চিৎ পাই

নাই সিংহ কহিল সৎপুতি আমারদের পুণ্যধারণের উপায়
কি কাক বলিতেছে নিজায়ত্ত ভোজন পরিত্যাগপুষ্ট এ
সর্বনাশ উপস্থিত সিংহ কহিল । এখানে কোন আহর আপ
নার অধীন বায়স কর্ণেতে কহিতেছে চিত্রকর্ণসিংহ হস্তদ্ব
য়ের দ্বারা ভূমিস্পর্শ করিয়া দুই কর্ণস্পর্শ করিতেছে এবং
কহিতেছে আমরা ইহাকে অভয় বাক্য দিয়া রাখিয়াছি ।

To which the crow replied,—At such a time as this, when our master's health is upon the decline for want of food, he will not scruple to commit a sin; for they say,

A man, when oppressed with hunger, will abandon his own wife and offspring; a female serpent, when distressed for food, will devour her own eggs. What crimes will they not commit who are pinched with hunger! Men pining for food become destitute of pity and compassion.

Those who are intoxicated either with liquor or pleasure, the lazy, the passionate, the hungry, the covetous, the fearful, the hasty, and libertines, have no knowledge of justice.

This being proved to the satisfaction of all parties, away they went to the lion; who, the moment he saw them, demanded if they had brought him any thing to eat. They replied, Sir, with all our endeavours, we have not been able to procure the smallest trifle. Then what means are there now left for my support? cried the lion. Sir, replied the crow, from your refusing the food which you have in your power, we are all like to perish. What is there here for me to eat? eagerly demanded the lion. The camel! replied the crow, whispering it in the lion's ear. The noble beast at this proposal, touching the ground, and then his two ears, in abhorrence, exclaimed,—Having, at our first interview given him assurances of my protection,

তত্ কথমেব সম্ভবতি । তথা চ ॥ ন ভূপ্রদানং ন সুবর্ণ
 দানং ন গোপ্রদানং ন তথান্নদানং । যথা বদন্তীহ মহা
 প্রদানং সর্ঘেষু দানেষ্বভয়প্রদানং ॥ অন্যত্র ॥ সর্ঘকামসমৃ
 দ্বস্য অশ্বমেধস্য যত্ ফলং । তত্ ফলং লভতে সম্যক্
 রচিত্তে শরণাগতে ॥ কাকো ব্রূতেনাসৌ স্বামিনা ব্যাপাদ
 যিতব্যঃ কিল্বস্মাভিরেব তথা কৰ্ত্তব্যং যথাসৌ স্বদেহ
 দানমঙ্গীকরোতি । সিংহস্তত্ শুত্বা তূষণীং স্থিতঃ ততো
 লম্ব্যবকাশঃ কূটং কৃৎবা সর্ঘানাদায় সিংহান্তিকং গতঃ
 অথ কাকেনোক্তং দেব যত্নাদপ্যাহারোন প্রাপ্তঃ অনেকোপ
 বাসখিन्नঃ স্বামী তদিদানীং মদীয়মাংসমুপভুজ্যতাং
 ॥ যতঃ ॥ প্রকৃতিঃ স্বামিনা ত্যক্তা সমৃদ্ধাপি ন জীবতি ।
 অপি ধনন্তরি বৈ যঃ কিং কৰোতি গতাযুধঃ ॥ *

তবেকি মতে এতাদৃশ সম্ভব হয় তাহা বিজ্ঞেরা কহিয়াছেন।
 সংসারেতে সকল দানের মধ্যে অভয়দানকে যেমন মহাদান
 করিয়া বলেন তেমন ভূমিদানকে বলেন না সুবর্ণ দানকে
 বলেন না গোদানকে বলেন না অন্নদানকে বলেন না ।
 অপরসর্ঘাভিনাষদায়ক অশ্বমেধ যজ্ঞের যে ফল সে সমস্ত
 ফল শরণাপন্ন ব্যক্তিকে রক্ষা করিলে পায় । কাক বলি
 তেছে পুভু আপনি ইহাকে নষ্ট করিবেন না কিন্তু আমরা
 সেই পুকার করিব যে পুকারে আপনিই ও নিজ শরীর দান
 স্বীকার করে সিংহ তাহা শুনিয়া চুপ করিয়া থাকিল অনন্তর

অবকাশক্রমেতে কাক কপটকরিয়া সকলকে লইয়া সিংহের সম্মিথিতে গেল তাহার পর কাক কহিল হে মহারাজ যত্নেতে ও খাদ্য দ্রব্য পাইলাম না বহুতর উপবাসেতে পুত্ন কৃশ হইয়াছেন অতএব সম্প্রতি আমার মাংস ভোজন করুন স্বামিকর্তৃক অমাত্য লোক পরিত্যক্ত হইয়া ঐশ্বর্য্য শালী হইলে ও বাঁচে না কেন না ধনভুরি বৈদ্য ও গতায়ুর কি করিতে পারে ।

how can he now be treated thus? They say,

Nor the gift of cattle, nor the gift of land, nor the gift of bread, nor the gift of milk, is to be compared with that which men call the greatest of all gifts: the gift of assurance from injury!

Again:

He who hath defended one who had claimed his protection, receiveth the full reward which is the fruit of an Aswa-mēdha sacrifice, rendered more worthy by the addition of every thing which is estimable!

The crow replied,—Under these circumstances it is not proper that your highness should put him to death; but suppose we so contrive, that he shall consent to offer his own body? The lion hearing this, remained silent; but the crow, finding an opportunity, made a pretence to carry all his friends and the camel before him; when he addressed him in this manner:—Please your highness, as we can find nothing for you to eat, rather than my master shall fast, let him satisfy his hunger with all the flesh upon my poor body; for,

When nature is forsaken by her lord, be she ever so great, she doth not survive. Although Dhanwantri be the physician, when life is departed, what can he do?

॥ କିଞ୍ଚ ॥ ଶ୍ଵାମିମୂଳାଭବନ୍ତ୍ୟେବ ସର୍ବା: ପ୍ରକୃତୟ: ଶ୍ଵଳୁ ।
 ସମୂଲେଷ୍ଵପି ପ୍ରକ୍ତେଷୁ ପ୍ରୟତ୍ନ: ସଫଳୋତ୍ପତ୍ତଃ ॥ ସିଂହେନୋକ୍ତଂ ବରଂ
 ପ୍ରାଣପରିତ୍ୟାଗେନ ପୁନରୋଦ୍ଘାତଃ କର୍ମାଣି ପ୍ରପଞ୍ଚିତ: । ଅମ୍ବୁକୋ
 ନାପି ତଥୋକ୍ତଂ ॥ ତତ: ସିଂହେନୋକ୍ତଂ ମୈବ । ଅଥବ୍ୟାପ୍ତେଣୋକ୍ତଂ
 ମଦେହେନ ଜୀବତୁ ଶ୍ଵାମୀ । ସିଂହେନୋକ୍ତଂ ନ କଦାଚିଦେବମୁଚିତଂ ।
 ଅଥ ଚିତ୍ରକର୍ତ୍ତାପି ଜାତବିଶ୍ଵାସଃ କ୍ଷୁଦ୍ରଦୈବାତ୍ମାନମାହ ତତଃ
 ହୃଦୟାନ୍ତେନ ବ୍ୟାପ୍ତେଣାସୌ କୁଚ୍ଛିଦ୍ଵିଦାର୍ଯ୍ୟ ବ୍ୟାପାଦିତ: ସର୍ବେର୍ଭ
 ଶ୍ଚିତ: ଅତୋଽହଂ ବ୍ରବୀମି ମତିର୍ଦୌଳାୟତେ ସତ୍ୟମିତ୍ୟାଦି ।
 ତତଃତୃତୀୟଧୂର୍ତ୍ତବଚନଂ ଶ୍ରୁତ୍ବା ଶ୍ଵମତିଭ୍ରମଂ ନିଶ୍ଚିତ୍ୟ ଛାଗଂ
 ତ୍ୟକ୍ତା ବ୍ରାହ୍ମଣ: ଶ୍ଵାତ୍ବା ଗୃହଂ ଯଥୌ ସ ଛାଗଶ୍ଚୈଧୂର୍ତ୍ତେ ନୀତ୍ବା
 ଭୀଷିତ: ଅତୋଽହଂ ବ୍ରବୀମି ଆତ୍ମୋପମ୍ୟେନ ଯୋବେତ୍ତୀତ୍ୟାଦି ॥

ଅଗାଧପ୍ରଭୃତି ଜଗତ୍ ପ୍ରକୃତିରାଦେର ମୂଳ ସାଗ୍ରୀହି ହୟ ।
 ମୂଳ ବୃକ୍ଷେତେହି ଲୋକେର ପ୍ରାଣୀମ୍ବ ସଫଳ ହୟ ସିଂହ କହିଲ
 ଜୀବନ ପରିତ୍ୟାଗ ଓ ଭାଲ ତଥାପି ଏତଦ୍ରୂପ କର୍ମାତେ ପ୍ରଭାନ୍ତି
 ଭାଲ ନୟ । ଶୃଗାଳ ଓ ତାହା କହିଲ ତଦନନ୍ତର ସିଂହ କହିଲ
 ଏମନ ନା ତାହାର ପର ବାସ୍ତବ କହିଲ ଆମାର ଶରୀରେତେ ପ୍ରଭୁ
 ବାଚୁନ ସିଂହ ବାଲିଲ କଦାଚିତ୍ତ୍ଵ ଉପଯୁକ୍ତ ନୟ । ଚିତ୍ରକର୍ତ୍ତା ଓ
 ଜାତପୁତ୍ରୟ ହୈୟାସେ ପ୍ରକାର ଆପନାକେ କହିଲେନ ତାହାର
 କଥାତେ ସେହି ବାସ୍ତବ ଗୁଣବିଦାରଣ କରିୟା ଉହାକେ ନଷ୍ଟ କରି
 ଯା ଥାହିଲ । ଏହି ନିମିତ୍ତ ଆମି ବାଲି ଧନବାକ୍ୟାତେ ଉକ୍ତମ୍ବ

কেন ও বুদ্ধি চঞ্চল হয় । অনন্তর তৃতীয়ধূর্তের বাক্য শুনিয়া আপন বুদ্ধিভ্রম নিশ্চয়করিয়া ছাগলকে ত্যাগ করি যাবাক্ষণ শ্রান করিয়া ঘরে গেলেন । ধূর্তেরা ঐ ছাগলকে লইয়া ভক্ষণ করিল । অতএব আমি বলি আত্ম তুল্যেতে যে লোক ইত্যাদি ।

All honours and endowments have their foundations in the sovereign; but although trees have their roots, their being fruitful dependeth upon man's exertion.

The lion nobly replied,—It is better to abandon life entirely, than to proceed in such an act as this! The jackal next offered himself; but the lion generously refusing; the tiger said, I live, O master, by my body! This never can be proper! said the noble beast, and, last of all, the camel, in whom was created the fullest confidence, offered himself as the rest had done; and instantly the tiger tore open his sides; and being thus cruelly murdered, he was devoured by them all. I say therefore,—*The minds even of good men &c.*

At length, said the spy, concluding the story of the three thieves, the Brāhman having heard the third thief like the former two, insist upon it, that he had a dog upon his shoulder, was convinced that it was a dog; and so, leaving his goat behind him, which the thieves presently took away and made a feast of, the good man washed himself and went home. Whence, I say,—*He who, judging by what passeth in his own breast, &c.*

রাজাহ মেঘবৰ্ণঃ কথং শত্রুমধ্যে ত্বয়া চিরমুচিতং কথং বা
 তেষামনুনয়ঃ কৃতঃ । মেঘবৰ্ণ উবাচ দেব স্বামিকাথ্যা
 থিনা স্বপ্রযোজনবশাদ্ধা কিং ন ক্রিয়তে ॥ পশ্য ॥
 লোকো বহুতি কিং রাজন্ শিরসা দগ্ধুমিন্ধনং । স্নাত্ব
 নাপি বৃক্ষাংগি নদী বেলা নিব্রুন্ততি ॥ তথা চোক্তং ॥
 স্নাত্বেনাপি বহেৎ শত্রুন্ কার্য্যমাশাচ্য বুद्धিমান্ । যথা
 বৃহেণ সর্পেণ মণ্ডুকা বিনিপাতিতাঃ ॥ রাজাহ কথমে
 তত্ । মেঘবৰ্ণঃ কথয়তি অস্মি জীর্ণৈর্দানে মন্দবিষম
 নাম সর্পঃ সোতিজীর্ণতয়া আহারমপ্যগ্নেষ্টিমত্মমঃ সর
 স্তীরে পতিত্বা স্থিতঃ ততোদূরাং কেচিচ্চাণ্ডুকেন দৃষ্টঃ
 পৃষ্টস্ব কিমিতি ত্বমাহারং নান্নেষ্যসি সর্পোঽবদৎ গচ্ছ
 শত্রু মম মন্দভাগ্যস্য প্রপ্নেহ কিং ॥ ❀❀❀❀❀

রাজা বলিলেন মেঘবৰ্ণ তুমি কি পুকারে বিপক্ষের মধ্যে
 চিরকাল বাস করিয়াছিল। কি পুকারে বা তাহারদিগের
 বিনয় করিয়াছিল। । মেঘবৰ্ণ বলিল মহা রাজ আমির
 কার্যের নিমিত্তে আর আপনার কার্যের নিমিত্তে লোক কি
 না করে দেখ। পোড়াইবার নিমিত্তে লোক মাথায় করিয়া
 কাঠকে বহন করে নদীজল বৃক্ষমূল জালন করত উৎপাটন
 করে তাহা পাণ্ডিতের। কহিয়াছেন সুবোধ লোক নিজ কার্যের
 নিমিত্তে শত্রুকে ক্ষম্মদেশেতে করিয়া বহন করো যে রূপ বৃক্ষ
 জপমণ্ডুকের দিগকে নষ্ট করিল রাজা কহিলেন এক পুকার

মেঘবর্ণ কহিতেছে। জীর্ণোদ্যানেতে মন্দবিষ নামে এক সর্প থাকে সে অত্যন্ত বার্ককাবস্থা পুষ্কৃত আহার অব্ধেবণ করি তেও অসমর্থ পুষ্করিনীর তীরে পড়িয়া থাকে তাহার পর দূর হইতে কোন মণ্ডুক দেখিল এৰং জিজ্ঞাসা করিল কেন তুমি ভোজনের তত্ত্ব কর না। ভুজঙ্গ কহিল ও হেমিত্র মন্দ ভাগ্যের আমার জিজ্ঞাসাতে কি পুয়োজন।

Cloud-colour, said the peacock king to the crow, how couldst thou remain so long a time amongst the enemy? And how didst thou recommend thyself? Please your highness, replied the crow, what is there not done by servants who have their master's affairs at hearts, or from a power derived from one's own necessities?



Do not men, O king, bear burning wood upon their heads, and the force of rivers, simply by washing their roots, sweep trees away?

When a wise man findeth an occasion, he may bear away his enemy upon his shoulder, as it were, just like the old serpent who killed the frogs.

How did that happen? said the peacock king; and the crow related the following story:

FABLE XII.

THERE was an old serpent, by name Manda-visarpa, who, because of his great age, being unable to seek food for himself, threw himself down the bank of a pond, where he remained, till a certain frog seeing him at a distance, asked him what was the reason he did not hunt about for food? Leave me! cried the serpent, what occasion hast thou to enquire into the story of such an unfortunate wretch as I?

ততঃ সংজ্ঞানকৌতুকঃ সচ ভেকঃ সর্বথা কথ্যতামিত্যাঙ্ক
 সর্পেণৈবাহ ভদ্র ব্রহ্মপুত্রবাসিনঃ শ্রীত্রিযস্য কৌণ্ডিন্যস্য
 পুত্রোবিংশতিবর্ষীয়ঃ সর্বগুণসম্পন্নঃ দুর্দৈবান্ধম নৃশংসস্ব
 ভাবাদৃষ্টঃ তং পুত্রং সুশীলনামানং মৃতমালোক্য মূর্চ্ছিতঃ
 কৌণ্ডিন্যঃ পৃথিষ্ঠাং লুলোভ । অনন্তরং ব্রহ্মপুত্রবাসিনঃ
 সর্বৈ বাম্ভবা স্তত্রাগত্য উপবিষ্টাঃ ॥ তথা চোক্তাং ॥ উত্সবে
 ব্যসনে যুদ্ধে দুর্ভিক্ষে রাষ্ট্রবিপ্লবে । রাজদ্বারে শ্মশানে চ
 যস্মিষ্ঠতি সবাম্ভবঃ ॥ তত্র কপিলো নাম স্নাতকোঽবদত্
 শ্বরে কৌণ্ডিন্য মূঢ়োহসি তেনৈবং বিলপসি । শৃণু । ক্রোড়ী
 কৰোতি প্রথমং যথা জাতমনিত্যতা । ধাত্রীব জননী
 পশ্চাৎতথা শোকস্য কঃ ক্রমঃ ॥ ***

তদনন্তর সেই ভেক মৃতহলী হইয়া ইহা কহিল যে তুমি অব
 শ্য কহ তুজ ব্রবলিল হেতদু বুদ্ধপুত্রবাসি শ্রোত্রিয় কৌণ্ডিন্য
 ব্রাহ্মণের বিংশতিবর্ষবয়স্ক অশেষ গুণালঙ্কৃত পুত্রকে দুর্দৈব
 পুয়ুক্তখলস্বভাবহেতুক আমি দংশন করিয়াছি সেই সুশাল
 নামে পুত্রকে মৃতদেখিয়া কৌণ্ডিন্য মূর্চ্ছিত হইয়া মৃত্তি
 কাতে গড়াগড়ি দিতেছেন । তাহার পর বুদ্ধপুত্রবাসি সমস্ত
 বন্ধু লোকেরা সেস্থানে আসিয়াবসিল বিজ্ঞেরা তাহা কহি
 য়াছেন উৎসবেতে ও বিপ্লবকালেতে ও সংগ্রামেতে ও দুর্ভি
 ক্ষেতে ও দেশোপদ্রবেতে ও রাজস্থানেতে ও শ্মশানেতে যে

থাকে সেই মিত্র তাহাতে কপিলনামে স্নাতক বলিলেন অল্প
কোণ্ডিন্য তুইমূৰ্খ এই নিমিত্তে রোদন করিতেছিস শুন মাতৃ
কতক ক্রোড়করণের পূর্বে যেমন খাদী কোলে করে এমনি
জন্মিবামাত্র সকলের পুথমত অনিত্যতা অঙ্কেকরে পশ্চাৎ
জননী পুভৃতির ক্রোড়ে করে হাতে শোকের বিষয় কি।

The frog, who was not a little pleased to find his enemy in distress, desired him, by all means, to make him acquainted with the cause of his trouble. You must know then, said the serpent, that here in the town of Brāhman-pura, the son of one Kown-dinya a Brāhman, in the twentieth year of his age, and endued with every virtue and accomplishment, by the will of fate, was sometime since bitten by cruel me! His father beholding his beloved son Susila, for that was his name, lying dead, fell mad for grief, and rolled himself upon the ground. In the mean time, the people of the city, his kindred, friends, and connexions, all came and sat down upon the spot where he lay.—They say,

He is a friend who attendeth one at a feast, in affliction, in famine, in disputing with an enemy, at the king's gate, and in the cemetery.

Amongst the rest, there was a certain pilgrim, whose name was *Kapila*, by whom the father of the youth was thus addressed: art thou deprived of reason, Kowndinya, that thou thus lamentest the dead? Hear me!

First, the nurse lays the new born child in her lap (there is no stability): and then the mother. What use is there in sorrow?

ତଥା ॥ ଶ୍ଵାଗତାଃ ପୃଥିବୀପାଳାଃ ସମୈବ୍ୟବତ୍ତବାହନାଃ ।
 ବିଧୋଷସାହିଣୀ ଯେବାଂ ଭୂମିରଧ୍ୟାପି ତିଷ୍ଠତି ॥ ଅପରଞ୍ଚ ॥
 କାୟଃ ସନ୍ନିହିତାପାୟଃ ସମ୍ପଦଃ ପଦମାପଦାଂ । ସମାଗମାଃ
 ସାପଗମାଃ ସର୍ବମୁତ୍ପାଦିଭଞ୍ଜୁରଂ ॥ ପ୍ରତିକ୍ଷଣମୟଂକାୟଃ ଶ୍ଵୀୟ
 ମାଣୋନ ଶୁଦ୍ଧ୍ୟତେ । ଆମକୁଲ୍ମଭବାନ୍ନସ୍ତ୍ୟୋ ବିଶୀର୍ଣ୍ଣଃ ସନ୍ ବି
 ଭାବ୍ୟତେ ॥ ଆସନ୍ନତରତାମେତି ଶୃତ୍ୟୁର୍ଜ୍ଜନୋର୍ଦିନେ ଦିନେ । ଆତ୍ମା
 ତଂ ନୀୟମାନସ୍ୟ ବଧ୍ୟସ୍ତେବ ପଦେ ପଦେ ॥ ଅନିତ୍ୟଂ ଯୌବନଂ ରୂପଂ
 ଜୀବିତଂ ଦ୍ରବ୍ୟସଞ୍ଚୟଃ । ଐଶ୍ଵର୍ଯ୍ୟଂ ପ୍ରିୟସଂବାସୋମହୋତ୍ତରଂ ନ
 ପଞ୍ଚିତଃ ॥ ଯଥା କାଞ୍ଚିତ୍ କାଞ୍ଚିତ୍ ସମେ ଯାତାଂ ମହୋଦଧୌ ।
 ସମେତ୍ୟ ଚ ବ୍ୟପେୟାତାଂ ତଦ୍ଭଞ୍ଜୁତସମାଗମଃ ॥ ଯଥା ହି ପଥକଃ
 କଞ୍ଚିଚ୍ଛାୟାମାଶ୍ରିତ୍ୟ ତିଷ୍ଠତି । ବିଶ୍ରାନ୍ତ୍ୟ ଚ ପୁନର୍ଗଚ୍ଛେତ୍ତଦ୍ଭଞ୍ଜୁ
 ତସମାଗମଃ ॥ ଅନ୍ୟଞ୍ଚ ॥ ପଞ୍ଚଭିର୍ନିର୍ମିତେ ଦେହେ ପଞ୍ଚତ୍ଵଞ୍ଚ ପୁନ
 ଗତେ । ଶ୍ଵାଂ ଶ୍ଵାଂ ଯୋନିମନୁପ୍ରାପ୍ତେ ତତ୍ର କା ପରିବେଦନା ॥ ❀

ଏବଂ ଜେନାମାଗନ୍ତୁ ବାହନ ମହିତପୃଥିବୀ ପତିରା କୋଥାସ୍ତ୍ର ଗିସ୍ତା
 ଛେନ ଯାହାରାଦିଗେର ବିଚ୍ଛେଦ ମାକ୍ରିଶି ପୃଥିବୀ ଅନ୍ୟାପି ଆଛେ
 ନ । ଅପର ଶରୀର ଗୁଣ କରିନେ ଅବଶ୍ୟାନଶ୍ଚେ ହସ୍ତ ଆର ମମ୍ପତିହି
 ବିପତ୍ତିର ଶ୍ଵାନ ଆର ଧନାଦିର ଉପାର୍ଜନହେ ବାସ୍ତ୍ର ଏହି ଶରୀର ଅନୁ
 କ୍ରମ କ୍ରିମି ହେତେଛେ ହେବା ବୁଦ୍ଧା ଯାସ୍ତ୍ର ନା କିନ୍ତୁ ଜନମଧ୍ୟାସ୍ତ୍ର ଆନ
 କଳନେର ନାସ୍ତ୍ର ବିଶୀର୍ଣ୍ଣ ହେୟା ନଶ୍ଚେ ହସ୍ତ ନୀୟମାନ ହସ୍ତବା ପଞ୍ଚର
 ମାଦେଂ ଛେଦନ ସେମନ ନିକଟ ହସ୍ତ ଏହିକର୍ମ ସମ ଦିନେଂ ପ୍ରାଗିର

নৈকটা পাইতেছেন । যৌবন রূপ জীবন ধনসম্বল ঐশ্বর্য
মিত্রের সহিত আলাপ এসকলই অস্থির এই হেতুক জ্ঞানবান
লোক তাহাতে মুগ্ধ হয় না । সমুদ্রেতে নানা দেশস্থ দুই
কাণ্ডেতে যেমন মিলন হয় মিলিয়া অন্য দেশে যায় সেই
পুকার পুণিরদের সমাগম অপর পঞ্চভূত করণক নির্মিত
যে কলেবর সে পুনর্বীর পঞ্চভূ পাইলে পরে আপন কাল
গেতে লীন হয় তাহাতে শোক কি ।

Where are those sovereigns of the world, with all
their numerous armies and splendid equipage, of whose
departure the earth, even now, beareth testimony?

In the body is concealed its decay, prosperity is suc-
ceeded by adversity, and our meetings are soon follow-
ed by separations. Thus every thing in nature is pro-
duced with that which will destroy it!

Is not this body seen to waste, perceptibly, away? Is
not its gradual consumption plainly to be discovered,
as of water standing in a crude vessel?

Youth and beauty, riches and stores of worldly goods;
with the society of those we love, and even life itself,
are all of short duration! Then not the wise man therein
be fascinated.

As two planks floating on the surface of the mighty
receptacle of the waters, meet, and having met, are se-
parated for ever; so do beings in this life come together,
and presently are parted.

Upon the reduction of a body composed of five elements
to those five principles, and each of those elements to
its own womb, what cause is there for lamentation?

আঁধারতঃ কুরুত জন্তুঃ সম্বন্ধান মনসঃ প্রিয়ান । তাব
 ন্তাপি স্তিলন্ত্যন্তে হৃদয়ে শোকশঙ্কবঃ ॥ নাচমত্যন্তস
 ম্বাসিলভ্যতে যেন কোনচিত্ । অপি স্তেন শরীরেণ কিমুতা
 ন্যেন কোনচিত ॥ অপি চ ॥ সংযো গোহি বিয়োগস্য সংসূচ
 যতি সম্ভব । অনতিক্রমণীয়স্য জন্মমৃত্যোরিবামমং ॥
 আপাতরমণীয়ানং সংযোগানং প্রিযৈঃ সহ । অপথ্যানা
 নিবান্নানং পরিণামোতিদারুণঃ ॥ অপরঞ্চ ॥ ব্রজন্তিন
 নিবর্তন্তে শ্রোতাংসি সরিতাং যথা । আচুরাদাচ মর্ত্যানাং
 তথারায়হনী সদা ॥ সুখাস্বাদপরোচক্ষুঃ সংসারে সত্স
 মাগমঃ । সবিযোগাবসানত্বাৎ দুঃখানাং ধুরি যুজ্যতে ॥
 অতএব হি নেচ্ছন্তি সাধবঃ সত্সমাগমং । যদ্বিযোগাসি
 লুনস্য মনসোনাস্তি ভেষজং ॥

লোক পুণ্যাদি যত সম্বন্ধকে মনের পিয় করে সেই সকল
 সম্বন্ধকে পুণ্যাদির নাশ হইলে শোকরূপ শঙ্কু করিয়া পুতি
 দ্বা রাখে । এতাদৃশ অত্যন্ত পুণ্য যে কোন লোকের সহিত
 কর্তব্য নয় নিজ দেহের সহিত ও কর্তব্য নহে অন্যের সঙ্গে
 কি এবং অপরিহার্য জন্ম মৃত্যুর সমাগম যেমন অবশ্য
 হয় এই রূপ পুণ্য মিত্রাদির মিলন তাহরদিগের বিচ্ছেদ অব
 শ্য করে । পুণ্যের সহিত আপাততঃ সুখাবহযেমন তাহার
 শেষ কঠিন হয় যেমন জপথ্য অগ্নের পরিণাম দারুণ অগ্নি
 নদী সকলের শোভ যে পুকুর বহিরা যায় পুনঃ করিয়া

॥ द्वितीयोपदेशः ॥

আইসে না সেই পুকার রাত্রি ও দিন মনুষ্যের দিগের পর
নাযু লইয়া যায় পুনর্বার আইসে না পৃথিবীতে সুখদায়ক
যে উত্তম লোকের সহিত মিলন সে পশ্চাৎ বিচ্ছেদহেতুক
দুঃখসমূহ দায়ক হয় এই নিমিত্তে উত্তম লোকেরা সাধু
লোকের সমাগম বাঞ্ছা করেনা যেহেতুক যাহার বিচ্ছেদ
কপ খড়্গেতে ছিন্ন যে চিত্ত তাহার ঔষধ নাই।

As many tender connexions as the animal man formeth for himself, so many thorns of sorrow are there ingrafted in his heart.

This is not a place for any one long to cohabit with another; nay, not even with his own body: then how can he expect it with another?

The dissolution of a body foretelleth a new birth: thus the coming of death, which is not to be passed over, is as the entrance into life.

The dissolution of the delightful connexions we form with those we love, is as dreadful as the total change to those who are become incurably blind.

But as brooks run on to join their rivers, and do not turn back; so the days and nights seize mortals' lives, and proceed eternally.

The society of good, which contributeth so much to the relish of happiness in this world, is joined in the yoke of troubles, because its end is separation.

Hence it is that the wise avoid the acquaintance of good men; for there is no remedy for the mind afflicted with the sorrow of separation.

সুকৃতান্যপি কৰ্ম্মাণি রাজভিঃ সগরাদিভিঃ । অথ না
 ন্যেব কৰ্ম্মাণি তে চাপি প্রলয়ং গতাঃ ॥ সচ্ছিন্ত্য সচ্ছিন্ত্য
 তমুগ্রদণ্ডং মৃত্যুং মনুষ্যস্য বিচক্ষণস্য । বর্ষাম্বুসিক্তা
 ইব চৰ্ম্মবন্ধাঃ সৰ্ব্বপ্রযত্নাঃ শিথিলীভবন্তি ॥ যামেব
 রাত্রিं প্রযস্মাসুপৈতি গৰ্ভে নিবাসী নরবীরলোকঃ । ততঃ
 প্রমৃত্যুস্বলিতপ্রয়াসঃ স প্রত্যহং মৃত্যুসমীপমেতি ॥ অতঃ
 সংসারং বিচারয় শোকোऽয়মজ্ঞানস্য প্রপঞ্চা ॥ পশ্য অজ্ঞানং
 কারণং ন স্যাদ্বিযোগো যদি কারণং । শোকো দিনেষু গচ্ছ
 তু বর্দ্ধতাং পয়াতি কিং ॥ তদব্রাহ্মানমনুসম্যেহি শোক
 চৰ্চ্চাং পরিহর ॥ যতঃ ॥ অকাণ্ডপাতজাতানামস্তাণাং
 মৰ্ম্মভেদনাং । গাঢ়শোকপ্রহারাণামচিন্তেব মহৌষধী ॥
 ততস্তদ্বচনং নিশম্য প্রবুদ্ধ ইব কৌণ্ডিন্য উত্থায়া ব্রवीত

সগর পুত্ৰীতি রাজারা সুকৃত কৰ্ম্ম করিয়াছিলেন অনন্তর
 সেই সকল ক্রিয়া এবং সেই সকল রাজারা ও বিনাশ
 পাইয়াছেন । বৃষ্টির জলেতে আর্দ্র হইয়া চৰ্ম্ম বন্ধন যজ্ঞপ
 শিথিল হয় তজ্জপ সেই উগ্ৰদণ্ড যমকে স্মরণ করিয়া সাধু
 লোকেরদের পুয়াস সকল শিথিল হয় উত্তম লোকগর্ভেতে
 বাস করিয়া পুথন রাত্রিতে যে দুঃখ পায় সেই অবধি ঐ
 লোক আয়াসশালী হইয়া পুতিদিন মৃত্যুতুল্য দুঃখ সহকরে
 অতএব সংসার বিবেচনা কর এই শোক অজ্ঞানের কার্য্য ।
 দেখ অজ্ঞান যদি শোকের হেতু না হয় বিচ্ছেদই কারণ হয়

তবে অধিক দিন গেলে পর শোক বাড়ুক যায় কেন সেই
হেতুক এখন আত্মানুসন্ধান কর শোক চর্চা পরিত্যাগ কর
যেহেতুক কাণ্ডপতন ব্যতিরেকে জাত অথচ নন্দ্যছেদি এত
দূশ যে নিবিড় শোকরূপ অস্ত্র পুহার তাহার ভাবনা না
করাই উত্তম ঔষধ। তদনন্তর তাহার বাক্য শুনিয়া সুপ্তো
থিতের ন্যায় কৌণ্ডিন্য উঠিয়া বলিলেন ।

Many noble and pious works were performed by Sa-
gara and other ancient kings, but, alas! both they and
their works are gone to decay.

When he hath considered, and reconsidered, that se-
vere punishment death, all the endeavours of the wit of
man become as lax as skins of leather sprinkled by the
rain!

Every hero of the human race, from the first night of
his residence in the womb, day by day approacheth death.

Then pay no attention to this world, continued the
good pilgrim, for sorrow is a proof of ignorance. Observe,

If separation be the cause, and ignorance be not the
cause, how is it, that after days have passed away, sor-
row is changed into childishness?

Wherefore, compose thy troubled mind, and dispel all
thought of grief; for they say,

Not to think is the grand remedy, when our children
are untimely born, and against those weapons of deep
sorrow, which penetrate the heart.

The afflicted Kowndinya, roused by these words, got
up as it were from trance, and cried,—

তদস্মিন্দানীং গৃহনরকবাসেন বনমেব গচ্ছামি ॥
 কপিলঃ পুনরাহ । বনেপি দোষাঃ প্রবলন্তি রাগিণাং গৃহে
 পি যচ্ছেন্দ্రిয়নিগ্রহস্থলঃ । অকুস্তিতে কৰ্ম্মাণি যঃ প্রবৰ্ত্ততে
 নিবৃত্তরাগস্য গৃহং তপোবনং ॥ যতঃ ॥ দুঃখিতোপি চরে
 দ্বৰ্ম্মং যত্র কুত্রাশ্রমে রতঃ । স্বপ্নঃ সৰ্বেষু ভূতেষু লিঙ্গং ধৰ্ম্ম
 কারণং ॥ উক্তম্ ॥ দৃশ্যর্থং ভোজনং যेषাং সন্তানার্থম্
 মৈথুনং । বাক্ সত্যবচনার্থায় দুর্গাণ্যপি তরন্তি তে ॥ তথা
 হি ॥ আত্মা নদী সন্ধ্যমপুণ্যতীৰ্থাঃ সত্যোদকা মীলত
 টাদ্যোর্মিঃ । তত্রাভিষেকং কুরু পাণ্ডুপুত্র ন বারিণা শু
 দ্ধ্যতি চান্তরাত্মা ॥ বিশেষতম্ ॥ জন্মমৃত্যু জীরাভ্যাধি
 বেদনাভিরূপদ্রুতং । সংসারমিদমুত্থন্নমসারং ত্যজতঃ সুখং

এই নিমিত্তে এখন সংসাররূপ নরকে বাস করা বৃথা অল্প
 গ্যেতে গমন করিব কপিল পুনর্বার কহিলেন রাগালোকের
 দের কাননেতে ও দোষ পুত্রব হয় গেছেতে ও পঞ্চ ইন্দ্রিয়ের
 যে দমন করা সেই তপস্যা যে ব্যক্তি অনিন্মিত কার্যেতে
 পুৰ্ব্বত হয় সেই বৈরাগি লোকের গৃহই তপোবন যেহেতুক
 সকল পুণিতে তুল্যদুষ্টা লোক যে কোন আশ্রমেতে থাকি
 য়া দুঃখিত হইয়া ও ধৰ্ম্মাচরণ করে কেন না রক্তবস্ত্র ধারণা
 দিকপ চিহ্ন পুণ্যের জনকনহে । বিজ্ঞকর্তৃক তাহা কথিত
 আছে পুণ্যধারণের জন্যে যাহারদিগের ভোজন এবং অপ
 তোর কারণ জীসংসার এবং যাতার্থের নিমিত্তে বাক্য তাহা

রা বিপৎ ও তরে তাহারপুমাণ কহিতেছেন আত্মা নদী স্ব-
রূপ ইন্দ্রিয় নিগূহ পুণ্য তীর্থ স্বরূপ শীল তট স্বরূপ দয়া তর-
ঙ্গ স্বরূপ হে যুধিষ্ঠির এতরূপ নদীতে অভিষেক কর অন্তঃ-
করণ কেবল জলেতে স্বচ্ছ হয় না বিশেষতঃ জন্ম মৃত্যু
জরা রোগ ব্যথা ভয় এই সকলেতে উপক্রম যে এই অসার
সংসার ইহাকে ত্যাগ যে করে তাহারি সুখ হয় ।

Since it be so, enough of dwelling in the hell of houses!
I will presently retire into the wilderness! Hold, my son,
replied the benevolent Kapila.

Those who yield to their passions will experience evils,
even in the wilderness. To restrain the five organs of
perception, even in a house, is doing penance. The hab-
itation of him whose passions are well regulated, and
who proceedeth but in such actions as are irreproach-
able, is as the wilderness of penitence.

For they say,

The afflicted even should practise the duties of religi-
on, whatever mode of life they may choose, and wher-
ever their abode may be; and our conduct should be
equal unto all beings, for distinctions are not authorised
by religion.

Again:

Those who eat but to support life, who cohabit but
for the sake of progeny, and who speak but to declare
the truth, surmount difficulties.

Again:

Suppose thyself a river and a holy pilgrimage in the
land of Bhārata, of which truth is the water, good ac-
tions the banks, and compassion the current; and then,
O son of Pāndu, wash thyself therein, for the inward
soul is not to be purified by common water.

And thou shouldst pay particular attention to this saying:

There is ease for him who quitteth this world, which is
totally destitute of good, and overwhelmed with birth,
death, old age, sickness, and sorrow.

॥ ଯତ: ॥ ଦୁ:ଖମେବାସ୍ତି ନ ସୁଖं ଯସ୍ମାନ୍ନଦୁପଲବ୍ଧ୍ୟତେ ।
 ଦୁ:ଖାର୍ତ୍ତସ୍ୟ ପ୍ରତୀକାରେ ସୁଖସଂଜ୍ଞା ବିଧିୟତେ ॥ କୌଣ୍ଡିନ୍ୟୋ
 ବ୍ରୁତେ ଏବମେବ । ତତୋଽହଂ ତେନ ଶୋକାକୂଳେନ ବ୍ରାହ୍ମଣେନ ଶମ୍ଭ୍ର:
 ଯଦଦ୍ୟାରମ୍ଭ୍ୟ ମଣ୍ଡୁକାନାଂ ବାହନଂ ଭବିଷ୍ୟତୀତି । କପିଳୋ
 ବ୍ରୁତେ ସମ୍ପ୍ରତ୍ୟୁପଦେଶାସହିଞ୍ଚୁର୍ଭବାନ୍ ଶୋକାବିଘ୍ନଂ ତେ ହୃଦୟଂ
 तथापि कार्यं शृणु । सङ्गः सर्वात्मना त्याज्यः स च त्यक्तुं
 न शक्यते । स सङ्गिः सह कर्त्तव्यः सतां सङ्गो हि भेषजं
 ॥ अन्यच्च ॥ कामः सर्वात्मना हेयः सचोद्घातुं न शक्यते ।
 स्वभार्यां प्रति कर्त्तव्यः सैव तस्य हि भेषजं ॥ एतच्छ्रुत्वा
 स कौण्डिन्यः कपिलोपदेशाभृतप्रश्नान्तशोकानल्लोयथा
 विधि दण्डग्रहणं कृतवान् अतो ब्राह्मणशपान्मण्डू
 कान् वोढुमत्र तिष्ठामि । *❀*❀*❀*❀❀

ସେହେତୁକ ଦୁଃଖଇଁ ଆଛି ସୁଖ ନାହିଁ ସେ ଗିଗିତେ ଦୁଃଖଇଁ ଅନୁ
 ଭୂତ ହଇଁତେଛେ ଦୁଃଖେର ଅନୁଭବ ସେନା କରା ତାହା କେହି ସୁଖ
 କରିয়া ବଳି । କୌଣ୍ଡିନ୍ୟା ବଳିତେଛେନ ଏହି ବଟେ ୨ । ତଦ
 ନନ୍ତର ସେହି ଶୋକାର୍ତ୍ତ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଆମାକେ ଅଭିଶାପ କରିଲେନ
 ସେ ଆଜି ଅବଧି ତୁମ୍ଭି ଭେକେଦେର ବାହନ ହଇବା । କପିଳ ବଳି
 ତେଛେନ ଈଦାନୀ ତୋମାର ଅନ୍ତଃକରଣ ଶୋକାବିଘ୍ନେ ହଇଯାଛେ
 ଅତଏବ ଆମାର ଉପଦେଶ ଗ୍ରହଣ କରିତେ ପାର ନାହିଁ तथापि
 बाह्य कर्त्तव्य ताहा ଶୁନ ସର୍ବପୁକାରେ ଆସକ୍ତି ତ୍ୟାଗ କରିବେକ
 किञ्च ताहाକେ ତ୍ୟାଗ କରିତେ ଶକ୍ତ ହସ୍ତ ନା ଅତଏବ साधूने

কের সঙ্গ করা উচিত যেহেতুক সতের সঙ্গই ঔষধ । অপর
অভিলাষ সর্বথা ত্যাগ করণোপযুক্ত যদি তাহাকে ত্যাগ ক
রিতে সমর্থ না হয় তবে নিজ পত্নীর পুতি করিবেক যেহে
তুক সেই তাহার ঔষধ । ইহা শুনিয়া সেই কৌণ্ডিন্য কপি
লের উপ দেশরূপ অনূতেতে নষ্ট শোকান্নি হইয়া শাস্ত্রানু
সারে সম্যাস গ্রহণ করিলেন । অতএব ভূদেবের অভিশাপ
প্ৰযুক্ত মণ্ডুকদিগকে বহিবার নিমিত্তে এ স্থানে আছি ।

Pain is a thing of certain existence, but not ease; whence it is observed, that the term ease is applied as a sort of remedy for one in pain.

To all this, continued the serpent, the afflicted father only replied,—‘Even so it is’ but presently after the poor Brāhman in the height of his sorrow denounced this curse against me, the author of his trouble,—that henceforward, I should be doomed to carry frogs about upon my back as a beast of burden! After which, Kapila said again —Your heart is still tormented with sorrow, and my instructions have been of no avail to you, but hear what ought to be done

Society should be avoided with all the efforts of the mind, but if it be not in one’s power to avoid it, acquaintance should be formed with the good alone, for the company of good men is the remedy.

Again.

The tender passion should be avoided with all the resistance of the mind, but if it be not possible to conquer it, it should be indulged towards a wife alone, for she is the proper remedy

Kowndinya having heard this, and being by the salutary counsel of Kapila quite cured of his affliction, took the staff according to the usual forms; and poor I, concluded the serpent, he here under the power of a Brāhman’s curse ready to carry any frog that shall choose to mount upon my back!

ଅନନ୍ତରାଁ ତେନ ଶ୍ଵଞ୍ଜୁକେନ ଗତ୍ବା ମଞ୍ଜୁକନାଥସ୍ୟ ଜନପଦନା
 ଶ୍ଵେତେ ତତ୍ କଥିତଂ ତତୋସାବାଗତ୍ୟ ମଞ୍ଜୁକନାଥସ୍ୟ
 ସର୍ପସ୍ୟ ପୃଷ୍ଠମାରୁଢ଼ବାନ୍ ସର୍ପଂ ସର୍ପସ୍ୟ ପୃଷ୍ଠେ ଶ୍ରୀତ୍ବା ଚିତ୍ରପଦ
 କ୍ରମଂ ବନ୍ଧାମ ପରେଦ୍ଵ୍ୟସ୍ଥଲିତୁମସମର୍ଥସ୍ୟ ମଞ୍ଜୁକନାଥୋଽବଦତ୍
 କ୍ରିମୟ ଭବାନ୍ ମନ୍ଦଗତିଃ ସର୍ପୋବ୍ରୁତେ ଦେବ ଆହାରବିରହାଦ
 ସମର୍ଥାସ୍ମି । ମଞ୍ଜୁକନାଥୋଽବଦତ୍ ଅକ୍ଷଦାଞ୍ଜୟା ମଞ୍ଜୁକାନ୍
 ଶତ୍ରୁତତୋଽପହୀତୋଽୟଂ ମହାପ୍ରସାଦ ଇତ୍ୟୁକ୍ତା କ୍ରମଶଃ ମଞ୍ଜୁ
 କାନ୍ ଶ୍ରୀଦିତ୍ବାନ୍ ଅଥ ନିର୍ମଞ୍ଜୁକଂ ସରୋବିଲୋକ୍ୟ ମଞ୍ଜୁ
 କନାଥୋପି ତେନ ଶ୍ରୀଦିତଃ । ଅତୋଽହଂ ବ୍ରବୀମି ଶ୍ରୀକ୍ଷ୍ମେନାପି
 ବହେଽଷ୍ଟ୍ରୁନିତ୍ୟାଦି । ଦେବ ଯାତ୍ରିଦାନୀଂ ପୁରାଟ୍ଠାୟାନ
 କଥନଂ ସର୍ବଥା ସନ୍ଧ୍ୟୋଽୟଂ ହିରଣ୍ୟଗର୍ଭରାଜା ସନ୍ଧ୍ୟା
 ଯାମିତି ମେ ମତିଃ । ରାଜୋବାଚ କୋଽୟଂ ଭବତୋବିଚାରଃ

ତାହାର ପର ଯେହି ଭେକ ଗିୟା ଜନପଦ ନାମେ ମଞ୍ଜୁକରାଜେର
 ଅଗ୍ରେତେ ତାହା କହିଲ ତଦନନ୍ତର ଏ ମଞ୍ଜୁକନାଥ ଆସିଲା ଯେହି
 ସର୍ପେର ପୃଷ୍ଠେତେ ଆରୋହଣ କରିଲ ଏ ସର୍ପ ତାହାକେ ପୃଷ୍ଠେତେ
 କରିଲା ବିଚିତ୍ର ଗତିତେ ଭ୍ରମଣ କରିତେ ନାଗିଲ ପରଦିବସ
 ତାହାକେ ଚଳିତେ ଅନଳୁ ଦେଖିଲା ମଞ୍ଜୁକନ୍ୟାସୀ ବଳିଲ ଅଦା
 କେନ ତୁମି ଗମନ ମର୍ତ୍ତ୍ୟସର୍ପ ବଳିତେଛେ ହେ ମହାରାଜ ଅନାହାର
 ପ୍ରସୁକ୍ତ ଅମର୍ତ୍ତ୍ୟ ହେୟାହି ଭେକରାଜ କହିଲେନ ଆମାର ଆଜ୍ଞା
 ତେ ମଞ୍ଜୁକ ଭୋଜନ କର ତଦନନ୍ତର ଆମି ବଡ଼ ଅନୁଗ୍ରହ ପାହି
 ଜାମି ହେବା କହିଲା ଅନ୍ତେ ଭେକେରାଜିକେ ଥାହିଲ ତାହାର

পর সে নির্মগ্ন কজলাশয় দেখিয়া মগ্ন ক রাজাকে ওখাই
ল। অতএব আমি বলি সুবোধ লোক নিজ কার্যের নিমি
ত্তে শত্রুকে ও স্কন্ধেতে করিয়া ইত্যাদি। হে মহারাজ এখন
ইতিহাস কখন যাউক ঐ হিরণ্যগর্ভ রাজা সর্বপুকারে সন্ধের
এই আশ্রয়স্থান। রাজা বলিলেন তোমার এ পরামর্শ কি।

The frog who had been attentive to this long story, upon hearing the last words of the serpent, went away to inform the chief of the pool of it, who soon after making his appearance, the serpent placed him upon his back and carried him about, keeping a gentle easy pace. The king of the frogs was so pleased with his ride, that he came again the next day; but upon finding the serpent unable to carry him, and asking him what was the cause of his weakness, the artful animal replied, that he was totally deprived of his strength for want of food. Upon this the frog ordered him to be fed, every day, with as many of his subjects as he might choose; and the serpent having, by degrees, eaten all the frogs which were to be found in the pond, at length devoured his benefactor. I repeat, therefore, said the crow,—*When a wise man &c.*

Let us have done with the repetition of old stories, observed the minister. In my opinion, said he, Hiranyagarbha is worthy of our alliance, and therefore I advise, that a treaty be formed with him. Sir, said the king, is this your opinion?

যতোজিতস্তাবদ্যমস্মাভিস্তুতোযদ্যস্মত্বেবচা বসতি
 তদাস্তাং নোচেদ্বিগৃহ্যতাং । অত্রান্তরে জম্বুদ্বীপাদাগত্য
 শুকনোক্তং দেবসিংহলদ্বীপস্য সারসো রাজা সंप্রতি জম্বু
 দ্বীপমাক্রম্যাবতিষ্ঠতে । রাজা সসম্ভ্রমং ব্রূতে কিং কিং শুকঃ
 পূর্বোক্তং কথয়তি গৃধ্রঃ স্বাগতমুবাচ সাধুরেচক্রবাক
 মদ্বিন সর্ব্বজ্ঞ সাধু সাধু । রাজা সক্রোপমা হ আস্তাং
 তাবদ্যং গত্বা তমেব সমূলমুন্মূলয়ামি । দূরদর্শো বিহ
 স্যাহ । ন শরন্মেষবৎ কার্য্যং বৃথৈব ঘনমর্জিতং । পরস্যার্থ
 মনর্থম্ভা প্রকাশয়তি নো মহান ॥ অপরঞ্চ । একদা ন
 বিগৃহীয়াৎ বজ্রবাজাতিঘাতিনঃ । সদর্পোপ্যুরংগঃ কীটৈ
 র্বজ্রমিনীশ্যতে ধ্রুবং ॥ দেব কিমিতি বিনা সম্ভানং গমন
 মস্তু যতস্তদাস্মত্বস্বাত্ প্রকোপোঽনেন কর্ত্তব্যঃ । *

যেহেতুক আগরা উহাকে জয় করিয়াছি সেই হেতুক
 যদ্যপি আমাদেৱ অনুগত হইয়া বসতি করে তবে থাকক
 নতুবা যুদ্ধ করক । ইতোমধ্যে জম্বু দ্বীপহইতে আসিয়া শুক
 কহিল হে রাজাধিরাজ সিংহলদ্বীপের সারস রাজা সম্প্র
 তি জম্বুদ্বীপকে আক্রমণ করিয়া আছে । রাজা ব্যস্ত হইয়া
 বলিতেছে কি কি শুক পুনর্বার তাহা কহিতেছে । গৃধ্র
 অন্তঃকরণে কহিতেছেন সাধু রে চক্রবাক অমাত্য সর্ব্বজ্ঞ
 সাধু । নৃপতি সরোষ হইয়া কহিলেন এই দ্বিৱণ্যগর্ভ
 থাকুক সম্প্রতি যাঁইয়া তাহারেই মূলের সহিত উন্মূলন
 করি । দূরদর্শী হাস্য করিয়া কহিলেন শরৎ কালীন মেঘে

রন্যায় নিরর্থগর্জন করা উচিত নহে উত্তম লোক পরের কার্যকে কিম্বা অকার্যকে পুকাশ করে না । অপর রাজা এক কালেতে অনেক বিপক্ষের সহিত সংগ্রাম করিবে না কেন না বলবান সর্প ও বহুতর কীটকর্ক অবশ্য নষ্ট হয় হে ভূপাল মিলন ব্যতিরেকে কি গমন আছে যেহেতুক আমারদের পশ্চাৎ ঐ হিরণ্যগর্ভ ক্রোধ করিবেক ।

He has been defeated by us, and therefore he is at liberty to remain where he is, provided he consent to be our vassal; otherwise I command him to be attac'ed! Just as the king said this, the parrot came in from Jambu-dwipa, and informed his master the peacock, that the Sārasa, who was king of Singhala-dwipa, had lately invaded his country, and was still there What is it thou sayest? cried the king in great confusion. The parrot repeated the news just before mentioned. Well done, minister Chakravāka! said the vulture within himself, well done! Whilst the peacock in great anger cried,—Let him stay there till I come, and I will extirpate him with his whole generation! To which the minister *Far-see* smiling, replied,

There is no necessity for imitating an autumnal cloud! The thunder of the heavens our chief displayeth, whether on some account, or no account, is of equal inefficacy.

They say,

A king should not dispute with too many enemies at a time; for even the proud serpent is inevitably destroyed by large swarms of wasps.

Are we then, Sir, continued the minister, to march back without concluding a peace? If we do, said he, I think Hiranya-garbha will assail our rear.

অপরঞ্চ । যোঽর্থতত্ত্বমবিজ্ঞায় ক্রোধস্যৈব বশং গতঃ । স
 তথা তপ্যতে মূढোব্রাহ্মণেনকুলাদযথা ॥ রাজাহ কথমে
 ততাদূরদর্শী কথয়তি অস্থ্যজ্জয়িন্যাং মাধবো নাম বি
 প্রসস্য ব্রাহ্মণী প্রসূতা বালাপত্যস্য রক্ষার্থং ব্রাহ্মণম
 বস্থাপ্য স্নাতুং গতা অথ ব্রাহ্মণায় রাজঃ পার্বণশ্রাদ্ধং
 দাতুমাচ্ছানমাগতং তচ্ছুত্বা ব্রাহ্মণঃ সহজদারিদ্রাদচি
 ন্তয়ত্ যদি সত্বরং ন গচ্ছামি তদান্যঃ কিস্তি শ্রুত্বা
 শ্রাদ্ধং গ্রহীষ্যতি । যতঃ । আদানস্য প্রদানস্য কৰ্ত্ত
 ব্যস্য চ কৰ্ম্মণঃ । চিপ্রমক্রিয়মাণস্য কালঃ পিবতি
 তদ্রসং ॥ কিন্তু বালকস্তাচ রক্ষকো নাस्ति তত্ কিঙ্ক
 রামি যা তু চিরকালপালিতমিসং নকুলং পুত্রনির্বিশেষং
 বালকরক্ষায়াং ব্যবস্থাপ্য গচ্ছামি তথা কৃত্বা গতঃ ।

অপর যে ব্যক্তি যথার্থ নিকপণ না করিয়া কোপের
 বশাভূত হয় সে লোক ঐ কপ উত্তপ্ত হয় যেমন গূর্থবুদ্ধি
 নহন ইহাতে ব্যাভল ইহিয়াছিল । রাজা কহিলেন এ কি
 পুকার দূরদর্শী কহিতেছে । উজ্জয়িনীতে মাধবনাম এক
 বুদ্ধি থাকেন তাহার বুদ্ধি শিশুসন্তানের রক্ষার কারণ
 দ্বিজকে রাখিয়া স্নান করিতে গেলেন । অনন্তর বুদ্ধিকে
 রাজার পার্বণ শ্রাদ্ধে ভোজন করিবার নিমিত্তে আহ্বান
 আইল তাহা শুনিয়া বুদ্ধি দারিদ্র্য স্বভাব প্রযুক্ত ভাবনা
 করিলেন যদি শীঘ্র না যাই তবে অন্য কেহ শুনিয়া শ্রাদ্ধীয়

দুবা গৃহণ করিবেক যেহেতুক ধনাদির গৃহণ ও ধনাদির
হান ও অন্য২ করণোপযুক্ত কর্ম এই সকলকে যদি শীঘ্র
না করে তবে কাল তাহারদিগের রস পান করেন এ স্থানে
বালকের রক্ষক নাই এই নিমিত্তে কি করি যাউক এখন ন
জনকে পুত্র তুল্য করিয়া বহুকাল পালন করিয়াছি অতএব
শিশুরক্ষণেতে স্থাপন করিয়া যাই তাহা করিয়া গেলেন ।

He who falleth into the power of anger before he hath made himself acquainted with another's merits, may have cause to be sorry for it; like the foolish Brahman after he had killed his weasel

How was that? demanded the king; and his minister Far-see related the following story:

FABLE XIII.

AT Ujjayini there lived a Brāhman whose name was Mādhava His wife having been lately brought to bed, left her husband in charge of the infant, whilst she went to perform her ablutions As soon as she was gone, the king sent for the Brāhman to perform the ceremonies of the *parvana shraddha* (or rites) to the manes of his ancestors The Brāhman, on account of his poverty, began to reflect in this manner: If I don't go directly, said she, some one else, having heard of it, will go and take away my share of the good things:—They say,

Time drinketh up the essence of every work which should be done, and is not done quickly, whether it be an act of receiving, or an act of giving away.

But, continued he, I have no one to take care of the child, then what am I to do, unless, indeed, I place this my long-beloved weasel there, who is as dear to me as the child itself, and then venture to go? In short, he did so, and went his way to the king's feast.

মতস্তেন নকুলেন বালকসমীপমাগচ্ছন্ কৃষ্ণসর্পে
 দৃষ্ট্বা ব্যাপাद्यকোপাত্ খণ্ডং খণ্ডং কৃत्वा खादितः ततोऽ
 सौ नकुलोब्राह्मणमायान्तमवलोक्य रक्तविलिप्तमुख
 पादः सत्वरमुपागम्य तच्चरणयोर्लुलोठ ततःस विप्रस्तथा
 विधं तं दृष्ट्वा बालकोऽनेन खादितइत्यवधार्य नकुलं
 व्यापादितवान् अनन्तरं यावदुपसृत्यापत्यं पश्यति ब्रा
 ह्मणस्तावद्बालकःसुस्थः सर्पश्च व्यापादितस्तिष्ठति तत
 स्तमुपकारकं नकुलं निरोक्ष्य भावितचेताः सन्तप्तः सपरं
 विषादमगमत् अतोहं ब्रवीमि योऽर्थतत्वमविज्ञाय इत्या
 दि । अपरञ्च । कामः क्रोधस्तथा मोहालोभोमानোमद
 स्तथा । षड्वर्गमुत्सृजेदेनमस्मिंस्त्यक्ते सुखी नृपः ॥ राजाह
 मन्निन एष ते निश्चयः । मन्त्री ब्रूते एवमेव । ॐ*

তদনন্তর সেই নরুল বালকের নিকটেতে আইল যে
 কাতসর্প তাহাকে দেখিয়া নষ্ট করিল ও কোপেতে থগু২
 করিয়া থাইল । তাহার পর রক্তাক্ত মুখচরণ এই নরুল ব্রাহ্মণ
 কে আসিতে দেখিয়া ভ্রাতে সমীপে গিয়া তাহার পদদ্বয়ে
 তে লুণ্ঠন করিতে লাগিল পরে তাহাকে সে পুকার দেখিয়া
 এই বেজি বালককে থাইয়াছে ইহা নিশ্চয় করিয়া নষ্ট
 করিল । তাহারপর যখন নিকটে গিয়া পূত্রকে দেখিতেছেন
 তখন ব্রাহ্মণ শিশুকে সুস্থ দেখিলেন সর্পকে মৃত দেখিলেন
 তদনন্তর উপকারক নরুলকে অবলোকন করিয়া অস্তঃকর

৭ে ভাবনা করিয়া দুঃখিত হইয়া অতিশয় বিষন্নতা পাই
লেন । এই নিমিত্তে আমি বলি যে ব্যক্তি যথার্থ নিকৃপণ
না করিয়া কোপেরিবশাভূত হয় ইত্যাদি । অপর কাম ও
ক্রোধ ও মোহ ও লোভ ও মান ও মদ এই ছয় বর্গকে ত্যাগ
করিবেক ইহারদিগকে ত্যাগ করিলে রাজা সুখী হয় । রাজা
কহিলেন হে মন্ত্রী তোমার এই স্থির অমাত্য বলিতেছে
এই পুকারই ।

It happened that soon after the Brāhman left the house, as the weasel was passing near the child, he saw a black serpent gliding towards it, which he killed, and partly devoured; and when he saw his master returning, the affectionate little animal ran to meet him, with his mouth and legs all covered with blood; and he rolled himself upon the ground at the Brāhman's feet in a very extraordinary manner; but the good man seeing him in such a condition, and hastily concluding that he had murdered his child, without further enquiry, put the poor weasel to death. In short, when the Brāhman went towards his child, and found it alive and well, and, at the same time, discovered the mangled remains of the black serpent upon the floor near it, the proofs of his weasel's merit and fidelity were so evident, that he suffered the most bitter pangs of sorrow and remorse. I repeat therefore, continued the minister,—*He who fallieth into the power of anger, &c.* They say,

A man should avoid these six evils: lust, anger, avarice, pleasure, pride, and rashness; for, free of these, he may be happy.

The peacock king replied,—So, minister, this is thy determination, is it? Even so! said he.

যতঃ । স্মৃতিশ্চ পরমার্থেষু বিতর্কো জ্ঞাননিশ্চয়ঃ ।
 দৃঢ়তা মন্ত্রগুণিষ্য মন্নিষ্যঃ পরমোগুণঃ ॥ তথা চ ।
 সহস্রাবিদধীত ন ক্রিয়ামবिवেকঃ পরমাপদাং পদং ।
 বৃণুতে হি বিমৃশ্য কারিণং গুণলুম্বাঃ স্বয়মেব
 সম্পদঃ ॥ তদেব যদিদানীমস্মদ্বচনং ক্রিয়তে তদা
 সম্ভায গম্যতাং । যতঃ । যদ্যপ্যুপায়াশ্চত্বারোনির্দিষ্টাঃ
 সাধ্যসাধনে । সংখ্যামাত্রং ফলন্তেষাং সিদ্ধিঃসান্নি যব
 স্থিতা ॥ রাজাহ কথমেবং সম্ভবতি । মন্ত্রী ব্রূতে দেব সত্বরং
 ন বিধ্বতি । যতঃ । মৃদুটবৎ সুখমেয়োদুঃসম্ভানশ্চ দুর্জ
 নোভবতি । সুজনস্তু কনকঘটবৎ দুর্ভেদ্যশ্চাশু সম্ভেদ্যঃ ॥
 অপরশ্চ । অজ্ঞঃ সুখমারাধ্যঃ সুখতরমারাধ্যতে বিশেষ
 যজ্ঞঃ । জ্ঞানলুম্বুর্বিদগ্ধং ব্রহ্মাপি তং নরং ন রঞ্জয়তি ॥

যেহেতুক উক্তন কার্যাবিশয়েতে আরণ ও বিতর্ক ও অব
 ধারণ ও দৃঢ়তা অর্থাৎ কর্তব্য। কর্তব্যের নিশ্চয়ও গোপনে
 মন্ত্রণ। এই সকল সচিবের বড় গুণ। তাহা জান অকস্মাৎ কার্য
 করিবে না। কেননা বিবেচনারাহিতা অত্যন্ত বিপদের স্থান
 আর পরামর্শপূর্বক কর্ম কর্তাকে গুণলোভি সম্পত্তির। আপ
 নারাই পান এইহেতুক হে ভূপাল যদ্যপি এখন আমার কথা
 কর তবে মেল করিয়া চল যেহেতুক কার্যসাধনেতে যদ্যপি
 চারি উপায়কথিত আছে তথাপি তাহারদের ফল গণনামাত্র
 কিন্তু সমতাতেই সিদ্ধি ব্যবস্থিত হইয়াছে। রাজা কহিলেন

কি পুকার একপ সম্ভব হয় সচিব বলিতেছে হে নৃপতে ষটি
তি হইবে যেহেতুক দুই ব্যক্তি নৃভাণ্ডের ন্যায় আয়াসেতে
ভেদ্য হয় আর দুঃখেতে সঙ্কেয় হয় সাধু লোক স্বর্ণপাত্রের
ন্যায় আয়াসেতে ভেদ্য হয় ত্বরিতে সঙ্কেয় হয় । অপর
অজ্ঞানী লোক সুখেতে উপাস্য হয় বিশেষজ্ঞ লোক অতি
শয় সুখেতে আরাধ্য হয় যাহার বুদ্ধির লেশ ও নাই সে
মনুষ্যকে বুদ্ধা ও অনুরক্ত করিতে পারেন না ।

The best qualities for a minister are justice, thorough investigation, wise determination, firmness, and secrecy.
Yet more:

Rashness in any undertaking should not be permitted; for the want of due investigation is the foundation of the greatest misfortunes. That success which merit is deserving of, attendeth of itself upon him who acteth with due deliberation.

Then, if what I say is worthy of attention, peace should be concluded, for,

Although four means are mentioned for the accomplishment of the work, the result of the whole number is uniting in peace.

But, said the king, how may that be presently effected? Please your highness, replied the minister, it shall be brought about speedily. They say,

A bad subject is like an earthen vessel, easily to be broken, and hard to be united; and a good one like a vessel of gold, not easily to be broken, and not difficult to be reunited.

A fool enjoys pleasure; but he who distinguishes with judgment, enjoys more delight. Even Brahmā cannot controul a man who has not even a particle of divine knowledge.

বিশেষতচ্চাযং ধর্মজ্ঞো রাজা সর্বজ্ঞো মন্ত্রী চ । জ্ঞাতমে
 তন্মযা পূর্বং মেঘবর্ণবচনাত্তত্ কৃতকার্য্যসন্দর্শনাচ্চ ।
 যতঃ । কর্ম্মানুমেযাঃ সর্বত্র পরোচ্চে গুণবৃত্তয়ঃ ।
 তস্মাত্ পরোচ্চবৃত্তানাম্ ফলৈঃ কর্ম্মানুভাব্যতে ॥ রাজাহ
 অলমুত্তরোত্তরেণ যথাভিপ্রেতমনুধীযতাং এতন্মন্ত্র
 যিত্বা মৃধ্রো মহামন্ত্রী তত্র যথার্হং কৰ্ত্তব্যমিত্যুক্তা দুর্গা
 ম্যন্তরং চলিতঃ ততঃ প্রাণিধিবকে নাগত্য রাজো হিরণ্য
 গৰ্ভস্থ নিবেদিতং দেব সন্ধিং কৰ্ত্তুং মহামন্ত্রী মৃধ্রোঽস্মাক্
 সমাপমাগচ্ছত্ । রাজহংসো ব্রতে সন্নিহ্ন পুনঃ সন্ধিনা
 কেনচিদ্রাগন্তব্যং ॥ সর্বজ্ঞো বিহত্যা হ দেব ন শঙ্কাস্য দ
 মেতৎ যতোসৌ মহাশযো দূরদর্শী অথ বা স্থিতিরিখং
 মন্দ্রমতীনাং কদাচিত্ শঙ্কৈব ন ক্রিয়তে ॥ তথা হি ॥

বিশেষতঃ এই রাজা । ধর্মীঃ আর মন্ত্রী সর্বজ্ঞ ।
 রাজা বাবিলেন মেঘবর্ণের বাক্যদ্বারা আর মেঘবর্ণকর্তৃক
 কৃত কার্য্য দ্বারা আমি ইহা জানিয়াছি যেহেতুক সর্বত্র
 পরোচ্চতে কর্ম্মের দ্বারা গুণ অনুমেয় হয় সেইহেতুক
 ফলের দ্বারা কর্ম্মের অনুভব কর্তব্য । রাজা কহিলেন
 উত্তর পুতুত্তর ব্যর্থ যাহা অভিলষিত তাহা কর এই মন্ত্রণা
 করিয়া মহামন্ত্রী গৃধ্র সেখানে যাহা করণোপযুক্ত হয়
 তাহা করিব ইহা কহিয়া দুর্গমধ্যে গেলেন তাহার পর
 পুণিধি বক আসিয়া হিরণ্যগর্ভ রাজাকে নিবেদন করিল

হে ভূপাল সন্ধি করিবার কারণ মহানন্দী গুপ্তু আমারদের সম্মিধানে আসিয়াছে। রাজহংস বলিতেছেন পুনর্বার সন্ধান করিতে কে আসিয়াছে সর্বজ্ঞ হাস্য করিয়া করিলেন হে মহারাজ এ শঙ্কাম্পদ নহে যেহেতুক ইনি দূরদর্শী মহা শয় কিম্বা নিবুদ্ধিরদের এই কপে অবস্থান কদাপি শঙ্কাই করে না তাহা জান।

Especially, continued the minister, as both the king and his minister are exceedingly well informed of things in general for this I knew from the beginning, as well from the reports of the crow Cloud-colour, as from a single review of their conduct

The virtue and conduct of an absent person are, on all occasions, to be estimated by his works; wherefore one should weigh the actions of those who are out of sight by the effect.

Let us have done with these answers and replies, cried the king, and let that which is most preferable be pursued. At length the minister, agreeable to his own counsel, went forth and waited near the castle, whilst a messenger ran to the royal goose Hiranya-garbha, and informed him, that the minister of the peacock king was coming to treat for peace; but the former, still suspecting something, said to his own minister, Know-all, —This again must be some spy or other coming to impose upon us! Please your highness, replied Know-all, laughing as he spoke, there is great room for suspicion, for this same noble person who is coming, is one who can see a great way; else suspicion, which is the proof of a weak mind, should never be indulged.

সরসি বজ্রশস্ত্রাচ্ছায়ে স্ত্রীনাৎ পরিবসিতঃ কুমুদবি
 টপান্বেষী হংসোনিশাসু বিচক্ষণঃ । ন দশতি পুনস্তারা
 শঙ্কী দিবাপি সিতোত্পলং কুহকচকিতোলোকঃ সত্যে
 পায়মপেक्षতে ॥ দুর্জ্জনদ্বিতমনসঃ সুজনেষ্যপি নাস্তি
 বিশ্বাসঃ । বালঃ পায়সদগ্ধোদধ্যপি ফুট্কৃতং ভুঙেক্ত ॥
 তদেব যথাশক্তি তত্পূজার্থং রত্নোপহারাदিসামগ্রী
 সুসজ্জা ক্রিয়তাং তথানুষ্ঠিতে সতি স মৃত্তোমন্ত্রী দুর্গদ্বা
 রাচক্রবাकेण উপগম্য সৎকৃত্যানীয রাজদর্শনং কারি
 তোদত্তাসনে চোপविष्टः । চক্রবাक उवाच युष्मदायत्तं
 सर्वं स्वेच्छোपभुज्यतामिदं राज्यं । রাজহংসোব্রূত এব
 মেব । দূরদর্শী কথয়তি এবমেবৈতৎ কিন্ত্বিদানীং বজ্র
 প্রপञ्चवचनं निम्प्रयोजनं ॥ *❀*❀*❀*❀❀

বুদ্ধিমান হংস অনুদ গ্ৰন্থালের অন্বেষণ করিতে২ রাতি
 কালে সরোবরে অনেক নক্ষত্রের পুতিবিশ্ব দর্শনপুযুক্ত
 বঞ্চিত হইয়া দিবাভাগেতে ও তারা শঙ্কাবিশিষ্টে হইয়া
 গুরুপদ্যুকে ও দংশন করে না কেননা কাপট্য বঞ্চিত
 লোক যথার্থেতে ও বিপদ জ্ঞান করে । দুষ্টলোককর্তৃক দূষি
 তাভুক্তকরণ লোকের সুজনেতে পুতায় নাই পরমান্নেতে
 দধি যে বালক সে দধিকে ও কুঁদিয়া ভোজন করে সেইহে
 তুক হে মহারাজ সামর্থ্যানুসারে তাহার সম্মানের নিমিত্তে
 রত্ন উপহার পুত্তি সামগ্রী পুষ্পত কখন । তাহা করিলে

পরে চক্রবাক গৃধ্রসন্নিধানে গিয়া সম্মানপূর্বক গড়ের দ্বার
 হইতে আনিয়া রাজার সাক্ষাৎ করাইলেন পরে দস্তাসনে
 গৃধ্র বসিলেন। চক্রবাক বলিল এসমস্তই তোমাদের আয়
 শু আপন ইচ্ছাতে এই রাজ্য উপভোগ কর রাজহংস বলি
 তেছেন এই পুকারই বটে দূরদর্শী কহিতেছে ইহা এই বটে
 কিন্তু সম্প্রতি অনেক পুণঞ্চ বাক্য প্রয়োজন নাই ॥

A wary goose having been once deceived by an enemy, whilst sitting in a very thick shade, in a lake, looking after the lotus plant, no more regardeth the cooling flower which is distressed by the appearance of day, and afraid of the stars Thus it is with the people of this world, having been once deceived, they suspect deceit in truth itself!

Then, continued the minister, let a present, consisting of jewels, rich dresses, and the like, the best we can afford, be provided for him as a compliment. This being done accordingly, the minister, Know-all, went out and received the vulture, Far-see, in front of the castle, with every mark of respect; and presently, conducted him into the presence of the royal goose, where he was permitted to be seated in a chair of state. Great minister, said Know-all, addressing himself to the vulture, now dispose of these your dominions according to your wish! Even so! added the royal goose. So be it! replied the vulture, but, said he, at present much negotiation is unnecessary; for they say,

যতঃ। লুব্ধমর্থেন গৃহীয়াৎ স্তম্ভমজ্জলিকর্মণা
 মূলং হৃদ্যানুবৃत्तेन যাযাতথ্যেন পণ্ডিতং ॥ অন্যच्च ।
 সঙ্গাভেন হরেন্মিত্রং সম্ভমেণ তু বাম্ববান। স্ত্রীমৃত্যৌ দান
 মানাभ्यां दाक्षिण्येनेतराञ्जनान् ॥ तदिदानीं सन्धाय
 गम्यतां महाप्रतापश्चित्रवर्णैराजा । चक्रवाकोब्रूते
 यथासन्धाय कार्यं तदप्युच्यतां । राजहंसोब्रूते कति
 प्रकाराः सन्धीनां सम्भवन्ति । गृहोब्रूते कथयाभि
 श्रूयतां । वलीयसाभियुक्तस्तु नृपोनान्यप्रतिक्रियः ।
 आपन्नः सन्धिमन्निच्छेत् कुर्वाणः कालयापनं ॥ कपाल
 उपहारश्च सन्तानः सङ्गतस्तथा । उपन्यासः प्रतीकारः
 संयोगः पुरुषान्तरः ॥ अदृष्टनरआदिष्ट आत्मादिष्ट
 उपग्रहः । परिक्रमस्तथोद्धमस्तथा च परभूषणः ॥ ❀

যেহেতুক লোভী লোককে ধনদ্বারা দাস্তিক জনকে অঞ্জলি
 করণের দ্বারা মূর্থকে ছনের দ্বারা পণ্ডিতকে যাথার্থ্যের দ্বারা
 বশকরিবেক। অপর মিত্রকে পুীতিতে বান্ধবকে সন্মানেতে
 পুত্রকে দান ও সন্মানেতে ইতর লোককে সারল্যেতে বশ
 করিবেক সেই নিমিত্তে মেল করিয়া যাও কেননা চিত্রবণ
 রাজা। মহাবলপরাক্রম। চক্রবাক বলিতেছে যে কপাল
 নকর্ভবা তাহা কহ। রাজহংস বলিতেছেন সন্ধি কত পু
 কার হয় গুধু কহিতেছেন কহি শুনুন বলবান কতক অভি
 যুক্ত রাজ। পুতীকারান্তরে অসমর্থ হইলে বিপদগুস্ত হইয়া

কাল ক্ষেপণ করত সন্ধি করিতে চেষ্টা করে কপাল ও উপহার ও সন্তান ও সঙ্গত ও উপন্যাস ও পুতীকার ও সংযোগ ও পুরুষান্তর ও অদৃষ্টনর ও আদিষ্ট ও আত্মাদিষ্ট ও উপগৃহ ও পরিক্রয় ও উচ্ছন্ন ও পরভূষণ ও ।

One should receive the covetous with gifts, the proud with joined hands, and the like tokens of submission, the ignorant with passages of poetry, and the wise and learned with whatever is suitable to their character.

Again

A friend should be received with sincerity, relations with respect, women with gifts and compliments, and others with whatever is proper.

Then let peace be presently concluded, that the most illustrious king Chitra-varna may depart, added the vulture Inform us, said the minister Know-all, how peace is to be made. How many species of connexions and alliances are there? demanded the king. I am about to tell you, said the vulture, so please to attend.

When a king hath been overcome by one stronger than himself, no further opposition should be made, and the unfortunate party should sue for peace with all possible expedition.

Those who are acquainted with the nature of forming connexions and alliances, declare, that there are sixteen species, thus denominated.

Kapāla,	Adṛiṣṭta-nara,
Upahāra,	Adiṣṭta,
Santāna	Atmā-diṣṭta,
Sang-gata,	Upagraha,
Upaṇyāsa,	Paṇikraya,
Pratikāra,	Uch-channa,
Sang-yōga,	Paṇabhūṣhana,
Puruṣāntara,	Skandhōpanēya.

স্বামীপনেয়ঃ সন্নিশ্চ ষোড়শৈতে প্রকীৰ্ত্তিতাঃ । ইতি ষোড়
শক প্রাক্তঃ সন্নিং সন্নিবিশ্লেষণাঃ ॥ কপালসন্নিবিশ্লেষঃ
কেবলং সমসন্নিতঃ । সম্প্রদানাদ্ভবতি য উপহারঃ স
উচ্যতে ॥ সন্তানসন্নিবিশ্লেষোদারিকাদানপূৰ্বকঃ । স
দ্বিস্তু সঙ্গতঃ সন্নিমৈত্রীপূৰ্ব উদাহৃতঃ ॥ যাবদায়ুঃ প্রমাণ
স্তু সমানার্থপ্রয়োজনং । সম্পত্তৌ বা বিপত্তৌ বা কারণে
র্থান ভিষ্যতে ॥ সঙ্গতঃ সন্নিরেবাযং প্রকৃষ্টত্বাৎ সুবর্ণবৎ ।
তথান্যৈঃ সন্নিবিশ্লেষৈঃ কাঞ্চনঃ স উদাহৃতঃ ॥ দ্রব্যাত্মা
কার্য্যসিদ্ধিন্তু সমুদ্दिश्य क्रियेत यः । স উপন্যাসকুশলৈ
রূপন্যাস উদাহৃতঃ ॥ ময়াস্যোপকৃতং পূৰ্ব্বে সমাপ্যেষ
করিষ্যতি ॥ ইতি যঃ ক্রিয়তে সন্নিঃ প্রতীকারঃ স উচ্যতে ॥

স্বামীপনেয় এই ষোল পুকার সন্ধি হয় সন্ধি পণ্ডি
তেরা এই ষোড়শ পুকার সন্ধি কহেন কেবল সমতাতে
যে মিলন হয় তাহাকে কপাল সন্ধি করিয়া জানিবা
ধনাদি দ্বারা যে মেল হয় তাহাকে উপহার করিয়া বলি
দাসী বেশাদি দান দ্বারা যে মেল সে সন্তান সন্ধি । মিত্রতা
পূৰ্বক যে সন্ধি তাহাকে পণ্ডিতেরা সঙ্গত সন্ধি করিয়া বলেন
যাবজ্জীবনপর্য্যন্ত উভয়েরি এক বিষয় এক পুয়োজন
সম্পত্তিতেই বা বিপত্তিতেই বা কোনহ কারণ পুযুক্ত
ভিন্ন হয় না এই সঙ্গত সন্ধি উত্তমতাহেতুক সুবর্ণের ন্যায়
অতএব সন্ধিজ্ঞ নোকেরা তাহাকে কাঞ্চন সন্ধি করিয়া

বলেন। ধন ও নিজকার্য্য নিস্পত্তিকে উদ্দেশ করিয়া যে মেল করে তাহাকে উপন্যাসকুলনের উপন্যাস করিয়া বলেন। আনি পূর্বে ইহার উপকার করিয়াছি আমারো এ লোক করিবেক এই মেলকে পুতীকার করিয়া বলি।

The Kapāla union is understood to be that where the parties simply form a connexion upon an equal footing. The Upahāra is when there is a gift from one of the parties.

The Santāna union is conceived to be that in forming which one of the parties delivereth up his family as a preliminary. The Sang-gata alliance is declared to be that which is formed with worthy men upon the foundation of friendship,

Which is not to be broken by any accidents, whose purposes are the same in prosperity and adversity, and the measure of whose duration is the length of life.

This Sang-gata union, because of its superior excellence, may be compared to gold; and by others, who are acquainted with the doctrine of forming connexions, it is called *the golden union*.

The upanyāsa alliance is declared, by those who are acquainted with that mode of uniting, to be that which is concluded upon terms pointed out by one of the parties.

The alliance which is formed upon this principle, *I have formerly rendered him assistance, he shall now do so to me*, is denominated the Pratikāra mode.

অন্যত্র উপকারং করোম্যস্য সমাপ্যেষ করিম্যতি । অথ
 চ্চাপি প্রতীকারো রামসুগ্রীবযোরিষ ॥ একার্থাং সম্যগু
 দ্দিষ্য ক্রিয়াং যত্র হি নচ্ছতি । সমং হি ততঃপ্রমাণেন স
 চ সংযোগ উচ্যতে ॥ আবযোর্যো^১ধমু^২দ্বৈ^৩কু^৪ মদ^৫র্থঃ^৬ সা^৭ধ্যতা^৮
 মতি । যস্মিন্ পণে^৯স্তু ক্রিয়তে স সমি^{১০}ধিঃ পুরুষান্তরঃ ॥
 ত্বযৈকেন মদীযো^{১১}র্থঃ সম্প্রসা^{১২}ধ্যস্বসা^{১৩}বিতি । যত্র শত্রুঃ পণে^{১৪}
 কুর্যা^{১৫}ত্ সো^{১৬}দৃষ্টপুরুষঃ স্মৃতঃ ॥ যত্র ভূম্যেকদ^{১৭}র্শেন পণেন রিপু
 বার্জিতঃ । সমীযতে সমি^{১৮}ধিবি^{১৯}দ্বিঃ সচা^{২০}দি^{২১}ষ্টউদা^{২২}হৃতঃ ॥
 স্বসৈন্যেন তু সম্ভানমা^{২৩}ত্মাদি^{২৪}ষ্টউদা^{২৫}হৃতঃ । ক্রিয়তে প্রাণ
 রক্ষার্থং সর্বদানা^{২৬}দুপগ্রহঃ ॥ কো^{২৭}ষাং^{২৮}শেনা^{২৯}র্দ্বকো^{৩০}ষে^{৩১} সর্বকো
 ষে^{৩২} বা পুনঃ শি^{৩৩}ষ্টস্য প্রতি^{৩৪}রক্ষার্থং পরি^{৩৫}ক্রয়উদা^{৩৬}হৃতঃ ॥

আর আমি ইহার উপকার করিতেছি এও আমার করিবে
 এই যে প্রতীকার শ্রীরাম সুগ্রীবের ন্যায় । যেখানে এক কার্যা
 কে উদ্দেশ্য করিয়া তার পুণ্যের সহিত গমন করে তাহাকে
 সংযোগ করিয়া বলি । তোমারও আমার সহিত সেনাপতি
 দ্বারা আমার কার্যা নিষ্পন্ন কর ইহা कहিয়া বাহাতে গণ করে
 সেই সন্ধি পুরুষান্তর সন্ধিনামক হয় কেবল তোমার কর্তৃক
 আমার এই অর্থ সুসাধ্য হইবে একপ যে স্থলে শত্রু গণ করে
 তাহাকে অদৃষ্ট পুরুষ করিয়া বলেন । যেখানে শত্রু কর্তৃক
 গুরু হইয়া ভূম্যেকদেশ পণেতে যে মেল হয় তাহাকে
 সন্ধি সন্ধি বলি । আপন সৈন্যের সহিত বিপকের

সাথে যে মেল করে তাহাকে আত্মাদিষ্ট করিয়া বলি জীবন রক্ষার কারণ সর্বস্বদানেতে যে মিলন করে তাহাকে উপগৃহ করিয়া বলি । অবশিষ্ট পুষ্টি রক্ষার নিমিত্তে কোষস্থ কিয়ৎ পরিমিতস্বৰ্গরূপ্যের দানদ্বারা কিম্বা অর্দ্ধ স্বৰ্গরূপ্য দুব্য দানদ্বারা কিম্বা সমস্ত সুবৰ্গ রূপ্য দানদ্বারা যে মেল করে তাহাকে পরিক্রয় করিয়া বলি ।

This also is called *Pratikāra*: *I will render him assistance, and he shall do the same to me.* Such was the alliance formed between Rāma and Sugriva.

It having been made to appear, that an expedition hath but one object, and upon these grounds a treaty is entered upon with united authority, it is called *Sang-yōga*.

The *Purushāntara* is an alliance formed upon this principle,—*Let my purpose be effected by the prime of both our armies, and in settling which there is a price fixed.*

The *adrishta-nara* is, when a treaty is formed on such a proposal as this:—*My purpose is to be effected by thee alone, in which also there is a price fixed.*

When a treaty is formed upon one party's quitting his enemy for a fine of a portion of his lands, it is denominated *ādishta*.

The conjunction formed with one's own army is called *ātma-dishta*, and that for the preservation of life, is denominated *upagraha*.

When a moiety, or even the whole, of the treasure is surrendered to save the rest of the property, the treaty is stiled *Pankraya*;

মুখা সারবতীনান্তু দানাৎকৃত্য উচ্যতে । মূষ্য ত্যফল
দানেন সর্ব্বেষু পরমূষণঃ ॥ প্রতিচ্ছিন্নং ফলং যত্র প্রতিস্কম্যে
ন দোষতে । স্কম্যোপনেয়ং তং প্রাজ্ঞঃ সন্धिঃ সন্ধিবিচক্ষণাঃ ।
যরস্যরোপকারস্তু মৈত্রীসম্বন্ধকস্তথা । উপহারস্য বিশ্লে
ষাস্ত্বারম্ভেইব সন্ধ্যয়ঃ ॥ একএবোপহারস্তু সন্ধিরেব মতো
নম । উপহারবিভেদাস্তু সর্ব্বৈ মৈত্রীবিবর্জিতাঃ ॥ অভিযো
ক্তা বলীয়স্তাদলম্ভান নিবর্ত্ততে । উপহারাঘৃতে তস্মাত্
সন্ধিরন্যোন বিদ্যতে । চক্রবাকউবাচ ॥ অয়ং নিজঃ পরো
বেতি গণনা লঘুচেতসাং । উদারচরিতানান্তু বসুধৈব
কুটুম্বকং ॥ অপরস্তু । মাতৃবৎ পরদারেণ পরদ্রব্যেণ লোভ
বৎ ॥ আত্মবৎ সর্ব্বভূতেষু যঃ পশ্যতি স পণ্ডিতঃ ॥

উত্তম ভূমিদানপুযুক্ত যে সন্ধি হয় তাহাকে উচ্ছন্ন করিয়া
বলি। ভূম্যুৎপন্ন ভূমিশস্যাদানদ্বারা যে মেল হয় তাহার নাম
পর ভূষণ । যে স্থলে ভূম্যুৎপন্ন শস্যকে পুত্রেতে বহন
করিয়া দেয় সন্ধি পণ্ডিতেরা তাহাকে স্কম্যোপনেয় করিয়া
বলেন । আর পরস্পরোপকার ও মিত্রতা ও সম্বন্ধক ও উপ
হার এই চারিপুকার সন্ধি হয়। আবার সম্মতিতে উপহারই
এক সন্ধি কেননা উপহার ব্যতিরিক্ত সকল সন্ধিই মিত্রতা
রহিত । আর অভিযোক্তা অর্থাৎ বাদী বল পুযুক্ত রাজ্য গৃহ
ণনা করিয়া নিবর্ত্ত হয় না অতএব উপহার ব্যতিরেকে অন্য
পুকার সন্ধি নাই । চক্রবাক বলিল এই লোক আশ্রয়

এই জন আত্মীয় নহে এ পুকার গণনা ক্ষুদ্রান্তঃকরণ লোকের
মহচ্চরিত্রকজনের পৃথিবীস্থ যাবল্লোকই অন্তরঙ্গ । অপর
পরপত্নীতে মাতৃতুল্য অন্য ধনেতে ডেলার ন্যায় সকল
প্ৰাণিতে আত্মসদৃশ যে দেখে সেই পণ্ডিত ।

and when the consideration be the most valuable part of the lands, the term is uch-channa.

When the purchase of peace is made with a gift of the whole of the fruits of the earth, it is called Parabhushana; and, lastly, when by a gift of the fruits which have been gathered, willingly borne upon the shoulder, Skandhōpanēya.

There are also these four distinctions of alliance: *That of reciprocal assistance, that of friendship, that of relationship, and that which is purchased with a gift.*

In my opinion, upahāra is the only one mode of alliance; for besides it, all other connexions are void of friendship.

The conqueror, from his being the strongest, is not wont to retreat without having gained something; whence no other mode than the upahāra is known to him.

The minister Know-all replied,—Hear this !

To say, *This is one of us, or this is a stranger*, is the mode of estimating practised by trifling minds. To those of more generous principles, the whole world is but as one family !

Again:

He who regardeth another's wife as his mother, another's goods as clods of earth, and all mankind as himself, is a philosopher.

রাজাহ্ ভবন্তোমহান্তঃ পণ্ডিতাশ্চ তদবাস্থ্যকং যথা
 কার্যমপদিশ্যতাং। মন্ত্রো ব্রূতে অাঃ কিমেবমুচ্যতে। আধি
 ব্যাধিপারীতাপাদয় শ্রাবা বিনাশিনে। কোহি নাম শরো
 রায় ধর্মোপেতং সমাচরেৎ ॥ জলান্তশ্চন্দ্রচপলং জীবিতং
 খলু দেহিনাং। তথাবিধমিতি জ্ঞাত্বা শশ্বত্ কল্যাণমাচ
 রেৎ ॥ মৃগতৃণাসমং বোদ্ধ্য সংসারং স্রণমঙ্গুরং। সজ্জনৈঃ
 সঙ্গতং কুর্যাৎ ধর্মায চ সুখায় চ ॥ তন্মম সম্মতেন
 তদেব ক্রিয়তাং। যতঃ। অশ্বমেধসহস্রাণি সত্যঞ্চ তুলয়া
 ধৃতং ॥ অশ্বমেধসহস্রাঙ্নি সত্যমেবাতিরিচ্যতে ॥ যতঃ
 সত্যাভিধানদিব্যপুঃসরযোরপ্যনयोर्भूपालयोः काञ्चना
 भि धानसन्धिर्विधीयतां। *❀*❀*❀*❀*❀*

রাজা কহিলেন তোমরা বড় লোক আর জ্ঞানি এই হেতুক
 এখন আমার দিগের যাঁহা কর্তব্য তাঁহা কহ। অমাত্য বলি
 তেছে আঃ কি এ কহিতেছ। মানসপাড়া ও রোগের সম্ভাপ
 পুষ্কু অদ্য কিম্বা কল্য বিনাশ শালী'যে কলেবর তাহার
 কারণ কোন লোক অধর্মাচরণ করে শরীরিরদের পুণ জল
 মধ্যস্থ চন্দ্রের পুয়চঞ্চল ইহা নিশ্চয় এইহেতুক তদ্রূপ জানি
 য়া পুনঃ পুণ্য নুষ্ঠান করিবেক। মৃগতৃণার ন্যায় সংসারকে
 কণ বিবৃংগি জানিয়া ধর্মের কারণ ও সুখের নিমিত্তে সাধু
 লোকেরদের সহিত সঙ্গ করিবেক। সেই নিমিত্তে আমার
 অভিমতেতে তাঁহাই কর যেহেতুক সহস্র অশ্বমেধযজ্ঞ আর

সত্য বাক্য এই দুই তুলাতে ধৃত হইয়াছে তাহাতে সহস্রঅশ্ব
মেধহইতে সত্যই অতিরিক্ত হইলেন এইহেতুক সত্য করণ
ভিধান দিব্য পূর্বক এই দুই রাজার সুবর্ণসংজ্ঞক সন্ধি হউক।

You are a philosopher, said the royal goose to the vulture, and therefore I desire you will point out what is to be done in this affair Your highness is pleased to compliment, replied the minister *Fai-see*. The poet says,

What name shall we give to him who inhabiteth a body destitute of justice, when that body, to-day or to-morrow, is subject to death by the sever of sickness or sorrow?

When we consider this world in the light of a thirsty deer in a moment to be destroyed, it is proper to form connexions with good people, for the sake of virtue, and for the sake of happiness.

Then, continued the vulture, the business should be settled according to this saying, which corresponds with my own opinion.

Truth being weighed against a thousand *Aswa-mēdha* sacrifices, was found to be of more consequence than the whole thousand offerings.

Wherefore, let the name of **TRUTH** be the divine precedent for both, and each of us; and let the alliance between us be that which is distinguished by the title of **THE GOLDEN UNION**!

ସର୍ବଜ୍ଞୋବ୍ରୁତେ ଏବମକ୍ଷୁତତୋରାଜହଂସେନ ରାଜା ବକ୍ତ୍ବା
 ଲହାରୋପହାରୈଃ ସ ମନ୍ତ୍ରୀ ଦୂରଦର୍ଶୀ ପୂଜିତଃ ପ୍ରହୃଷ୍ଟମନାଞ୍ଚ
 ଶ୍ରଦ୍ଧାକାଂ ଗୃହୀତ୍ବା ରାଜ୍ଞୋମଧ୍ୟୁରସ୍ୟ ସମ୍ମିଧାନଂ ଗତଃ ତତ୍ତ୍ବ
 ଶିବବର୍ଣ୍ଣେନ ରାଜା ସର୍ବଜ୍ଞୋଽପ୍ରବଚନାଢ଼ଜ୍ଞମାନଦାନପୁରଃ
 ସରଂ ସମ୍ମାପିତଃ ତଥାବିଧଂ ସନ୍ଧିଂ ଶ୍ରୀକୃତ୍ୟ ରାଜହଂସସମୀପଂ
 ପ୍ରସ୍ଥାପିତଃ । ଦୂରଦର୍ଶୀ ବ୍ରୁତେ ଦେବ ସିଂହଂ ନଃ ସମୀହିତମି ଦାନୀଂ
 ଶ୍ବସ୍ଥାନମେବ ବିନ୍ଧ୍ୟାଚଳେଽପ୍ୟାବୃତ୍ୟ ପ୍ରତିଗମ୍ୟତାଂ । ଅଥ ସର୍ବେ
 ଶ୍ବସ୍ଥାନଂ ପ୍ରାପ୍ୟ ମନୋଭିଳାଷିତଂ ଫଳଂ ପ୍ରାପ୍ନୁଃ ସନ୍ନିତି । ବିଷ୍ଣୁ
 ଶର୍ମଣୋକ୍ତଂ ଅପରଂ କିଂ କଥୟାମି କଥ୍ୟତାଂ । ରାଜପୁତ୍ରା ଋଚୁ
 ଶ୍ବସ୍ତବ ପ୍ରସାଦାଢ଼୍ରାଜ୍ୟବ୍ୟବହାରାଢ଼୍ରଜ୍ଞାତଂ ତତଃ ସୁହିତ୍ବେ ଭୂତାବ
 ଧଂ । ବିଷ୍ଣୁଶର୍ମାବାଚ ଯଦପ୍ୟେବଂ ତଥାପି ଅପରମପୀଦମକ୍ଷୁ ।


ସର୍ବଜ୍ଞ ବଳିଲେନ ଏହି ହୃଦୟ ତଦନନ୍ତର ରାଜା । ରାଜହଂସକର୍ତ୍ତାକ
 ବଜନା ଭରଣୋପଚାରଦ୍ବାରା ଏ ଦୂରଦର୍ଶୀ ଅଗାଧା ସନ୍ମାନିତ ହେଲା
 ପୁକୁଳାନ୍ତଃକରଣ ହେଲା ଚକ୍ରବାକକେ ଲେଲା ନୟନରାଜେର ମନା
 ମେଗେଲେନାମେ ହାନେ ରାଜାଧିରାଜ ଶ୍ରୀଚିତ୍ରବର୍ଣ୍ଣ ଗୁଣବାକ୍ୟାପୁରୁଷ
 ଅନେକ ଦାନ ସନ୍ମାନ ପୂର୍ବକ ସର୍ବଜ୍ଞକେ ମନ୍ତ୍ରାଣା କରିয়া ମେହି
 ପୁକାର ମନ୍ତ୍ରି ସ୍ତ୍ରୀକାର କରିয়া ରାଜହଂସ ସମ୍ମିଧାନେ ମେରଣ କରି
 ଲେନ । ଦୂରଦର୍ଶୀ କହିତେଛେ ହେ ମହାରାଜାଧିରାଜ ଏଥନ ଆମା
 ରାଜେର ଅଭିଳାଷିତ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେଲ ନିଜ ଜ୍ଞାନବିଦ୍ୟାପର୍ବତେହି
 କିରିୟା ଚଳ । ଅନନ୍ତର ମକାଳେ ଆମନେ ହାନେ ଗିୟା ମନୋ
 ବାଞ୍ଛିତ ଫଳ ମାହିଲେନ । ବିଷ୍ଣୁଶର୍ମା କହିଲେନ ଆମକି କହିବ

তাহা কহ । রাজনন্দনেরা কহিলেন তোমার অনুগৃহেতে
রাজ ব্যবহার অবগত হইলাম আমরা সুখী হইলাম । বিষ্ণু
শর্মা বলিলেন যদিপি এইকপ তথাপি আর ও এইকপ হউক ।

The minister Know-all having signified his approbation of the proposed terms, Far-see was complimented with a present of rich cloth and jewels; and being exceedingly rejoiced at the event of his negotiations, he took his leave of the royal goose, and returned with the minister Know-all, into the presence of his own sovereign. The peacock king ratified the peace, and, at the instance of the vulture, entered into a conversation with Know-all, in which he paid him many compliments; at the conclusion of which the latter had leave to depart, and he presently repaired to the camp of the royal goose.

The minister Far-see now tells his master, that as their designs were happily accomplished, it was advisable to direct their march towards home, the mountains of Vindhya. His advice was followed, and the whole army arrived at their respective habitations to enjoy in peace those fruits their hearts most longed for.

Now declare, said Vishnu-Sarmā to his royal pupils, what more I am to tell you! Through the great condescension of our reverend master, replied the young princes, being made acquainted with every thing which relates to the royal department of negotiation, we are satisfied. May this conclusion render you equally so said Vishnu-Sarmā, repeating these lines:

সন্धिঃ সৰ্বমহী ভূজাং বিনয়িনাসন্ত প্রমোদঃ সদা
 সন্তঃ সন্তুনীরাপদঃ সুকৃতিনাং কীৰ্ত্তিচ্ছির বর্দ্ধতাং ।
 নীতির্দ্বারবিলাসিনীব সততং বক্তাঃ স্থলে সংস্থিতা বক্ত
 যম্বতু মদ্বিণামহরচোভূয়ান্মহানুত্তমঃ ॥ ইতি হিতো
 পদেশে সন্ধিনাম চতুর্থকথাসংগ্রহঃ সমাপ্তঃ ॥ **

রাজাসকলের সর্বদা পরম্পর একা হউক আর যিনয়
 শালিলোকেরদের অনুকরণ আমোদ হউক আর সুকৃতির
 দের যশ উত্তরোত্তর বাড়ুক আর বারাজনার ন্যায় নীতি
 নিরন্তর বক্তৃস্থলেতে থাকিয়া। সচিবেরদের মুখচুসন করুন
 ঐ পুকারে পুতি দিন মহোৎসব হউক ।
 ইতি হিতোপদেশ সমাপ্ত ॥

May peace for ever yield happiness to all the victori-
 ous possessors of the earth! May just men be for ever
 free from adversity, and the fame of those who do good
 long flourish! May prudence, like a glorious sun, shine
 continually on your breasts! May the earth, with all her
 vast productions, long remain for your enjoyment!

THE END OF THE SANDHI

अथ हितोपदेशस्याशुद्धशुद्धपत्रं

मित्रलाभे

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
कोधन्यो	कोधन्यो	१०	१
खगाः	खवः	२०	३
यलायितुं	पलायितुं	३०	५
परित्यक्ता	परित्यक्ता	४०	३
जालं	जालं	४०	६
बहिर्गमाः	विहर्गमाः	४०	७
यताः	गताः	६८	५
अभ्यागतो	अभ्यागतो	८८	१२
परञ्च	अपरञ्च	९०	२
करप्रप्रे	करप्राप्ते	११२	८
नियुक्तं	नियुक्तं	११८	५
नृग	भृग	११८	११
दीर्घरवाः	दीर्घरवः	१२२	३
आत्मनः	आत्मनः	१२४	१३

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
समुदयो	समुदयो	१२६	८
विमुखाः	विमुखाः	१३२	५
तृ	त्वं	१३४	४
हरण्यको	हिरण्यको	१३६	८
मन्थरस्र	मन्थरस्य	१३६	८
कुट्टल	कुट्टमल	१३६	१३
भर्त्तति	भर्त्तरि	१४०	६
मुत्सृज्य	मुत्सृज्य	१५०	६
शर्वथा	सर्वथा	१७८	११
चञ्चा	चञ्चा	१८४	१३
स्वपत्या	स्वपत्या	२२६	५
व्यथानस्र	व्यथमानः	२२६	८
ममुचितं	मनुचितं	२३०	१०
स्नातच्य	स्नातच्य	२६४	३
विहृत	विहृत	२६०	८
वलवानसि	वलवानसि	२६०	१०
नाह	नाह	२६०	१२
शत्रौच	शत्रौच	२६४	११
ज्या	त्याज्या	२६६	४

अशुद्धं *	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
तिन्दन्ति	निन्दन्ति	३०४	११
क्राण्डं	काण्डं	३०८	७
तमभिमुखं	तदभिमुखं	३०८	८
दुर्वृत्तिं	दुर्वृत्तं	३२२	६
वत्क्र	वक्त	३३४	६
वत्क्र	वक्त	३३४	८
व्यसनोमो	व्यसनोयो	३३६	९
सामस्तै	समस्तै	३४०	६
कण्टक	कण्टक	३६२	१०
भिन्द्या	भिन्द्या	३६४	८
वकेनागत्य	वकेनागत्य	३८८	४
त्यक्तं	त्यक्तुं	४००	१०
स्वाम्यगात्य	स्वाम्यमात्य	४१०	६
ग्राहयित्वा	ग्राहयित्वा	४१२	५
विद्यधरी	विद्याधरी	४१३	८
महोभूजां	महोभुजां	४१४	
वृत्तं	वृत्ते	४१५	६
यद्वि	योद्धुं	४६	
षाङ्गुण्यं	षाङ्गुणाः	४५८	

अशुद्धं	शुद्धं	पृष्ठे	पंक्तौ
उपन्यसं	उपन्यसं	४६०	४
द्वीपस्य	द्वीपस्य	४६०	५
चित्रवर्ण	चित्रवर्ण	४६६	७
नाश्यात	नाश्यात	४६०	११
ब्रूते	ब्रूते	४६८	६
ग्रामुबन्निति	ग्रामुबन्निति	४१२	८

